राजभाषा आलोक

वार्षिकांक
2016

भाकृअनुप
ICAR

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
नई दिल्ली

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के 88वें स्थापना दिवस के अवसर पर माननीय केन्द्रीय कृषि मंत्री, श्री राधा मोहन सिंह जी, माननीय केन्द्रीय कृषि राज्य मंत्री, श्री पुरूषोत्तम रूपाला जी, माननीय केन्द्रीय कृषि राज्य मंत्री श्री सुदर्शन भगत एवं माननीय केन्द्रीय कृषि राज्य मंत्री श्री एस.एस. अहलुवालिया जी, सचिव (डेयर) एवं महानिदेशक, भा.कृ.अनु.प., डॉ. त्रिलोचन महापात्र, अपर सचिव (डेयर) एवं सचिव, भा.कृ.अनु.प., श्री छबिलेन्द्र राऊल एवं अपर सचिव एवं वित्त सलाहकार, श्री सुनिल कुमार सिंह परिषद की गृह पत्रिका 'राजभाषा आलोक' पत्रिका का विमोचन करते हुए ।

राजभाषा आलोक

वार्षिकांक 2016

कृषि ज्ञान प्रबंध निदेशालय
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
नई दिल्ली 110 012

मुद्रण : जुलाई 2017

डा. सतेन्द्र कुमार सिंह, परियोजना निदेशक, कृषि ज्ञान प्रबंध निदेशालय द्वारा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित तथा मैसर्स चन्दु प्रेस, 63, पटपड़गंज इंडस्ट्रियल एस्टेट, दिल्ली 110 092 से मुद्रित।

त्रिलोचन महापात्र, पीएच.डी.
एफ एन ए, एफ एन ए एस सी, एफ एन ए ए एस
सचिव एवं महानिदेशक

TRILOCHAN MOHAPATRA, Ph.D.
FNA, FNASc, FNAAS
SECRETARY & DIRECTOR GENERAL

भारत सरकार
कृषि अनुसंधान और शिक्षा विभाग एवं
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, कृषि भवन, नई दिल्ली 110 001

GOVERNMENT OF INDIA
DEPARTMENT OF AGRICULTURAL RESEARCH & EDUCATION
AND
INDIAN COUNCIL OF AGRICULTURAL RESEARCH
MINISTRY OF AGRICULTURE AND FARMERS WELFARE
KRISHI BHAVAN, NEW DELHI 110 001
Tel.: 23382629; 23386711 Fax: 91-11-23384773
E-mail: dg.icar@nic.in

आमुख

भारत को यदि विश्व का सिरमौर बनना है तो कृषि का निरंतर अधिकाधिक विकास नितांत आवश्यक है और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद इसी दिशा में प्रयासरत है। हम सबको विदित है कि देश की अधिकांश जनसंख्या ग्रामवासिनी है तथा कृषि और किसान, भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। परिषद, देशभर में स्थित अपने विभिन्न संस्थानों, कृषि विश्वविद्यालयों, कृषि विज्ञान केंद्रों आदि के माध्यम से कृषि से संबंधित नई–नई प्रौद्योगिकियों का विकास कर उन्हें किसानों तक पहुंचाने का कार्य कर रहा है। परिषद, देश के भिन्न–भिन्न कृषि जलवायु क्षेत्रों के लिए जलवायु अनुकूल और जल की न्यूनतम खपत वाली विभिन्न फसलों की किस्में तैयार कर रहा है। खाद्यान्न उत्पादन के क्षेत्र में तो हम आत्मनिर्भर बन ही चुके हैं किंतु कुपोषण से अभी मुक्ति नहीं मिली है। कुपोषण की समस्या से निपटने के लिए नवीन फसल किस्मों को आवश्यक पोषक तत्वों से समृद्ध किया जा रहा है, इनमें सीआर धान 310, जिसमें प्रोटीन की मात्रा अपेक्षाकृत 10 गुणा अधिक है और जिंक से प्रबलित डीआरआर धान 45 उल्लेखनीय है। हाल ही में, मृदा के त्वरित एवं विश्वसनीय परीक्षण के लिए पोर्टेबल डिजिटल मृदा परीक्षण किट, 'मृदा परीक्षक' विकसित की गई है और इसे राष्ट्रीय स्तर पर सभी कृषि विज्ञान केंद्रों को उपलब्ध कराया गया है। मृदा स्वास्थ्य कार्ड तैयार करने का कार्य भी प्रगति पर है। भेड़ की एक नई नस्ल् 'अविशान' तथा पॉल्ट्री की उन्नत प्रजाति 'झारसिम' विकसित की गई है। इसी प्रकार से, आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण मत्स्य प्रजातियों जैसे कि, कोबिया एवं सीबास में बीटानोडा विषाणु की पहचान के लिए एक सस्ती निदानसूचक किट तैयार की गई है। समुद्री शैवाल से टाइप–2 मधुमेह रोग के लिए कडलमीन टीएम नामक एक न्यूट्रास्यूटिकल तैयार किया गया है। किसान विज्ञान केंद्रों में ई–संपर्क सुविधा, किसान चौपाल और किसान कॉल सेंटर आदि तो पहले से ही कार्य कर रहे है, इस वर्ष दलहनी फसलों के लिए विशेषज्ञ प्रणाली 'पल्स एक्सपर्ट' मोबाइल ऐप आरंभ किया गया है। 'मेरा गांव मेरा गौरव' कार्यक्रम भी किसान को कृषि संबंधी परामर्श एवं सीधे जानकारी उपलब्ध कराने में अहम भूमिका निभा रहा है। कृषि शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए हाल ही में पंडित दीनदयाल उपाध्याय उन्नत कृषि शिक्षा योजना प्रारंभ की गई है जिसके 100 केन्द्र खोले जा रहे हैं। परिषद तो भारतीय कृषि की प्रगति और किसानों के कल्याण के लिए ही समर्पित है, इसलिए मेरा मानना है–

काम हमारा है यही, भरे रहें खलिहान।
भाषा भी यदि हिंदी हो, सीधे जुडे किसान।।

हमारे सभी प्रयास तब तक सार्थक नहीं हैं जब तक कि वे किसान तक न पहुंचें और उसके खेत में अधिकाधिक उत्पादकता सहित दृष्टिगोचर न हों। परिषद में निरंतर इस दिशा में कार्य किया

जा रहा है और मैं अपने सभी साथी वैज्ञानिकों से अपेक्षा करता हूं कि वे अपने अनुसंधान कार्यों, नई–नई तकनीकों और कृषि संबंधी जानकारियों को किसानों तक उन्हीं की भाषा में पहुंचाने का प्रयास करेंगे ताकि किसानों की आय को दोगुना करने की माननीय प्रधानमंत्री जी की मंशा को शीघ्रतातिशीघ्र पूरा किया जा सके।

मैं राजभाषा आलोक के संपादक मंडल और सभी योगदानकर्ताओं को हृदय से शुभकामनाएं देता हूं और आशा करता हूं कि राजभाषा आलोक में दी गई जानकारी पाठकों का ज्ञानवर्धन करेगी।

त्रि. महापात्र

(त्रिलोचन महापात्र)

सत्यमेव जयते

CHHABILENDRA ROUL
ADDITIONAL SECRETARY, DARE &
SECRETARY, ICAR
Tel.No.: +91 11 23384450
Email: secy.icar@nic.in

भारत सरकार
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग
कृषि भवन, नई दिल्ली-110001
GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF AGRICULTURE AND FARMERS WELFARE
DEPARTMENT OF AGRICULTURAL RESEARCH AND EDUCATION
KRISHI BHAWAN, NEW DELHI-110001

प्राक्कथन

सरकार की नित नवीन नवोन्मेषी योजनाओं से देश आर्थिक महाशक्ति बनने की राह पर सरपट दौड़ रहा है। देश के अन्य क्षेत्रों के विकास के साथ देश का कृषि क्षेत्र भी आधुनिक प्रौद्योगिकियों एवं नव प्रवर्तनों से लाभान्वित हो रहा है। कृषि क्षेत्र को इनसे मिलने वाले लाभ में और दिन दूनी रात चौगुनी वृद्धि हो सकती है अगर हम अपने अंतिम लाभार्थी अर्थात देश के समस्त किसानों को उन्हीं की भाषा, उन्हीं की जुबान में इन नई प्रौद्योगिकियों की जानकारी सुलभ करा सकें। उल्लेखनीय है कि हमारे देश में ज्ञान एवं विज्ञान को सहेजने की एक समृद्ध परिपाटी रही है लेकिन पिछले कुछ सौ वर्षों के विदेशी शासनों के कारण हमारी अपनी भाषाओं में हमारे ज्ञान को सहेजने की परंपरा पिछड़ती चली गई और आज भी समाज के एक वर्ग में इसी प्रकार की भ्रांति व्याप्त है कि विज्ञान, तकनीकों या प्रौद्योगिकियों की जानकारी या लेखन केवल अंग्रेजी भाषा में ही संभव है। लेकिन यह केवल भ्रांतिमात्र है और वास्तविकता से कोसों दूर है। भाषा और बोली संस्कृति की संवाहिका भी है क्योंकि हर देश–काल की संस्कृति इन से ही सुरक्षित रहती है। आज हम गर्व के साथ कह सकते हैं कि हिन्दी विश्व में सबसे अधिक बोली एवं समझी जानेवाली भाषा बन चुकी है। हमारा संगठन कृषि अनुसंधान और उसके समग्र विकास से जुड़ा हुआ है और किसानों की खुशहाली के लिए कार्य कर रहा है। ऐसी स्थिति में हमारे लिए यह और भी आवश्यक हो जाता है कि हम किसानों तक उन्हीं की भाषा में कृषि क्षेत्र में होने वाले नवोन्मेषणों एवं नई तकनीकियों की जानकारी पहुंचाएं। इन तकनीकियों को आम आदमी, विशेष रूप से किसानों तक पहुंचाने का सबसे सशक्त माध्यम सरल, सहज हिंदी ही हो सकती है।

कहना न होगा कि हमारे सभी नवोन्मेषण, हमारी विकसित हो रही नित नवीन तकनीकियां तभी सार्थक हो पाएंगी जब वे किसानों तक सीधे पहुंचेंगी और इसके परिणाम उनकी बढ़ी हुई उत्पादकता के रूप में दिखाई देंगे। बेशक, यह लक्ष्य अभी दूर है और इसके लिए कठिन श्रम किए जाने की आवश्यकता है पर अगर पूरे मनोयोग से इसका प्रयास किया जाए तो यह कार्य असंभव भी नहीं है।

परिषद द्वारा लोकप्रिय हिन्दी भाषा में जारी किए जाने वाले प्रकाशन भी इस दिशा में किए जानेवाले विभिन्न प्रयासों में से एक है। इसी क्रम में राजभाषा पत्रिका 'राजभाषा आलोक–2016' का वार्षिकांक आपके समक्ष प्रस्तुत है जिसमें सहज और सरल भाषा में लोकप्रिय विषयों पर तकनीकी जानकारी उपलब्ध करवाई गई है और राजभाषा लेखों के साथ ही परिषद मुख्यालय सहित विभिन्न संस्थानों की राजभाषा गतिविधियों की सचित्र झलक प्रस्तुत की गई है।

मैं पत्रिका में योगदान देनेवाले सभी लेखकों तथा संस्थान के निदेशकों का आभार व्यक्त करता हूं जिन्होंने समय पर सामग्री उपलब्ध करवाई। सामग्री का संकलन हिन्दी अनुभाग द्वारा तथा संपादन श्रीमती सीमा चोपड़ा, निदेशक (राजभाषा) द्वारा किया गया है जिसमें उन्हें श्री आशुतोष कुमार विश्वकर्मा, सहायक निदेशक (राजभाषा) एवं, श्री हरिओम, निजी सचिव द्वारा सक्रिय सहयोग दिया गया है। मैं, कृषि ज्ञान प्रबंध निदेशालय के कार्यकारी परियोजना निदेशक, डॉ. एस.के. सिंह एवं उनकी प्रोडक्शन टीम को भी हार्दिक धन्यवाद देता हूं जिनके सक्रिय प्रयासों से पत्रिका के इस अंक का प्रकाशन संभव हुआ है। मुझे आशा है कि सुधी पाठकगण इसे और अधिक उपयोगी बनाने के विषय में अपनी राय व्यक्त करेंगे।

छ. राउल

(छबिलेन्द्र राऊल)

सम्पादकीय

हिंदी, भारतीय संस्कृति की अस्मिता की पहचान है। भाषागत चेतना स्वाभिमान का प्रतीक भी है। हिंदी का विकास भले ही भारत में हुआ किंतु आज यह अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपने पैर जमा रही है और अब संयुक्त राष्ट्रसंघ की भाषा बनने के लिए प्रयत्नशील है। भूमंडलीकरण का बाजारवाद भी इसे विश्वभाषा बनाने के प्रयास में अहम योगदान कर रहा है। कम्प्यूटर के लिए हिंदी भाषा तथा देवनागरी लिपि की उपादेयता सर्वविदित है। श्री पुरूषोत्तम दास टंडन के अनुसार विश्व में हिंदी ही सर्वसंपन्न वर्णमाला वाली भाषा है। हम सभी का हिंदी से एक जुड़ाव है, संवेदनात्मक संबंध है। स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए संघर्ष के दौर में नेतृत्व करने वाले भी, चाहे भारत के हिंदीभाषी क्षेत्र के रहे हों अथवा अहिंदी भाषी क्षेत्र के, उनके मुंह से 'नारा' इसी भाषा में निकलता था,''अंग्रेजो भारत छोड़ो ''दिल्ली चलो'', ''स्वतंत्रता प्राप्ति मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है'' जैसे अनेक उदाहरण हैं और इसी हिंदी भाषा के कारण जनमानस आंदोलित होता था, लोग उनके साथ जुड़ते थे। यह विडंबना ही है कि गुलामी की बेड़ियों से मुक्ति होने के इतने वर्षों बाद भी हमें हिन्दी में काम करने के लिए दूसरों के द्वारा कहा जाता है। हमारा स्वाभिमान आहत क्यों नहीं होता? विश्व भर में भारतवासियों की पहचान हिंदीभाषी के रूप में ही है।

हीन भावना छोड़कर, हिंदी में कर काम।
हिंदी भाषा ही नहीं, हम सबकी पहचान।।

भाकृअनुप तो वैसे भी कृषि एवं कृषकों के कल्याण के लिए ही कार्य कर रहा है। इसलिए, हमारा दायित्व और भी बढ़ जाता है कि हम जिस किसान के लिए कार्य कर रहे हैं उसे खेती–बाड़ी और उसके कल्याण से जुड़ी और नवीनतम प्रौद्योगिकियों आदि के विषय में समस्त जानकारी उसी की भाषा में दी जाए, तभी हमारे प्रयास सार्थक होंगे।

परिषद द्वारा प्रकाशित वार्षिक पत्रिका, राजभाषा आलोक 2016 का नवीन अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है जिसमें नवीनतम जानकारी सहित कृषि के भिन्न –भिन्न विषयों से संबंधित आलेखों का संकलन है। परिषद एवं उसके विभिन्न संस्थानों में वर्ष भर आयोजित किए हिंदी से जुडे कार्यक्रमों, कार्यशालाओं एवं संगोष्ठियों आदि का विवरण इसमें दिया गया है। सभी संस्थानों से निकलने वाले विभिन्न हिंदी प्रकाशनों की सूची को भी शामिल किया गया है। परिषद के आठ विषय वस्तु प्रभागों, उनके अधिदेश व कार्य–कलापों से परिचित कराने के उद्देश्य से इस अंक से 'प्रभाग–परिचय' की एक नई श्रृंखला प्रारंभ की जा रही है। इस अंक में फसल विज्ञान प्रभाग का परिचय दिया जा रहा है। आशा है, हमारा यह प्रयास अपने उद्देश्य में सफल होगा। विद्वत पाठकों से अनुरोध है कि वे अपनी राय व्यक्त अवश्य करें ताकि भविष्य में इस प्रत्रिका को और अधिक बेहतर और उपयोगी बनाया जा सके।

सीमा चोपड़ा

(सीमा चोपड़ा)
निदेशक (राजभाषा)

भाकृअनुप
ICAR

राजभाषा आलोक

वार्षिकांकः 2016
(अंक 20)

संरक्षक
डा. त्रिलोचन महापात्र
महानिदेशक, भा.कृ.अनु.प.

अध्यक्ष
छबिलेन्द्र राऊल
सचिव, भा.कृ.अनु.प.

परामर्श
डा. एस के सिंह
कार्यकारी परियोजना निदेशक
(डीकेएमए)

संपादन
सीमा चोपड़ा
निदेशक (रा.भा.)

संकलन एवं सहयोग
आशुतोष कु. विश्वकर्मा
सहायक निदेशक (रा.भा.)
हरि ओम, निजी सचिव

प्रोडक्शन
डॉ वी.के. भारती
एवं
अशोक शास्त्री

विषय-सूची

तकनीकी खण्ड पृष्ठ संख्या

1.	राष्ट्र के कृषि विकास में परिषद का योगदान	त्रिलोचन महापात्र, ए. अरूणाचलम एवं महेश गुप्ता	1
2.	खुम्ब–एक पौष्टिक एवं स्वास्थ्य वर्धक आहार	बृज लाल अत्री	7
3.	शूकर ज्वर एक घातक रोग	एस. एस. पाटील, ए. प्रजापति, जी. बी. मन्जुनाथ रेड्डी, डी. हेमाद्री एवं के. पी. सुरेश	10
4.	छोटे किसानों के लिए सहायक व्यवसाय के रूप में सिंघाड़े की खेती	आशीष कुमार प्रुष्टि, पूनम कश्यप एवं आजाद सिंह पंवार	14
5.	हरी सब्जियों का महत्व	मनोज कुमार	16
6.	माही के बीहड़ क्षेत्र सुधार, उत्पादन वृद्धि एवं संसाधन संरक्षण संभावनाओं का तकनीकी एवं आर्थिक विश्लेषण	वी. सी. पांडे, आर. एस. कुरोठे, बी. के. राव, गोपाल कुमार, पी. आर. भटनागर, राजकुमार, विजय डी. काकड़े, डी. दिनेश, गौरव सिंह, ओ. पी. मीणा	18
7.	भूमि उपयोग नियोजन हेतु भूमि संसाधनों का सूचीकरण और विश्लेषण	जया निरांजने सूर्या, आर. पी. यादव, एस. के. सिंह एवं अरविन्द कुमार	24
8.	प्रभाग परिचयः फसल विज्ञान प्रभाग	डी.के. यादव एवं पी.आर. चौधरी	27

राजभाषा खण्ड एवं गतिविधियां

9.	हिन्दी के प्रतिष्ठापन में आ रही कठिनाइयां एवं समाधान	सीमा चोपड़ा	31
10.	राजभाषा कार्यान्वयन समस्या का प्रबंधकीय समाधान	संतराम यादव	34
11.	हिन्दी में विज्ञान लेखन समस्याएं, समाधान ओर संभावनाएं	ए.के. जगदीशन एवं श्याम किशोर वर्मा	36

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के विभिन्न संस्थानों से प्राप्त गतिविधियां 42

विविधा 115

तकनीकी
खण्ड

राष्ट्र के कृषि विकास में परिषद का योगदान

डॉ. त्रिलोचन महापात्र*, डॉ. ए.अरूणाचलम**, महेश गुप्ता***

उर्वरा भूमि, परिवर्तनशील अनुकूल ऋतुओं, विविधतापूर्ण मौसम परिस्थितियों, अथाह जल भण्डार, विराट हिमालय, विपुल जैव–विविधता, अविरल प्रवाहिनी नदियों, भरपूर खनिज एवं वन सम्पदाओं तथा विविधतापूर्ण संस्कृति के रूप में प्रकृति ने भारत को एक वैभव सम्पन्न राष्ट्र बनाया है। आज भी भारत मूलतः गांवों में बसता है। नगरों में केवल लगभग 32 प्रतिशत लोग रहते हैं जबकि गांवों में लगभग 68 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है। देश की जनसंख्या का लगभग 54.6 प्रतिशत अपनी आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर है और कृषि ही देश का सबसे प्रमुख एवं सबसे बड़ा उद्योग है। अतः भारतीय अर्थव्यवस्था का सही समाधान सीधे कृषि के विकास और कृषि उत्पादन की अभिवृद्धि पर अवलम्बित है। कृषि तथा उससे सम्बद्ध सेवाओं में लगा यह विशाल जनबल केवल उत्पादक ही नहीं, अपितु देश को सबसे बड़ा बाजार देने वाला उपभोक्ता वर्ग भी है। देश की लगभग तीन चौथाई जनसंख्या वाले इस विपुल वर्ग की क्रियाशक्ति बढ़ने से ही देश का उद्योग, व्यापार, रोजगार और कला कौशल समुन्नत होगा। कृषि अनुसंधान, शिक्षा एवं प्रसार के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान करते हुए खाद्य व पोषणिक सुरक्षा के क्षेत्र में राष्ट्र को आत्मनिर्भरता प्रदान करने में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) की महत्वपूर्ण भूमिका है।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा कृषि प्रौद्योगिकियों का विकास किया जाता है जिसका उद्देश्य राज्य कृषि विश्वविद्यालयों के साथ परामर्श करके कृषि विज्ञान केन्द्रों के माध्यम से आम किसानों की मदद करना और Lab to Land कार्यक्रम को साकार करते हुए प्रौद्योगिकियों का प्रसार करना है। कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा प्रदर्शनों का आयोजन करके, किसानों को प्रशिक्षण प्रदान करके तथा राज्य कृषि विभागों को अग्रिम पंक्ति प्रसार सेवाओं का प्रावधान करके किसानों तक अनुसंधान एवं प्रौद्योगिकियों का हस्तांतरण किया जाता है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा प्रतिवर्ष राज्य कृषि विश्वविद्यालयों को वार्षिक वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है।

भारतीय कृषि वैज्ञानिकों द्वारा अनुसंधान व प्रौद्योगिकी विकास करके भारत में हरित क्रान्ति लाने और उतरोत्तर कृषि विकास करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई गई है। आज हमारा देश खाद्यान्न के मामले में न केवल आत्मनिर्भर है वरन् इसकी भूमिका आयातक से निर्यातक के रूप में परिवर्तित हो रही है। इस प्रकार के विकास का हमारी राष्ट्रीय खाद्य व पोषणिक सुरक्षा पर उल्लेखनीय प्रभाव पड़ा है।

कृषि अनुसंधान

देश की लगातार बढ़ रही जनसंख्या एवं पशुधन संख्या का भरण पोषण करने के प्रयोजन से अविरल कृषि अनुसंधान करते हुए वर्तमान परिदृश्य के अनुकूल किस्मों व तकनीकों का विकास करना अनिवार्य है। हालिया समय में कृषि अनुसंधान का फोकस जलवायु अनुकूल एवं पानी की बचत करने वाली कृषि फसलीय किस्मों पर और निवेश लागत में कमी करने पर केन्द्रित किया गया।

कुल 55 ब्लॉकों में भूमिस्वरूप मानचित्र, मृदा सर्वेक्षण तथा मृदा मानचित्र तैयार करने का कार्य पूरा हुआ जिसमें दक्षिणी क्षेत्र (17), पश्चिमी क्षेत्र (5), मध्य क्षेत्र (5), पूर्वी क्षेत्र (17), उत्तरी क्षेत्र (6), उत्तर–पूर्वी क्षेत्र (5) शामिल हैं। एक डिजिटल पोर्टेबल मृदा परीक्षण किट ''मृदापरीक्षक'' विकसित की गई और इसे राष्ट्रीय स्तर पर मृदा स्वास्थ्य कार्ड तैयार करने के लिए उपलब्ध कराया गया जिससे देश के मृदा

*डा. त्रिलोचन महापात्र, सचिव, डेयर एवं महानिदेशक, भा.कृ.अनु.प, **डा. ए. अरूणाचलम, प्रधान वैज्ञानिक, भा.कृ.अनु.प,
***महेश गुप्ता, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (राजभाषा), भा.कृ.अनु.प

स्वास्थ्य मिशन में मदद मिली। परिषद द्वारा कुल 17 खोज अभियान चलाए गए तथा 531 वन्य प्रजातियों सहित 1,115 प्रविष्टियों को जननद्रव्य संकलन में जोड़ा गया। स्टैंड एलोन पैकेज के रूप में भारत की भौगोलिक सूचना प्रणाली (GIS) विकसित की गई जो पशु आनुवंशिक संसाधनों (AnGR) के लिए थी। इसे मानचित्र पर चुनी गई नस्लों के आवासों को उजागर करने के लिए उपयोग किया गया। इससे उपयोगकर्ता वांछित जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। पशुधन तथा पोल्ट्री की 9 नई नस्लें पंजीकृत की गईं और इस प्रकार पंजीकृत नस्लों की कुल संख्या अब 160 हो गई है।

फसल सुधार

फसलीय सुधार को तीव्र गति प्रदान करते हुए अनाजों की 155 उच्च उपजशील किस्मों/संकरों में चावल की 68; गेहूं की 18; मक्का की 27; बाजरा की 17; ज्वार की 10; कंगनी तथा रागी में प्रत्येक की 4–4; जौ की 3; जई और कोदों में प्रत्येक की 2–2 किस्मों/संकर को विभिन्न प्रकार की कृषि भौगोलिक परिस्थितियों में खेती करने के लिए जारी किया गया। चावल प्रध्वंस रोगजनक की रोग प्रतिरोधिता के विकास में 16 वर्षों के सार्थक अनुसंधान प्रयासों के आधार पर चावल प्रध्वंस फफूंद जीनोम का खुलासा किया गया। इसी प्रकार चावल का उपयोग करने वाले लाखों लोगों की पोषणिक सुरक्षा के लिए चावल की किस्म CR धान 310 (10 प्रतिशत से अधिक प्रोटीन मात्रा) तथा DRR धान 45 (जिंक की उच्च मात्रा) विकसित की गईं और इन्हें व्यावसायिक खेती के लिए जारी किया गया।

इसी प्रकार, तोरिया–सरसों की 16; मूंगफली की 8; अलसी की 7; सोयाबीन व सूरजमुखी प्रत्येक की 5–5; तिल की 4, अरण्डी की 3 तथा नाइजर की 2 किस्मों सहित तिलहनी फसलों की कुल 50 नई किस्मों को खेती के लिए जारी किया गया। कैनोला प्रकार की भारतीय सरसों की प्रथम किस्म डबल जीरो मस्टर्ड 31 (PDZ 1) जिसके तेल में 2 प्रतिशत से भी कम इरूसिक अम्ल और खली में 30 ppm से कम ग्लूकोसाइनोलेट होता है, को राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली में खेती के लिए जारी किया गया। दलहनी फसलों में चने की 10; मूंग की 11; अरहर की 6; मटर तथा अलसी में प्रत्येक की 4–4; उड़द व कुल्थी में प्रत्येक की 3–3 तथा लोबिया की 2 किस्मों सहित कुल 43 दलहनी किस्मों को खेती के लिए जारी किया गया। व्यावसायिक फसलों में कपास की 23; गन्ने की 9; पटसन की 3; मेस्टा, केनाफ व रोजेले में प्रत्येक की 2–2 और रैमी की 1 किस्म सहित कुल 42 किस्मों को जारी किया गया। गन्ने का एक मध्यम पछेती पकने वाला क्लोन CO 06034 (करन 11) हरियाणा, पंजाब, उत्तराखण्ड, राजस्थान, मध्य व पश्चिमी उत्तर प्रदेश में व्यावसायिक खेती के लिए जारी किया गया जो कि पुरानी किस्मों नामतः COS 767 और COS 8436 का उपयुक्त विकल्प साबित हो सकता है।

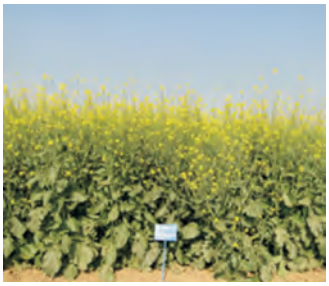

डबल जीरो मस्टर्ड 31 (PDZ 1)

CO 06034 (करन 11)

पत्ती रतुआ रोग भारत में सबसे अधिक पाया जाता है और यह फसल को अत्यधिक हानि पहुंचाता है। हांगो, हिमाचल प्रदेश में चपाती गेहूं की किस्म (हांगो–2) में पत्ती रतुआ प्रतिरोधी एक नए जीन LrLWH की LWH2 में पहचान की गई। इस नए प्रतिरोधी जीन का उपयोग गेहूं वंशक्रमों में गेहूं पत्ती रतुआ प्रतिरोध के चयन के लिए किया जा सकता है। रोगजनक कवक, पक्सीनिया स्ट्रीफोर्मिस्ट्रीटिकी जो गेहूं में पीला रतुआ उत्पन्न करता है, के लिए पीसीआर आधारित मार्कर (KetoPstRA 1500) विकसित करके उसका सत्यापन किया गया। बागवानी फसलों में कुल 51 नए संकर व किस्में विकसित की गईं जिनमें बीजरहित जामुन (CISH-J-42);

थार मालती बेर (60 किग्रा./पौधा); थार नीलकंठ बेल (75 किग्रा./पौधा); नारियल की कल्प समृद्धि और कल्पतरू; टमाटर की अर्का सम्राट (100 टन/हे.); मटर की अर्का प्रिया; राजमा की अर्का शरद; तथा आलू की पछेती झुलसा रोग प्रतिरोधी किस्म कुफरी मोहन प्रमुख हैं।

बीजरहित जामुन किस्म
CISH-J-142

आलू की पछेती झुलसा रोग प्रतिरोधी किस्म कुफरी मोहन

टमाटर की किस्म अर्का सम्राट

भेड़ की नई नस्ल अविशान

पॉल्ट्री की बहुरंगी व उन्नत प्रजाति 'झारसिम'

पशुधन सुधार

देसी नस्ल परियोजना के अंतर्गत गिर, साहिवाल और कांकरेज की 26 प्रजननशील सांड संतति परीक्षण के तृतीय सेट में लाई गईं। 30 सांडों को पहली बार परीक्षण युग्मन के लिए इस्तेमाल किया गया। उच्चतर वृद्धि दर और प्रचुर प्रजनन प्रवृति वाली भेड़ की नई नस्ल 'अविशान' तथा पोल्ट्री की दोहरे प्रयोजन वाली बहुरंगी व उन्नत प्रजाति 'झारसिम' को विकसित करके जारी किया गया। खारे पानी में एक महत्वपूर्ण मछली प्रजाति ''मिल्कफिश'' में प्रजनन एवं बीज उत्पादन के लिए पहली बार प्रौद्योगिकी विकसित करने में उल्लेखनीय ब्रेकथ्रू (breakthrough) हासिल किया गया। सीवीड से टाइप–2 मधुमेह के लिए Cadalmin ™ नाम से एक न्यूट्रास्यूटिकल्स का निष्कर्षण किया गया तथा इस प्रौद्योगिकी का व्यावसायीकरण किया गया। कोबिया तथा सीबास जैसी आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण समुद्री मछली प्रजातियों में बीटानोडा वायरस की पहचान के लिए एक सस्ती डाइग्नोस्टिक किट तैयार की गई।

यंत्रीकरण एवं ऊर्जा प्रबंध

वर्ष 2016–17 के दौरान परिषद द्वारा फार्म यंत्रीकरण में सुधार के लिए 53 प्रकार के उपकरण और यंत्र विकसित किए गए जिनमें प्रमुख हैं: धान के भूसे के प्रबंध एवं गेहूं की बुवाई के लिए मशीन; कम भार वाला धान गहाई व सफाई यंत्र; गौण व मोटे अनाजों के लिए पॉवर चालित निराई–गुडाई यंत्र के लिए एटैचमेंट के रूप में स्टेम एप्लीकेटर; गन्ने की एकल कली प्रौद्योगिकी के लिए यंत्रीकरण पैकेज; बैलों से चलने वाला गन्ना तथा हल्दी के लिए मिट्टी पलटने व निराई–तुडाई करने वाला यंत्र; कपास व सोयाबीन के लिए पशु चालित उपस्करों का पैकेज; फार्म संबंधी कार्यों के लिए एक बैल से चलने वाले उपस्करों का पैकेज। परिषद के संस्थान केन्द्रीय मात्स्यिकी प्रौद्योगिकी संस्थान (CIFT), कोच्चि द्वारा एक 19.75 मीटर आकार का बहुद्देश्यीय ऊर्जा की दृष्टि से दक्ष मत्स्यन पोत, एफबी सागर हरिता का जलावतरण किया गया।

क्षमता विकास

इस वर्ष भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने किसानों तक गुणवत्तापूर्ण सामग्री पहुंचाने के कार्य को गति प्रदान करते हुए 3.39 लाख क्विंटल गुणवत्तायुक्त बीज, 820.31 लाख गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्री तथा जैव उत्पाद; जैव नाशकजीवनाशी (609 क्विंटल); जैव उर्वरक (5,509 क्विंटल); केंचुए की खाद या वर्मीकम्पोस्ट, खनिज मिश्रण आदि तैयार करके किसानों को आपूर्ति की गई। किसानों के लिए कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा प्रौद्योगिकी सप्ताह का आयोजन किया गया जिससे लगभग 20.60 लाख किसानों, कृषिरत महिलाओं, प्रसार कार्मिकों, ग्रामीण युवाओं और स्वयं सहायता समूहों के सदस्यों को लाभ पहुंचा। किसानों को कुल 56,107 एसएमएस भेजे गए जिनसे कृषि संबंधी विभिन्न पहलुओं पर लगभग 155.22 लाख किसानों को सहायता मिली। राष्ट्र को दलहन के मामले में आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में किसानों की भागीदारी के साथ देशभर में दलहन बीज हब स्थापित किए जा रहे हैं। अंतर्राष्ट्रीय दलहन वर्ष–2016 को सफलतापूर्वक मनाते हुए देशभर में कुल 150 दलहन बीज हब स्थापित किए गए जो कि भविष्य में राष्ट्र को दलहन उत्पादन के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने में महत्वपूर्ण हैं।

इसके अलावा, कृषि क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ाने की दिशा में अक्तूबर, 2016 में नई दिल्ली में समन्वय इकाई के साथ ब्रिक्स अनुसंधान प्लेटफार्म की स्थापना करने के लिए एक उल्लेखनीय समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। इस इकाई का प्रबंधन डेयर, भारत सरकार द्वारा किया जाएगा। दिनांक 6 नवम्बर, 2016 को आयोजित प्रथम अंतर्राष्ट्रीय कृषि जैव विविधता कांग्रेस में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की उपस्थिति समग्र कृषि वैज्ञानिक समुदाय के लिए प्रेरणास्त्रोत बनी।

राष्ट्र डिजिटल क्रान्ति की ओर अग्रसर है और इसमें परिषद द्वारा अपना योगदान दिया जा रहा है। परिषद में वित्तीय लेन–देन के ई–मोड को अपनाया जा रहा है। किसानों की पहुंच अब ''किसान पोर्टल'', मोबाइल आधारित किसान मोबाइल एडवाइजरी –केएमए एसएमएस पोर्टल, टोल फ्री हेल्पलाइन, विभिन्न जिंसों पर आईसीएआर डाटा सेंटर एवं मोबाइल ऐप तक है। इस वर्ष पूसा कृषि – प्रौद्योगिकी मोबाइल ऐप, दलहनी फसलों के लिए विशेषज्ञ प्रणाली "PulseExpert" मोबाइल ऐप जारी किया गया। कृषि विज्ञान केन्द्रों में ई–कनेक्टिविटी सुविधा, किसान चौपाल, किसान पोर्टल और किसान कॉल सेन्टर पहले से ही कार्य कर रहे हैं।

KRISHI
www.krishi.icar.gov.in

कृषि शिक्षा

देश में कृषि की भावी संभावनाओं को बेहतर बनाने की दिशा में उच्चतर कृषि शिक्षा एक महत्वपूर्ण विषय है। इस दिशा में अनेक नवोन्मेषी पहल यथा स्टूडेन्ट रेडी तथा आर्या को क्रियान्वित किया जा रहा है। कृषि शिक्षा को प्रोत्साहन देने के लिए वर्ष 2016–17 में रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय के अंतर्गत चार नए कॉलेज खोले गए हैं। केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, इम्फाल के अंतर्गत छः नए कॉलेज खोले गए हैं जिससे यहां कुल कॉलेजों की संख्या

बढ़कर 13 हो गई है। इस बार के बजट में कृषि में उच्चतर शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए यूजीसी में सुधार लाने और कॉलेजों तथा संस्थानों को कहीं अधिक स्वायत्तता देने की घोषणा की गई है। इस वर्ष एक नई पहल करते हुए कृषि स्नातक पाठ्यक्रमों को आय उन्मुख बनाने की दिशा में पाचवीं डीन समिति की सिफारिशों को मंजूरी दी गई है। डीन समिति की सिफारिशें शैक्षणिक सत्र 2016–17 से लागू हो जाएंगी। इस नए पाठ्यक्रम के आने से कृषि स्नातक पाठ्यक्रम भी पेशेवर हो जायेंगे जो भविष्य में छात्रों को अपनी आजीविका कमाने के लिए अनुकूल हो जाएंगे। वर्ष 2016–17 में ही कृषि शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए पंडित दीनदयाल उपाध्याय उन्नत कृषि शिक्षा योजना प्रारंभ की गई जिसमें 5.35 करोड़ रूपये के बजट के साथ कुल 100 केन्द्र खोले जा रहे हैं।

इसके अलावा, केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालयों की स्थापना हेतु दिशा–निर्देश तैयार किए गए हैं और उन्हें संसद के पटल पर प्रस्तुत किया गया है। इस शैक्षणिक वर्ष के दौरान राज्य कृषि विश्वविद्यालयों एवं मानद विश्वविद्यालयों के पीएच.डी. कार्यक्रम में पहली बार 25 प्रतिशत सीटों के लिए केन्द्रीकृत प्रवेश की शुरूआत की गई है। संसद के अधिनियम के माध्यम से बिहार राज्य द्वारा संचालित राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, पूसा को डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय में परिवर्तित किया गया। कृषि विश्वविद्यालयों में अनुभवजन्य लर्निंग इकाइयों की संख्या बढ़ाकर 416 की गई। इससे ''करते–करते सीखना (Learning by Doing)'' कार्यक्रम को मदद मिलेगी जो कि अब पाठ्यक्रम का एक अभिन्न अंग है। कृषि शिक्षा में यूजी छात्रों की स्कॉलरशिप को 1000 रूपये से बढ़ाकर दोगुना अर्थात् 2000 रूपये प्रतिमाह किया गया है। देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की याद में दिनांक 3 दिसम्बर को कृषि शिक्षा दिवस घोषित किया गया।

कृषि शिक्षा दिवस का आयोजन

कृषि विस्तार

किसानों तक विज्ञान की पहुंच स्थापित करने में कृषि विस्तार की भूमिका को महत्व देते हुए वर्ष 2016–17 में कुल 27 नए कृषि विज्ञान केन्द्र अनुमोदित किए गए हैं जिससे अब कृषि विज्ञान केन्द्रों की संख्या पिछले वर्ष के 642 के मुकाबले बढ़कर 669 हो गई है। इस बार के केन्द्रीय बजट में देश के 648 कृषि विज्ञान केन्द्रों में मिट्टी की जांच के लिए मिनी लैब स्थापित करने की घोषणा की गई है। सभी कृषि विज्ञान केन्द्रों को सॉयल टेस्टिंग किट प्रदान की गई है। इन प्रयासों से निश्चित तौर पर किसानों को अपने खेत की मिट्टी की जांच कराने में आसानी होगी और इसके परिणामस्वरूप मिट्टी में आवश्यतानुसार संतुलित रूप से उर्वरकों का प्रयोग करने में मदद मिलेगी। इससे ''स्वस्थ धरा – खेत हरा–भरा'' की अवधारणा को बल मिलेगा। देश में अग्रिम पंक्ति प्रसार प्रणाली के तौर पर कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा अति महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जा रही है। वर्ष 2016–17 में कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा कुल 48,983 प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाये गये जिनके माध्यम से कुल 13.21 लाख किसानों व प्रसार कार्मिकों को लाभ पहुंचाया गया। कुल 1.74 लाख ग्रामीण युवकों के लिए भी प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा 1.042 लाख प्रसार कार्मिकों के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम चलाए गए जिनमें 22,889

(22 प्रतिशत) महिला प्रतिभागी थीं। उन्नत तकनीकों के बारे में किसानों को जानकारी देने और उन्हें समय से परामर्श सेवा प्रदान करने के लिए कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा कुल 4.69 लाख प्रसार कार्यक्रम चलाए गए जिनमें 198.67 लाख प्रतिभागियों ने हिस्सेदारी की।

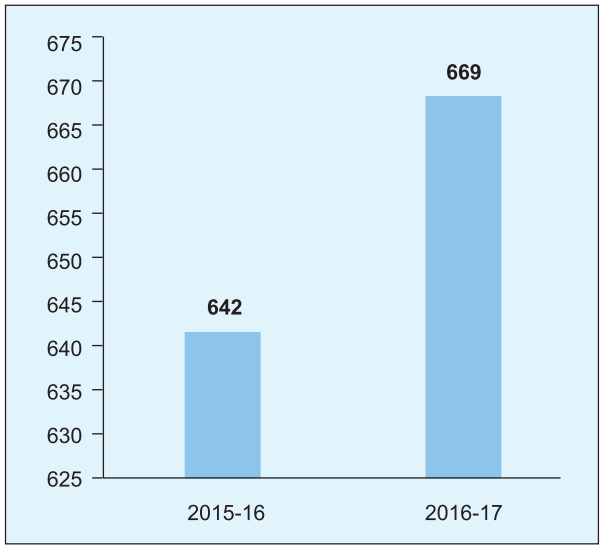

किसानों तक विज्ञान की पहुंच स्थापित करने के लिए एक नया कार्यक्रम 'मेरा गांव – मेरा गौरव' प्रारंभ किया गया था जिसके तहत 4 वैज्ञानिकों के एक समूह द्वारा 5 गांवों को अंगीकृत किया जाता है और वहां किसानों को कृषि संबंधी परामर्श एवं जानकारी उपलब्ध कराई जाती है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत वैज्ञानिकों द्वारा 10,712 गांवों का दौरा करके वहां किसानों को खेती संबंधी परामर्श सेवा प्रदान की गई। इस नवीन पहल से 'किसान के द्वार – विज्ञान का प्रसार' की अवधारणा को निश्चित रूप से बल मिला है।

आने वाले समय में हमें किसानों की आय को दोगुना करने के संकल्प में सहयोग करते हुए कृषि की लागत में कमी लाने वाली तकनीकों व औजारों को विकसित करने और

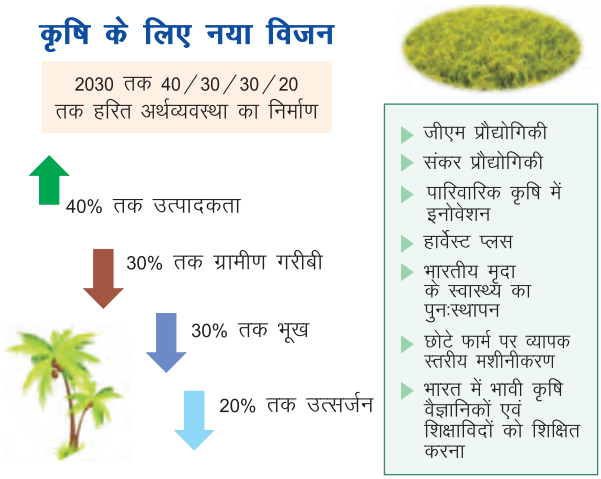

पानी की बचत करने वाली तथा जलवायु परिवर्तन के अनुकूल उन्नत किस्मों को विकसित करने पर ध्यान केन्द्रित करना होगा। हमारा प्रयास यह रहेगा कि विकसित तकनीकों व उन्नत किस्मों का लाभ दूर–दराज व दुर्गम स्थानों पर बैठे किसान भाइयों तक पहुंचे जिसके लिए परिषद द्वारा नया विजन तैयार किया गया है।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने 88 वर्षों की यात्रा को पूरा कर लिया है। अगले 12 वर्षों में हमें अपने प्रयासों को दोगुना करने की जरूरत है ताकि देश के हर किसान को परिषद प्रणाली के अंतर्गत सीधे तौर पर शामिल करते हुए लाभ पहुंचाया जाए। किसानों तक परिषद की पहुंच को बढ़ाने के लिए हमारे प्रयास अविरलता के पथ पर अग्रसर हैं। परिषद के लगातार अथक प्रयासों से इस संभावना को बल मिला है कि आने वाले समय में निश्चित रूप से कृषि की बेहतरी और किसानों की खुशहाली बढ़ेगी जिससे कि राष्ट्र समृद्धि की दिशा में आगे बढ़ेगा। देश की कृषि बढ़ेगी तभी देश सफलता के नए आयाम हासिल कर सकेगा। इस सफलता के लिए हम सबको अपने सकारात्मक प्रयासों में तेजी लाने की जरूरत है और ऐसा करके ही हम सही मायनों में राष्ट्र समृद्धि में अपना योगदान कर सकेंगे।

भगवान, हमारे निर्माता ने हमारे मस्तिष्क और व्यक्तित्व में असीमित शक्तियां और क्षमताएं दी हैं। ईश्वर की प्रार्थना हमें इन शक्तियों को विकसित करने में मदद करती हैं।

–ऐ.पी.जे अब्दूल कलाम

खुम्ब-एक पौष्टिक एवं स्वास्थ्यवर्धक आहार

डॉ. बृज लाल अत्री*

खुम्ब की पौष्टिकता, औषधीय गुणों व आय के उत्तम साधन के लिए विश्व भर में 100 से अधिक देश इसका उत्पादन कर रहे हैं। विश्व के कुल खुम्ब उत्पादन (36 मिलियन मीट्रिक टन) का 70 प्रतिशत (25–26 मिलियन मीट्रिक टन) से अधिक चीन में पैदा हो रहा है जबकि भारत में यह मात्र 5 लाख टन है। खुम्ब की खपत विश्व में 2–3 कि.ग्रा., चीन में 10–12 कि.ग्रा. जबकि भारत में यह मात्र 40–50 ग्रा. प्रति व्यक्ति प्रतिदिन है। भारत में 20 तरह के खुम्ब की खेती की जा रही है लेकिन 80–90 प्रतिशत हिस्सा श्वेत बटन खुम्ब का है। खुम्ब एक प्रकार का फफूंद है जिसमें से अनेक चिरकाल से खाने के लिए इस्तेमाल की जा रही हैं हालांकि कुछेक जहरीली भी होती हैं। विश्व भर में खुम्ब के स्वाद एवं प्रभावशाली पोषक तत्वों का आनन्द लिया जाता है। किसी भी खाद्य पदार्थ की गुणवत्ता उसमें मौजूद पौष्टिक तत्वों के कारण होती है इसीलिए सर्वसाधारण लोगों को खुम्ब के बारे में अवगत कराना अत्यावश्यक है। खुम्ब की बड़े पैमाने पर सराहना न केवल इनके पोषक तत्वों के कारण होती है बल्कि ये जानवरों, दालों तथा खाद्यान्नों में पाए जाने वाले तत्वों की पूर्ति भी करते हैं। इन्हें सब्जी संसार का मांस कहा जाता है। ये अंधेरे, सीलन वाली जगहों तथा खाद्य स्रोत के ऊपर पाए जाते हैं इनका उपयोग विश्व के सभी स्थानों तथा व्यंजनों में किया जाता है। खुम्ब पोषक तत्वों की खान है जिसमें अनेक कार्बोहाइड्रेटस, प्रोटीन, वसा, विटामिन, प्रति–ऑक्सीकारक के अलावा सेलेनियम, कॉपर, पोटाशियम प्रचुर मात्रा में तथा लौह, मैगनीशियम, जिंक व मैगनीज कम मात्रा में पाया जाता है। यह कम ऊर्जा का स्रोत है जिसमें पानी (90 प्रतिशत), शुष्क अवयन (10 प्रतिशत), वसा (0.6 प्रतिशत), प्रोटीन (2.5–3.0 प्रतिशत), कार्बोहाइड्रेटस (4–6 प्रतिशतः), रेशा (1.0 प्रतिशत) तथा भस्म (1.0 प्रतिशत) पाए जाते हैं। मानव शरीर में कॉलेस्ट्रॉल को कम करने के साथ–साथ ये गठिया, खून की कमी, बाल, नाखून तथा दांत की सुरक्षा, हड्डियों की मजबूती, कैंसर से सुरक्षा, शरीर में इन्सुलिन की मात्रा की विनियमितता तथा रक्तचाप को नियन्त्रण करने में सहायता करते हैं। खुम्ब में प्रचुर मात्रा में पाच्य रेशा भी पाया जाता है जो कि कब्ज जैसे विकारों को दूर करने में सहायता करता है। खुम्ब की विभिन्न प्रजातियों में पाए जाने वाले पोषक तत्व तालिका 1 में दिए गए हैं।

शरीर की रोगरोधक क्षमता को बढ़ाने में खुम्ब का विशेष महत्व है। दैनिक व्यंजनों में खुम्ब को मिलाकर महत्वपूर्ण तत्वों जैसे नियासिन, सेलेनियम, राइबोलेविन, पैंटोथैनिक एसिड, विटामिन डी इत्यादि की कमी को पूरा किया जा

तालिका 1: खुम्ब में पोषक तत्वों की उपलब्धता (प्रति 100 ग्रा.)

पोषक तत्व	खुम्ब			
	श्वेत बटन	ब्राउन बटन	ऑयस्टर	शिटाके
पानी की मात्रा (प्रतिशत)	91.3	91.7	89.2	79.8
भस्म (प्रतिशत)	0.85	0.95	0.62	1.36
प्रोटीन (प्रतिशत)	1.23	1.29	0.76	0.89
कार्बोहाइड्रेटस (प्रतिशत)	6.46	5.98	9.30	17.62
ऊर्जा (कि.कै.)	30.86	25.85	39.27	72.79
रेशा (प्रतिशत)	20.90	22.40	34.10	28.80
वसा (प्रतिशत)	1.6	1.4	1.1	1.2
विटामिन डी (IU/ग्रा.)	984	885	487	205
सोडियम (मि.ग्रा./कि.ग्रा.)	501	478	209	83
पोटाशियम (प्रतिशत)	4.2	4.0	2.7	2.1
लौह (मि.ग्रा./कि.ग्रा.)	86	82	183	38
मैगनीज (मि.ग्रा./कि.ग्रा.)	8.0	7.6	7.0	17.5
जिंक (मि.ग्रा./कि.ग्रा.)	80.0	74.0	162.2	90.0
सेलेनियम (मि.ग्रा./कि.ग्रा.)	1.3	–	–	–

* डा. बृज लाल अत्री, प्रधान वैज्ञानिक, भा.कृ.अनु.प.–खुम्ब अनुसंधान निदेशालय, चम्बाघाट, सोलन (हिमाचल प्रदेश)–173213

सकता है। खुम्ब एक सम्पूर्ण, पौष्टिक एवं स्वास्थ्यवर्धक आहार है जिसके उपयोग से अनेक प्रकार के विकारों व व्याधियों को कम किया जा सकता है। मानव शरीर के तंत्रिका–तंत्र को सुचारू रूप से चलाने व मजबूती प्रदान करने में खुम्ब महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। खुम्ब में सब्जियों से अधिक प्रोटीन पाया जाता है जो कि 20 से अधिक अमीनो अम्लों से मिलकर बनती है जिनमें से 9 को आवश्यक अम्ल माना जाता है क्योंकि इनका मानव शरीर में उत्पादन नहीं होता। खाद्यान्नों जैसे गेहूं, चावल तथा दालों में क्रमशः लाइसीन तथा ट्रिप्टोफेन व मिथियोनीन तथा सिस्टीन की कमी पायी जाती है जबकि खुम्ब में ये सभी आवश्यक अमीनो अम्ल प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। कैंसर प्रतिरोधी क्षमता, खून में कॉलेस्ट्रॉल कम करना, खून में शर्करा घटाना रक्तचाप नियंत्रित करना इत्यादि खुम्ब के विशेष गुण हैं। खुम्ब विटामिन डी का एक प्राकृतिक स्रोत है जो कि स्वस्थ हड्डियों तथा दाँतों के लिए आवश्यक है।

खुम्ब में विशेष पोषक तत्व

थायमिन – यह विटामिन कार्बोहाइड्रेटस से निकलने वाली ऊर्जा को नियन्त्रण करके दिमाग व तंत्रिका–तंत्र के साधारण कार्य में सहायता करता है।

नियासिन – प्रोटीन, वसा तथा कार्बोहाइड्रेटस से निकलने वाली ऊर्जा पर नियन्त्रण जिसके कारण पाचक–तन्त्र व तंत्रिका–तंत्र को अच्छी हालत में रखने में सहायक।

राइबोलेविन – स्वस्थ लाल कणिकाओं, अच्छी दृष्टि व स्वस्थ त्वचा बनाए रखने में सहायक।

बायोटिन– प्रोटीन तथा कार्बोहाइड्रेटस के चयापचय (Metabolism) में सहायक।

पैंटोथैनिक एसिड – मानव शरीर में हॉर्मोन बनाने में सहायक।

फोलेट – रीढ़ की हड्डी में बनने वाली लाल तथा श्वेत कणिकाओं की स्वस्थ वृद्धि तथा विकास में सहायक।

खुम्ब प्रोटीन, खासकर लाइसीन, का एक मुख्य स्रोत है जिसके द्वारा भारत जैसे विकासशील अनाज आधारित देश में कुपोषण की समस्या को कम किया जा सकता है। कम वसा होने के कारण दिल के मरीजों के लिए यह एक अति उत्तम आहार पाया गया है। खुम्ब कम कैलोरी, उच्च प्रोटीन, न के बराबर स्टार्च व शर्करा के कारण मधुमेह से पीड़ित लोगों के लिए बहुत उपयोगी साबित हुआ है।

विटामिन बी–12 तथा फोलिक एसिड जो कि शाकाहारी भोजन में नहीं पाए जाते, खुम्ब में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होते हैं तथा साथ ही लौह की अधिकता के कारण खून में ह्योमोग्लोबिन को बनाए रखने में सहायता करते हैं । रेशे व क्षारीय तत्वों की अधिकता के कारण खुम्ब ऐसे लोगों के लिए वरदान हैं जो कि एसिडिटी व कब्ज की समस्या से परेशान रहते हैं। हालांकि अनेक सब्जियों में भी विटामिन पाए जाते हैं लेकिन पानी में पकाते समय ये अधिकतर नष्ट हो जाते हैं जबकि खुम्ब को बिना पानी के ही पकाया जाता है जिसके कारण मूल्यवान विटामिन बने रहते हैं। प्रति–ऑक्सीकारक (Antioxidant) जैसे सेलेनियम तथा इर्गोथायोनीन शरीर में बनने वाले स्वतन्त्र कणों (Free radicals) को बाहर निकालने में सहायक।

भारतीय भोजन, मुख्यतः अनाज आधारित, जिसमें गेहूं, चावल तथा मक्का इत्यादि शामिल किए जाते हैं, में प्रोटीन की कमी पायी जाती है। कुपोषण से ग्रस्त अपार जनसंख्या के भोजन में प्रोटीन की कमी को पूरा करने तथा स्वास्थ्य को सुधारने में खुम्ब एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। पुराने समय में खुम्ब धनाढ्य लोगों के आहार का मुख्य घटक था लेकिन इसके असीम गुणों तथा स्वास्थ्य को ठीक रखने के कारण आज यह जनमानस के खाने का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है। खुम्ब में पाए जाने वाले तत्व मानव शरीर से विषहरण करने में भी सहायता करते हैं। प्रति–ऑक्सीकारक तत्वों की वजह से मानव शरीर के उम्र बढ़ने की प्रक्रिया को नियंत्रित करने में भी खुम्ब का विशेष योगदान है। स्वस्थ आँखों, गुर्दे, मज्जा (Bone marrow), जिगर तथा चर्म इत्यादि के लिए खुम्ब का सेवन अति आवश्यक है।

खुम्ब की निधानी आयु (Shelf life) साधारण तापमान पर अल्पावधि, मुश्किल से 24 घण्टे, की होती है। इस दौरान ये बड़ी शीघ्रता से खराब होने लगती है जिसके परिणामस्वरूप उत्पादकों को भारी नुकसान उठाना पड़ता है । भारत में इस उभरते नवोदित उद्योग की सफलता के लिए यह अति आवश्यक है कि नुकसान को कम किया जाए ताकि यह पौष्टिक आहार अधिकाधिक उपभोक्ताबों तक पहुँच सके। ताजे खुम्ब की शरीरक्रिया एवं जैव–रासायनिक क्रिया में बदलाव, डिब्बाबन्दी एवं भण्डारण तथा मूल्यवर्धन तकनीकों पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। हालांकि हमारे देश में खुम्ब उत्पादन उस स्तर तक नहीं पहुंचा है तथा इसका उपयोग उत्पादन के साथ–साथ ही हो जाता है लेकिन इस उद्योग के दिन–प्रतिदिन बढ़ने तथा जलवायु परिवर्तन का असर न होने के कारण आने वाले समय में खुम्ब उत्पादन अधिक होने की सम्भावना है जिसके लिए ऐसी प्रोद्यौगिकियों की जरूरत पड़ेगी ताकि नुकसान कम से कम हो तथा भारत की बढ़ती जनसंख्या की मांग को पूरा किया जा सके । ऐसा करने से घरेलू तथा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में हमारे देश की भूमिका बहुत बढ़ जाएगी। बहुत सी गैर–सरकारी संस्थाएँ तथा उद्यमी इस उद्योग की तरफ आकर्षित हो रहे हैं जिसके कारण उत्पादन बहुत बढ़ेगा। खुम्ब की पौष्टिकता, औषधीय

गुणों एवं उपभोक्ताओं की जागरूकता के कारण इसका सेवन बढ़ी तेजी से बढ़ता जा रहा है। घटते संसाधनों जैसे जमीन व पानी तथा बढ़ती बेरोजगारी, कुपोषण इत्यादि की समस्या से निजात पाने के लिए यह महत्वपूर्ण उद्योग है जिसके लिए किसी बड़ी आधारिक संरचना की जरूरत नहीं होती है। कुछ लोग समूह बनाकर भी इस उद्योग को चला सकते हैं।

भारत में अनेक जलवायु जैसे शीतोष्ण, उपोष्ण तथा ऊष्णकटिबन्धीय होने के कारण विभिन्न प्रकार की खुम्बें उगायी जा सकती हैं। खुम्ब उत्पादन, रखरखाव तथा मूल्यवर्धन घर के अन्दर की गतिविधि होने के कारण घटते संसाधनों पर पड़ने वाले दबाब को कम करने में भी सहायक हैं। गुणवत्तापूर्ण भोजन तथा बेरोजगारी की समस्या को सुधारने के साथ–साथ पर्यावरण से जुड़े मुद्दों को भी खुम्ब उत्पादन करके सुलझाया जा सकता है। ग्रामीण क्षेत्रों के लोग खासकर युवाओं को इस उद्योग की तरफ आकर्षित कर उत्पादन को बड़े स्तर पर बढ़ाया जा सकता है। घरेलू तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर खुम्ब के व्यापार के लिए आवश्यक है कि उत्पादक गुणवत्तापूर्ण खुम्ब का उत्पादन करें जिसमें कीटनाशक अवशेष व अन्य हानिकारक तत्व न हों। खुम्ब के असाधारण पौष्टिक व औषधीय गुणों के कारण आने वाले समय में यह दैनिक आहार का मुख्य घटक बनेगा जिससे कुपोषण व अनेक विकारों तथा व्याधियों का नियन्त्रण करने में सहायता मिलेगी।

विलियम आर्थर वार्ड के अनमोल वचन

- मेरी चापलूसी करो, और मैं आप पर भरोसा नहीं करूगा, मेरी आलोचना करो, और मैं आपको पसंद नहीं करुंगा, मुझे प्रोत्साहित करो और मैं कभी आपको नहीं भूलूंगा।
- जब दूसरे व्यक्ति सोए हों, तो उस समय अध्ययन करें; उस समय कार्य करें जब दूसरे व्यक्ति अपने समय को नष्ट करते हैं; उस समय तैयारी करें जब दूसरे खेल रहे हों और उस समय सपने देखें जब दूसरे केवल कामना ही कर रहे हों।
- कुशलतापूर्वक किसी की बात सुनना अकेलेपन, वाचलता और कठशोथ का सबसे बढ़िया ईलाज है।
- अवसर सूर्योदय की तरह होते हैं, यदि आप ज्यादा देर तक प्रतीक्षा करते हैं तो आप उन्हें गंवा देते हैं।
- निराशावादी व्यक्ति पवन के बारे में शिकायत करता है; आशावादी इसका रुख बदलने की आशा करता है; लेकिन यथार्थवादी पाल को अनुकुल बनाता है।
- रतिकूल परिस्थितयों से कुछ व्यक्ति टूट जाते हैं, जबकि कुछ अन्य व्यक्ति रिकार्ड तोडते हैं।
- उपलब्धि के चार कदम उद्देश्यपूर्ण योजना बनाए, प्रार्थना के साथ तैयारी करें, सकारात्मक रुप से आगे बढ़े निरन्तर अपने लक्ष्य के लिए प्रयासरत रहें।

शूकर ज्वर-एक घातक रोग

डॉ. एस. एस. पाटील*, ए. प्रजापति*, जी. बी. मन्जुनाथ रेड्डी*, डी. हेमाद्री* एवं के. पी. सुरेश*

परिचय

शूकर ज्वर घरेलू एवं जंगली शूकरों को संक्रमित करने वाला अत्यधिक सासांर्गिक एवं आर्थिक महत्त्व का विषाणु जनित रोग है। इसे शूकर विशूचिका, शूकर महामारी, शूकर मियादी ज्वर भी कहते है। पशुओं में रोग की गंभीरता विषाणु के प्रभेद, शूकर की उम्र और प्रतिरक्षा स्तर पर निर्भर करती है। इसका तीव्र संक्रमण जो घातक प्रभेद के द्वारा होता हैं, का निदान दीर्घकालीन संक्रमण की तुलना में आसानी से किया जा सकता है क्योंकि इसमे मृत्युदर अधिक होती हैं। दीर्घकालीन संक्रमण मुख्यतः कम उग्र प्रभेद के द्वारा होता है जिसमें उत्पादकता एवं पुनरुत्पादकता में कमी आ जाती हैं। संयुक्त राष्ट्र अमरीका, कनाडा, न्यूजीलैंड, आस्ट्रेलिया तथा पश्चिम और मध्य यूरोप के मुख्य भागों को छोड़कर यह रोग विश्व के सभी भागों मे स्थानिक है।

शूकर ज्वर का मूल कारक

शूकर ज्वर फ्लेविविरीडी परिवार और पेस्टीविषाणु जाति के एक सार्थक रज्जुक वाले आर.एन.ए. विषाणुओं द्वारा होता हैं। यद्यपि विषाणु केवल एक ही सीरोप्रकार मे विद्यमान है फिर भी इसके विभिन्न प्रतिजन विविधता और उग्रता के प्रभेद खोजे जा चुके हैं। विषाणु संक्रमित शूकर के नम–स्राव, शव और ताजा मांस में तुलनात्मक ढंग से स्थायी है, लेकिन सूखे एंव पराबैंगनी किरणों से संवेदनशील होता है। पी.एच.

शूकर बेड़े में शूकर ज्वर का प्रकोप

मान 3 से कम या 11 से ज्यादा पर विषाणु तेजी से निष्किय हो जाता हैं। इसके अलावा अपमार्जक, वसा घोलक, प्रोटीएज और सामान्य विसंक्रामक से भी तुंरत निष्किय हो जाता हैं।

शूकरों मे शूकर ज्वर का संक्रमण

शूकर ज्वर पशुजन्य रोग नही है, यह निम्नलिखित प्रकार से शूकरों में संचारित होता है।

मुख द्वारा: संदूषित कच्चा या अधपका घरेलू अपशिष्ट और मांस के बने भोजन के उपभोग से तथा संदूषित सतह और वस्तु के चाटने और चबाने से शूकरों में इसका संक्रमण हो सकता है।

वायुसाल द्वारा: विषाणु बिन्दुक युक्त वायुसाल द्वारा एक बेडे से दूसरे बेडे और एक पशु से दूसरे पशु तक ले जाए जाते है। संक्रमित और स्वस्थ शूकरों को एक साथ बंद जगह पर रखने पर भी वायुसाल द्वारा संक्रमण हो सकता है।

सीधे संपर्क द्वारा: स्वस्थ शूकर संक्रमित शूकरों के संपर्क मे आने पर संक्रमित हो सकते हैं। विषाणु खुले घाव या आँख, नाक, मुख की श्लेष्म परतों के द्वारा नासिका संपर्क, घर्षण या काटने के उपरांत शरीर के अंदर प्रवेश कर सकते है।

जननीय/ऊर्ध्वाधर विधि द्वारा: संसर्ग एंव कृत्रिम गर्भाधान के समय यह विषाणु संक्रमित या संदूषित वीर्य से संचारित होता है। संक्रमित मादा शूकर अपने बच्चों को गर्भकाल के दौरान यह विषाणु संचारित कर सकती है जिसकी परिणीति दीर्घकालीन रोग का प्रारूप होती है।

वातावरण संदूषको द्वारा: यह विषाणु संक्रमित शूकरों के नाश्स्राव, रुधिर, लार, मल, मूत्र और ऊतको से तुंरत स्रवित होते है, इसलिए संक्रमित पदार्थ, वाहक (वाहन, अनुयान, कपडे और जूते) और मनुष्य (जिन्होने स्वस्थ शूकरों को संक्रमित शूकरों के बाद छुआ हो) यांत्रिक रूप से एक से दूसरे बेडे या एक से दूसरे पशु में विषाणु संचारित कर सकते हैं।

* डॉ. एस. एस. पाटील, डॉ. ए. प्रजापति, डॉ. जी. बी. मन्जुनाथ रेड्डी, डॉ. डी. हेमाद्री. एवं के. पी. सुरेश भाकृअनुप – राष्ट्रीय पशु रोग जानपदिक एवं सूचना विज्ञान संस्थान, यलहंका, बेंगलुरु– 560064

शूकर ज्वर से ग्रसित शूकर

वाहको द्वारा यद्यपि वाहको द्वारा संचालन सामान्य नही है फिर भी कीटकों के काटने से यह विषाणु यांत्रिक रूप से एक से दूसरे पशु में संचारित हो सकता है।

नैदानिक लक्षण

प्रभेद की उग्रता, शूकर की आयु और संक्रमण के मूल कारक के अनुसार रोग का उद्भवन काल 2 से लेकर 15 दिनों तक हो सकता है। वास्तविक परिस्थितियों में यह रोग 2–4 या अधिक सप्ताह पश्चात बेड़ो में प्रमाणित नही होता। शूकर अन्य लक्षण प्रदर्शित होने से पहले एक अल्पकालीन बीमारी के पश्चात् मृत हो सकते है। कम उम्र के पशु अधिक उम्र के पशुओं की तुलना मे ज्यादा ग्रसित होते है। शूकर ज्वर का ज्यादा उग्र प्रभेद अत्यधिक मृत्युदर दर के साथ तीव्र रोग, जबकि कम उग्र प्रभेद अधिक प्रतिशत मे दीर्घकालीन मन्द या अलक्षणीय संक्रमण करता है। कुछः नस्लें अन्य नस्लों की तुलना मे ज्यादा ही संवेदनशील होती हैं।

तीव्रः शूकरों मे अत्यधिक बुखार (410 से.), श्याव त्वचा, रक्तस्राव (मुख्यतः उपांगो, पेट, जांघ के भीतरी हिस्सों, कान और पूंछ में), क्षुंड बनाना, कमजोरी, सुस्ती, नेत्रश्लेष्माशोथ, भोजन में अरुचि, कभी–कभी विरेचिका, दस्त या कब्ज के लक्षण दिखाई देते हैं। शूकरों में गतिविभ्रम, कंपकंपी और विखरित चाल के भी लक्षण आ सकते है जो संस्थिति आंशिकघात मे परिर्वतित हो सकते है। रक्त विश्लेषण मे श्वेत रक्ताणु अल्पता का पता चलता है। इस प्रकार के रोग मे सामान्यतः मृत्यु एक से तीन सप्ताह में हो जाती है और रोगी मृत्युदर पूर्णांक प्रतिशत मे हो सकती है।

कम तीव्रः इस रूप मे रोग के लक्षण तीव्र रूप के समान ही होते है और सामान्यतः मंदक उग्र प्रभेद के द्वारा अधिक उम्र के पशुओं मे होता है। यद्यपि लक्षण कम गंभीर होते है फिर भी ज्वर ज्यादा दिनों तक रह सकता है। इस प्रारूप से ग्रसित संक्रमित शूकर जीवित भी रह सकता है किंतु सामान्यतः एक माह के भीतर ही मृत्यु हो जाती है।

दीर्घकालीन रूपः इसमे प्रारंभिक लक्षण तीव्र और कम तीव्र संक्रमण के समान ही होते है। ग्रसित शूकरों में सविरामी ज्वर, भोजन मे अरूचि, कब्ज य दस्त, क्षरण या अवरुद्ध वृद्धि और खल्वटता के साथ–साथ अप्रासंगिक त्वचा में विक्षति होती है जिसमे कई सप्ताह पश्चात सुधार होता है। प्रतिरक्षा दमन के कारण अन्य रोग या संक्रमण सप्ताह से महीनों के भीतर आ सकता है। यद्यपि दीर्घकालीन रूप कम संख्या में पशुओ को प्रभावित करता है फिर भी यह ज्यादा खतरनाक है क्योंकि इसमें लगातार विषाणुओं का स्राव होता है। यह रूप भी घातक हो सकता है लेकिन बहुत कम पशुओं को प्रभवित करता है।

टर्की अंडे के समान किडनी

जन्मजातः गर्भनाल के द्वारा विषाणु संचलन से गर्भपात, ममिभवन, विकृति और सुअर शावकों का मृत जन्म हो सकता है। जीवित शावक यद्यपि लाक्षणिक रूप से सामान्य होते है लेकिन मृत्यु होने तक लगातार विषाणुओं का स्राव करते रहते है। शूकर शावकों में अक्षुदा एवं सुस्ती, अवरुद्ध वृद्धि, त्वकशोथ, दस्त, नेत्रश्लेष्माशोथ, गतिविभ्रम या संस्थिती आंशिकघात जैसे मुख्य लक्षण दिखाई देते हैं। ग्रसित शूकर शावक सामान्यतः छह महीनों से ज्यादा जीवित रहते है लेकिन प्रारुपकीय एक साल के अन्दर मृत हो जाते हैं। जन्मजात संक्रमण एक ही झुडं के कुछ ही शावकों मे होता है।

शव परीक्षण

तीव्रः यदि संक्रमण के तुरन्त बाद मृत्यु हो जाती है तो कोई विक्षति नही मिलती। प्रायः बढे हुए और रक्तस्रावित लसिका पर्व, मस्तिष्कशोथ, प्लिहा के किनारे बहुकेन्द्रेकीय रोधगलन, फैले हुए रुधिर चिह्न या नीललांछन, सीरस या श्लेष्म सतह पर रक्तस्राव दिख जाते है, विशेषकर वृक्क, मूत्राशय, हृर्दयभित्ति, कंठ, श्वासनलिका, आंत, अवत्वक ऊतक, तिल्ली और शेषांत्र एवं अन्धात्र की संधि पर। सामान्यतः बहुत ज्यादा कन्ठ्शोथ परिगलन के साथ दिखाई देता है।

दीर्घकालीनः दीर्घकालीन विक्षति कम गंभीर होती है या द्वितीयक संक्रमण से छिप सकती है। प्रारुपकीय ढंग से परिगलित ऊतक या बटन नासूर, आध्रात्र और बडी आंत,

एपिग्लाटिस और स्वरकंठ मे लसिका ऊतकों की सामान्य कमी के साथ दिखाई देते है। रक्तस्राव की विक्षति सामान्यतः नही पायी जाती। रोग से जीवित बचे शूकरों की पसलियों के पर्शुकास्थूलिका संधि और लंबी हड्डियों की वृद्धि परत पर विक्षति दिखाई देती है।

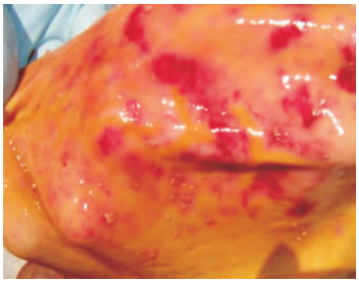

आंतों मे बने बटन अल्सर

शूकर ज्वर का निदान

जिन शूकरों मे टीकाकरण नही हुआ है और जिन्हें बिना पका हुआ शूकर आहार दिया गया है, ज्वर के लक्षण के लिए संदेहासात्मक हो सकते हैं। चूंकि बहुत से अन्य रोगों मे भी यही चिकित्सकीय लक्षण दिखाई देते हैं इसलिए प्रयोगशाला से सटीक निदान की सलाह दी जाती है।

प्रयोगशालीय परीक्षण रक्त या ऊतक नमूनों में विषाणु, प्रतिरक्षी, प्रतिजन या न्यूक्लिक अम्ल की खोज पर निर्भर करता हैं।

विषाणु प्रतिजनः प्रतिदीप्ति प्रतिरक्षी परीक्षण, प्रतिरक्षी पराक्साइड परीक्षण, एलाइजा

प्रतिविषाणु प्रतिरक्षीः एलाइजा

विषाणु पृथक्करणः पीके 15 कोशिका लाइन (शूकर वृक्क)

विषाणु न्यूक्लिक अम्लः पी.सी.आर. और इन सिटू संकरण विधि

कौन –कौन से अन्य रोगों का संदेह हो सकता हैं ?

शूकर ज्वर की चिकित्सकीय एवं सकल विकृति बहुत से अन्य रोगों के साथ साझा करती हैं। इसलिए प्रयोगशाला के विभेदीकरण निदान में निम्नलिखित रोगों का भी ध्यान रखना चाहिए।

विषाणु जनित रोग

- अफ्रीकन शूकर ज्वर
- शूकर डर्मेटाइटीस, नेफ्रोपेथी सिंड्रोम
- शूकर रिप्रोडक्टीव एवं रिस्पायरेटरी सिंड्रोम
- बोवाइन वायरल डायरिया
- स्यूडोरेबीज

जीवाणु जनित रोग

- इरिसिपिलास
- साल्मोनेलोसिस
- लेप्टोस्प्राइरा

महामारी के दौरान कौन–कौन सी कार्रवाई करनी चहिए?

- संक्रमित और संदेह संक्रमित बेडों में लोगों के आवागमन पर रोक लगानी चाहिए
- शूकर या शूकर के किसी उत्पाद की आवाजाही को स्वीकृति नही देनी चाहिए
- सभी संक्रमित और संक्रमित पशुओं के संपर्क मे आए पशुओं का मानवीय ढंग से वध करना चाहिए
- पशुशव, पशुउत्पाद और संक्रमित बिछावन को जलाना चाहिए या पर्याप्त मात्रा मे चूने के साथ गाड देना चाहिए
- पशुओं को बेडों में तब तक नही लाना चाहिये जब तक कि उचित सफाई और विसंक्रमण समाप्त ना हो जाए
- यदि टीकों का इस्तेमाल करना हो तो केवल स्वस्थ एवं असंक्रमित शूकरों पर ही करना चाहिए

कौन–कौन से नमूनें प्रयोगशाला मे निदान के लिए भेजने चाहिए?

- ज्वरीत एवं सामान्य शूकरों से अपूतिक रक्त नमूना (ईडिटीए में)
- टीकाकृत और ग्रसित पशुओं का सीरम
- टान्सील, लसिका पर्व (ग्रसनी, आन्त्र्योजनी, उर्ध्वहनु, वृक्क), तिल्ली, वृक्क और शेशांत्र के ऊतक बर्फ में

शूकर ज्वर की रोकथाम कैसे करे ?

बेडों के स्तर परः

- बेडों में प्रवेश निषिद्ध करे। प्रवेश द्वार की संख्या कम करने के साथ–साथ वाहनों की संख्या और लोगो के प्रवेश एवं निकास को भी नियत्रित करे
- केवल अधिकृत व्यक्तियों को आदेश के बाद ही जाने देना चाहिए और संक्रमित बेडों के संपर्क में आए व्यक्तियों के प्रवेश को रोक देना चाहिए

व्यक्तिगत स्तर परः

- केवल आवश्यक कर्मचारियों को बेडों मे कार्य करने की अनुमति देनी चाहिए
- अन्य बेड़ों के शूकरो के संपर्क मे आए कर्मचारियों के लिये कडे जैव सुरक्षा के मानको का पालन किया जाना चाहिए
- कर्मचारियों को रोग के आवागमन और प्रसार की रोगथाम मे उनकी भूमिका के लिए शिक्षित करना चाहिए
- जूतों की सफाई और विसंक्रमण के लिए फुटबाथ का नियमित इस्तेमाल करना चाहिए

वाहन संबंधी:

- अपने बेड़ो मे यातायात को कम से कम करें और केवल उन्हीं वाहनो को प्रवेश दें जो कार्य संपादन के लिए आवश्यक हों
- वाहन के प्रवेश से पहले और जाने पर उसकी सफाई और विसंक्रमण करें
- विभिन्न बेड़ो और जगहों के साजोसामान और वाहन को साझा ना करें
- वाहनों को भरने से पहले और खाली होने के बाद पूरी तरह से सफाई करें और विसंक्रमित करें

पशु संबंधी:

- पशुओं का किसी भी प्रकार के रोग लक्षण के लिए समय समय पर निरीक्षण करें
- पशुओं को जंगली जानवरों के संपर्क में आने से रोकें
- बीमार पशु को झुंड से अलग कर के अपने निजी पशु चिकित्सक से तुरंत संपर्क करें
- अलग किए हुए पशु के लिए अलग सुविधाएं, साजो–सामान और कर्मचारी रखें
- बेडों मे आए हुए पशु के स्वास्थ्य परिमाप और मूल स्रोत के बारे मे जानकारी रखें
- पशुओं के आवागमन का पूरा और सटीक लिपिसंग्रह रखें
- शूकर आहार मे शूकरों का जूठा नहीं होना चाहिए और उसे 65.5 से 71.0 से. पर 30 मिनट तक उबालकर तथा फिर ठंडा करके ही खाने को देना चाहिए
- जो कुछ भी पशु की विष्ठा और पशुस्राव के संपर्क में आया हो उसे साफ और विसंक्रमित करना चाहिए

सफाई और विसंक्रमण कैसे करें ?

शूकर ज्वर का विषाणु सूखेपन और सूर्यकिरणों के लिए संवेदनशील होता है। यह विषाणु पी.एच मान 3 से कम या 11 से ज्यादा पर तेजी से निष्क्रिय हो जाता है। विषाणु को निष्क्रिय करने के लिए निम्नलिखित विसंक्रामक प्रयोग में लाये जा सकते हैं।

- क्रिसाल
- सोडियम हाइड्रॉक्साइड
- फार्मेलिन
- सोडियम कार्बोनेट
- आयनिक एवं नॉन आयनिक अपमार्जक
- तीव्र आयनोफोर

सुचारू सफाई की प्रक्रिया

- सुरक्षात्मक दस्ताने, तहबंद पहनें
- दृष्टिगोचर गंदगी को खुरचकर, झाडकर और पोंछकर निकाल दें
- उस जगह को गर्म पानी और अपमार्जक से तर कर दें
- तर होने के बाद, सबसे गंदे भाग से शुरूआत करके पोछा लगाए, फुहार करे तथा साफ करें
- दाबकृत पानी से उस भाग की सफाई करें
- विसंक्रमण प्रक्रिया को पूरा करने के लिए उस भाग को सुखा दें

सुचारू विसंक्रमण की प्रकिया

- मिलावट से पहले उत्पाद पर दिए गए लेबल को पढें और उपयोग करने से पहले उचित सुरक्षा उपाय करें
- उचित सांद्रता और समय के साथ उस जगह को विसंक्रमित करें
- पुनः उपयोग मे लाने से पहले उस भाग को पूरी तरह सुखा लें।

क्रोध एक प्रचंड अग्नि है, जो मनुष्य इस अग्नि को वश में कर सकता है, वह उसको बुझा देगा। जो मनुष्य अग्नि को वश में नहीं कर सकता, वह स्वयं अपने को जला लेगा।

– महात्मा गांधी

छोटे किसानों के लिए सहायक व्यवसाय के रूप में सिंघाड़े की खेती

आशीष कुमार प्रुष्टि*, पूनम कश्यप* एवं आजाद सिंह पंवार*

परंपरागत खेती के अलावा अब किसान मौसमी फलों की भी पैदावार करने लगे हैं। इसी कड़ी में सिंघाड़े की खेती कम समय एवं कम लागत में अधिक आय देने वाली सहायक व्यवसाय के रूप में उभर रही है। इससे किसानों को जहां मुनाफा हो रहा है, वहीं उनकी आर्थिक स्थिति में भी सुधार होने लगा है। भारत में कई किसान इसे नकदी फसल के रूप में उगाते हैं। आमतौर पर तालाबों में वर्ष के आधे भाग में मछली पालन के पश्चात् बाकी आधे समय में सिंघाड़ा उगाया जाता है। सिंघाड़े की खेती अब अधिक मुनाफे की खेती होती जा रही है क्योंकि इसकी मांग बढ़ रही है। सिंघाड़े का आटा व्रत में खाया जाता है और इसका मूल्य भी अच्छा मिलता है।

सिंघाड़े के प्रकार

सिंघाड़ा कई रंगों का होता है जैसेः गाढ़ा गुलाबी, गाजरी और काले रंग का। इस फल में दो सींगनुमा कांटे होते हैं। यह फल पानी में ही उगता है। इसकी जड़ें पानी के भीतर दूर तक फैलती हैं। इसके पत्ते तीन अंगुल चौड़े कटावदार होते हैं जिनके नीचे का भाग लालिमा लिए होता है। फूल सफेद रंग के होते हैं। फल तिकोने होते हैं जिनकी दो नोकें कांटे या सींग की तरह निकली होती हैं। बीच का भाग खुरदरा होता है। छिलका मोटा परन्तु मुलायम होता है जिसके भीतर सफेद गूदा या गिरी होती है।

सिंघाड़े के फल

सिंघाड़े का पौध रोपण एवं देखभाल

सिंघाड़े को तालाबों और जलाशयों में रोपकर लगाया जाता है। बारिश के बाद तालाब में पानी भर जाता है, पानी में उतर कर बेल की जड़ों को जमीन के अंदर दबा दिया जाता है। धीरे–धीरे पानी की सतह पर बेलें फैल जाती हैं। इसकी जड़ें पानी के भीतर दूर तक फैलती हैं। इसके लिये पानी के भीतर कीचड़ का होना आवश्यक है, कंकरीली या बलुई जमीन में यह नहीं फैल सकता। एक एकड़ तालाब में करीब तीन हजार रुपये कीमत की पौध डालनी पड़ती है। सिंघाड़े का बीज नर्सरी में डालकर पौधे तैयार करते हैं। जुलाई के प्रथम सप्ताह में पौध तैयार होती है। बरसात आने पर जुलाई में सिंघाड़े का पौध रोपण 3–4 फीट गहरे पानी में तालाब के तल में लगाना चाहिए। जून, जुलाई और अगस्त महीने तक किसान इसकी रोपाई कर सकते हैं। इसके बाद इसे तैयार

तालाब में सिंघाडे की रोपाई

*आशीष कुमार प्रुष्टि, पूनम कश्यप एवं आजाद सिंह पंवार, भारतीय कृषि प्रणाली अनुसंधान संस्थान, मोदीपुरम, मेरठ – 250 110 (उ०प्र०)

करने के दौरान डी.ए.पी. व जैविक खाद डालनी पड़ती है। फसल को बीमारियों से बचाने हेतु समय रहते उसकी पहचान कर कीटनाशक का भी प्रयोग किया जाता है। करीब तीन से चार महीने में फसल तैयार होती है। सितम्बर महीने से सिंघाड़े के पौधों में फल लगने शुरू हो जाते हैं और अक्टूबर से लेकर जनवरी तक पौधे से सिंघाड़े निकलते रहते हैं। फलों के अंकुरण हेतु पानी का तापमान 12 से 15 डिग्री सेन्टीग्रेड रहना जरूरी होता है, जबकि फूल के विकास के लिए 20 डिग्री सेन्टीग्रेड तापमान की आवश्यकता होती है। सर्दियों में कम तापमान फसल के उत्पादन के लिए उत्तम होता है । एक एकड़ में सिंघाड़े का उत्पादन करीब 40 क्विंटल तक होता है। सिंघाड़े का हरा फल 15 से 20 रूपए प्रति किग्रा तक बिकता है। सिंघाड़े की सूखी गिरी की कीमत 100 रूपए से लेकर 120 रूपए प्रति किग्रा तक भी पहुंच जाती है।

सिंघाड़ा सह मछली उत्पादन

छोटे–छोटे तालाबों जिनकी गहराई 1 से 2 मीटर रहती है उनमें सिंघाड़े की खेती के साथ–साथ मछली पालन भी किया जा सकता है। सिंघाड़े की खेती से जहां मछलियों को अतिरिक्त भोजन प्राप्त होता है, वहीं मछली पालन सिंघाड़े की वृद्धि में सहायक होता है। सिंघाड़े की पत्तियां एवं शाखाएं जो समय–समय पर टूटती हैं वे मछलियों के भोजन के काम आती हैं। ऐसे तालाबों में मृगल एवं कालबासू मछली अधिक बढ़ती हैं। पौधे का वह भाग जो मछलियां नहीं खाती हैं वे तालाब में विघटित होकर तालाब की उत्पादकता बढ़ाती हैं, जिससे प्लवकों (प्लैंकटान) की वृद्धि होती है, जो कि मछलियों का प्राकृतिक भोजन हैं।

सेहत के लिए सिंघाड़े का महत्व

प्रायः सिंघाड़े के हरे फल खाए जाते हैं। सूखे फलों की गिरी का आटा भी बनता है जिसे लोग व्रत के दिनों में फलाहार के रुप में खाते हैं। इसमें कार्बोहाइड्रेट की मात्रा अधिक होती है। यह पौष्टिकता से भरपूर होता है। प्रोटीन, विटामिन बी, सी, आयरन, कैल्शियम, मैग्नीशियम, फॉस्फोरस एवं खनिज लवण भी पर्याप्त मात्रा में मिलते हैं।

सिंघाड़े का पोषक मान (प्रति 100 ग्राम)

- पानी.....48.2 ग्राम
- प्रोटीन.....3.4 ग्राम
- वसा.....0.2 ग्राम
- कार्बोहाईड्रेट .....32.1 ग्राम
- शर्करा .....3.3 ग्राम
- रेशा .....14.9 ग्राम
- कैल्शियम.....17.6 मिलीग्राम
- जिंक.....0.4 मिलीग्राम
- आयरन.....0.7 मिलीग्राम
- सोडियम.....0.8 मिलीग्राम
- पोटैशियम.....468 मिलीग्राम
- ऊर्जा.....730 कैलोरी

सिंघाड़े के लाभकारी गुण

- ग्लूटेन मुक्त
- कम वसायुक्त एवं कोलेस्ट्रोल मुक्त
- कम सोडियम व उच्च पोटेशियम युक्त
- कैल्शियम, लोहा, जिंक और फॉस्फोरस जैसे खनिजों की भरपूर मात्रा
- रेशे की मध्यम मात्रा
- ऊर्जा का अच्छा स्त्रोत

सारांश

ग्रामीण अंचलों में निष्प्रयोज्य पड़े तालाबों व पोखरों में सिंघाड़े की खेती करके मुनाफा कमाकर किसान भाई अपनी आमदनी बढ़ा सकते हैं। इसके साथ–साथ कम पानी वाले तालाबों में बेलों को तैयार कर और उन्हें बीज के रूप में बेचकर भी अच्छा पैसा कमा सकते हैं। किसान बड़े स्तर पर इसकी खेती करने से पहले किसी छोटे तालाब में खेती करके देखें क्योंकि इसमें हर समय पानी में कार्य करना पड़ता है।

करूणा को रुई, सन्तोष को धागा, नम्रता को गांठ और सत्यता को मरोड़ बनाओ। यह आत्मा का पवित्र धागा है, तब आगे बढ़ो और इसे मुझपर डाल दो।

– गुरु नानक

हरी सब्जियों का महत्व

मनोज कुमार*

भारत जैसे कृषि प्रधान देश में ज्यादातर लोग शाकाहारी हैं, जिनके लिए सब्जियां भोजन का अभिन्न अंग हैं। सब्जियां प्रोटीन का मुख्य स्रोत होती हैं, जो हमारे शरीर को आवश्यक पोषक तत्व प्रदान करती हैं जो कि मनुष्यों की समुचित वृद्धि व विकास के लिए अति आवश्यक है। पोषक तत्वों की कमी से कुपोषण संबंधित रोग हो जाते हैं। विशेषकर बच्चों में इस तरह के रोग होने की ज्यादा संभावना होती है। कुपोषण की रोकथाम में सब्जियां महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। वे आहार को पोषक एवं संतुलित बनाती हैं। संतुलित आहार स्वस्थ शरीर के लिए आवश्यक है। एक व्यक्ति के लिए संतुलित आहार हेतु प्रतिदिन 300 ग्राम सब्जी का प्रयोग करना आवश्यक है सब्जियों का हमारे स्वास्थ्य में महत्वपूर्ण योगदान हैः–

आलू और शकरकंद में ऊर्जा प्रदान करने वाला पदार्थ जैसे कार्बोहाइड्रेट्स प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। जिसके ऑक्सीकरण से ऊर्जा उत्पन्न होती है। जिसका उपयोग शरीर की पाचन क्रियाओं में होता है। मेथी, मटर, लोबिया, ग्वार आदि में प्रोटीन काफी मात्रा में उपलब्ध होता है जो मनुष्य के शरीर के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान देता है। हरी पत्तेदार सब्जियां (जैसे पालक, चौलाई आदि) भी विटामिन की अच्छी स्रोत होती हैं इनमें से प्रमुख रूप से विटामिन 'ए' काफी मात्रा में प्राप्त होती है। इसके अलावा इनमें विटामिन बी (राइबोजिलेविन), विटामिन सी, विटामिन डी तथा विटामिन ई भी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध रहते हैं।

मेथी, पालक, गाजर, प्याज, फूलगोभी, पत्तागोभी, टमाटर, करेला आदि में खनिज पदार्थ जैसे कैल्शियम, लोहा, फास्फोरस, पोटेशियम आदि भी भरपूर मात्रा में उपलब्ध होते हैं जो हमारे शरीर की वृद्धि और विकास के लिए बहुत जरूरी है। ये सब्जियां हमारे शरीर के अनेक रोगों से लड़ने में भी सहायक सिद्ध होती है।

लहसुन टूटी हड्डियों को जोड़ने में मदद करने के साथ–साथ रक्त में कोलेस्ट्रॉल को भी नियंत्रित करता है। खीरा शीतल तथा पित्तनाशक होता है। मूली पाचन एवं रूचिवर्द्धक होती है। खरबूजा, लौकी, करेला पौष्टिक, शीतल तथा पित्तनाशक होते हैं। बैंगन और गोभी खाने से हृदय मजबूत होता है। गाजर और मेथी शक्तिवर्धक होता है। पालक और टमाटर आदि शरीर को रोगों से लड़ने के लिए रोग प्रतिरोधी क्षमता प्रदान करते हैं।

विश्व में सब्जी उत्पादन में चीन के बाद भारत का दूसरा स्थान हैं फिर भी सब्जियों की मांग दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। परंतु इन मांगों की पूर्ति में पारम्परिक कृषि पद्धतियों के समक्ष क्षेत्रीय मौसम तथा जलवायु की विषम परिस्थितियां उत्पादन में मुख्य बाधक हैं।

जब किसान मुख्य मौसम में सब्जियों का उत्पादन करते हैं तो बाजार में इन सब्जियों की भरमार होने के कारण

*मनोज कुमार, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी, हिन्दी अनुभाग, भा.कृ.अनु.प., कृषि भवन, नई दिल्ली

उत्पादकों को उनके बहुत कम दाम मिलते हैं। कई बार तो उत्पादन लागत भी नहीं मिल पाती है। उत्तर भारत के मैदानों में सर्दी के मौसम में जब तापमान बहुत कम होने लगता है तब विभिन्न प्रकार की सब्जियों का उत्पादन संभव नहीं हो पाता हैं ठीक इसी प्रकार बरसात व इसके बाद के मौसम की अनेक सब्जियों जैसे टमाटर, भिंडी, शिमला मिर्च इत्यादि को उगाने में विषाणु रोगों के कारण भारी नुकसान होता है, क्योंकि इस मौसम में विषाणु रोग को फैलाने वाले कीड़ों की बहुतायत होती है।

लेकिन यदि यही किसान इन सब्जियों को मौसम से पहले या उसके बाद में उगाए तो बाजार में उनके उत्पादन के अधिक दाम मिलते हैं। बल्कि इन बेमौसमी सब्जियों की महानगरों और शहरों में उच्च गुणवत्ता वाली सब्जियां होने के कारण मांग बढ़ती जा रही है। इन मांगों को पूरा करने के लिए आज अनेक ऐसी तकनीकें विकसित हो चुकी हैं जिनकों अपनाकर किसान सिर्फ बेमौसमी सब्जियां ही नहीं अपितु विषाणु रहित पौध व फसल उगाकर उच्च गुणवत्ता वाली सब्जियां पैदा करके अधिक से अधिक लाभ कमा सकते हैं जिन्हें संरक्षित खेती कहा जाता है। सबसे पहले कृषकों या सब्जी उत्पादकों को विभिन्न प्रकार की कम लागत वाली संरक्षित तकनीकों के बारे में भी जानकारी होनी अत्यंत आवश्यक है। ऐसी संरक्षित संरचनाएं जिनसे किसान साल भर का बेमौसमी सब्जी फसलों का उत्पादन कर सकते हैं उनमें प्रमुख हैं ग्रीन हाउस वातावरण नियंत्रित, ग्रीनहाउस जिसमें प्राकृतिक रूप से हवा का आदान–प्रदान हो, पॉलीहाउस, लो टनल इत्यादि।

संक्षेप में यह कहना असंगत नहीं होगा कि सब्जियों का हमारे जीवन में अत्यंत महत्व है। हमें अपने भोजन में सब्जियों की उचित मात्रा जरूर रखनी चाहिए जिससे शरीर स्वस्थ और निरोग रहे।

अरस्तू के अनमोल वचन

- खुशी ही जीवन का अर्थ और उद्देश्य है, और मानव अस्तित्व का लक्ष्य और मनोरथ।
- अच्छी शुरुआत से आधा काम हो जाता है।
- जन्म देने वाले माता पिता से अध्यापक कहीं अधिक सम्मान के पात्र हैं, क्योंकि माता पिता तो केवल जन्म देते हैं, लेकिन अध्यापक उन्हें शिक्षित बनाते हैं, माता पिता तो केवल जीवन प्रदान करते हैं, जबकि अध्यापक उनके लिए बेहतर जीवन को सुनिश्चित करते हैं।
- मित्र क्या है, एक आत्मा जो दो शरीरों में निवास करती है।
- शिक्षा की जड़ें भले ही कड़वी हों, इसके फल मीठे होते हैं।
- खुशी हम पर निर्भर करती है।

माही के बीहड़ क्षेत्र सुधार, उत्पादन वृद्धि एवं संसाधन संरक्षण संभावनाओं का तकनीकी एवं आर्थिक विश्लेषण

वी. सी. पांडे*, आर. एस. कुरोठे*, बी. के. राव*, गोपाल कुमार*, पी. आर. भटनागर*, राजकुमार*, विजय डी. काकड़े*, डी. दिनेश, गौरव सिंह*, ओ. पी. मीणा*

स्वस्थ समाज और देश के विकास के लिए यह नितांत आवश्यक है कि प्राकृतिक संसाधनों का न केवल विकास व संरक्षण हो, अपितु प्रत्येक घटक का संतुलन बना रहे। यदि प्रकृति के किसी भी घटक में ह्रास की वजह से असंतुलन की स्थिति उत्पन्न होती है, तो वह पर्यावरण के लिए घातक हो सकती है तथा देश व समाज के विकास को भी प्रभावित कर सकती है। उत्पादन के साथ–साथ यदि प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण की ओर ध्यान नहीं दिया गया तो भविष्य में ये समाप्त हो सकते हैं। अतः यह आवश्यक है कि उत्पादन व्यवस्था ऐसी हो जिससे अधिक उत्पादन के साथ–साथ संसाधन का संरक्षण भी हो। प्राकृतिक रूप से विकृत जमीन तथा नदी के दोनों विस्तारों में फैले बीहड़ क्षेत्र जो संसाधनों के ह्रास की दृष्टि से नाजुक क्षेत्र हैं, इस दृष्टिकोण से अधिक महत्व रखते हैं।

वस्तुतः बीहड़, वर्षा से निर्मित नालियों का एक ऐसा समूह है जो भौगोलिक कारणों के अलावा वनस्पतियों के कटाव, वर्षा की तीव्रता, पशुओं की अनियंत्रित चराई व अन्य मानवीय कार्यों से न केवल विकसित वरन तेजी से विकृत भी होता है। बीहड़ परितंत्र में प्राकृतिक संसाधन संरक्षण हेतु यह आवश्यक है कि इन कारणों को न केवल नियंत्रित किया जाए अपितु विकृत हो रहे बीहड़ परितंत्र से प्राकृतिक संसाधन के ह्रास को विभिन्न तकनीकियों से रोका जाए एवं इसकी उत्पादकता को बढ़ाया जाये। बीहड़ परितंत्र में फैली समतल व हाशियेदार जमीन कृषि उत्पादन की दृष्टि से महत्वपूर्ण परंतु संवेदनशील होती है। निरंतर होते कृषि कार्य कलापों से मृदा के क्षरण का खतरा बना रहता है, जिससे न केवल जमीन की उपजाऊ क्षमता कम होती है, अपितु निरंतर हो रहा मृदा क्षरण प्रवाह की ओर स्थित नदियों, जलाशयों एवं बाँधों की क्षमता को प्रभावित कर सकता है। अतः यह अनिवार्य हो जाता है कि न केवल बीहड़ वरन बीहड़ के चारों तरफ फैली समतल व हाशियेदार जमीन को भी उचित उत्पादन प्रणाली से संसाधनों का संरक्षण करते हुये उत्पादकता बढ़ाई जाए। वर्तमान लेख में ऐसी कुछ उत्पादन प्रणालियों की जानकारी तथा उनका आर्थिक विश्लेषण प्रस्तुत है, जो कृषक समाज व अन्य विकास में संलग्न संस्थाओं के लिए लाभकर साबित होगा।

बीहड़ जमीन में उत्पादन की अपार संभावनाएं हैं, क्योंकि इस विस्तार में मृदा की उपलब्धता तथा उसकी उत्पादन क्षमता भरपूर होती है। जरूरत यह है कृषि कार्य–कलापों से प्रभावित होती उसकी संवेदनशीलता को उचित तकनीकियों द्वारा कम से कम किया जाए तथा वर्तमान उत्पादकता को बढ़ाया जाए। माही नदी विस्तार में इन संभावनाओं को वासद स्थित केंद्र के अनुसंधान प्रक्षेत्र में जाँचा परखा गया है। मूलतः बीहड़ जमीन को गहराई, चौड़ाई व ढाल के आधार पर लघु, मध्यम एवं गहरी व तंग गली में बांटा गया है। फलस्वरूप इसके सुधार व उपयोग के तौर तरीके भिन्न होते हैं। जहाँ लघु व मध्यम गली को थोड़े सुधार के पश्चात मौसमी फसलों व फल पौधों के अंतर्गत उपयोग किया जा सकता है, गहरी व तंग गली को मुख्यतः स्थायी तौर पर पौधों व घास उत्पादन के लिए ही स्वीकार किया गया है। लघु व मध्यम गली में निम्न तकनीकियाँ उत्पादन को बढ़ावा देने में उपयोगी होती हैं।

भूमि का समतलीकरण

मूलतः बीहड़ वाली खेती योग्य जमीन ढाल वाली होती है, जिससे न केवल मृदा में समान रूप से नमी की संभावना कम रहती है। अतः समान रूप से पानी का वितरण सुनिश्चित करने के लिए खेत को सावधानी पूर्वक समतल करना आवश्यक है, जिससे पानी की गहराई खेत में एक समान बनी रहे। समतलीकरण द्वारा पादप पोषक तत्वों का बेहतर उपयोग एवं उच्च जल उपयोगी क्षमता सुनिश्चित होती है। इससे सिंचाई जल उत्पादकता, उर्वरक उपयोग दक्षता एवं

*वी. सी. पांडे, आर. एस. कुरोठे, बी. के. राव, गोपाल कुमार, पी. आर. भटनागर, राज कुमार, विजय डी. काकड़े, डी. दिनेश, गौरव सिंह, ओ. पी. मीणा, आई.सी.ए.आर. – भारतीय मृदा एवं जल संरक्षण संस्थान, अनुसंधान केंद्र, वासद–388306, गुजरात

फसल पकाव में सुधार होता है व खरपतवार दबाव भी कम होता है। विभिन्न क्षेत्रों में इस तकनीकी का प्रसारण तेजी से हो रहा है, जो इस तकनीक की स्वीकार्यता एवं वैधता को दर्शाता है।

जमीन की सतह पर फसल अवशेष (मल्चिंग)

यह तकनीक जमीन सतह पर नमी को ज्यादा समय तक बनाए रखने में उपयोगी सिद्ध होती है। जमीन की सतह पर फसल अवशेष छोड़ने से उगने वाले खरपतवारों को भौतिक बाधा भी उत्पन्न होती है। जीरो–टिलेज विधि (फसल अवशेषों के साथ) खरपतवारों के बीजों को खाने वाले परभक्षियों की मात्रा को बढ़ावा देती है जो कि खरपतवार के बीज भंड़ार को कम करने में सहायक होते हैं।

फसल विविधिकरण एवं टिकाऊ फसल प्रणालियां

संरक्षण उपाय अपनाने से सुधारी हुई जमीन पर उचित फसल प्रणाली अपनाकर इन जमीनों की उत्पादकता को न केवल बढ़ाया जा सकता है, अपितु उनसे मुनाफा भी कमाया जा सकता है। विभिन्न फसल प्रणालियां संसोधन द्वारा परखी जा चुकी हैं, इनमें से बागवानी अथवा वानिकी आधारित कृषि प्रणाली अधिक उपयोगी व मुनाफे योग्य पायी गयीं हैं।

कृषि योग्य भूमि की टिकाऊ फसल प्रणालियां

इस भूमि में संसोधन द्वारा कृषि–बागवानी प्रणाली उत्पादन, मुनाफे व वातावरण संरक्षण के हिसाब से सबसे उचित पायी गयी है।

सहजन व आंवला आधारित कृषि बागवानी व्यवस्था

माही नदी के बीहड़ विस्तार में स्थित भारतीय मृदा एवं जल संरक्षण संस्थान, अनुसंधान केंद्र, वासद के अनुसंधान प्रक्षेत्र में सहजन व आंवला आधारित कृषि–बागवानी उत्पादन प्रणाली उत्पादन व संसाधन संरक्षण की दृष्टि से कारगर सिद्ध हुई है। इस पद्धति में 75 सेमी. x 75 सेमी. x 75 सेमी.

साइज के गड्ढे 4 मी. x 16 मी. की दूरी पर बना कर नर्सरी में तैयार की हुई सहजन (CV & PKM 1) व आंवला (NA&7) की पौध वर्षा ऋतु में लगाते हैं। जुलाई माह में जमीन में उचित नमी हो जाने पर नर्सरी में तैयार 45 से 50 दिन के पौध लगाये जाते हैं। पौधे लगाने के पहले गड्ढों में गोबर की खाद (5 किग्रा.), अमोनियम सल्फेट (100 ग्राम), सिंगल सुपर फास्फेट (200 ग्राम), पोटेशियम सल्फेट (100 ग्राम) गड्ढे की मिट्टी में मिश्रित कर लेते हैं। पौधों की बीच की जगह में खरीफ में मूंग (K–851) तथा रबी में सौंफ (GF&1) नियमित फसल पद्धति से बोवाई व फसल प्रबंध करते हैं (सिंह एवं पांडे, तकनीकी प्रचार पुस्तिका)।

इसके तकनीकी–आर्थिक मूल्यांकन में पाया गया कि यह उत्पादन प्रणाली न केवल अधिक मुनाफा देती है, अपितु मृदा संरक्षण एवं वातावरण से कार्बन को मृदा में समेट कर रखती है। सहजन के साथ मूंग व सौंफ की खेती में प्रथम वर्ष ₹ 21,162 हे.–1 का खर्च होता है, जिसमें मूंग व सौंफ की बुवाई, कटाई में निवेश के अलावा सहजन व आंवला के स्थापन का खर्च शामिल है। इसके उपरान्त प्रति वर्ष सहजन में केवल छटाई व कटाई में ही खर्च (₹ 4,800 हे.–1) होता है। मूंग व सौंफ की बुवाई, कटाई में प्रति वर्ष होने वाला निवेश इसके अतिरिक्त है। इस उत्पादन प्रणाली से प्रति वर्ष फसल उत्पादन के अलावा पाँच वर्ष के दौरान प्रति हेक्टेयर 5.5 टन कार्बन, 41 किलो फॉस्फोरस तथा 53 किलो अधिक पोटाश मृदा में समाहित हुआ। इससे मृदा की उत्पादन क्षमता में बढ़ोतरी हुई। इसी तरह आंवला के सांथ मूंग व सौंफ की खेती द्वारा पाँच वर्ष के दौरान प्रति हेक्टेयर 1.3 टन कार्बन, 26 किलो फॉस्फोरस तथा 29 किलो अधिक

पोटाश मृदा में समाहित हुआ। इन फसल प्रणालियों में ₹ 2012-13 की कीमतों में शुद्ध मुनाफा क्रमशः ₹ 28,275 हे.–1 तथा ₹ 56,255 हे.–1 पाया गया (पांडे व अन्य, 2013(ब))। इस तकनीक द्वारा मृदा संरक्षण एवं मृदा स्थित कार्बन का संचयी मूल्य क्रमशः ₹ 16,901 हे.–1 तथा ₹ 4,385 हे.–1 आँका गया है।

कृषि अयोग्य भूमि में उत्पादन

संरक्षण उपाय अपनाने से सुधारी हुई जमीन जो कृषि के लिए अयोग्य हो, वानिकी उपयोग में लायी जा सकती है।

बीहड़ भूमि के उपयोग हेतु बाँस व अंजन घास आधारित उत्पादन

बाँस व अंजन घास उत्पादन प्रणाली न केवल बीहड़ के पुनर्जीवन हेतु अपितु आर्थिक रूप से भी सक्षम पायी गयी है। दुधारू पशुओं की बढ़ती जनसंख्या के मद्देनजर उपयुक्त घास चारे की बढ़ती माँग की, इस व्यवस्था से, न केवल पूर्ति की जा सकती है अपितु बांस से मिलने वाली आय का एक उत्तम स्रोत भी बन सकती है। इस व्यवस्था में बांस व अंजन घास बीहड़ जमीन के पुनर्स्थापन व उत्पादन बढ़ाने में उपयोगी सिद्ध हुआ है। इसके अंतर्गत बीहड़ जमीन की तली में बांस का रोपण तथा बीहड़ के ढाल व तली में बांस के पौधों के बीच की खाली जमीन में अंजन घास की रोपाई करते हैं। बांस का रोपण 5 x मी. x 5 मी. की दूरी पर बनाई गयी समोच्य खाई (स्टेगर्ड कंटूर ट्रेंच) अथवा गड्ढे में करते हैं तथा घास के बीज अथवा पौध को 5 x 5 से.मी. की दूरी पर लगाया जाता है। 6 मी. (चौड़ी) x 6 मी. (गहरी) x 1.8 मी. (लंबी) परिमाण की स्टेगर्ड कंटूर ट्रेंच ढाल के विरुद्ध बनाना चाहिए, खोदी हुई मिट्टी ढाल के तरफ रखनी चाहिए जिससे बरसात होने पर पानी के बहाव को स्थिरता मिले और वह ट्रेंच में इकट्ठा हो सके। ट्रेंच में बाँस के पौध को लगाने से पहले 3 मी. तक मिट्टी भर के रोप को लगाते हैं, तथा क्लोरोपाइरीफोस जंतुनाशक दवा का उपयोग कर टरमाइट के नुकसान से रोपों की रक्षा करते हैं। सामान्यतः बाँस के एक पौध से सात वर्ष पूरे होने के पश्चात औसतन 12 से 15 पुराने तथा 3 से 4 नए बांस मिलते हैं। इस तरह हर वर्ष बांस का अंकुरण होने का सात वर्ष के पश्चात पुराने बांस को काटा जा सकता है, जिससे उपयोगी इमारती लकड़ी मिलती है एवं नयी कोपलों को अंकुरित होने मौका मिलता है। वासद केंद्र में हुये अनुसंधान के अनुसार अगर 3 प्रतिशत पुराने बांस हर वर्ष काटे जाएँ, तो एक हेक्टेयर भूमि से 12 से 16 बांस प्रति वर्ष काटे जा सकते हैं। इसी तरह बीहड़ जमीन की ढाल तथा बांस के अंतर की जमीन से घास का समुचित उत्पादन मिलता है। अनुसंधान के नतीजे बताते है कि जहाँ ढाल वाली जमीन से वर्षा पर आधारित औसतन हर वर्ष 7.1 टन प्रति हेक्टेयर की उत्पादकता दर से घास मिलती है वहीं बाँस के अंतर की जमीन से शुरुआत में 1 टन प्रति हेक्टेयर की दर से घास मिलती है जो बाँस के बढ़ने पर हर वर्ष कम होती जाती है।

वासद केंद्र पर चले अनुसंधान में पाया गया है कि सात वर्ष के बांस उत्पादन में ₹16,342 की लागत आती है। प्रथम वर्ष में खर्चे की राशि सबसे ज्यादा होती है जो दूसरे वर्ष से एक तिहाई हो जाती है। हालांकि पाँचवे वर्ष के पश्चात खर्चा कम हो जाता है, मजदूरी का खर्च केवल मिट्टी के काम व देख–भाल में करना होता है। सातवे वर्ष से लगातार लगभग

12 से 16 बाँस प्रति हेक्टेयर काटे जा सकते हैं, हालांकि यह बांस के उत्पादन चक्र के दौरान वर्षा की मात्रा एवं वितरण पर निर्भर है। वासद अनुसंधान केंद्र में माही नदी के बीहड़ में यह चक्र औसतन 4 वर्ष का आँका गया है। इस अवधि के दौरान एक हेक्टेयर क्षेत्र से ₹ 3 हजार से 43 हजार तक शुद्ध कमाई प्रति वर्ष तक ली जा सकती है। 2 वर्ष की अवधि के दौरान 8% डिस्काउन्ट दर से 2.1-11 की कीमत में किए गए बाँस के रोपण के आर्थिक आंकलन में माही नदी के बीहड़ में इस उत्पादन व्यवस्था का लाभः कीमत का अनुपात 1.85 आँका गया है। इसके अलावा इस उत्पादन का शुद्ध वर्तमान मूल्य ₹ 6.1 प्रति हेक्टेयर प्रति वर्ष आँका गया। इसकी आंतरिक फायदे की दर 1.84 तथा 11 वर्ष में ही यह उत्पादन व्यवस्था अपने खर्चे को पूरा करके मुनाफा दे सकती है (पांडे व अन्य, 2013(ब))।

इसके अतिरिक्त बाँस अधारित मृदा एवं जल संरक्षण की कुछ नयी तकनीकियां माही क्षेत्र में हुये अनुसंधान में मृदा एवं जल संरक्षण की दृष्टि से काफी प्रभावशाली सिद्ध हुई हैं। इनमें क्रमबद्ध समोच्य खाइयों के साथ बाँस रोपण, बोरी बांध द्वारा समर्थित बाँस रोपण तथा बांस रोपण द्वारा निर्मित सजीव बाँध शामिल हैं (राव व अन्य, 2012)।

- क्रमबद्ध समोच्य खाइयों के साथ बाँस के वृक्षारोपण में 5 मी (चौड़ाई) x 5 मी (गहराई) x 2 मी (लम्बाई) आकार की क्रमबद्ध समोच्य खाइयां 4 मी x 4 मी की दूरी में रिक्त स्थान पर खोदी जाती हैं। खाइयों की खुदाई ढलान के विपरीत दिशा में करनी चाहिये। खुदी हुई मिट्टी वर्षा से पहले नमी की अवधारण क्षमता के लिए एक बाँध के रूप में खाई के नीचे की ओर रखी जाती है। खाई के बीच में खुदी हुई मिट्टी के साथ गोबर की खाद 1 से 3 किलो 3 सेंटीमीटर की गहराई तक अच्छी तरह मिट्टी को मिलाकर भरते है और फिर पौधा लगाने के बाद उसको दबा के जमा किया जाता है।

- बोरी बांध द्वारा समर्थित बाँस वृक्षारोपण में पोलिथीन के साथ मिट्टी के बाँधो (बोरी बंधों) की श्रृंखला का निर्माण किया जाता है। जमीन तल पर तीन पंक्तियां पोलिथीन की, मध्य में दो पंक्तियां पोलिथीन की और शीर्ष पर एक पंक्ति पोलिथीन की रख कर बाँध बनाया जाता है जिससे ढाल को स्थिर किया जा सके। बैग रखने के बाद शीर्ष पर मिट्टी एवं किनारों पर घास की रोपाई की जाती है और एक किनारे पर एक बोरी को हटा दिया जाता है। ये आउटलेट के रूप में काम करता है। प्रत्येक बोरी बाँध में बाँस के पौधे की दो पंक्तियां, एक ऊपर की तरफ और दूसरी नीचे की तरफ 2 मी. x 2 मी. दूरी से बोरी बंध को मजबूती प्रदान करने के लिए लगाई जाती हैं। बाँधों के बीच के रिक्त स्थान

पर बाँस का वृक्षारोपण 4 मी. x 4 मी. दूरी पर किया जाता है ।

- बाँस रोपण द्वारा निर्मित सजीव बाँध में बाँस के पौधों को 2 मी. x 2 मी. की दूरी पर क्रमबद्ध रीति से लगाया जाता है। ये बाँस के पौधे किसी भी मृदा एबं जल संरक्षण उपायों के बिना एक बाँध के रूप में कार्य करते हैं। एक सजीव बाँध से दूसरे सजीव बाँध को कम से कम 1 मी. की दूरी पर रखा जाता है तथा सजीव बाँध के बीच में बाँस का रोपण क्रमबद्ध रीति से किया जा सकता है। बाँस वृक्षारोपण के 4 से 5 साल बाद ये क्रमबद्ध पंक्तियॉ एक चेक बांध के रूप मे कार्य करती हैं। उस से जल का प्रवाह और मिट्टी का नुकसान कम से कम होता है। अतरू बाँस आधारित बाँस रोपण जल प्रवाह और मिट्टी के नुकसान दोनों को नियन्त्रण करने में सहायक है।
- बाँस रोपण प्रणाली में जलग्रहण क्षेत्रों का अधिकतर वर्षा जल पौधो के द्वारा शोषित कर लिया जाता है अथवा जमीन में उतर जाता है। वासद अनुसंधान प्रक्षेत्र में मिट्टी का नुकसान 20 टन हे.–1 वर्ष –1 होता था, उन मे बाँस वृक्षारोपण करने से प्रवाह की गति कम होने के कारण मिट्टी का नुकसान 1 टन हे.–1 वर्ष –1 तक कम हो गया है। माही क्षेत्र स्थित नालों में बाँस आधारित उत्पादन व संरक्षण प्रणाली के अंतर्गत किये गये प्रयोगों से पाया गया कि पोलिथीन बैग से बने मिट्टी के चेक बांधो के साथ बाँस वृक्षारोपण में 67 मि.मी. प्रवाह एवं मिट्टी का दोहन 3.78 टन/हेक्टयर/वर्ष हुआ। जबकि

क्रमबद्ध समोच्य खाइयों में बाँस रोपण प्रणाली में 104 मि. मी. प्रवाह और मिट्टी का नुकसान 5.62 टन/हेक्टयर/वर्ष हुआ जो नियंत्रण वाले नालों हुए प्रवाह (183 मि.मी.) एवं मिट्टी के नुकसान (11.72 टन/हेक्टयर/वर्ष) से कम था। 'पोलिथीन से बने मिट्टी के चेक बांधो के साथ बाँस वृक्षारोपण', 'समोच्य खाइयों के साथ बाँस वृक्षारोपण' तथा 'बाँस निर्मित लाइव चौक डैम' में लागत क्रमशः ₹ 86,160 हे.$^{-1}$, ₹ 37,500 हे.$^{-1}$, और ₹ 57,588 हे.$^{-1}$ आँकी गयी है। बांस लगाने के सात साल बाद कटाई शुरू होती है। बांस पौधरोपण के आर्थिक मापदंड बताते हैं कि 20 वर्ष में बांस का लाभ–लागत अनुपात 'पोलिथीन से बने मिट्टी के चेक बांधों के साथ बाँस वृक्षारोपण', 'समोच्य खाइयों' तथा 'लाइव चौक डैम' उपचारों में क्रमशः 2.09, 2.05 एवं 1.86 आँका गया है। इन उत्पादन प्रणालियों में प्राप्तियों की आंतरिक दर क्रमशः 19.7%, 20.2% व 19.3% पाई गयीं।

हालांकि उत्पादन व मृदा–जल संरक्षण की इन तकनीकियों का परिणाम वर्षा की मात्रा तथा वितरण पर निर्भर करता है, अनुसंधान प्रक्षेत्र में मापे गए फसल उत्पादन के स्तर पर किए गए आर्थिक विश्लेषण इन तकनीकियों की आर्थिक व्यवहार्यता को दर्शाते हैं। इन आर्थिक मापदंडों की संवेदनशीलता के विश्लेषण करने पर भी ये तकनीकियां आर्थिक रूप से व्यावहारिक पायी गई है।

वर्तमान में बीहड़ या इससे प्रभावित जमीन जहाँ वातावरण की दृष्टि से नुकसान कर रही हैं वहीं उपजाऊ जमीन की उत्पादकता को भी प्रभावित कर रही हैं। ऐसे में अगर इनको उपयोग में लाया जाए तो न केवल बाँस की खेती के आस–पास के सूक्ष्म वातावरण को अच्छा बनाया जा सकता है, बल्कि इनसे उपयोगी टिम्बर एवं घास को पैदा करके गावों में पशुओं के चारे की आवश्यकताओं को भी पूरा किया जा सकता है। बीहड़ सुधार की इस तरह की परियोजनाओं में धन अवश्य लगता है, जिनके लिए गाँव की पंचायतों को आर्थिक सहायता दी जा सकती है। खासकर महात्मा गांधी

राष्ट्रीय रोजगार गारंटी परियोजनाओं के माध्यम से बीहड़ सुधार कार्यक्रम को भी जोड़ा जा सकता है। इसके अलावा गावों को बाँस आधारित वन पर्यावरण सुधारने की दिशा में किए जा रहे प्रयास के लिए आर्थिक प्रलोभन भी दिये जा सकते हैं।

एशियाई महाद्वीप में बाँस ऐतिहासिक रूप से एक आर्थिक महत्व का उत्पाद माना जाता है। प्राकृतिक वन संपदा में हो रही लगातार गिरावट के संदर्भ में बांस एक दुर्लभ प्राकृतिक स्रोत बनता जा रहा है। इस क्षति की पूर्ति करने हेतु सार्वजनिक व निजी प्रयास करने की जरूरत है। इसके अंतर्गत बांस उत्पादन एक व्यवहार्य विकल्प के रूप में सामाजिक तथा बाजार आधारित व्यवस्था के लिए बहुत उपयोगी है।

संदर्भ

सिंह, एच. बी., पांडे, वी. सी. मध्य गुजरात में तंबाकू के स्थान पर सहजन आधारित कृषि–बागवानी की व्यवस्था. तकनीकी प्रचार पुस्तिका, केंद्रीय भूमि एवं जल संरक्षण अनुसंधान व प्रशिक्षण संस्थान, अनुसंधान केंद्र, वासद 388306, जिला आणंद, गुजरात, 11 पृष्ठ.

पांडे, वी. सी., सिंह, एच. बी., विश्वकर्मा, ए. के., कुमार, गोपाल, राव, बी. के. 2013(अ). सहजन आधारित कृषि–बागवानी व्यवस्था द्वारा अधिक मुनाफा व प्राकृतिक संसधन का संरक्षण। एम. ए. सी. कृषि जागरण, अक्तूबर, 2013 (17).

पांडे, वी. सी., कुरोठे, आर. एस., राव, बी. कृष्णा, कुमार, गोपाल 2013(ब). बीहड़ भूमि के उपयोग हेतु बाँस व अंजन घास आधारित उत्पादन का अर्थशास्त्र. एम. ए. सी. कृषि जागरण, सितम्बर, 2.13 (42).

राव, बी. कृष्णा, पांडे, वी. सी., विश्वकर्मा, ए. के., कुमार, गोपाल, कुरोठे, आर. एस., आनंद कुमार 2014. पड़त भूमि के लिए उपयोगी बाँस. कृषक जगत, 11–17 अगस्त, 2.14.

राव, बी. के., कुरोठे, आर. एस., सिंह ए. के., परंडियाल, ए. के., पांडे, वी. सी., कुमार, गोपाल (2012)। बीहड़ जमीन के सुधार एवं उपजाऊ उपयोग हेतु बाँस वृक्षारोपण आधारित तकनीकी हस्तक्षेप. के.मृ.ज.सं.अ.प्र.सं., तकनीकी बुलेटिन संख्या टी०–62 / वी.–4: 30 प.

अब्राहम लिंकन के अनमोल वचन

- हर किसी पर विश्वास कर लेना खतरनाक है; किसी पर भी विश्वास न करना बहुत खतरनाक है।
- यदि शांति पाना चाहते हो तो लोकप्रियता से बचो।
- मुझे एक पेड़ काटने के लिए यदि आप छह घंटे देते हैं तो मैं पहले चार घंटे अपनी कुल्हाड़ी की धार बनाने में लगाऊंगा।
- चरित्र एक वृक्ष है और मान एक छाया। हम हमेशा छाया की सोचते हैं; लेकिन असलियत तो वृक्ष ही है।
- अपने विरोधियों से मित्रता कर लेना क्या विरोधियों को नष्ट करने के समान नहीं है।
- इंसान जितना अपने मन को मना सके उतना खुश रह सकता है।
- जिस प्रकार मैं एक गुलाम नहीं बनना चाहता, उसी प्रकार मैं किसी गुलाम का मौलिक भी नहीं बनना चाहता, यह सोच लोकतंत्र के सिद्धांत को दर्शाती है।
- उस व्यक्ति को आलोचना करने का अधिकार है जो सहायता करने की भावना रखता हो।

भूमि उपयोग नियोजन हेतु भूमि संसाधनों का सूचीकरण और विश्लेषण

जया निरांजने सूर्या, आर. पी. यादव, एस. के. सिंह एवं अरविन्द कुमार*

भारत वर्ष विभिन्नताओं का देश है। हमारे देश में जलवायु, वनस्पति, मिट्टी, फसलों में विविधता पाई जाती है वही जीवनदायनी नदियों और खनिजों में हम संपन्नता से भरे हैं। परंतु आज ये संसाधन, जो देश के सामाजिक ताने–बाने को समृद्ध बनाते हैं वहीं गंभीर तनाव व क्षरण से जूझते जा रहे है। नैसर्गिक संसाधनों के अति दोहन, अनुचित भूमि उपयोग, गहन/सघन कृषि पद्धतियों और क्षमताओं से बाहर नई–नई तकनीकियों के लागू करने से इन सभी वंशक्रमियों संसाधनों, भूमि और पानी की गुणवत्ता में व्यापक गिरावट आ रही है। आज भूमि प्रबंधन एक बहुत बड़ी चुनौती साबित हो रही है जो उत्पाकदकता, लाभप्रदत्ता, खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु अति जरूरी होती जा रही है।

कृषि संबंधित वर्तमान आंकड़े यह संकेत देते हैं कि, देश की करीब 121 लाख हेक्टेयर (कुल भौगोलिक क्षेत्र का 37 प्रतिशत) क्षेत्र विभिन्न तरह के अपरदन से प्रभावित और ग्रसित है (ICAR&NAAS, 2010)। भारत में कुल अपक्षरण भूमि में से 55 प्रतिशत भूमि बंजर एवं 6.6 मिलीयन हेक्टेयर क्षारयुक्त/ऊसर भूमि (Salt affected Lands) के अंतर्गत है। कृषि में अनुचित पद्धतियों, ओर उपयोग के माध्यम से पोषक तत्वों, सूक्ष्म तत्वों की कमी वाली भूमि में दिन–प्रतिदिन बढ़ोत्तरी हो रही है। फसलों की उत्पादकता में गिरावट हो रही है यह स्थिति विशेषकर सिंचित क्षेत्रों में ज्यादा उभरकर आ रही है।

देश मे वर्तमान समय में खाद्यान्न उत्पादन में 2050 का लक्ष्य 455 मि. टन का है जो बढ़ती हुई जनसंख्या (1.6 बिलीयन जनसंख्या – 2050 में) को पोषण देने के लिए कठिन कार्य लगता है, वहीं सन् 2050 में फसल उत्पादन में भूमिक्षरण, शहरी विस्तार और गैर खाद्य उत्पादनों के कारण 20 प्रतिशत भूमि उत्पादन के घटने का अनुमान है (काथ प्राडीया और कपूर, 2010) इसी के साथ पूरे देश के लिए मौजूदा पानी की उपलब्धता लगभग 2000 बीसीएम से 1500 बीसीएम (अरब घन मीटर) तक घटने की संभावना का अनुमान लगाया है जो एक गंभीर चिंता का विषय है।

इन सभी उपरोक्त बातों और तथ्यों को ध्यान में रखते हुए यह जानना बहुत अनिवार्य हो गया है कि भूमिक्षरण/अपरदन से संबंधित मुद्दे जो पर्यावरण परिस्थितियों से, कृषि पद्धतियों द्वारा भौगोलिक स्थिति से कही न कहीं संबंधित है और उन्हें जानना तथा उनके मूल कारणों का पता लगना अति जरूरी है। हमारे देश में अतीत में बहुत सी योजनाए भू–संरक्षण एवं प्रबंधन हेतु लागू की गई पर स्थिति विशेष डेटा विशेषरूप से मृदा और अन्य भूमि संसाधनों के अभाव के कारण विफल रहीं। पिछले कुछ दशकों में हमारे देश में वॉटरशेड प्रबंधन, एकीकृत कृषि प्रणाली, सटीक कृषि पद्धति, उपयुक्त भूमि उपयोग और परिस्थितिकी तंत्र बहाली और संरक्षण आदि के क्षेत्र में रूचि बढ़ रही है, जो भूमि संरक्षण, भूमि अपरदन को रोकने हेतु एवं खाद्य सुरक्षा सुनिश्चितता प्रदान करने में कारगर हो सकते हैं (Singh et. al 2016)।

इन सभी योजनाओं, पद्धतियों, तकनीकियों को सुचारू रूप से चलाने हेतु – सर्वप्रथम स्थान–विशिष्ट (Site & specific) संसाधनों की जानकारी और विशिष्ट–स्थिति विशेष (situation & specific) सिफारिशों का होना अनिवार्य है। इसलिए, स्थान–विशिष्ट मृदा और अन्य भूमि संसाधनों की विस्तृत जानकारी वैज्ञानिक पद्धतियों द्वारा विस्ताार से सूचीकरण कर, उनका विश्लेषण कर इस उत्पन्न अंतर को भरा जा सकता है। इन्हीं सब बातों को ध्यान में रखकर, विस्तृत भूमि संसाधन सर्वेक्षण, एकत्रीकरण और सूचीकरण को बड़ी कुशलतापूर्वक और प्रभावी ढ़ंग से आधुनिक नवीनतम तकनीकों, उपकरणों और सुविधाओं का उपयोग कर 1:10,000 पैमाने पर विविध कृषि पारिस्थितिक उपक्षेत्र (Agro & eco-logical sub regions) में विकास खंडों/उद्देश्य ब्लॉक स्तर पर किया गया। इसका मुख्यं उद्देश्य (i) भूमि संसाधनों की सूची को विकसित (1:10,000 पैमाने पर) करनाय एवं मृदाओं

*डॉ. जया निरांजने सूर्या, डॉ. आर.पी. यादव, डॉ. एस.के. सिंह एवं श्री अरविन्द कुमार, प्रमुख वैज्ञानिक, क्षेत्रीय केन्द्र दिल्ली, केन्द्र प्रमुख, क्षेत्रीय केन्द्र दिल्ली, निदेशक, मुख्यालय, नागपुर, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी, क्षेत्रीय केन्द्र दिल्ली, भा.कृ.अनु.प.– राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण एवं भूमि उपयोग नियोजन ब्यूरो, नागपुर

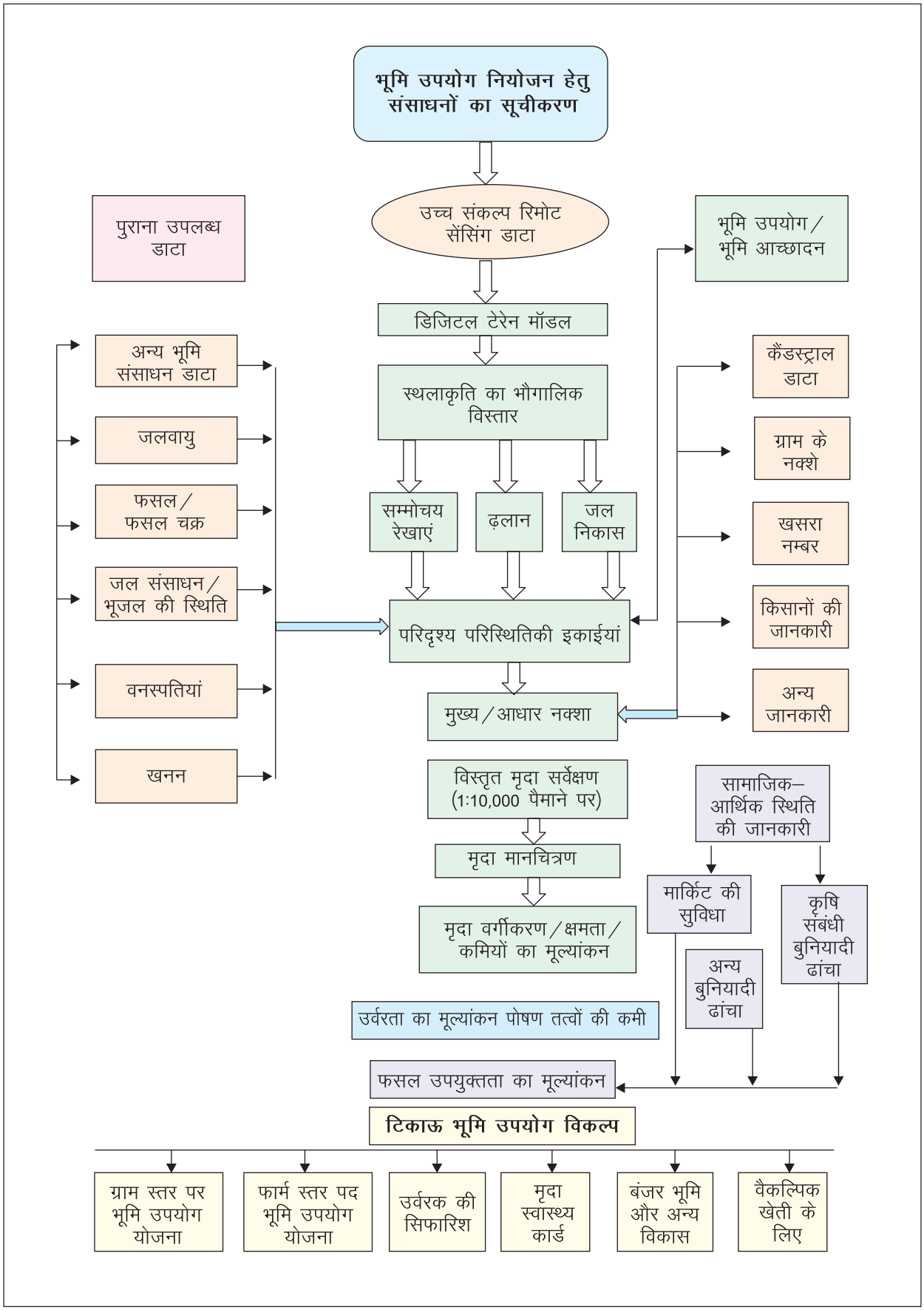
भूमि उपयोग नियोजन हेतु संसाधनों का सूचीकरण
पुराना उपलब्ध डाटा
उच्च संकल्प रिमोट सेंसिंग डाटा
भूमि उपयोग / भूमि आच्छादन
डिजिटल टेरेन मॉडल
अन्य भूमि संसाधन डाटा
जलवायु
फसल / फसल चक्र
जल संसाधन / भूजल की स्थिति
वनस्पतियां
खनन
स्थलाकृति का भौगालिक विस्तार
सम्मोचय रेखाएं
ढ़लान
जल निकास
कैंडस्ट्राल डाटा
ग्राम के नक्शे
खसरा नम्बर
किसानों की जानकारी
अन्य जानकारी
परिदृश्य परिस्थितिकी इकाईयां
मुख्य / आधार नक्शा
विस्तृत मृदा सर्वेक्षण (1:10,000 पैमाने पर)
मृदा मानचित्रण
मृदा वर्गीकरण / क्षमता / कमियों का मूल्यांकन
सामाजिक–आर्थिक स्थिति की जानकारी
मार्किट की सुविधा
अन्य बुनियादी ढांचा
कृषि संबंधी बुनियादी ढांचा
उर्वरता का मूल्यांकन पोषण तत्वों की कमी
फसल उपयुक्तता का मूल्यांकन
टिकाऊ भूमि उपयोग विकल्प
ग्राम स्तर पर भूमि उपयोग योजना
फार्म स्तर पद भूमि उपयोग योजना
उर्वरक की सिफारिश
मृदा स्वास्थ्य कार्ड
बंजर भूमि और अन्य विकास
वैकल्पिक खेती के लिए

भूमि सूची पद्धति

और अन्य भूमि संसाधनों का विस्तृकत आकलन करना (ii) नवीनतम तकनीकी एवं उपकरणों द्वारा संसाधनों का मूल्यांकन कर सभी एकत्रित संसाधनों के आधार पर भूमि उपयोग नियोजन करना (ब्लॉक फार्म स्तर)। (iii) ग्राम स्तर/विकास खंड स्तउर पर सभी संसाधनों, विकल्पों को ग्राम नक्शों के साथ जोड़कर डेटाबेस तैयार करना है। इस कार्य को बड़ी कुशलतापूर्वक और प्रभावी ढ़ंग से आधुनिक, तकनीकी डेटा, उच्च रिज्लोयूशन रिमोट सेंसिंग डेटा और उपकरणों एवं सुविधाओं का उपयोग कर भू–विशेष तकनीकी द्वारा भौगोलिक परिस्थिति विश्लेषण किया गया है।

इस कार्य को करने हेतु सर्वप्रथम विकास खंडों के भूमि संबंधित गौण आकड़ों तथा नैसर्गिक डेटा को एकत्रित किया गया। विकास खंडों के अंतर्गत आने वाले सभी गांवों के नक्शे, हर एक खेत का खसरा नंबर और किसानों की सूची तथा उनकी जानकारी एकत्रित की गई और इन सभी नक्शों को जोड़कर मानचित्र तैयार किया गया। मृदा एवं अन्य भूमि संसाधनों जैसे, जलवायु फसल एवं फसल चक्रों भूमि उपयोग का प्रतिरूप भौगोलिक रचना जलस्तर और उसकी प्रतिरूप गुणवत्ता आदि की जानकारी तैयार की गई। वर्तमान सामाजिक–आर्थिक स्थितियो, मौजूदा बुनियादी ढांचे और कृषि विपणन सुविधाओं, कृषि संबंधित एवं गैर कृषि सरकारी सहकारी समितियां (सरकारी कोऑपरेटिव सोसायटी), कृषि केन्द्रों कृषि विज्ञान केन्द्रों इत्यादि की जानकारी प्राप्त कर अन्य संसाधन डेटा के साथ जोड़कर उसकी ग्राम स्तर/विकास खंड स्तरर पर सूची तैयार की गई।

मृदा संबंधित जानकारी वाले नक्शो को मृदा के 1:10,000 पैमाने पर विस्तृत मृदा सर्वेक्षण द्वारा तैयार किया गया। वर्तमान में देश में मृदा की ज्यादातर जानकारी 1:2,50,000 और 1:50,000 पैमाने पर ही उपलब्ध है। मृदा सर्वेक्षण द्वारा तैयार डेटा को मृदा के लक्षणों एवं वर्णनों के आधार पर उनका विश्लेषण कर वर्गीकरण किया गया। मृदा के लक्षणों के आधार पर उनका मूल्यांकन कर, पोषक तत्वों की स्थिति, उर्वरता मूल्यांकन एवं मृदा की विशेषताओं के आधार पर उनकी क्षमता – कमियों को पहचाना गया। इससे हर गांव की मृदा की क्षमता और कमियों को जैसे क्षारयुक्त भूमि, जलमग्न भूमि, कम गहरी पथरीली भूमि इत्यांदि की जानकारी सभी किसानों के खसरा नंबर के आधार पर प्रदान की गई। इन सभी प्राप्त स्थान विशेष मृदा डेटा को अन्या भूमि संसाधनों के साथ जोड़कर, उनकी क्षमता और कमियों के आधार पर 'फसल उपयुक्त मूल्यांकन' किया गया (फसलों, फलों, सब्जियों, तिलहन फसलों, दालों, नगदी फसलों और कुछ सामाजिक वानिकी इत्यादि)। इन सभी इकाईयों से यह पता चलता है कि कौन सा खेत किस तरह के फसलों के लिए उपयुक्त है और वहा कौन सा फसल चक्र अपनाना होगा जो भूमि के क्षरण बिना एवं अधिक से अधिक उत्पीदन देने में समर्थ है। इन सभी स्थागन–विशिष्ट मृदा संसाधनों के डेटा और अन्य भूमि संसाधनों को एक साथ एकीकृत कर भू–स्थाानिक तकनीक एवं भौगोलिक सूचना प्रणाली की सुविधाओं के माध्यम से जीआईएस सॉफ्टवेयर (Arc GIS software) के द्वारा उनकी क्षमता, कमियों और फसल उपयुक्तता मूल्यांकन के आधार पर तथा सामाजिक आर्थिक पक्ष को ध्यान में रखकर उन्हें एक साथ जोड़कर "वैकल्पिक भूमि उपयोग विकल्पों" को सुझाया गया और उचित "भूमि उपयोग नियोजन सुझाव" दिये गये। इन सभी विस्तृत डेटा को जीआईएस सॉफ्टवेयर के द्वारा हर ग्राम/खेत स्तर पर जोड़कर एक सूचना प्रणाली तैयार करके भूमि संसाधन सूचीकरण किया गया। इन 1/10,000 पैमाने पर तैयार विकास खंडों की बहुमूल्य जानकारी से स्थान विशेष के भूमि उपयोग नियोजन की क्षमता का पता चलता है। विशिष्ट स्थिति की सिफारिशों को अपनाकर भूक्षरण, अपघटन को बचाकर उत्पादन क्षमता को बढ़ाया जा सकता है। इससे न केवल किसानों की आय बढ़ेगी, खाद्यान्न सुरक्षा भी प्रदान की जा सकती है। उपरोक्त उच्च तकनीकियो द्वारा तैयार इस विस्तृत मृदा लक्षण–वर्णनों वाले विशिष्ट क्षेत्रों के मृदा संसाधनों और अन्य भूमि संसाधनों से एकत्रित डेटा की जानकारी में किसी भी भूमि पर आधारित नियोजन कार्यक्रमों का आधार बनने की क्षमता है।

उपरोक्त तैयार भूमि संसाधन सूची द्वारा आगे दूरदराज के गांवों, किसानों के खेतों, हितधारकों (Stake holders) को यह डाटा उपलब्ध हो सकता है। इस बहुमूल्य समग्र डेटा द्वारा, खेतों और ग्राम स्तर नियोजन, वाटरशेड विकास, बंजर भूमि विकास, भूमि उपयोग से संबंधित सामरिक भूमि उपयोग की योजना बनाकर कुशल फसल क्षेत्रों, मृदा स्वास्थ्य कार्ड, उर्वरकों की सिफारिशें, किसानों के सक्रिय सलाह, और वैकल्पिक भूमि उपयोग की योजना बनाने में कारगर साबित हो सकता है। इस मौजूदा डेटा से राज्य/ग्राम/फार्म के हर एक खंड की आसानी से पहचान कर उपयुक्त भूमि नियोजन, प्रबंधन एवं किसी भी विकासात्मक गतिविधियों हेतु कार्य करने में मदद मिलेगी।

आज हमारे देश में भा.कृ.अनु.प राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण एवं भूमि उपयोग नियोजन ब्यूरो, नागपुर तथा उनके क्षेत्रीय केन्द्रों द्वारा तैयार विविध कृषि परिस्थितियों क्षेत्रों के अंतर्गत कुल 60 विकास–खंडों (ब्लॉको) के भूमि संसाधन सूचीकरण की ओर अग्रसर है।

फसल विज्ञान प्रभाग परिचय

डॉ. डी.के. यादव एवं डॉ. पी.आर. चौधरी*

राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रणाली (एन.ए.आर.एस.) जो देश की कृषि तकनीकी एवं सूचना की आवश्यकता को पूरा करती है में, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (भा.कृ.अनु.प.) के 102 संस्थान, 11 अटारी, 73 कृषि विश्वविद्यालय (जिसमें 3 केन्द्रीय विश्वविद्यालय तथा 5 विश्वविद्यालय कृषि संकाय वाले) सम्मिलित हैं जो पूरे देश में फैले हुए हैं। डेयर/भा.कृ.अनु.प. ने जिलावार 669 कृषि विज्ञान केन्द्रों का जाल भी स्थापित किया है जिसका उद्देश्य राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रणाली द्वारा विकसित तकनीकियों तथा उत्पादों का मूल्यांकन तथा प्रदर्शन करना है। किसानों के द्वारा तथा राज्य सरकार के कृषि विभागों के द्वारा जिला स्तर पर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों तथा प्रशिक्षणों द्वारा किया जाता है। भा.कृ.अनु.प. द्वारा ये सभी कार्य अनुसंधान समन्वय, आवश्यकतानुसार शिक्षा एवं अग्रिम पंक्ति प्रसार कार्यक्रमों के माध्यम से पूरे किए जाते हैं जिसका परिषद के आठ विषय वस्तु प्रभागों नामतः फसल विज्ञान, बागवानी विज्ञान, प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन, कृषि अभियांत्रिकी, पशु विज्ञान, मत्स्य विज्ञान, कृषि शिक्षा एवं कृषि प्रसार द्वारा समन्वयन किया जाता है जिसमें फसल विज्ञान प्रभाग का देश की खाद्य एवं पोषण सुरक्षा में अहम महत्व है।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद मुख्यालय, कृषि भवन, नई दिल्ली में स्थापित फसल विज्ञान प्रभाग जिसके डॉ. सुखदेव सिंह, डॉ. सी. केमपन्ना, डॉ. एम.वी. राव, डा. आर.एस. परोदा, डॉ. ई.ए. सिद्दिक, डॉ. मंगला राय, डा. गौतम कल्लु, डा. एस.पी. तिवारी, डॉ. पी.एल. गौतम तथा डा. एस. के. दत्ता जैसे प्रख्यात कृषि वैज्ञानिक इस प्रभाग के उप–महानिदेशक रह चुके हैं और वर्तमान में फरवरी 2015 से डा. जे.एस. संधु इस प्रभाग के उपमहानिदेशक (फसल विज्ञान) है। इस प्रभाग में पांच वस्तु विषय/विशेष तकनीकी अनुभाग हैं नामतः खाद्य एवं चारा फसलें; तिलहनी एवं दलहन फसलें; व्यवसायिक फसलें; बीज, पौध संरक्षण एवं जैव सुरक्षा। प्रत्येक अनुभाग की अगुवाई सहायक महानिदेशक द्वारा की जाती हैं तथा मध्य स्तर के प्रबंधन में सहायता के लिए प्रत्येक अनुभाग में एक प्रधान वैज्ञानिक का पद है जबकि वरिष्ठ निदेशक एवं उप–सचिव (फसल विज्ञान) आन्तरिक एवं फसल विज्ञान के अन्तर्गत संस्थानों के प्रशासनिक विषयों के लिए जिम्मेदार हैं।

फसल विज्ञान प्रभाग का अधिदेश

- विभिन्न कृषि परिस्थितियों के लिए फसल किस्मों/संकरों के विकास के लिए पारम्परिक तथा आधुनिक वैज्ञानिक ज्ञान, उपकरणों एवं नवीनतम विज्ञान का प्रयोग करना तथा कुशल, लाभप्रद, पर्यावरण के अनुकूल एवं टिकाऊ फसल उत्पादन एवं संरक्षण प्रौद्योगिकियों का विकास; बुनियादी, कार्यनीतिपरक एवं वैज्ञानिक अनुसंधान में उत्कृटता को बढ़ावा देना।
- बीज उत्पादन तकनीकियों का परिष्करण तथा संकर किस्मों पर जोर देते हुए प्रजनक बीज का उत्पादन
- पादप,कीट एवं अन्य इन्वटीबरेट्स तथा कृषि के लिए आवश्यक सूक्ष्मजीवों के आनुवांशिक संसाधनों का संरक्षण एवं टिकाऊ उपयोग
- फसल विज्ञान में गहन ज्ञान सलाह तथा परामर्श देना

*डॉ. डी.के. यादव, सहायक महानिदेशक (बीज)/कार्यकारी एवं डॉ. पी.आर. चौधरी, प्रधान वैज्ञानिक (फसल विज्ञान), भा.कृ.अ.प., कृषि भवन, नई दिल्ली

फसल विज्ञान प्रभाग, भा.कृ.अनु.प. का सबसे बड़ा प्रभाग है जिसमें एक मानद विश्वविद्यालय, 19 राष्ट्रीय संस्थान, तीन ब्यूरो, तीन परियोजना निदेशालय, दो राष्ट्रीय अनुसंधान केन्द्र, 32 अखिल भारतीय समन्वित तथा नेटवर्क परियोजनाएँ, चार संघ अनुसंधान मंच एवं अन्य परियोजनाएँ जैसे कि कपास एवं जूट मिशन, कृषि अनुसंधान में प्रोत्साहन परियोजना, सूक्ष्मजीवों का कृषि एवं सम्बंधित क्षेत्रों में प्रयोग, सूक्ष्मजीव जिनोमिक संसाधन कोष तंत्र एवं कृषि फसलों का बीज उत्पादन आदि शामिल है। इसके अतिरिक्त प्रभाग रिवाल्विंग फंड परियोजनाओं एवं बाह्य वित पोषित परियोजनाओं का भी समन्वयन करता है तथा इन परियोजनाओं को तकनीकी स्वीकृति प्रदान करता है। इन सभी उद्देश्यों को पूरा करने के लिए इस प्रभाग के सभी संस्थानों में 1600 से अधिक वैज्ञानिक कार्यरत हैं। प्रभाग की कुल 70 उप–परियोजनाओं को मुख्य तौर पर 8 परियोजनाओं में विभाजित किया गया है जो हैः आनुवांशिक संसाधन प्रबंधन (7 उप–परियोजनाएँ); मूलभूत एवं कार्यनीतिपरक अनुसंधान एवं शिक्षा (8 उप–परियोजनाएँ); धान, गेहूँ एवं जौ विकास (7 उप–परियोजनाएँ); मक्का, छोटे अनाज एवं चारा फसल विकास एवं पर्वतीय कृषि (9 उप–परियोजनाएँ); दलहन विकास एवं बीज अनुसंधान (8 उप–परियोजनाएँ); तिलहन फसल विकास (10 उप–परियोजनाएँ); व्यावसायिक फसल विकास (11 उप–परियोजनाएँ); पौध सुरक्षा एवं परागद अनुसंधान (10 उप–परियोजनाएँ)।

फसल विकास प्रभाग के अन्तर्गत विभिन्न संस्थान एवं उप–परियोजनाएँ

मानद विश्वविद्यालय

- भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली

राष्ट्रीय संस्थान/निदेशालय/राष्ट्रीय अनुसंधान केन्द्र

- भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, झारखण्ड
- भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, असम
- भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल
- भारतीय चावल अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद
- राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक
- भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली/लुधियाना
- भारतीय कदन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद
- भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान, कानपुर
- भारतीय तिलहन अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद
- मूंगफली अनुसंधान निदेशालय, जूनागढ़
- सोयबीन अनुसंधान निदेशालय, इंदौर
- सरसों अनुसंधान निदेशालय, भरतपुर
- भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ
- गन्ना प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर
- भारतीय बीज विज्ञान संस्थान, मऊ
- भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान, झांसी
- विवेकानन्द पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, अलमोड़ा
- केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर
- केन्द्रीय तम्बाकु अनुसंधान संस्थान, राजमुंदरी
- केन्द्रीय पटसन एवं समवर्गीय रेशा अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर
- राष्ट्रीय जैविक दबाव प्रबंधन संस्थान, रायपुर
- भारतीय कृषि जैव प्रौद्योगिकी संस्थान, रांची
- राष्ट्रीय पादप जैव प्रौद्योगिकी अनुसंधान केन्द्र, नई दिल्ली
- राष्ट्रीय समेकित नाशीजीव प्रबंधन अनुसंधान केन्द्र, नई दिल्ली

ब्यूरो

- राष्ट्रीय पादप आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, नई दिल्ली
- राष्ट्रीय कृषि कीट संसाधन ब्यूरो, बैंगलुरू
- राष्ट्रीय कृषि उपयोगी सूक्ष्मजीव ब्यूरो, मऊ

अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजनाएँः 22

नेटवर्क परियोजनाएँः 10

नई पहलः फसल विज्ञान प्रभाग में पिछले एक दशक में कई नई परियरेजनाओं की शुरूआत की गई है जिनमें चार संघ अनुसंधान मंच (संकर तकनीक, आण्विक प्रजनन, कृषि जैवविविधता एवं जैव–गुण विकास); कृषि अनुसंधान में प्रोत्साहन परियोजना, ट्रांसजैनिक्स नेटवर्क परियोजना तथा चार नये संस्थान (राष्ट्रीय जैविक दबाव प्रबंधन संस्थान, रायपुर; भारतीय कृषि जैव प्रौद्योगिकी संस्थान, रांची; भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, झारखण्ड तथा भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, असम) सम्मिलित है।

उपलब्धियाँ

प्रभाग के अधिकतम संस्थानों का जोर मुख्य रूप से विभिन्न जैविक एवं अजैविक दबावों के प्रतिरोधी तथा गुणवत्तायुक्त किस्मों एवं संकरों का विकास करने पर रहा है। देश में 1969 से लेकर 2017 तक विभिन्न फसलों की 4473 उन्नत किस्मों का विकास कर किसानों द्वारा फसल उत्पादन के लिए अनुमोदित किया गया है जिनमें खाद्यान्नों की 2277 किस्में; दलहनों की 858 किस्में; तिलहनों की 763 किस्में; चारा फसलों की 135 किस्में; रेशा फसलों की 315 किस्में तथा गन्ने की 92 किस्में तथा 33 क्षमतावान किस्में सम्मिलित है। गत तीन वर्षों व वर्तमान वर्ष के दौरान देश की विभिन्न

कृषि पारिस्थितियों में खेती के लिए 571 उच्च पैदावार वाली, जलवायु अनुकूल फसलीय किस्मों/संकरों का अनुमोदन किया गया है जिनमें प्रमुख का विवरण आगे दिया गया है:

- किस्म विकास के कुछ प्रमुख मील के पत्थर हैं जैसे कि पोषक तत्व प्रचुर किस्में { धान की डी आर आर धान 45 (18.18 पी.पी.एम. जस्ता) एवं सी आर आर धान 310 (10.3 प्रतिशत प्रोटीन); गेहूँ की किस्म डब्ल्यू बी 2 (42 पी.पी.एम. जस्ता एवं 40 पी.पी.एम. लोहा) एवं एच पी बी डब्ल्यू 01 (40.6 पी.पी.एम. जस्ता एवं लोहा); सरसों की किस्म पूसा 30 (कम ईरूसिक अम्ल) एवं पूसा सरसों 31 (डबल शून्य); आण्विक चिन्हक चयन विधि द्वारा धान की किस्में (पूसा बासमती 1609, पूसा बासमती 1509, पूसा बासमती 1637 एवं पूसा बासमती 1728); धान की सूखा रोधी (डी आर आर धान 42) एवं अर्ध जलमग्न रोधी (साम्बा सब–1) किस्में तथा मूंग की एक अतिशीघ्र (52–55 दिन)। पकने वाली, उच्च प्रोटीनयुक्त किस्म { आई.पी.एम. 205–7 (विराट)}।

पूसा बासमती 1509

- धान की किस्म पूसा 1121 के अन्य देशों में निर्यात से 1600 करोड़ रुपये अर्जित किये। गेहूँ की प्रमुख किस्म एच डी 2967 देश में गेहूँ के कुल क्षेत्र के 40 प्रतिशत क्षेत्र पर उगाई गई है।

एचडी 2967

- गन्ने की किस्म सी.ओ. 0238 में शर्करा की रिकवरी 12 प्रतिशत (अन्य किस्मों में 2 प्रतिशत अधिक) है को बहुत ही कम समय में हरियाणा, पंजाब, उत्तराखण्ड एवं उत्तर प्रदेश में 8.65 लाख हैक्टर क्षेत्र पर उगाया गया है।
- विशेष तौर पर संरक्षित खेती के लिए प्रजनित गेहूँ की सर्वप्रथम किस्मों एचडीसीएसडब्लू 18 एवं एचडी 3117 का विकास एवं अनुमोदन।
- प्रजनक बीज उत्पादन में वर्ष 1981–82 में 3914 क्विंटल के मुकाबले 2015–16 में अभूतपूर्व वृद्दि (127823 क्विंटल) तथा माँग के अनुसार उच्च गुणत्ता बीजों की आपूर्ति।
- आवश्यक दलहनी फसलों के गुणवत्तायुक्त बीज उत्पादन के लिए 150 दलहन बीज केन्द्रों की स्थापना की गई और दलहनों में आत्मनिर्भरता के लिए विभिन्न दलहनों के प्रजनक बीज की अतिरिक्त मात्रा पैदा की गई।
- राष्ट्रीय जीन बैंक मे विभिन्न फसलों के 431451 जननद्रव्यों का संकलन।
- धान में फिंगरप्रिंटिंग एवं प्रजनन के लिए डीएनए चिप का विकास।
- बहु विषाणु पहचान तकनीक का विकास।
- मधुमक्खी का सेचन में प्रयोग कर फसल उत्पादन एवं गुणवत्ता विकास के लिए सफल प्रदर्शन।

मनुष्य को अपनी ओर खींचने वाला यदि जगत में कोई असली चुम्बक है, तो वह केवल प्रेम है।

– महात्मा गांधी

राजभाषा खण्ड
एवं गतिविधियां

हिन्दी के प्रतिष्ठापन में आ रही कठिनाइयां एवं समाधान

सीमा चोपड़ा*

हिन्दी भारत की अधिकतम जनसंख्या की मातृभाषा ही नहीं, राष्ट्रभाषा और राजभाषा भी है। उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, झारखंड, छत्तीसगढ़, बिहार, राजस्थान, हरियाणा और दिल्ली की राज्य भाषा होने के कारण वह इन हिन्दीभाषी प्रदेशों की राजभाषा भी है। अतः इन प्रदेशों के प्रशासनिक निकायों, संस्थानों में नौकरी पाने के लिए कम से कम दसवीं कक्षा तक हिन्दी का ज्ञान होना अनिवार्य है। भारत के संपूर्ण संघीय शासन की भाषा के रूप में मान्यता इसे संविधान द्वारा प्राप्त है। हिन्दी को 14 सितम्बर, 1949 को राजभाषा घोषित किया गया था। अतः संघीय लोक सेवा आयोग की अनेक प्रतियोगी परीक्षाओं का न केवल वह माध्यम है, अपितु परीक्षा के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम में भी उसे विशेष स्थान प्राप्त है। अपनी मातृभाषा, राष्ट्रभाषा, राज्य भाषा और राजभाषा का ज्ञान प्रत्येक भारतीय को होना चाहिए। भारत जैसे विविध भाषा–भाषी लोगों के बीच में यह भाषा संपर्क भाषा की भी काम कर रही है जिससे राष्ट्र की भावनात्मक और सांस्कृतिक एकता को भी बल मिलता है।

दुनिया में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में हिन्दी तीसरे नंबर पर है मगर भारत में ही इसकी दुर्दशा किसी से छिपी हुई नहीं है। राजभाषा होने के कारण सरकारी अनुदान और बजट तो भरपूर मिलता है मगर विकास का ग्राफ निरन्तर नीचे ही गिरता जा रहा है। हिन्दी के पदों पर काम करने वाले अधिकारी ही इतने सचेत नहीं हैं कि हिन्दी का कल्याण हो सके। वे कुछ अड़चनों का रोना रोकर अपनी जिम्मेदारी निभाने की बात समझा देते हैं कि आज अंग्रेजी माध्यम से बच्चों को पढ़ाना शौक और शान है। आज के समय में नौकरी तो अंग्रेजी में पढ़ने वालों को ही मिलती है तो फिर हिन्दी में ही पढ़कर क्या करेंगे। यह चिन्ताजनक है और देश की शिक्षा व्यवस्था की गंभीर खामी भी है। जब रोजगार हासिल करने की बुनियादी जरूरतों में परिवर्तन हो रहा है तो बुनियादी शिक्षा प्रणाली में भी वही परिवर्तन कब लाए जाएंगे। आज के समय में अंग्रेजी ही शिक्षा व बोलचाल की भाषा बन गई है। जो अंग्रेजी आधुनिक ज्ञान–विज्ञान की वाहिका बताई गई थी उसका हमने ज्ञान–विज्ञान से तो संबंध ा विच्छेद कर दिया पर रुचियों में अंग्रेज होने का प्रमाण देते हुए अंग्रेजी को पूरी श्रद्धा से इस तरह अपना लिया कि केवल नौकरी के काम नहीं बल्कि अपने निजी और सामाजिक जीवन के छोटे–छोटे काम भी उसी भाषा में करने लगे। हम तो उसे मन्दिर की देवी मानकर उसकी पूजा करने लगे हैं तभी तो विवाह जैसे जीवन के अत्यंत महत्वपूर्ण अवसर के निमंत्रण पत्रों या दीपावली, नववर्ष, विवाह की वर्षगांठ, जन्मदिवस जैसे अवसरों के शुभकामना संदेश, घर के दरवाजे पर लगने वाला नामपट्ट हो या दुकान पर लगने वाला बोर्ड, छोटी–मोटी गोष्ठी में बात करनी हो या संसद में चर्चा – हम सभी काम अंग्रजी में करते हैं। जहां तक नौकरी का संबंध है पहले वह सरकारी क्षेत्र में ही अंग्रेजी के माध्यम से मिलती थी पर कालांतर में निजी क्षेत्र को भी सरकार का अनुसरण करना पड़ा। इसके बावजूद लोगों का विश्वास था कि स्वतंत्रता मिलने पर स्थिति अवश्य बदलेगी। इस विश्वास का ही परिणाम था कि जब देश को आज़ादी मिलनी निश्चित हो गई तो प्रसिद्ध उद्योगपति टाटा ने मुम्बई में अपने वरिष्ठ अधिकारियों को हिन्दी सिखाने की व्यवस्था कर दी पर संविधान सभा ने अंग्रेजी जारी रखने का निश्चय कर लिया तो टाटा ने भी हिन्दी सिखाने की व्यवस्था समाप्त कर दी। संविधान सभा के निर्णय ने सामान्य–जन को यह स्वीकार करने के लिए विवश कर दिया कि देश भले ही स्वतंत्र हो गया हो, अगर सम्मान के साथ जीना है तो अंग्रेजी की ऑक्सीजन पर जीना होगा क्योंकि देश अंग्रेजों के शासन से ही आजाद हुआ है अंग्रेजी के शासन से नहीं।

ज्ञान–विज्ञान का माध्यम जब भी कोई विदेशी भाषा होती है तो उसके तमाम शब्द हमें रटने पड़ते हैं क्योंकि उनके अर्थ हम नहीं समझते। इसके विपरीत अपनी भाषा के शब्दों के अर्थों में एक पारदर्शिता होती है जैसे अंग्रेजी का 'Affidavit' हो तो हम रटते हैं पर उसके लिए हिन्दी शब्द 'शपथ–पत्र' का अर्थ अपने आपमें स्पष्ट हो जाता है। लोग बड़े आग्रहपूर्वक

*सीमा चोपड़ा, निदेशक (राजभाषा), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली – 110012

कहते हैं कि आज के युग में अंग्रेजी का ज्ञान आवश्यक ही नहीं अनिवार्य है। उनके इस कथन से असहमति का तो प्रश्न ही नहीं, क्योंकि कतिपय कामों के लिए अंग्रेजी का ज्ञान वास्तव में आवश्यक हो गया है पर इस तथ्य की उपेक्षा कैसे कर दी जाए कि 'अंग्रेजी की शिक्षा' और 'अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा' एक–दूसरे के पर्याय नहीं है। आज के युग में अंग्रेजी का ज्ञान केवल हमारे लिए नहीं विश्व के अन्य लोगों के लिए आवश्यक हो गया है इसलिए रूसी, चीनी, जापानी, फ्रांसीसी, जर्मन, स्पैनिश आदि के लोग भी अंग्रेजी का अध्ययन कर रहे हैं जिनकी मातृभाषा अंग्रेजी नहीं है पर वे अपनी सारी शिक्षा की व्यवस्था अंग्रेजी माध्यम से नहीं करते। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर राष्ट्रपिता ने कहा था, 'अगर हम अंग्रजी के आदी नहीं हो गए होते तो यह समझने में हमें देर नहीं लगती कि अंग्रेजी के शिक्षा के माध्यम होने से हमारी बौद्धिक चेतना जीवन से हटकर दूर हो गई है, हम अपनी जनता से अलग हो गए है।'

हिन्दी जैसा संकट दूसरी क्षेत्रीय भाषाओं के सामने भी मुहं बाए खड़ा है मगर अहिन्दी क्षेत्रों में अपनी भाषा के प्रति क्षेत्रीय राजनीति के कारण थोड़ी जागरूकता है। कुल मिलाकर हिन्दी हाशिये पर जा रही है। यह हिन्दी का उज्जवल भविष्य देखने वालों के लिए चिन्ता का विषय होना चाहिए। अगर यही हाल रहा तो आंकड़ों में हिन्दी कब तक पूरी दुनिया में तीसरे नंबर की सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा रह पाएगी। क्या रोजी–रोटी भी दे सकेगी हिन्दी ? देश की अनिवार्य संपर्क व शिक्षा की भाषा कब बन पाएगी हिन्दी।

आज प्रारंभिक कक्षाओं में हिन्दी मात्र एक विषय के रूप में पढ़ाई जाती है। अन्य सारे विषयों का माध्यम अंग्रेजी होता है। जब हमारी सोच ही अंग्रेजी में विकसित होगी तो उसकी अभिव्यक्ति हिन्दी में करना सदैव ही कठिन कार्य होगा। अगर हम चाहते हैं कि हमारे बच्चों की प्रकृति प्रदत्त शक्तियों का अधिकाधिक विकास हो, वे अपने सामर्थ्य के अनुरूप अधिक से अधिक योग्य बनें, देश के किसी वर्ग विशेष के नहीं बल्कि सभी बच्चों को आगे बढ़ने को न्यायसंगत अवसर मिले ताकि पूरे देश की प्रतिभा विकसित होकर देश के विकास का साधन बने, और देश के बच्चे देश पर भार नहीं देश की संपदा बने और देश को आगे बढ़ाएं तो उसका सबसे पहला अनिवार्य उपाय है शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा/क्षेत्रीय भाषा का प्रयोग।

किन्तु यह प्रश्न तो अवश्य उठता है कि सरकारी नीतियां हिन्दी के विकास में कितनी सहायक सिद्ध हो रही हैं। सरकारी कामकाज को हिन्दी में किये जाने के पीछे प्रयोजन था 'राजभाषा को विकसित करना'। किसी भी निर्माण, विकास, उत्थान और परिवर्तन के लिए एक कटिबद्धता की आवश्यकता होती है। एक दृढ़ निश्चय और योजनाबद्ध कार्यान्वयन की आवश्यकता होती है। ऐसे कार्य बहुत सरलता से नहीं होते। मार्ग में कुछ कठिनाइयां तो आती ही हैं हमें उन कठिनाइयों से पार पाना होगा। पार पाने का अर्थ पलायन कभी नहीं होता।

आज हिन्दी भाषा के संदर्भ में जो कठिनाइयां सामने आ रही हैं या जिसे कठिनाई बताया जा रहा है यदि उस पर दृष्टिपात करें तो कई प्रश्न उठ खड़े होते हैं। सबसे पहला प्रश्न तो यह है कि 'शब्द की क्लिष्टता' का क्या अर्थ है ? क्या जो शब्द क्लिष्ट कहे जाते हैं उनका गठन किसी अन्य वर्णमाला के अक्षरों से होता ? किसी भी भाषा की एक ही वर्णमाला होती है। हर वर्णमाला के अक्षर सीमित होते हैं और हर शब्द उन्हीं अक्षरों से बनता है। फिर कोई शब्द क्लिष्ट कैसे हो सकता है ? वास्तव में शब्द 'क्लिष्ट' नहीं होते अपितु 'अपरिचित' होते हैं। जिस तरह अपरिचित व्यक्ति के साथ अनौपचारिक व्यवहार करते हुए हिचकिचाहट होती है उसी प्रकार अपरिचित शब्दों के प्रयोग में हिचकिचाहट होती है। अब जो अपरिचित है उससे परिचय बढ़ाएंगे तभी तो आपसी मेल–जोल बढ़ेगा तभी हिचक समाप्त होगी। यदि उससे किनारा कर लिया जाएगा तो दूरियां ही बढ़ेंगी, फिर उसका विकास संभव नहीं है। वे लोग जिनके लिए आरंभ में अंग्रेजी का हर शब्द अपरिचित होता है और वे प्रयास करके पूरी की पूरी भाषा सीख लेते हैं, हजारों शब्दों को आत्मसात कर लेते हैं उन्हीं के लिए हिन्दी के कुछ शब्दों को आत्मसात करना इतना दुर्लभ क्यों लगने लगता है।

यह ठीक है कि बोलचाल की भाषा और साहित्यिक भाषा में थोड़ा अन्तर अवश्य होता है और वह अन्तर हर भाषा में होता है। दोनों की आवश्यकता भी होती है और प्रयोजन भी होता है। जब हम किसी से बातचीत करते हैं तो हमारे पास संप्रेषण के अन्य साधन भी उपलब्ध होते हैं जैसे हमारे चेहरे के भाव, हमारी वाणी का उतार–चढ़ाव, हमारे हाथों की गतिविधि, आंखों का भाव इत्यादि। किन्तु जब हम लिखते हैं उस समय ये सहायक साधन उपलब्ध नहीं होते और भावनाओं तथा विचारों का सारा भार शब्दों को वहन करना पड़ता है। इस तरह से लिखना पड़ता है कि हमारी भावनाएं और विचार ठीक उसी गहनता से संप्रेषित हो जाएं जिस गहनता से हमारे मन में उतरी होती हैं। ऐसे में हमें बिल्कुल सटीक शब्दों का, अलंकारों का, शब्द युग्मों, मुहावरों, विशेष वाक्य विन्यासों इत्यादि का प्रयोग करना पड़ता है। ऐसी भाषा को हम साहित्यिक भाषा कहते हैं किन्तु जब हम बात करते हैं तो हमारे चेहरे के भाव वाणी का आरोह–अवरोह हमारी भावनाओं को संप्रेषित कर देता है और हम छोटे–छोटे वाक्यों के माध्यम से बिना किसी अलंकार या विशेष वाक्य विन्यास के अपनी बात कह देते हैं। छात्र या विद्यार्थी को 'स्टूडेंट' कहने से भाषा के सामान्य या साहित्यिक होने का अर्थ समझ से परे है।

हिन्दी के विकास में अन्य भाषा के शब्दों को आत्मसात करने के बिन्दु पर मतभिन्नता सदैव रही है। एक वर्ग भाषा की शुद्धता का समर्थक है तो दूसरे वर्ग का यह कहना है कि अन्य भाषा के शब्दों के समावेश से हिन्दी भाषा सुगम और समृद्ध होगी। यदि सुगमता की बात करें तो व्यक्तिवाचक संज्ञा से शुरू होकर आज अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग हिन्दी वाक्यों में क्रिया तक होने लगा है। निःस्संदेह लोगों को यह सुगम लग रहा होगा तभी ऐसा हो रहा है किन्तु कोई भी ऐसा प्रयोग जो भाषा के स्वरूप को नष्ट करके उसे सुगम बनाए उस प्रयोग का क्या अर्थ है ? जब हिन्दी ही नहीं रहेगी तो उसकी सुगमता का कोई अर्थ ही नहीं बचता। आज हम अपनी बोलचाल की भाषा को हिन्दी नहीं हिंग्लिश कहते हैं भाषा सुगम नहीं अपितु बदल गई है।

जहां तक शब्दकोश की समृद्धि की बात है तो सभी भाषाओं ने दूसरी भाषाओं के कुछ शब्दों को अपनाया है किन्तु अपनाए गए शब्द प्रायः ऐसे होते हैं जो किसी विशेष परिवेश, विशेष कार्य, विशेष वस्तु से संबंधित होते हैं। ऐसे शब्दों के समावेश का आरंभ हिन्दी में भी बहुत पहले हो चुका है। समृद्धि को अर्थ होता है कि हमारे पास जो कुछ है उसमें वृद्धि लाना। यह नहीं कि जो है उसे बदलकर दूसरी चीज ले लेना। हिन्दी भाषा के शब्दकोश में वृद्धि उन शब्दों को ग्रहण करने से अवश्य हुई है जो कि हिन्दी में पहले से उपलब्ध नहीं थे या फिर उनके लिए कोई बहुत सटीक शब्द नहीं था जैसे बैटरी, स्टेशन, टिकट, पुलिस, सिग्नल, राडार, इलैक्ट्रॉन, प्रोटोन, यूरेनियम इत्यादि। ऐसी संज्ञाओं को आत्मसात करना आवश्यक भी है जिनका अन्वेषण और नामकरण विदेशों में होता है। उनके लिए शब्द युग्मों का प्रयोग कर निकटवर्ती अर्थ देने वाला कोई शब्द गढ़ लेने से अच्छा तो यही है कि उन शब्दों को यथावत् ग्रहण कर लिया जाए किन्तु छात्र, विद्यालय, परिसर, भंडार जैसे प्रचलित हिन्दी के शब्दों के लिए अंग्रेजी के शब्दों के प्रयोग में हिन्दी भाषा की कोई समृद्धि दिखाई नहीं देती।

कुछ लोगों का कहना है कि कम्प्यूटर के कारण अंग्रेजी विश्वभर में छा रही है। उनका मानना है कि इस सदी के अंत तक कई भाषाएं अपना अस्तित्व खो बैठेंगी परन्तु विज्ञान हर चीज का तोड़ ढूंढ निकालता है। विश्व की सारी प्रमुख भाषाओं में कम्प्यूटर ने अपनी अलग पहचान बना ली है – हिन्दी में भी। कम्प्यूटर ने भी अपनी सरल अंग्रेजी बना ली है जिसमें बड़े शब्द हट रहे हैं और वर्तनी बदल रही है पर इससे अंग्रेजी का कुछ नहीं बिगड़ने वाला क्योंकि अंग्रेजी के साहित्यकारों ने उसे पहले ही अत्यंत व्यापक समृद्ध व विशाल रूप दे दिया है।

अभी भी हिन्दी के साहित्यकार, कवि व दार्शनिक इस ओर प्रयास कर सकते हैं। वे उच्च कोटि के विचारक रहे हैं। उन्होंने शून्य व अनंत की कल्पना की, ईश्वर की कल्पना का अद्भुत संसार रचा, सर्वप्रथम मानव शरीर की संरचना व शल्यक्रिया का आरंभ किया, सप्त स्वरों की पहचान कराई, सप्त रंगों का प्रथम उल्लेख वेद में किया, ध्वनि के सारे संभावित स्वरों व व्यंजनों को अपनी भाषा में लिया, ईसा पूर्व 600 से कथा व कहानी की विधा विश्व को प्रदान की और काव्य के रूप को लघु व दीर्घ मात्रा पर आधारित करने की सरल प्रणाली ईजाद की है। वे अच्छी तरह जानते हैं कि भाषा को समृद्ध बनाने के लिए उच्चकोटि के साहित्य निर्माण की आवश्यकता होती है। काव्य में अंतरमन की पुकार, लेख में परिपक्व विचारधारा की उत्तुंग लहरें और मानव संस्कृति में पवित्रता की अलग पहचान भाषा का श्रृंगार होती है और अपने माधुर्य के कारण ऐसी भाषा 'बोली' को भी मधुर बनने के लिए उत्साहित कर सकती है।

हमारे हिन्दी के साहित्यकार, कवि व विचारक वृहत साहित्य रचना में एकजुट हो लग जावें, यही प्रार्थना है। आईये, हम निर्विकार रूप से ऐसा वृहत व सुन्दर हिन्दी साहित्य का निर्माण करें कि हम हिन्दी भाषी भी कह सकें :

भाषासु मुख्या मधुरा दिव्यागीर्वाण भारती।
तस्मादपि काव्यं मधुरं, तस्मादपि सुभाषितम्।।

आत्मविश्वास और कड़ी मेहनत, असफलता नामक बीमारी को मारने के लिए सबसे बढ़िया दवाई है। ये आपको एक सफल व्यक्ति बनाती है।

– ऐ पी जी अब्दुल कलाम

राजभाषा कार्यान्वयन समस्या का प्रबंधकीय समाधान

संतराम यादव**

सदियों से लेकर हिंदी भाषा अपनी सर्वग्राह्य क्षमता और विस्तृत परिप्रेक्ष्य के कारण भारतीय अस्मिता की पहचान रही है। राजभाषा, राष्ट्रभाषा और मातृभाषा का मसला हमारी संस्कृति से संबंधित है। भारत जैसे बहुभाषी देश में राजभाषा की समस्या का जटिल होना स्वाभाविक ही है। हालांकि अब राजभाषा का मुद्दा उतना आकर्षक नहीं रहा परंतु विभिन्न राजभाषा समितियों के आश्वासनों के बावजूद राजभाषा का क्षेत्र निरंतर उपेक्षा का शिकार होता जा रहा है, यह स्पष्ट दिखलाई पड़ रहा है। इसलिए समय की मांग है कि प्रबंधन स्तर पर ही इस कार्य की ओर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। कहते हैं कि प्रबंधन और संगठन का पारस्परिक संबंध मनुष्य के मन और शरीर का जैसा है। यदि संगठन साधन है तो प्रबंधन साधना है। राजभाषा के कार्यान्वयन का संबंध संगठनात्मक संप्रेषण से जुड़ा है। राजभाषा प्रबंधन में जो भी कार्य समाहित है प्रबंधकीय दृष्टि से देखते समय उनका अंतिम लक्ष्य यही होता है कि संबंधित संस्थानों में लगभग सारा काम मूलरूप से हिंदी भाषा में हो। प्रायः यह देखा गया है कि इसकी दशा और दिशा अपेक्षित अवस्था तक पहुँची नहीं है। इसलिए राजभाषा प्रबंधन पर गंभीरतापूर्वक विचार करने का समय आ गया है।

आज का युग नवीन तकनीक का युग है। हालांकि सूचना प्रौद्योगिकी के आगमन से हिंदी के विस्तार पर प्रश्न चिह्न नजर आने लगा था परंतु अब वही प्रभावकारी सिद्ध हो रही है। यूनिकोड एक ऐसा मंत्र है जो अधिकांश भारतीय एवं विदेशी भाषाओं के लिए लाभकारी सिद्ध हो रहा है। इसके प्रयोग से हम यथावत सामग्री तुरंत पहुंचाने में सफल रहते हैं। आईसीएआर और उसके संस्थानों ने भारत सरकार के दिशा निर्देशानुसार अपनी अनुसंधान उपलब्धियों को सामान्य जन तक हिंदी भाषा में पहुंचाने का हरसंभव प्रयास किया है। कृषि अनुसंधान की जानकारियों को किसानों तक सरल हिंदी भाषा में पहुंचाना ही परिषद और उसके संस्थानों के लिए प्राथमिकतापूर्ण कार्य है। महाकवि महादेवी वर्मा जी की ''आशा से आकाश थमा है'' नामक उक्ति सदैव हिंदी के प्रचार व प्रसार में प्रेरणा स्त्रोत है। देश में कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान के क्षेत्र में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद एक सर्वोच्च संस्था है। अनुसंधान द्वारा प्राप्त वैज्ञानिक जानकारी एवं प्रौद्योगिकी को किसानों तक उनकी भाषा में पहुँचाने के लिए परिषद द्वारा प्रसार पुस्तिकाओं आदि के माध्यम से तकनीकी साहित्य का हिंदी सहित अनेक भाषाओं में प्रकाशन किया जाता है। कृषि अनुसंधान तथा शिक्षा विभाग (डेयर) और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) की वार्षिक रिपोर्ट हिंदी भाषा में उपलब्ध हैं। हिंदी में शोध लेखन को बढ़ावा देने हेतु परिषद की 'कृषिका' नामक कृषि शोध पत्रिका प्रकाशित हो रही है। इसमें वैज्ञानिक एवं तकनीकी लेखों को उचित स्थान प्रदान किया जाता है। भारत जैसे विशाल देश में जहाँ रोजगार के रूप में कृषि को अपनाया जा रहा है वहां पर कृषि प्रसार के क्षेत्र में हिंदी भाषा की विशेष भूमिका है। यह सत्य है कि हमें अंग्रेजी को ज्ञानार्जन का साधन बनाना चाहिए परंतु मातृभाषा की अनदेखी भी नहीं करनी चाहिए।

इतना कुछ होने के बावजूद भी मन में एक शंका सदैव खटकती रहती है कि राजभाषा कार्यान्वयन की गति प्रशासनिक स्तर पर उतनी कारगर सिद्ध नहीं हो पा रही है जितनी की तकनीकी या वैज्ञानिक स्तर पर हो रही है। इसका मूल कारण है कि हमारे यहां अंग्रेजी को सरकारी कामकाज की भाषा बनाए रखने हेतु कुछ सामान्य धारणाएं सर्वव्याप्त हैं। कुछ सरकारी कार्मिकों का मानना है कि हिंदी विकसित भाषा नहीं है। शब्दावली के अभाव में तकनीकी प्रकृति का काम हिंदी से नहीं चल सकता। हिंदी में विभिन्न विषयों के विचार यथार्थ व प्रभावी ढंग से व्यक्त नहीं किए जा सकते। वर्तमान परिस्थितियों में सरकारी कामकाज हिंदी में करना असंभव है। उच्चाधिकारियों में हिंदी कार्य करने की मानसिकता का अभाव है। कुछ का मानना है कि हिंदी अपनाने से विभाग की कार्यकुशलता का स्तर गिर सकता है। हिंदी में कार्य करने में समय अधिक लगता है। कानूनी मामलों में हिंदी का प्रयोग असंभव है।

* संतराम यादव, सहायक निदेशक (राजभाषा), केंद्रीय बारानी कृषि अनुसंधान संस्थान, संतोषनगर, डाकघर सैदाबाद, हैदराबाद 500059

इन समस्याओं के निराकरण हेतु हमें प्रबंधन स्तर पर ही परिवर्तन लाना होगा। प्रबंधन प्रक्रिया में नियोजन, संगठन, निर्देशन, समन्वयन, नियंत्रण आदि का समावेश अनिवार्य है। प्रबंधन स्तर पर किसी भी संस्थान के मानवीय प्रयासों को अनुकूल दिशा, नेतृत्व और प्रेरणा प्रदान की जा सकती है। कुछ विद्वानों ने नियोजन (Planning), संगठन (Organisation), समन्वय (Coordination), निर्देशन (Direction) और नियंत्रण (Controlling) को प्रबंधन कहा है परंतु राजभाषा प्रबंधन को हम राजभाषा कार्मिक प्रबंधन (Official language Personnel Management), राजभाषा प्रशासनिक प्रबंधन (Official language Administrative Management), राजभाषा वित्त प्रबंधन (Official language Financial Management) और राजभाषा प्रोत्साहन प्रबंधन (Official language Incentive Management) के रूप में समाहित कर सकते हैं।

राजभाषा प्रबंधन का क्षेत्र कार्यालय के समस्त संभागों के क्रियाकलापों का क्षेत्र है जिन में राजभाषा हिंदी का प्रयोग अपेक्षित है। इन संभागों में राजभाषा का प्रयोगमात्र गैर तकनीकी पत्राचार, टिप्पण और प्रतिवेदन तक सीमित नहीं होना चाहिए अपितु व्यावसायिक, तकनीकी क्षेत्र तथा वैज्ञानिक अनुसंधान एवं अनुप्रयोग के क्षेत्र में भी भाषिक माध्यम के रूप में राजभाषा हिंदी का बेहद प्रयोग होना चाहिए। राजभाषा क्रिया कलापों के कुशल संपादन के उद्देश्य से राजभाषा कर्मियों के चयन से लेकर विभागीय प्रशासन, राजभाषा प्रशिक्षण, राजभाषा प्रकाशन, हिंदी व अंग्रेजी अनुवाद, कार्यालयीन मूल लेखन, राजभाषा बैठकों का आयोजन करना, राजभाषा संबंधी तिमाही, छमाही, वार्षिक रिपोर्ट भेजना, मंत्रालय, राजभाषा विभाग या संसदीय राजभाषा समिति द्वारा राजभाषा निरीक्षण के समय सहयोग करना, मुख्यालय के साथ राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी निरंतर पत्राचार करना, राजभाषा विभाग एवं अन्य संगठनों की बैठकों के आयोजनों में सहयोग और प्रतिनिधित्व प्रदान करना आदि समस्त राजभाषा कार्यों के प्रवर्तन, समन्वयन, समीक्षा एवं पुनर्निरूपण के कार्य आ जाते हैं।

राजभाषा नीति का अध्ययन करने के बाद यह बात उभरकर आती है कि परिषद के संस्थानों में जहाँ तकनीकी व वैज्ञानिक स्तर पर हिंदी कार्य में बढ़ावा मिल रहा है वहीं प्रशासन व वित्त विभागों में अधिकांश काम मूलरूप से हिंदी में होना अभी भी अपेक्षित है। इसके पीछे का तर्क यही है कि जबतक हिंदीतर सभी अधिकारी तथा कर्मचारी हिंदी में भली भाँति कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त नहीं कर पाते तबतक अनुवाद की आवश्यकता बनी रहेगी। इसलिए हमारा भी यही मानना है कि जब तक अनुवाद की हिंदी को मूललेखन तक नहीं पहुंचाया जाएगा तबतक राजभाषा का कार्यान्वयन भी सफल नहीं हो पाएगा।

राजभाषा प्रबंधन में इसके संयोजन की समन्वयक भूमिका का विशेष महत्व है, जिसे कोई भी राजभाषा पदाधिकारी सफलतापूर्वक निभाने हेतु निरंतर प्रयासरत रहता है। एक राजभाषा पदाधिकारी को सरकार की राजभाषा नीति, संवैधानिक प्रावधानों, राजभाषा अधिनियम, नियम, संकल्प और संबंधित आदेशों की अद्यतन जानकारी रखनी चाहिए जिससे कि वह कार्यालय के उच्चाधिकारियों को समय समयपर उनसे अवगत कराता रह सके। संस्थान में राजभाषा संबंधी प्रावधानों का उल्लंघन होने पर उसे तुरंत संबद्ध अधिकारियों के संज्ञान में लाया जाना चाहिए। यह भी सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि राजभाषा नियमों का बार बार उल्लंघन न होने पाए। राजभाषा अधिकारी को हिंदी और अंग्रेजी के साथ यथावश्यक प्रादेशिक भाषा का भी ज्ञानार्जन कर लेना चाहिए। प्रबंधकों की यह जिम्मेदारी बनती है कि वे एक राजभाषा पदाधिकारी को निरंतर विशेष प्रबंधकीय प्रशिक्षण दिलाते रहें क्योंकि वह सदैव राजभाषा प्रबंधन के कार्यकलापों में समन्वयक की भूमिका निभाता रहता है।

अंत में हम कह सकते हैं कि परिषद के संस्थानों में पूर्ण राजभाषा कार्यान्वयन कार्य कठिन अवश्य है परंतु असंभव नहीं है। शेख मुहम्मद इकबाल के साथ हम सबकी भी केवल एक ही आवाज है 'हिंदी हैं हम, वतन है हिंदोस्तां हमारा'। हम सभी के प्रयासों से ही परिषद अपनी नित नवीन कृषि अनुसंधान उपलब्धियां प्राप्त करता रहेगा और इन अनुसंधान उपलब्धियों को किसानों, अंतिम प्रयोक्ताओं तथा जन सामन्य तक पहुंचाने में राजभाषा हिन्दी की अहम भूमिका बनी रहेगी।

संसार एक कड़वा वृक्ष है, इसके दो फल ही अमृत जैसे होते हैं – एक मधुर वाणी और दूसरी सज्जनों की संगति।

– चाणक्य

हिन्दी में विज्ञान लेखन: समस्याएँ, समाधान और संभावनाएँ

ए.के. जगदीशन* एवं श्याम किशोर वर्मा**

भूमिका

किसी भी देश और समाज की प्रगति के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विकसित होना बहुत जरूरी है। इस दृष्टि से देखा जाए तो भारत के जनमानस को ज्ञान–विज्ञान से संपन्न करने के लिए विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी को ज़िन्दगी के हर क्षेत्र से जोड़ने की आवश्यकता है। लेकिन यह तभी संभव होगा जब जन–भाषा विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में प्रवेश कर सकेगी। विज्ञान ने हमारे जीवन को सुविधा –संपन्न बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इनसे संबंधित जानकारियों को लोगों तक पहुँचाने के लिए किए जा रहे लेखन कार्य को 'विज्ञान लेखन' कहा जाता है। विज्ञान के कल्याणकारी अनुप्रयोगों की ओर सभी लोगों का ध्यान आकर्षित करना विज्ञान लेखन का मुख्य उद्देश्य है।

हिंदी में विज्ञान लेखन

किसी भाषा में किसी विषय–विशेष के अध्ययन एवं अध्यापन के लिए उस विषय से संबंधित साहित्य का उस भाषा में उपलब्ध होना अत्यंत आवश्यक है। हिन्दी में वैज्ञानिक एवं तकनीकी विषयों की शिक्षा प्रदान करने के लिए उसमें सभी तरह का साहित्य अधिक–से–अधिक मात्रा में उपलब्ध कराना चाहिए। भारत की अधिकांश जनसंख्या अंग्रेजी नहीं जानती। फलस्वरूप बड़ी संख्या में भारतवासी विज्ञान की अद्यतन जानकारी से वंचित रह जाते हैं। कई बार सामान्य वैज्ञानिक उपलब्धियों तक की जानकारी उन्हें नहीं मिल पाती। इसलिए भारतीय समाज का वैज्ञानिक दृष्टिकोण उतना आविष्कारोन्मुख नहीं है, जितना कि संसार के अन्य विकसित देशों का है। विज्ञान एवं तकनीकी क्षेत्र में हिंदी के प्रयोग और विकास के लिए इन क्षेत्रों में विभिन्न विषयों से संबंधित मौलिक लेखन को प्रोत्साहन दिया जाना जरूरी है। हिन्दी में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में विज्ञान शिक्षण के लिए अद्यतन रोचक एवं ज्ञानवर्धक पाठ्यक्रम तैयार करना चाहिए।

यह खेद की बात है कि हमारे वैज्ञानिक भारत के बजाय विदेशी पत्रिकाओं में अपने लेख छपवाना चाहते हैं। इसके लिए वे सिर्फ एक ही बात कहते रहते हैं कि "भारतीय पत्रिकाएँ अंतर्राष्ट्रीय स्तर की नहीं हैं।" इसके लिए हमें अपने अच्छे शोध आलेख विदेशी पत्रिकाओं की जगह भारतीय पत्रिकाओं में छापने होंगे। हिंदी में विज्ञान संबंधी साहित्य कम तो हैं, लेकिन ऐसा नहीं है कि हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं में ज्ञान–विज्ञान के विभिन्न विषयों की अभिव्यक्ति की क्षमता नहीं है। हिंदी में भाव और विचारों तथा प्रौद्योगिकी के संप्रेषण की अद्भुत क्षमता है, किंतु हमें अपनी भाषा के प्रति प्रेम और आत्मविश्वास की कमी है।

अंग्रेजी भाषा ने भारतीयों के दिमाग पर कब्जा किया हुआ है। जब जर्मनी, चीन, जापान, नॉर्वे, इज़राएल आदि देश अपनी भाषा के बल पर विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में प्रगति के पथ पर अग्रसर हैं तो भारत ऐसा क्यों नहीं कर सकता? हिंदी में वैज्ञानिक लेखन और प्रकाशन अभी संतोषजनक स्थिति तक नहीं पहुँचा है, क्योंकि एक तो उसका पाठक वर्ग कम है और दूसरा हिंदी में पढ़ना चाहते हुए भी छात्रों को शंका होती है कि उन्हें हिंदी में पर्याप्त सामग्री उपलब्ध होगी कि नहीं।

हिंदी में विज्ञान लेखकों की संख्या में कोई कमी नहीं है। प्रसिद्ध विज्ञान लेखक डॉ. शिव गोपाल मिश्र के अनुसार "देश में 3500 से अधिक विज्ञान लेखक हैं, जिनमें 250 से अधिक महिलाएँ हैं तथा 8000 से अधिक विज्ञान संबंधी पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं।" आजकल हिंदी में विज्ञान पत्रिकाओं का प्रकाशन किया जा रहा है, जिनमें विज्ञान के विभिन्न विषयों पर लेख प्रकाशित होते हैं। ये पत्रिकाएँ विज्ञान को लोकप्रिय बनाने की दिशा में सक्रिय भूमिका निभाती हैं।

कुछ प्रमुख पत्रिकाएँ हैं–वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद की 'विज्ञान'; राष्ट्रीय अनुसंधान विकास निगम द्वारा प्रकाशित 'आविष्कार'; विभिन्न अकादमियों द्वारा प्रकाशित

* ए.के. जगदीशन, सहायक निदेशक (राजभाषा), भा.कृ.अनु.प.–भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बेंगलूरु, कर्नाटक
** श्याम किशोर वर्मा, तकनीकी अधिकारी, भा.कृ.अनु.प.–भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान, इन्दौर (म.प्र.)

'वानस्पतिकी', 'भौतिकी', 'इंजिनीयरी', 'प्राणी लोक' और 'आयुर्विज्ञान'; भारतीय विज्ञान संस्थान, बेंगलूरू द्वारा प्रकाशित 'विज्ञान परिचय'; भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित 'फल–फूल' और 'खेती' आदि। इनके अतिरिक्त 'विज्ञान प्रकाश' (न्यूयॉर्क व दिल्ली), 'विज्ञान' (इलाहाबाद), 'संदर्भ' (होशंगाबाद), 'स्रोत' (भोपाल), 'विज्ञान चेतना' (जयपुर), 'विज्ञान आपके लिए' (गाज़ियाबाद), 'सामयिक नेहा' (गोरखपुर), 'विज्ञान भारती प्रदीपिका' (जबलपुर), 'विज्ञान प्रगति', 'विज्ञान लोक', 'विज्ञान जगत' तथा 'विज्ञान गरिमा सिंधु' आदि पत्रिकाएँ भी उल्लेखनीय हैं। यद्यपि हिंदी में शोध पत्रिकाओं की कमी है, फिर भी 'शोध भारती', 'विज्ञान परिषद् अनुसंधान' पत्रिकाएँ तथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की 'कृषिका' आदि शोध पत्रिकाएँ हिंदी में विज्ञान लेखन में महत्वपूर्ण भूमिकाएँ निभाती आ रही हैं।

हिंदी में विज्ञान लेखन का इतिहास

हिन्दी में विज्ञान लेखन के संबंध में वर्ष 1847 में स्कूल बुक सोसाइटी, आगरा ने 'रसायन प्रकाश प्रश्नोत्तर' का प्रकाशन किया था। इसी ने सन् 1860 में 'सरल विज्ञान विटप' नामक पुस्तक का प्रकाशन किया। सन् 1862 में अलीगढ़ में 'साइंटिफिक सोसाइटी' नामक संस्था बनी, जिसका उद्देश्य अंग्रेजी और अन्य विदेशी भाषाओं से हिंदी, उर्दू और फ़ारसी में अनुवाद करना था। काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने हिन्दी में वैज्ञानिक शब्दावली–निर्माण की परंपरा की शुरूआत करते हुए 1898 में पारिभाषिक शब्दावली प्रस्तुत की। हिंदी में पारिभाषिक शब्द निर्माण का यह सर्वप्रथम सर्वाधिक सुनियोजित संस्थागत प्रयास देश में सभी प्रचलित भाषाओं में वैज्ञानिक शब्दावली और साहित्य–सृजन की प्रक्रिया का सूत्रपात करनेवाला साबित हुआ।

प्रमुख विज्ञान लेखक डॉ. शिव गोपाल मिश्र के अनुसार विज्ञान लेखन का श्रीगणेश 1884–88 के बीच में ही हो चुका था जब 'पीयूष प्रवाह' पत्रिका में अंबिका दत्त व्यास की विज्ञान कथा 'आश्चर्य वृत्तांत' प्रकाशित हुई थी। उनके अनुसार 1900 में सरस्वती पत्रिका के प्रथम अंक में केशव प्रसाद सिंह की विज्ञान कथा 'चन्द्रलोक की यात्रा' छपी। ये दोनों कहानियाँ हिंदी में विज्ञान लेखन के विकास का आधार बनीं। गुरुकुल कांगडी (1900) ने विज्ञान सहित सभी विषयों की शिक्षा के लिए हिंदी को माध्यम बनाया और तदनुरूप 17 पुस्तकें तैयार कीं। सन् 1910 में हिंदी साहित्य सम्मेलन ने हिंदी विज्ञान लेखन में विशेष भूमिका निभाई। विज्ञान परिषद की स्थापना 1913 में हुई। इसका उद्देश्य राष्ट्रभाषा हिंदी के माध्यम से विज्ञान का प्रचार–प्रसार करना था। मासिक पत्रिका 'विज्ञान' का प्रकाशन सन् 1915 में शुरू हुआ, जो विगत 101 वर्षों से लगातार प्रकाशित हो रही है। विज्ञान परिषद ने दर्जनों लोकप्रिय विज्ञान पुस्तकों का प्रकाशन किया है। 2000 के दशक में इसने कई महत्वपूर्ण प्रकाशन निकाले हैं। साथ ही 'विज्ञान लेखन के 100 वर्ष' के दो खंडों तथा जैव प्रौद्योगिकी पारिभाषिक शब्दावली का भी प्रकाशन किया है। विज्ञान परिषद का एक और सराहनीय कार्य सन् 1958 से 'विज्ञान परिषद अनुसंधान पत्रिका' का प्रकाशन है। हिंदी में शोध–पत्र प्रकाशित करने वाली विज्ञान की यह पहली मासिक पत्रिका है। इसके अतिरिक्त परिषद ने वनस्पतियों और प्राणियों के वंश तथा जाति नामों का कोश भी प्रकाशित किया है, जिसमें लगभग 11000 वंश तथा जातियों के अंग्रेजी व लैटिन उच्चारण देवनागरी में दिए गए हैं। इस प्रक्रिया में जहाँ एक ओर अंग्रेज़ी तथा दूसरी यूरोपीय भाषाओं से वैज्ञानिक साहित्य का उर्दू, हिंदी और फ़ारसी भाषाओं में अनुवाद किया गया तो दूसरी ओर शब्दावली–निर्माण, वैज्ञानिक लेखन और मौलिक पुस्तकें लिखने को भी प्रोत्साहित किया गया। वर्ष 1924 में महापंडित राहुल सांकृत्यायन की 'बाईसवीं सदी' और डॉ. संपूर्णानन्द की 'पृथ्वी से सप्तर्षि मंडल तक' नामक वैज्ञानिक उपन्यास प्रकाशित हुए। ये उदाहरण इस बात की पुष्टि करते है कि वैज्ञानिक विषयों की अभिव्यक्ति में हिंदी आरंभ से ही समर्थ रही है। सन् 1925 में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से वैज्ञानिक शब्दकोश प्रकाशित हुआ। सन् 1926 से 1950 के बीच वैज्ञानिक साहित्य के निर्माण के प्रति लोगों की रुचि बढ़ी और कई पारिभाषिक शब्द–संग्रह प्रकाशित हुए। सन् 1930 से 1937 के दौरान विज्ञान परिषद ने 4821 शब्दों का विज्ञान कोश बनाया। सन् 1939 में श्रीकृष्ण वल्लभ द्विवेदी के संचालन में ज्ञान–विज्ञान का 'हिंदी विश्वभारती' नाम विश्वकोश आरंभ हुआ। हिंदी का यह पहला संदर्भ ग्रंथ है। वैज्ञानिक और औद्योगिकी अनुसंधान परिषद द्वारा हिंदी में लगभग 5000 पृष्ठों में दस खंडों में 'भारत की संपदा' नामक सचित्र वैज्ञानिक विश्वकोश का प्रकाशन करवाया गया, जिसमें भारत के प्राकृतिक पदार्थों, वनस्पतियों, खनिजों एवं प्राणियों के विषय में वैज्ञानिक तथ्यों से परिपूर्ण जानकारियाँ हैं।

भारतेंदु और द्विवेदीयुगीन लेखकों और संपादकों ने हिन्दी में पर्याप्त वैज्ञानिक लेखन भी किया है। पं. बालकृष्ण भट्ट, पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी, पं. चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' और पं. रामचन्द्र शुक्ल जैसे साहित्यकारों ने वैज्ञानिक विषयों पर अत्यंत सहज ढंग से लिखा। हिन्दी में वैज्ञानिक लेखन को अत्यधिक प्रोत्साहित करने की दृष्टि से डॉ. रघुवीर द्वारा किए गए कार्य को कभी नकारा नहीं जा सकता। 1955 में प्रकाशित उनका 'ए कांप्रिहेनसीव इंग्लिश–हिन्दी डिक्शनरी ऑफ गवर्नमेंटल एंड एजुकेशनल वर्ड्स एण्ड फ्रेसेस' से सभी परिचित है। आगे चलकर वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग ने इसे नया स्वरूप प्रदान किया।

वर्तमान में विज्ञान लेखन गति पकड़ रहा है। रसायन, भौतिकी, गणित, वनस्पति विज्ञान, प्राणी विज्ञान, कृषि विज्ञान,

वानिकी, कम्प्यूटर विज्ञान, अंतरिक्ष विज्ञान, पर्यावरण विज्ञान जैसे कई वैज्ञानिक विषयों पर पुस्तक लेखन और शोध पत्र लेखन अधिक मात्रा में हो रहा है। इसकी गति को अधिक तेज करने की आवश्यकता है।

हिंदी में विज्ञान लेखन की समस्याएँ

हमारे देश में वैज्ञानिक विषयों पर हिंदी में लेख लिखने वाले कई लेखक हैं, परन्तु अनूदित लेखों की अपेक्षा मौलिक लेखन कम है, अर्थात् हिंदी में मूल रूप से लिखने वाले सक्रिय लेखकों की कमी है। पेशेवर वैज्ञानिक हमेशा अपने अनुसंधान में अंग्रेज़ी का प्रयोग करते हैं, इसलिए वे शोध पत्र आदि अंग्रेज़ी में ही लिखते हैं। उनको हिंदी में लिखने के प्रति कोई रुचि ही नही है। इसके कई कारण हैं: (1) भाषागत कठिनाई, (2) हिंदी के प्रति वैज्ञानिक समाज की घोर उपेक्षा, (3) प्रकाशन में आने वाली कठिनाइयाँ, (4) अंग्रेज़ी में लिखने से खुद को अधिक गौरवान्वित महसूस करते हैं तथा (5) हिंदी के मुकाबले अंगेजी में लिखने से आर्थिक लाभ ज्यादा होता है।

शब्दावली की समस्या

हिन्दी में विज्ञान लेखन की प्रमुख समस्या है पारिभाषिक शब्दावली की। वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा स्वीकृत पारिभाषिक शब्दावली का अधिकतर प्रयोग करते रहने का आग्रह किया जाता है ताकि वैज्ञानिक विवरणों में एकरूपता बनी रहे। लेकिन इसका प्रयोग कम होता है। इसका एक कारण यह बता दिया जाता है कि ये शब्द क्लिष्ट होते हैं। पहली नज़र में तो यह सही भी लगता है, जिसके समर्थन में कृषि क्षेत्र में प्रयुक्त होने वाले कुछ ऐसे शब्दों का उदाहरण देना चाहूँगा, जो किसान और आम जनता के लिए क्लिष्ट लगते हैं।

कृषि अनुसंधान के क्षेत्र में हमेशा प्रयुक्त होने वाले दो शब्द हैं 'biotic' एवं 'biotic', जिनके लिए हिंदी में 'जीवीय' एवं 'अजीवीय' का प्रयोग किया जाता है। इनका अर्थ किसानों की समझ में शायद ही आएगा। एक अन्य शब्द है 'Integrated', जिसके लिए कहीं 'एकीकृत' शब्द का प्रयोग किया जाता है तो कहीं 'समेकित' शब्द का। जहाँ फल, फूल एवं सब्जियों की बात आती है, वहाँ अक्सर एक शब्द आता है *Shelf life*, जिसके लिए वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग की शब्दावली में 'निधानी आयु' दिया गया है। उच्च शिक्षा प्राप्त लोग भी इसे समझ नहीं पाएँगे। एक शब्द है ^accession*। इसके लिए वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग की षब्दावली में कोई शब्द नहीं मिलता है। अन्य कोषों में 'आगमन', 'अभिगमन', 'प्राप्ति', 'अवाप्ति', 'पदप्राप्ति', ''पदग्रहण', 'पदारोहण', 'आरोहण', 'राज्यारोहण', 'राज्यप्राप्ति', 'सहमति', 'स्वीकृति', 'अनुवृद्धि', 'अधिमिलन' आदि शब्द मिलते हैं। लेकिन कृषि के क्षेत्र में इनमें से कोई भी शब्द समीचीन नहीं लगता। जैवप्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हमेशा आनेवाला शब्द है 'DNA Fingerprinting'। इसके लिए हिंदी में शब्द मिलना मुश्किल है। एक अन्य शब्द है 'genotype'। इसके लिए 'जीनी संरचना', 'जीन प्ररूप', 'वंशप्ररूप समजीनी' आदि शब्द मिलते हैं। इन शब्दों का अर्थ किसानों की समझ में कितना आएगा? सब्जी विज्ञान के क्षेत्र में प्रयोग में आने वाला शब्द है 'male sterility'। इसके लिए 'नर जीवाणुनाशी', 'नर रोगाणुहीनता', नरबंध्य आदि शब्दों का इस्तेमाल देखा जाता है, जो आम जनता की समझ से परे है। सिंचाई के क्षेत्र में प्रयुक्त होनेवाला एक शब्द है 'fertigation' इसके स्थान पर इस्तेमाल करने के लिए अनुकूल शब्द नहीं मिलता है। इसी प्रकार एक अन्य शब्द है 'fermentation', जिसके लिए 'किण्वन' या 'खमीरीकरण' शब्द पाए जाते हैं। लेकिन इन्हें आम जनता समझ नहीं पाएगी। ऐसे कई शब्द हैं, जिनका सही रूपांतर पाना अत्यंत कठिन लगता है।

पारिभाषिक शब्दावली के मानकीकरण व सरलीकरण के मामले में हम अब तक सफल नहीं हो सके हैं। हमें मानना चाहिए कि विज्ञान लेखन में मनचाहे शब्दों का प्रयोग नहीं किया जा सकता। इसमें तकनीकी शब्दावली का प्रयोग ही जरूरी है, क्योंकि विज्ञान की अपनी भाषा होती है। इसलिए एक तो शब्दावली में नए–नए शब्दों को जोड़ कर इसका मानकीकरण करना अत्यंत जरूरी है और दूसरा अगर अनुवादक को ऐसे शब्दों का सामना करना पड़ता है तो संबंधित विषय विशेषज्ञों से इस संबंध में विषय की जानकारी लेनी चाहिए या विषय विशेषज्ञ ही मूल रूप में हिंदी में लिखें ताकि अनुवाद में आने वाली गलती से बच सके और ऐसे शब्दों का बार–बार प्रयोग करें, क्योंकि कोई भी शब्द क्लिष्ट नहीं होते, वे अपरिचित होते हैं। बार–बार प्रयोग करने से वे शब्द भी परिचित लगते हैं। यहाँ इस बात पर भी अवश्यक ध्यान दिया जाए कि शब्द–निर्माण या शब्द–चयन के समय सिर्फ संस्कृत पर ज्यादा निर्भर न होकर अन्य भारतीय भाषाओं से भी शब्दों को अपनाया जाए। हमें अब तक निर्मित शब्दावली के प्रयोग के मार्ग में आने वाली व्यावहारिक कठिनाइयों का सर्वेक्षण करना होगा कि वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा निर्मित शब्दावली का कितना अंश प्रयोगकर्ताओं द्वारा स्वीकार किया जा रहा है और कितना अंश स्वीकार नहीं हुआ है। विज्ञान के विभिन्न विषयों के विद्वानों एवं वैज्ञानिकों को चाहिए कि देश की आम जनता या समाज के अन्य वर्गों को ध्यान में रखकर राष्ट्रीय भाषाओं में वैज्ञानिक लेखन का कार्य करें।

हिंदी में विज्ञान लेखन की संभावनाएँ

विज्ञान एवं नवीन सूचना प्रौद्योगिकी के इस प्रभावी दौर में जब हम हिंदी भाषा पर गौर करते हैं तो यह तथ्य सामने

आता है कि वैश्विक दृष्टि से अनेक क्षेत्रों में अब इस भाषा का महत्व और अधिक बढ़ गया है। यह बात जनसंख्या की दृष्टि से संसार की प्रमुख भाषाओं के अद्यतन (2015) आँकड़े भी सिद्ध करते हैं। संपूर्ण विश्व में हिंदी भाषा–भाषी 1300 मिलियन हैं, जो कुल जनसंख्या का 18.00 प्रतिशत है। इसके पश्चात क्रमशः चीनी (15.23 प्रतिशत), अंग्रेज़ी (13.85 प्रतिशत), अरबी (6.37 प्रतिशत), स्पेनी (5.47 प्रतिशत), रूसी (3.60 प्रतिशत), फ्रेंच (1.80 प्रतिशत), जापानी (1.74 प्रतिशत), जर्मन (1.66 प्रतिशत), इटैलियन (0.94 प्रतिशत) आदि भाषाएँ आती हैं।

अब हिंदी भारत की राष्ट्रीय अस्मिता का ही प्रतीक नहीं है, बल्कि यह विश्व में प्रथम स्थान पर विराजमान ऐसी समर्थ भाषा है, जिसमें ज्ञान–विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों के विषयों को अभिव्यक्त करने की अद्‌भुत क्षमता है। हमें यह ध्यान में रखना चाहिए कि हिंदी भारतीय समाज में व्यापक स्तर पर व्यवहृत होने वाली भाषा है। वर्तमान समय में विज्ञान लेखन की बहुत अधिक माँग है। आज समाज के हर वर्ग के लोग विज्ञान के विभिन्न विषयों में अधिक से अधिक एवं अद्यतन जानकारी हासिल करने के लिए उत्सुक रहते हैं। लेकिन उनकी अपेक्षा यह है कि उन्हें ये जानकारी उनकी भाषा में और सरल भाषा में प्राप्त हों।

सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में जन साधारण को ज्ञानार्जन के कई साधन उपलब्ध हैं। इसको अधिक प्रभावी बनाने के लिए जन साधारण को विज्ञान के साथ जोड़ा जाना ही विज्ञान लेखन का परम लक्ष्य होना चाहिए। इस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु लोगों में वैज्ञानिक जागरूकता पैदा करने की आवश्यकता है, जिसका सशक्त एवं समर्थ माध्यम है विज्ञान लेखन।

सुप्रसिद्ध हिंदी साहित्यकार श्री कमलेश्वर के अनुसार ''विज्ञान के क्षेत्र में सबसे बड़ी समस्या भाषा–माध्यम की है। उच्च शिक्षा में माध्यम–परिवर्तन न होने के कारण अभी भी विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी की पहुँच बहुसंख्यक समाज तक नहीं हो पाई है। व्यक्तिगत तथा सरकारी प्रयासों से वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली की समस्या कुछ हद तक सुलझ गई है, जिसके सहारे आज ज्ञान की हर विधा में सार्थक अभिव्यक्ति सहज रूप से संभव है। माना कि अभी तक अनुवाद का सहारा अधिक लिया जाता रहा है। उसमें गुण–दोष भी रहे हैं, पर इधर के वर्षों में विज्ञान लेखन ने जो प्रगति की है, उसकी जो उपलब्धियाँ रही हैं, वे उज्वल भविष्य के प्रति हमें आश्वस्त करती हैं। विज्ञान लेखन के क्षेत्र में जो नई पौध तैयार हुई है, वह मौलिकता के प्रति सजग लगती है। आज विषय विशेषज्ञ भी मौलिक विज्ञान साहित्य–सृजन हेतु आगे आ रहे हैं। विज्ञान पत्रिकाओं का विस्तार हुआ है तथा प्रकाशक भी इस विधा की ओर आकर्षित हुए हैं। पाठकों की रुचि भी परिष्कृत हुई है।'' कमलेश्वर के इस वक्तव्य से यह पता चलता है कि विज्ञान लेखन धीरे–धीरे आगे बढ़ रहा है।

ज्ञान–विज्ञान के विभिन्न विषयों में सूचना प्रौद्योगिकी की पैठ को ज्ञान–विस्तार का आधार कहा जा सकता है। इस ज्ञान–भंडार में भाषा का, साधन के रूप में विशेष महत्व है। ऐसी स्थिति में भारत में सर्वाधिक बोली और समझी जाने वाली हिंदी के व्यवहार को बढ़ाकर उसे अधिकाधिक उपयोगी और आवश्यक बनाने की जरूरत है। वस्तुतः भारतीय परिप्रेक्ष्य में वैश्विक ज्ञान संपदा का आदान–प्रदान तब तक अधूरा ही रहेगा, जब तक वह हिंदी भाषा के साथ न जुड़ जाए। यही वर्तमान समय की माँग भी है। जन साधारण को वैज्ञानिक विषयों के प्रति जागरूक करना है तो उनकी भाषा में वैज्ञानिक विषय प्रस्तुत करना होगा। लेकिन आज विज्ञान व प्रौद्योगिकी की भाषा हिंदी या कोई अन्य भारतीय भाषा नहीं है। अगर हमें विज्ञान को लोगों की भावनाओं से जोड़ना है तो हमें भारतीय भाषाओं को और विशेष रूप से हिंदी को अपनाना होगा। अनुवाद का सहारा हम कब तक लेते रहेंगे?

अब इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का प्रभुत्व बढ़ रहा है। इलेक्ट्रॉनिक पत्रिकाएँ, पुस्तकें व्यापक रूप से प्रचलित हो रही हैं। इसलिए इंटरनेट पर हिंदी में विज्ञान के विभिन्न विषयों से संबंधित लेख व पुस्तकें उपलब्ध हों, यही आने वाले समय की माँग है। ऐसा करने पर ही हम समय के साथ चल पाएँगे।

विज्ञान के क्षेत्र में आजकल परमाणु ऊर्जा से लेकर स्टेम सेल अनुसंधान पर, नैनोटेक्नोलोजी से लेकर ह्यूमन जीनोम और क्लोनिंग पर, रोबोटिक्स पर, अन्य ग्रहों में जीवन की खोज पर तथा कृषि के क्षेत्र में नई हरित क्रांति पर कार्य हो रहा है। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकियों की उपलब्धियों से यह स्पष्ट होता है कि विज्ञान मनुष्य जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन के लिए जिम्मेदार है। ऐसे अत्यंत महत्वपूर्ण एवं उपयोगी ज्ञान से हमारे देशवासियों को भाषा की दीवार खड़ी कर वंचित रखना कितना समीचीन है?

हमारे देश में उच्च शिक्षा देने वाले अधिकांश विश्वविद्यालयों में ज्ञान विज्ञान के विभिन्न विषयों की शिक्षा अंग्रेजी में दी जा रही है। उच्च स्तर पर हिंदी माध्यम में शिक्षा प्रदान करने की बात आती है तो अंग्रेजी के पक्षधर कहते हैं कि हिंदी में वैज्ञानिक विषयों पर पुस्तकों की कमी है तथा पढाने वाले प्राध्यापकों की कमी है। भूमण्डलीकरण के दौर में विदेशों में रोज़गार के अवसर अंग्रेजी में अधिक मिलते हैं। कुछ हद तक यह सही है, लेकिन पूर्ण रूप से नहीं। भारत में हिंदी को उच्च शिक्षा के माध्यम के रूप में स्थापित करने के सभी साधन और अवसर उपलब्ध हैं। कमी सिर्फ हमारी सोच की, दृढ़ संकल्प और मानसिकता की है।

प्रोत्साहन और प्रेरणा

हिन्दी में विज्ञान लेखन को प्रेरणा और प्रोत्साहन की कमी नहीं है। सरकार और निजी संस्थाओं द्वारा हिंदी में विज्ञान लेखन को बढ़ावा देने के लिए कई पुरस्कार योजनाएँ प्रारंभ की गई हैं, जिनमें कुछ निम्नलिखित हैं:

कृषि विज्ञान में हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा दिए जाने वाले पुरस्कार

कृषि एवं संबंधित विज्ञान में हिन्दी में तकनीकी पुस्तक लेखन में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद पुरस्कार

इस पुरस्कार के माध्यम से कृषि एवं संबंधित विज्ञान में मूल रूप से हिन्दी की तकनीकी पुस्तकें लिखने वाले लेखकों को प्रोत्साहन प्रदान किया जाता है। इसमें कृषि के विभिन्न क्षेत्रों में कुल चार पुरस्कार दिए जाते हैं। पुरस्कार राशि 1.00 लाख रुपए है।

राजभाषा विभाग, भारत सरकार

हिन्दी में ज्ञान–विज्ञान मौलिक पुस्तक लेखन के लिए राजभाषा गौरव पुरस्कार

हिन्दी में ज्ञान–विज्ञान के विभिन्न विषयों में पुस्तक लेखन को बढ़ावा देने के लिए राजभाषा विभाग ने यह पुरस्कार योजना लागू की है। प्रथम पुरस्कार के रूप में दो लाख रुपए एवं स्मृति चिह्न, द्वितीय पुरस्कार के रूप में 1,25,000/– रुपए एवं स्मृति चिह्न, तृतीय पुरस्कार के रूप में 75,000/– रुपए एवं स्मृति चिह्न तथा प्रोत्साहन पुरस्कार के रूप में दस लोगों को 10,000/– रुपए एवं स्मृति चिह्न प्रदान किया जाता है।

हिन्दी में ज्ञान–विज्ञान मौलिक पुस्तक लेखन के लिए राजभाषा गौरव पुरस्कार

भारत के नागरिकों को हिन्दी में ज्ञान–विज्ञान के विभिन्न विषयों में पुस्तक लेखन को बढ़ावा देने के लिए राजभाषा विभाग ने यह पुरस्कार योजना लागू की है। प्रथम पुरस्कार के रूप में एक लाख रुपए एवं स्मृति चिह्न, द्वितीय पुरस्कार के रूप में 75,000/– रुपए एवं स्मृति चिह्न, तृतीय पुरस्कार के रूप में 60,000/– रुपए एवं स्मृति चिह्न तथा प्रोत्साहन पुरस्कार के रूप में 30,000/– रुपए एवं स्मृति चिह्न प्रदान किया जाता है।

पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित उत्कृष्ट लेखों के लिए पुरस्कार

राजभाषा हिन्दी में लेख लिखने को प्रोत्साहित करने के लिए राजभाषा विभाग, भारत सरकार ने यह योजना लागू की है। इस योजना में दो श्रेणियों में पुरस्कार दिए जाते हैं, जैसे हिन्दी भाषी और हिन्दीतर भाषी। हिन्दी भाषी के लिए प्रथम पुरस्कार के रूप में 20,000/– रुपए एवं प्रमाण–पत्र, द्वितीय पुरस्कार के रूप में 18,000/– रुपए एवं प्रमाण–पत्र और तृतीय पुरस्कार के रूप में 15,000 हज़ार रुपए एवं प्रमाण–पत्र तथा हिन्दीतर भाषी के लिए प्रथम पुरस्कार के रूप में 25,000/– रुपए एवं प्रमाण–पत्र, द्वितीय पुरस्कार के रूप में 22,000/– रुपए एवं प्रमाण–पत्र और तृतीय पुरस्कार के रूप में 20,000 हज़ार रुपए एवं प्रमाण–पत्र प्रदान किए जाते हैं।

ऐसी कई सरकारी और गैर–सरकारी संस्थाएँ हैं, जो हिंदी में विज्ञान लेखन को बढ़ावा देने के लिए कई प्रकार के पुरस्कार देती हैं।

निष्कर्ष

उपर्युक्त बातों से स्पष्ट है कि हिंदी में विज्ञान लेखन के लिए प्रोत्साहन और प्रेरणा हमेशा मिलती रही है। इसलिए वैज्ञानिकों एवं विद्वानों को इसका भरपूर फ़ायदा उठाना चाहिए और हिन्दी में विज्ञान के विभिन्न विषयों पर मौलिक लेखन का कार्य करना चाहिए।जब तक सरकार द्वारा हिंदी को विज्ञान के विभिन्न विषयों में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में स्थान नहीं दिया जाता और इसे रोजी–रोटी से नहीं जोड़ा जाता तब तक हिंदी में विज्ञान लेखन की गति में तेजी नहीं आएगी। आज के समय की माँग और सामाजिक दायित्व है कि हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में विज्ञान व प्रौद्योगिकी संबंधी उत्कृष्ट कोटि का लेखन–कार्य अधिक से अधिक हो ताकि सामान्य जन अपनी भाषा में विज्ञान का ज्ञान प्राप्त कर लाभान्वित हो सके।

संदर्भ सूची

प्रभाकर श्रोत्रिय – अन्य भारतीय भाषाओं के संदर्भ में हिंदी। बहुवचन, अंक 46, जुलाई–सितंबर 2015, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा।

डॉ. हरीश कुमार सेठी – सूचना प्रौद्योगिकी और हिंदी। हिंदी भाषा : स्वरूप, शिक्षण, वैश्विकता, (सं.) डॉ. कमल किशोर गोयंका, डॉ. महावीर सरन जैन एवं प्रो. अवनिजेश अवस्थी, 2015 राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली।

पुरुषोत्तम चक्रवर्ती – हिंदी और विज्ञान। स्मारिका, दसवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन, भोपाल, 10–12 सितंबर 2015।

विजय कुमार वेदालंकार – विज्ञान प्रौद्योगिकी और हिंदी। स्मारिका, दसवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन, भोपाल, 10–12 सितंबर 2015।

पंकज चतुर्वेदी – इंटरनेट पर लोकप्रिय विज्ञान की भाषा अनुवाद में सावधानियाँ। स्मारिका, दसवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन, भोपाल, 10–12 सितंबर 2015।

राकेश कुमार – हिंदी में विज्ञान लेखन और अनुवाद। स्मारिका, दसवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन, भोपाल, 10–12 सितंबर 2015।

सुभाष चन्द्र लखेड़ा – हिंदी में विज्ञान संचार और रक्षा विज्ञान। स्मारिका, दसवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन, भोपाल, 10–12 सितंबर 2015।

विनीता कुमारी – हिंदी में विज्ञान साहित्य : वर्तमान स्थिति एवं सभावनाएँ। स्मारिका, दसवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन, भोपाल, 10–12 सितंबर 2015।

डॉ. शिवगोपाल मिश्र – हिंदी में विज्ञान साहित्य की वर्तमान स्थिति तथा संभावनाएँ। दसवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन, भोपाल।

डॉ. नवीन प्रकाश सिंह 'नवीन' –हिंदी में वैज्ञानिक साहित्य सृजन की स्थिति। ऑनलाइन संस्करण।

ओम प्रकाश कश्यप – विज्ञान लेखन क्या है और क्या नहीं। ऑनलाइन संस्करण।

लाल्टू –हिंदी में विज्ञान लेखन की समस्याएँ। राष्ट्रीय सहारा (हस्तक्षेप), 12 सितंबर 2015, ऑनलाइन संस्करण।

ऋषभ देव शर्मा –हिंदी में वैज्ञानिक लेखन। ऑनलाइन संस्करण।

लाल्टू –हिंदी में वैज्ञानिक शब्दावली की समस्या। जनसत्ता, 25 सितंबर 2014, ऑनलाइन संस्करण।

एक बरस बीत गया

झुलसाता जेठ मास, शरद चांदनी उदास, सिसकी भरते सावन का, अंतर्घट रीत गया एक बरस बीत गया।

सींकचों में सीमटा जग, किंतु विकल प्राण विहग, धरती से अम्बर तक, गुंज मुक्ति गीत गया एक बरस बीत गया।

पथ निहारते नयन, गिनते दिन पल छिन, लौट कभी आएगा, मन का जो मीत गया एक बरस बीत गया।

अपने ही मन से कुछ बोलें

क्या खोया, क्या पाया जग में, मिलते और बिछुड़ते मग में, मुझे किसी से नहीं शिकायत, यद्यपि छला गया पग–पग में एक दृष्टि बीती पर डालें, यादों की पोटली टटोलें।

पृथ्वी लाखों वर्ष पुरानी, जीवन एक अनन्त कहानी, पर तन की अपनी सीमाएं, यद्यपि सौ शारदा की वाणी।

इतना काफी है अंतिम दस्तक पर, खुद दरवाजा खोलें।

जन्म–मरण अविरत फेरा, जीवन बंजारों का डेरा, आज यहाँ, कल कहाँ कूच है, कौन जानता किधर सवेरा।

अंधियारा आकाश असीमित, प्राणों के पंखों को तौलें, अपने ही मन से कुछ बोलें।।

–अटल बिहारी वाजपेयी

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के विभिन्न संस्थानों से प्राप्त गतिविधियां

परिषद मुख्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में किए गए कार्य

हिंदी चेतना मास

परिषद मुख्यालय तथा इसके संस्थानों आदि में पिछले वर्षों की भांति इस वर्ष भी हिन्दी सप्ताह, पखवाड़ा/ चेतना माह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर माननीय कृषि मंत्री जी का प्रेरणाप्रद संदेश जारी किया गया तथा महानिदेशक महोदय ने भी एक अपील जारी करके सभी अधिकारियों/कर्मचारियों से अपना अधिक से अधिक सरकारी कामकाज हिन्दी में करने का अनुरोध किया। परिषद मुख्यालय में ''हिन्दी चेतना मास'' के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। जिसका विवरण इस प्रकार है:–

परिषद मुख्यालय में 14 सितम्बर, 2016 से 13 अक्टूबर, 2016 तक हिन्दी चेतना मास का आयोजन किया गया जिसके दौरान अनेक प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं तथा विजेताओं को नकद पुरस्कार प्रदान किए गए।

हिन्दी में अधिकाधिक काम करने के लिए परिषद में चल रही राजभाषा विभाग की नकद पुरस्कार योजना के अंतर्गत मुख्यालय में वर्ष 2015–2016 के दौरान अपना अधिकतम कार्य हिन्दी में करने के लिए 10 कार्मिकों को पुरस्कृत किया गया।

भाकृअनुप द्वारा वार्षिक राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा वार्षिक राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह एवं हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन 6 दिसंबर, 2016 को एनएएससी, परिसर, नई दिल्ली में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में डॉ. प्रसन्न कुमार पाटसाणी, सांसद एवं संयोजक, संसदीय राजभाषा समिति, मुख्य अतिथि तथा डॉ. लीलाधर मंडलोई, पूर्व महानिदेशक, आकाशवाणी एवं सुप्रसिद्ध कवि विशिष्ट अतिथि के तौर पर कार्यक्रम में शामिल हुए।

इस अवसर पर डॉ. त्रिलोचन महापात्र, सचिव, डेयर एवं महानिदेशक भाकृअनुप ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि प्रयोगशालाओं के अनुसंधान, विकास कार्य, प्रयोग तथा इनसे संबंधित विवरण किसानों तक किसानों की भाषा में पहुंचाए जाने चाहिए। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु राजभाषा एक सशक्त माध्यम है जिसके द्वारा वैज्ञानिक अपनी बातें किसानों तक पहुंचा सकते हैं। इसके साथ ही, उन्होंने कहा कि विचार की अभिव्यक्ति भाषा के माध्यम से होती है जो सरल होनी चाहिए। डॉ. महापात्र ने कहा कि देश में कृषि उत्पादकता में बढ़ोतरी हुई है तथा खाद्यान्न आत्मनिर्भरता के साथ ही हमारा देश कृषि उत्पादों का निर्यातक भी बन चुका है। इसके साथ ही, उन्होंने संसदीय राजभाषा समिति के संयोजक को आश्वस्त किया कि परिषद राजभाषा निर्देशों के अनुसार कार्य कर रही है जिसमें पहले की तुलना में काफी सुधार होने के साथ ही तेजी से कार्य हुआ है। उदाहरणस्वरूप उन्होंने बताया कि 7 क्षेत्रीय समितियों की बैठक में से 6 बैठक के सभी कार्यकलाप पूर्णतः हिन्दी में किए गए जो एक सकारात्मक कदम है।

इस अवसर पर डॉ. प्रसन्न कुमार पाटसाणी, सांसद ने अपने संबोधन में राजभाषा के अधिक प्रभावी क्रियान्वयन पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि हिन्दी एक सशक्त भाषा है जो अभिव्यक्ति के सभी मानदंडों पर खरी उतरती है।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि डॉ. लीलाधर मंडलोई ने कहा कि कार्यालयों में हिन्दी में कार्य को सुनिश्चित करने के लिए सर्वप्रथम कर्मचारियों को प्रेरित करना चाहिए जिससे वे अपनी रुचि से राजभाषा में कार्य कर सकें।

परिषद द्वारा 'हिन्दी चेतना मास' के दौरान हिन्दी को बढ़ावा देने वाली विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया था। इसके तहत प्रश्नमंच, हिन्दी निबंध, हिन्दी टिप्पण, काव्य पाठ, आशुभाषण, वाद–विवाद, हिन्दी टंकण, शब्द परिचय प्रतियोगिताओं के विजेताओं तथा वर्ष भर हिन्दी में कार्य करनेवाले सर्वश्रेष्ठ प्रतिभागियों को प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किए गए। ये पुरस्कार डॉ. प्रसन्न कुमार पाटसाणी द्वारा वितरित किए गए।

हिन्दी कार्यशालाएं

परिषद मुख्यालय में राजभाषा नीति को कारगर ढ़ंग से लागू करने के लिए प्रत्येक तिमाही में अलग–अलग वर्ग के अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है। रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान इस तरह की चार कार्यशालाओं का आयोजन किया गया जिसका विवरण इस प्रकार है:–

- पहली कार्यशाला दिनांक 8.02.2016 को परिषद मुख्यालय में कार्यरत अवर श्रेणी लिपिकों/अपर श्रेणी लिपिकों के लिए ''यूनिकोड के माध्यम से हिन्दी में टाइपिंग का प्रशिक्षण'' विषय पर आयोजित की गई। इस कार्यशाला में मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. केवल कृष्ण, वरिष्ठ निदेशक (तकनीकी), राजभाषा विभाग, नई दिल्ली को आमंत्रित किया गया था। डा. केवल कृष्ण ने कार्यशाला में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को राजभाषा कार्यान्वयन के महत्व को रेखांकित करते हुए हिन्दी शब्द संसाधन/हिन्दी टंकण का व्यवहारिक प्रशिक्षण दिया। उन्होंने हिन्दी शब्द संसाधन में आने वाली सामान्य कठिनाईयों का समाधान बड़े ही सरल ढ़ंग से किया।
- दूसरी कार्यशाला दिनांक 28.06.2016 को परिषद मुख्यालय में कार्यरत अवर सचिवों और उप सचिवों के लिए आयोजित की गई थी। जिसका विषय था ''राजभाषा कार्यान्वयन में प्रशासनिक अधिकारियों की भूमिका''। इस कार्यशाला में मुख्य वक्ता के रूप में दिल्ली विश्वविद्यालय के हिन्दी प्रभाग के प्रो. पूरन चंद टंडन को आमंत्रित किया गया था। डॉ. पूरलन चंद टंडन ने कार्यशाला की प्रासंगिकता एवं उपयोगिता पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि प्रशासनिक अधिकारी किसी भी मंत्रालय/विभाग और सरकार के बीच की वह कड़ी है जो सरकार चलाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। हिन्दी संघ सरकार की कामकाज की भाषा के साथ–साथ हमारी राष्ट्र भाषाओं में से एक है। जिस तेजी से हिन्दी विश्व पटल पर अपनी पहचान बना रही है इसमें कोई शक नहीं कि यह एक दिन विश्व की प्रमुख भाषाओं में से एक होगी। इसके लिए हर स्तर पर प्रयास करने की जरूरत है। इसके लिए प्रशासनिक वर्ग सबसे महत्वपूर्ण है।
- परिषद की तीसरी हिन्दी कार्यशाला दिनांक 2.9.2016 को आयोजित की गई थी। इस कार्यशाला का विषय था ''सरकारी कामकाज में राजभाषा नियमों का अनुपालन सुनिश्चित करना'' । यह कार्यशाला मुख्यालय में कार्यरत अनुभाग अधिकारियों के लिए आयोजित की गई थी। इस कार्यशाला में मुख्या वक्ता के रूप में पूर्व निदेशक (रा.भा.) श्री हरीश चंद्र जोशी को आमंत्रित किया गया था। उन्होंने सरकारी कामकाज हिन्दी में करने के लिए राजभाषा नियम व अधिनियम की जानकारी देते हुए उसमें किए गए प्रावधानों के बारे में विस्तार से बताते हुए कहा कि किसी भी मंत्रालय/विभाग में किसी भी नियम/कानून को लागू करने में अनुभाग अधिकारियों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।
- चौथी हिन्दी कार्यशाला दिनांक 14.12.2016 को परिषद मुख्यालय में कार्यरत वैज्ञानिकों/वरि.वैज्ञानिकों/प्रधान वैज्ञानिकों के लिए आयोजित की गई थी। जिसका विषय था ''सूचना प्रौद्योगिकी में हिन्दी का प्रयोग'' इस कार्यशाला में प्रमुख वक्ता के रूप में श्री करूणेश कुमार अरोड़ा को आमंत्रित किया गया था। श्री अरोड़ा ने परिषद मुख्यालय में कार्यरत वैज्ञानिकों को संबोधित करते हुए कहा कि किसी भी देश की उन्नति/ विकास में वैज्ञानिकों का महत्वपूर्ण योगदान है। चाहे वह कोई भी क्षेत्र हो। विज्ञान की उन्नति के बिना विकास संभव

नहीं है। परिषद एक कृषि प्रमुख शीर्षस्थ संगठन है। स्वतंत्रता के बाद देश को खाद्यान्न के मामले में आत्मनिर्भर बनाने में परिषद के वैज्ञानिकों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। आज का समय सूचना प्रौद्योगिकी का है। आज दिन–प्रतिदिन विज्ञान के क्षेत्र में नए–नए अनुसंधान हो रहे हैं। इस अनुसंधान उपलब्धियों को आम जनता और किसानों तक पहुंचाने के लिए हिन्दी से अच्छा कोई अन्य माध्यम नहीं हो सकता है और इस कार्य को वैज्ञानिकगण जितनी आसानी से अपनी मातृभाषा या हिन्दी के माध्यम से कर सकते हैं, उतनी अंग्रेजी माध्यम से पहुंचा पाना संभव नहीं है। इसलिए वैज्ञानिकगण से अनुरोध है कि वे अपना सरकारी कामकाज अधिक से अधिक हिन्दी में ही करें, ताकि भारत विश्व पटल पर हिन्दी को स्थापित करने में सफल हो सकें।

प्रमुख उपलब्धियां

- परिषद में प्रवीणता प्राप्त अधिकारियों/कर्मचारियों को अपना अधिकतम कार्य हिंदी में करने के लिए सचिव महोदय की ओर से प्रोत्साहित किया जाता है और उन्हें अपना सारा प्रशासनिक कामकाज हिन्दी में करने के लिए व्यक्तिगत आदेश जारी किए गए हैं।
- रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान राजभाषा नियमावली, 1976 के नियम 10(4) के अंतर्गत परिषद के संस्थानों/केन्द्रों को भारत सरकार के राजपत्र में अधिसूचित किया गया है जिसे मिलाकर अधिसूचित कार्यालयों की संख्या अब 129 हो चुकी है। इसके अलावा 16 अनुभागों को भी नियम 8 (4) के अंतर्गत अपना शतप्रतिशत कार्य हिन्दी में करने के लिए विनिर्दिष्ट किया गया है।
- अपर सचिव, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग तथा सचिव, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की अध्यक्षता में गठित ''डेयर'' तथा परिषद की संयुक्त राजभाषा कार्यान्वयन समिति की चार तिमाही बैठकों का आयोजन किया गया है।
- परिषद के अधिकांश संस्थानों/केन्द्रों आदि में राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन हो गया है तथा उनकी बैठकें आयोजित की जा रही हैं। परिषद मुख्यालय में सभी संस्थानों से प्राप्त होने वाली राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों की नियमित समीक्षा की गई और पाई गई कमियों को सुधारने के उपाय सुझाए जाते हैं।
- तिमाही प्रगति रिपोर्ट ऑन लाइन क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय को भेजी जाती है। विभिन्न संस्थानों से प्राप्त तिमाही रिपोर्टों की समीक्षा की जाती है और कारगर अमल के लिए सुझाव दिए जाते हैं। भा.कृ.अनु.प. की ओर से नियमित रूप से नराकास की बैठकों में प्रतिभागिता की जाती है।
- हिन्दी भाषा, हिन्दी टाइपिंग और हिन्दी आशुलिपि में प्रशिक्षण दिलाने के लिए कर्मचारियों को प्रशिक्षण के लिए नियमित रूप से नामित किया जा रहा है। हिन्दी अनुभाग द्वारा मुख्यालय में हिन्दी टाइपिंग के लिए यूनिकोड पर प्रशिक्षण भी दिया जाता है।
- रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान चार हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया जिसमें अलग–अलग वर्ग के अधिकारियों/कर्मचारियों को नामित किया गया।
- हिन्दी में अधिकाधिक काम करने के लिए परिषद में चल रही राजभाषा विभाग की नकद पुरस्कार योजना के अंतर्गत मुख्यालय में वर्ष 2015–2016 के दौरान अपना अधिकतम कार्य हिन्दी में करने के लिए 10 कार्मिकों को पुरस्कृत किया गया।
- ''राजर्षि टंडन राजभाषा पुरस्कार योजना'' के अंतर्गत वर्ष 2014–15 में अपना सर्वाधिक कामकाज राजभाषा हिन्दी में करने हेतु संस्थानों को पुरस्कृत किया गया है जिनके नाम इस प्रकार हैं :–

1.	बड़े संस्थान का नाम	पुरस्कार
	1. केन्द्रीय बारानी कृषि अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद	प्रथम
	2. केन्द्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान, मुम्बई	द्वितीय
2.	'क' और 'ख' क्षेत्र के संस्थानों/केन्द्रों आदि का पुरस्कार	पुरस्कार
	1. राष्ट्रीय समेकित नाशीजीव प्रबंधन अनुसंधान केन्द्र, पूसा, नई दिल्ली	प्रथम
	2. केन्द्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पोर्ट ब्लेयर	द्वितीय
3.	'ग' क्षेत्र में स्थित अन्य संस्थानों/केन्द्रों आदि का पुरस्कार	पुरस्कार
	1. केन्द्रीय मात्स्यिकी प्रौद्योगिकी संस्थान, कोच्चि	प्रथम
	2. केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोच्चि	द्वितीय

- परिषद के अधीनस्थ उत्कृष्ट हिन्दी पत्रिका के प्रकाशन के लिए ''गणेश शंकर विद्यार्थी हिन्दी कृषि पत्रिका पुरस्कार योजना'' 2004–05 से शुरू की गई है। वर्ष 2014–15 से 'ग' क्षेत्र के संस्थान को भी हिन्दी पत्रिकाओं के प्रकाशन के लिए प्रोत्साहित करने के लिए अलग वर्ग में पुरस्कृत किया जा रहा है और वर्ष 2014–15 से 'ग' क्षेत्र के वर्ग में भारतीय मसाला फसल अनुसंधान संस्थान को तथा अन्य संस्थानों को पुरस्कृत किया गया है जिनके नाम इस प्रकार हैं:–

क्र0सं0	पत्रिका का नाम	संस्थाना का नाम	पुरस्कार
1.	''अक्षय खेती''	पूर्वी क्षेत्र के लिए भा.कृ.अनु.प. का अनुसंधान परिसर, पटना	प्रथम
2.	''पशुधन प्रकाश''	राष्ट्रीय पशु आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, करनाल	द्वितीय
3.	''स्वर्णिमा''	भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल	तृतीय

केन्द्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पोर्ट ब्लेयर के निदेशक व स.वि. राजभाषा माननीय केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री से राजर्षि टंडन पुरस्कार प्राप्त करते हुए

माननीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री 'राजभाषा आलोक 2015' का विमोचन करते हुए

- राजभाषा विभाग के आदेशानुसार परिषद के संस्थानों आदि में हिन्दी की प्रगति का जायजा लेने के लिए वर्ष 2015–16 के दौरान 31 कार्यालयों का निरीक्षण किया गया और पाई गई कमियों को दूर करने हेतु सुझाव दिए गए। जिसमें संसदीय, राजभाषा समिति द्वारा किए गए निरीक्षण भी शामिल हैं।
- 'कृषिका' नामक हिन्दी में एक छमाही शोध पत्रिका का प्रकाशन परिषद मुख्यालय द्वारा वर्ष 2012 से शुरू किया गया है जिसके अंतर्गत अभी आठ अंकों का प्रकाशन किया जा चुका है तथा दिसम्बर 2016 का अंक भी प्रकाशनाधीन है।
- परिषद व इसके संस्थानों आदि में हिन्दी कार्य में हुई प्रगति का संक्षिप्त ब्यौरा देते हुए ''राजभाषा आलोक'' नामक वार्षिक पत्रिका के वर्ष 2015 के अंक का प्रकाशन किया गया है।
- परिषद के विभिन्न संस्थानों द्वारा जनोपयोगी व किसानों के लिए चलाए जाने वाले अनेक प्रशिक्षण कार्यक्रम हिन्दी व अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में चलाए जा रहे हैं। हिन्दी भाषी क्षेत्रों में स्थित कृषि विज्ञान केन्द्रों तथा परिषद के कृषि विस्तार संबंधी सभी क्रियाकलापों में हिन्दी व स्थानीय भाषाओं के प्रयोग में अच्छी प्रगति हुई है।
- संसद में प्रस्तुत की जाने वाली समस्त सामग्री के अतिरिक्त वार्षिक योजना रिपोर्ट, अनुदान मांगों की संवीक्षा, शासी निकाय, स्थाई वित्त समिति, कृषि मंत्रालय की संसदीय समिति, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद सोसायटी की वार्षिक आम सभा सहित अनेक बैठकों की समस्त सामग्री हिन्दी व अंग्रेजी दोनों भाषाओं में तैयार की गई। माननीय कृषि मंत्री व परिषद के अन्य उच्च अधिकारियों ने अपने अनेक व्याख्यान हिन्दी में दिये। परिषद मुख्यालय में उनके अनेक भाषणों का मसौदा मूल रूप से हिन्दी में तैयार किया गया।

भा.कृ.अनु.प.–भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली

हिन्दी चेतना मास

संस्थान में राजभाषा कार्यान्वयन के प्रति नवीन चेतना और जागृति उत्पन्न करने तथा अधिकारियों/कर्मचारियों को हिन्दी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से संस्थान मुख्यालय में प्रतिवर्ष की भांति रिपोर्टाधीन वर्ष में सितम्बर–अक्तूबर मास को हिन्दी चेतना मास के रूप में मनाया गया। हिन्दी चेतना मास के दौरान अनेक विविधरंगी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जैसे काव्य–पाठ,

श्रुतलेख, वाद–विवाद, टिप्पण व मसौदा लेखन, निबंध लेखन, आशु भाषण, कम्प्यूटर पर शब्द प्रसंस्करण, प्रश्न–मंच एवं कुशल सहायी वर्ग के लिए सामान्य–ज्ञान। इस वर्ष आयोजित की गई वाद–विवाद प्रतियोगिता का विषय था – 'प्रजातंत्र में जन–प्रतिनिधियों की भूमिका सकारात्मक है'। श्रुतलेख प्रतियोगिता के अन्तर्गत प्रतियोगियों की शुद्ध एवं मानक वर्तनी की परीक्षा ली गई, वहीं एक अन्य लोकप्रिय प्रतियोगिता प्रश्न–मंच में विविधरंगी प्रश्न पूछे गए जिनमें भारतीय संस्कृति, सामान्य ज्ञान, अद्यतन संचेतना, खेलकूद, विज्ञापन एवं मनोरंजन से संबंधित प्रश्न शामिल थे। कुशल सहायी कर्मचारियों के लिए विशेष रूप से एक सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें विविधरंगी बहु–विकल्पी प्रश्न पूछे गए। उक्त सभी प्रतियोगिताओं में संस्थान मुख्यालय स्थित निदेशक कार्यालय एवं विभिन्न संभागों/इकाइयों के सभी वर्गों के अधिकारियों/कर्मचारियों ने बढ़–चढ़कर भाग लिया।

हिन्दी चेतना मास के उद्घाटन अवसर पर संयुक्त निदेशक (अनुसंधान) डॉ. के.वि. प्रभु दीप प्रज्ज्वलित करते हुए

हिन्दी वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार वितरण समारोह

दिनांक 7 नवम्बर 2015 को आयोजित हिन्दी वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर हिन्दी चेतना मास के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं और वर्षभर चलने वाली विभिन्न पुरस्कार योजनाओं के कुल 82 विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए। इस वर्ष पुरस्कार वितरण समारोह के मुख्य अतिथि माननीय सांसद (लोक सभा) एवं संसदीय राजभाषा समिति के संयोजक डॉ. प्रसन्न कुमार पाटसाणी थे। इस अवसर पर मुख्य अतिथि द्वारा संस्थान की गृह पत्रिका 'पूसा सुरभि' के आठवें अंक का विमोचन किया गया। समारोह की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक डॉ. त्रिलोचन महापात्र जी ने की तथा संयुक्त निदेशक (अनुसंधान) डॉ. के.वि. प्रभु ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया।

संस्थान के उप–निदेशक (राजभाषा) श्री केशव देव ने वर्ष 2014–15 की संस्थान की राजभाषा प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की जबकि संस्थान की मुख्य तकनीकी अधिकारी सुश्री करुणा दीक्षित ने सफलतापूर्वक मंच–संचालन किया। इस अवसर पर एक हास्य कवि सम्मेलन का भी आयोजन किया गया जिसका रसास्वादन उपस्थित जनसमूह ने अत्यंत उल्लास के साथ किया। समारोह के मुख्य अतिथि ने संस्थान द्वारा राजभाषा के संदर्भ में की जा रही प्रगति की सराहना की। समारोह का समापन इस संकल्प के साथ किया गया कि संस्थान के दैनिक सरकारी कार्य में हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग बढ़ाए जाने के सार्थक प्रयास किए जाएंगे।

हिन्दी वार्षिकोत्सव समारोह के मुख्य अतिथि संसदीय राजभाषा समिति के संयोजक डॉ. प्रसन्न कुमार पाटसाणी जी का पुष्पगुच्छ से स्वागत करते हुए संस्थान के निदेशक डॉ. त्रिलोचन महापात्र

हिन्दी वार्षिकोत्सव समारोह में मुख्य अतिथि संसदीय राजभाषा समिति के संयोजक डॉ. प्रसन्न कुमार पाटसाणी जी संस्थान की राजभाषा पत्रिका 'पूसा सुरभि' के आठवें अंक का विमोचन करते हुए

हिन्दी कार्यशालाएं

संस्थान के विभिन्न वर्गों के अधिकारियों व कर्मचारियों को अपने कार्यों में राजभाषा हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग करने के प्रति प्रेरित करने के लिए तीन कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। वर्ष 2015–16 के दौरान संस्थान मुख्यालय में कुल तीन कार्यशालाएं आयोजित की गईं।

- संस्थान के प्रशासनिक कर्मचारियों के लिए दिनांक 24 तथा 25 अप्रैल 2015 को संस्थान के हिन्दी टंकण एवं प्रशिक्षण केन्द्र में दो दिवसीय कार्यशाला/पुनश्चर्या

कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यशाला का उद्देश्य प्रतिभागियों को हिन्दी टंकण हेतु यूनिकोड फोंट व इन्स्क्रिप्ट की–बोर्ड से परिचित कराना था ताकि कर्मचारी अपना अधिकाधिक कार्य यूनिकोड में कर सकें। इस पुनश्चर्या कार्यक्रम में 20 कर्मचारियों ने भाग लिया।

- संस्थान के वैज्ञानिकों के लिए सेस्करा के सभा भवन में 6 अक्तूबर 2015 को 'जीएम फसलें – जन्म से पहले ही मृत्यु' विषय पर पावर प्वाइंट प्रस्तुतीकरण पर प्रतियोगिता आयोजित की गई। डॉ. के.वि. प्रभु, संयुक्त निदेशक (अनुसंधान) ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। बारह वैज्ञानिकों/तकनीकी अधिकारियों ने इस पावर प्वाइंट प्रस्तुतीकरण प्रतियोगिता में भाग लिया। विजेताओं में कृषि प्रसार संभाग के वैज्ञानिक डॉ. गिरिजेश सिंह महरा, बीज विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संभाग के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अतुल कुमार, सेस्करा के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. दिनेश कुमार शर्मा, शाकीय विज्ञान संभाग के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. हर्षवर्धन चौधरी तथा सस्यविज्ञान संभाग के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. दिनेश कुमार को प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ एवं पंचम पुरस्कारों के रूप में क्रमशः 10,000/–, 7000/–, 5000, 3000/– और 3000/–रु. की नकद राशि प्रदान की गई और सभी प्रतिभागियों को प्रशंसा पत्र प्रदान किए गए।
- संस्थान के राजभाषा नोडल अधिकारियों के लिए 'राजभाषा नीति, नियम, कार्यान्वयन तथा हिन्दी प्रगति तिमाही रिपोर्ट एवं निरीक्षण प्रोफार्मा' विषय पर दिनांक 19–20 फरवरी 2016 को आधे–आधे दिन की दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। उक्त कार्यशाला का उद्देश्य राजभाषा नीति, नियम व हिन्दी के अनुप्रयोग तथा हिन्दी के कार्य को निरंतर प्रगतिशील बनाने एवं तिमाही रिपोर्ट प्रोफार्मे को सही तरीके से भरने में आधारभूत एवं व्यावहारिक जानकारी प्रदान करना था। उक्त कार्यशाला में वक्ता के रूप में श्री रामनिवास शुक्ल, पूर्व संयुक्त निदेशक (राजभाषा), स्वास्थ्य कल्याण मंत्रालय एवं डॉ. अशोक कुमार सचदेवा को आमंत्रित किया गया। कार्यशाला में 40 प्रतिभागियों ने भाग लिया जिन्हें मुख्य अतिथि द्वारा प्रमाण–पत्र भी वितरित किए गए।

राजभाषा नोडल अधिकारी को प्रमाण–पत्र प्रदान करते हुए मुख्य अतिथि डॉ. अशोक कुमार सचदेवा

पुरस्कार व सम्मान

वर्ष 2015–16 में कर्मचारियों को हिन्दी में अपना अधिकाधिक सरकारी कामकाज करने के लिए प्रेरित करने हेतु विभिन्न प्रतियोगिताएं/प्रोत्साहन योजनाएं चलाईं गई। रिपोर्टाधीन अवधि में निम्न प्रतियोगिताओं/पुरस्कार योजनाओं का आयोजन किया गया :

हिन्दी में सर्वाधिक सरकारी कामकाज के लिए नकद पुरस्कार योजना (2015–16)

यह पुरस्कार योजना, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के निर्देशों के अनुसार चलाई गई जिसमें वर्षभर हिन्दी में सर्वाधिक सरकारी कामकाज करने वाले संस्थान के 07 कर्मचारियों को नकद पुरस्कार प्रदान किए गए।

अधिकारियों द्वारा हिन्दी में डिक्टेशन देने के लिए पुरस्कार प्रोत्साहन योजना (2015–16)

यह पुरस्कार योजना, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के निर्देशों के अनुसार चलाई गई जिसमें अधिकारियों द्वारा अधिक से अधिक हिन्दी में डिक्टेशन देने हेतु अधिकारी द्वारा किए गए कुल कार्य की मात्रा एवं गुणवत्ता को ध्यान में रखते हुए यह पुरस्कार दिया जाता है। रिपोर्टाधीन अवधि में डॉ. के.वी. प्रभु, संयुक्त निदेशक अनुसंधान तथा बी.के. सिंह प्रभारी एवं प्रधान वैज्ञानिक, कृषि प्रौद्यागिकी आकलन एवं स्थानांतरण केन्द्र को यह पुरस्कार दिया गया।

राजभाषा पत्र व्यवहार प्रतियोगिता (2015–16)

यह प्रतियोगिता संभाग व अनुभाग स्तर पर आयोजित की गई जिसमें वर्षभर हिन्दी में सर्वाधिक कार्य करने वाले एक संभाग/क्षेत्रीय केन्द्र को तथा एक अनुभाग को चल–शील्ड से सम्मानित किया गया। रिपोर्टाधीन अवधि में वर्षभर हिन्दी में सर्वाधिक कार्य के लिए अनुभाग स्तर पर संयुक्त निदेशक (अनुसंधान) के व्यक्तिगत अनुभाग को तथा संभाग स्तर पर खाद्यविज्ञान एवं फसलोत्तर प्रौद्योगिकी संभाग तथा भा.कृ.अ.सं. क्षेत्रीय केन्द्र पुणे को चल–शील्ड देकर सम्मानित किया गया।

विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में हिन्दी में कृषि विज्ञान लेखन के लिए पुरस्कार

इस पुरस्कार योजना के तहत कैलेन्डर वर्ष 2015 में प्रकाशित विभिन्न वैज्ञानिकों/तकनीकी अधिकारियों के लेखों के लिए प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय

पुरस्कार के रूप में क्रमशः 7000/–रु., 5000/–रु. एवं 3000/–रु. प्रदान किए गए।

पूसा विशिष्ट हिन्दी प्रवक्ता पुरस्कार

यह पुरस्कार पाठ्यक्रम समन्वयक की सिफारिशों और प्रशिक्षणार्थियों के फीडबैक के आधार पर मूल्यांकित किया जाता है। इसमें पुरस्कार के रूप में 10,000/– रुपये का नकद पुरस्कार और एक प्रमाण–पत्र दिया जाता है। वर्ष 2015–16 का पूसा विशिष्ट हिन्दी प्रवक्ता पुरस्कार डॉ. लिवलीन शुक्ला एवं डॉ. गीता सिंह सूक्ष्म जीव विज्ञान को संयुक्त रूप से प्रदान किया गया।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति

संस्थान में राजभाषा अधिनियम 1963 एवं 1976 के अनुसार राजभाषा नीति व नियमों का अनुपालन एवं कार्यान्वयन सुनिश्चित करने के लिए संयुक्त निदेशक (अनुसंधान) की अध्यक्षता में राजभाषा कार्यान्वयन समिति गठित की गई है। संस्थान के सभी संयुक्त निदेशक, संभागाध्यक्ष, लेखा नियंत्रक इसके पदेन सदस्य हैं जबकि उप–निदेशक (राजभाषा) सदस्य–सचिव हैं। रिपोर्टाधीन अवधि में इस समिति की बैठक नियमित रूप से प्रत्येक तिमाही में आयोजित की गई और संस्थान में राजभाषा के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए आवश्यक सुझाव व निर्देश दिए गए। प्रशासन में राजभाषा कार्यान्वयन का प्रभावी अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए इसी प्रकार संयुक्त निदेशक (प्रशासन) की अध्यक्षता में तथा सभी संभागों व केन्द्रों में उनके अध्यक्ष की अध्यक्षता में राजभाषा कार्यान्वयन उप–समितियां गठित हैं जिनके बैठकें नियमित रूप से आयोजित की गईं।

राजभाषा नोडल अधिकारी

प्रत्येक संभाग/केन्द्र/इकाई एवं हिन्दी अनुभाग के बीच बेहतर समन्वय स्थापित करने के उद्देश्य से संपर्क सूत्र के रूप में राजभाषा नोडल अधिकारी नामित किए गए हैं जिससे संस्थान में राजभाषा कार्यान्वयन के कार्य में अभूतपूर्व प्रगति हुई है। राजभाषा नोडल अधिकारियों की भूमिका को महत्व प्रदान करने एवं उन्हें प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से उत्कृष्ट राजभाषा नोडल अधिकारी पुरस्कार योजना प्रारंभ की गई है। इसी क्रम में वर्ष 2015–16 का राजभाषा नोडल पुरस्कार डॉ. जसबीर सिंह, सेवानिवृत मुख्य तकनीकी अधिकारी, पादप रोगविज्ञान संभाग को दिया गया।

राजभाषा के प्रगामी प्रयोग का निरीक्षण

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की सिफारिश एवं राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करने के लिए डॉ. इन्द्रमणी मिश्र, अध्यक्ष, कृषि अभियांत्रिकी संभाग की अध्यक्षता में गठित संस्थान राजभाषा निरीक्षण समिति द्वारा नई दिल्ली स्थित सभी संभागों एवं इकाइयों में राजभाषा के प्रगामी प्रयोग का निरीक्षण किया गया। इसके अलावा समिति द्वारा संस्थान के इंदौर एवं कलिम्पोंग स्थित क्षेत्रीय केन्द्रों में भी राजभाषा के प्रगामी प्रयोग का निरीक्षण किया गया तथा संबंधित संभागों/अनुभागों/केन्द्रों में राजभाषा कार्यान्वयन में वांछित प्रगति के लिए आवश्यक सुझाव देते हुए अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति व संबंधित संभागों/केन्द्रों को निरीक्षण रिपोर्टें भेजी गईं।

भा.कृ.अनु.प.–भारतीय पशुचिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर

हिन्दी पखवाड़ा

भारत सरकार की राजभाषा कार्यान्वयन नीति तथा राजभाषा विभाग, गृहमंत्रालय द्वारा जारी निर्देशों के अनुसार संस्थान में दिनांक 14.09.2016 से 28.09.2016 की अवधि में हिन्दी पखवाड़ा समारोह का आयोजन किया गया। सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रयोग को बढावा देने तथा स्टाफ को हिन्दी में काम करने के लिए प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से इस अवधि के दौरान विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं तथा

कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जिनका संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है :–

क्र0स0	कार्यशाला का विषय	आयोजन की तिथि	प्रतिभागियों की संख्या
1.	वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली: कल, आज और कल	26.05.2016	83
2.	अहिन्दी भाषी छात्रों के लिए हिन्दी उन्मुखीकरण कार्यशाला विषय पर तीन दिवसीय हिन्दी कार्यशाला	22.08.16 से 24.08.16	72
3.	राजभाषा कार्यान्वयन में ई–टूल्स	14.12.2016	125

हिन्दी दिवस 14 सितम्बर, 2016 को हिन्दी पखवाड़ा का उद्घाटन समारोह आयोजित किया गया जिसमें डा. पी.के. उप्पल, पूर्वनिदेशक, राष्ट्रीय अश्व अनुसंधान केन्द्र, हिसार एवं सलाहकार, पंजाब सरकार को मुख्य अतिथि एवं श्री योगेन्द्र सिंह, महाप्रबन्धक, हिन्दुस्तान समाचार पत्र, बरेली को विशिष्ट अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डा. आर.के. सिंह, निदेशक एवं अध्यक्ष, संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने की थी। इस उद्घाटन समारोह के अवसर पर एक प्रश्न मंच कार्यक्रम भी आयोजित किया गया। दिनांक 16.09.2016 को समस्त स्टाफ के लिए हिन्दी में टिप्पण/आलेखन प्रतियोगिता आयोजित करवाई गई। इसी क्रम में दिनांक 17.09.2016 को हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता करवाई गई जिसमें संस्थान के स्टाफ तथा छात्रों ने भारी संख्या में सहभागिता की। दिनांक 19.09.2016 को स्टाफ एवं संस्थान में अध्ययनरत छात्रों के लिए हिन्दी में सुलेख प्रतियोगिता आयोजित की गई। संस्थान के प्रशासनिक व तकनीकी वर्ग के कर्मचारियों के लिए दिनांक 20.09.2016 को कम्प्यूटर पर हिन्दी टाइपिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। दिनांक 21.09.2016 को हिन्दी अनुवाद प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें संस्थान के वैज्ञानिक/छात्र वर्ग तथा अन्य स्टाफ द्वारा अधिक संख्या में भाग लिया गया। संस्थान में कार्यरत वैज्ञानिकों/अधिकारियों तथा कर्मचारियों की घरेलू महिलाओं हेतु दिनांक 22.09.2016 को महिला हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। संस्थान के हिन्दी भाषी तथा अहिन्दी भाषी स्टाफ व छात्र वर्ग के लिए अलग–अलग शुद्ध हिन्दी भाषण प्रतियोगिता दिनांक 24.09.2016 को संपन्न हुई। दिनांक 26.09.2016 को हिन्दी व अहिन्दी भाषी स्टाफ एवं छात्रों के लिए हिन्दी में वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। दिनांक 27.09.2016 को स्कूली बच्चों के लिए बाल काव्य पाठ/अंत्याक्षरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। दिनांक 27.09.2016 को अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का भी आयोजन किया गया जिसमें संस्थान के समस्त स्टाफ व छात्रगण तथा उनके परिवार के सदस्य भी शामिल हुए।

दिनांक 28.09.2016 को समापन समारोह के अवसर पर उपरोक्त सभी प्रतियोगिताओं/कार्यक्रमों के विजयी प्रतियोगियों को मुख्य अतिथि एवं निदेशक महोदय ने अपने कर कमलों

से प्रमाण पत्र तथा पुरस्कार देकर सम्मानित किया। समापन समारोह एवं पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर शब्दावली परिचय प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। इस अवसर पर राजभाषा अनुभाग द्वारा प्रकाशित '' राजभाषा स्मारिका'' का भी विमोचन किया गया। हिन्दी पखवाड़ा समारोह के सभी कार्यक्रमों/प्रतियोगिताओं में संस्थान के वैज्ञानिक/छात्रों/अधिकारियों/कर्मचारियों ने पूरे उत्साह के साथ भारी संख्या में सहभागिता कर हिन्दी पखवाड़ा के आयोजन को सफल बनाया।

हिन्दी कार्यशालाएं

संस्थान के वैज्ञानिक, अधिकारी तथा कर्मचारी अपना दैनिक सरकारी कामकाज बिना किसी झिझक के अधिक से अधिक हिन्दी में संपादित कर सकें इसके लिए राजभाषा विभाग के निर्देशों के अनुसार हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। इस अवधि में आयोजित कार्यशालाओं का संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है :–

हिन्दी प्रकाशन

1. वर्ष 2016 में राजभाषा अनुभाग द्वारा राजभाषा स्मारिका का प्रकाशन करवाया गया जिसमें संस्थान के वैज्ञानिकों/अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा लिखित वैज्ञानिक लेख, सामान्य लेख प्रकाशित किये गये। इसमें अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा स्वरचित कविताओं का भी समावेश किया गया है।

2. अहिन्दी भाषी छात्रों के लिये दिनांक 22–24 अगस्त, 2016 को सम्पन्न तीन दिवसीय हिन्दी कार्यशाला के अवसर पर पाठ्यक्रम सामग्री को पत्रिका के रूप में प्रकाशित किया गया।

अन्य गतिविधियां

'विशेष – दिनांक 23.02.2017 को सम्पन्न हुई नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में संस्थान को प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया।

भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल

हिन्दी पखवाड़ा

राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल में दिनांक 14 सितम्बर से 15 अक्तूबर, 2016 तक राजभाषा हिन्दी चेतना मास का आयोजन किया गया। इस दौरान संस्थान के सभी वर्गों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए कई प्रतियोगिताएं आयोजित की गई, जिनमें उन्होंने बढ़–चढ़ कर भाग लिया। राजभाषा चेतना मास का उद्घाटन 14 सितम्बर, 2016 को किया गया, जिसकी अध्यक्षता संस्थान के निदेशक डा. ए.के. श्रीवास्तव ने की। दिनांक 15.9.2016 को ''टिप्पण एवं मसौदा लेखन प्रतियोगिता रखी गई, जिसमें वैज्ञानिक स्तर के अधिकारियों ने भी भाग लिया। संस्थान के वैज्ञानिकों, शोध छात्रों एवं तकनीकी अधिकारियों हेतु दिनांक 22.9. 2016 को एक शोधपत्र/पोस्टर प्रदर्शन प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता में विभिन्न प्रभागों/अनुभागों से 17 पोस्टर प्रदर्शित किए गए। इसी क्रम में संस्थान के अवर श्रेणी एवं अपर श्रेणी लिपिकों के लिए दिनांक 20.9.2016 को एक दिवसीय हिन्दी प्रशासनिक कार्यशाला का आयोजन भी किया गया, जिसमें 43 कार्मिकों ने भाग लिया। राजभाषा हिन्दी चेतना मास में आयोजित टिप्पणी एवं मसौदा लेखन प्रतियोगिता, शोध पत्र पोस्टर प्रदर्शन प्रतियोगिता एवं गीत–गायन प्रतियोगिता के विजेताओं को दिनांक 26 अक्तूबर, 2016 को रा0डे0अनु.संस्थान, करनाल में आयोजित किए जाने वाले पुरस्कार वितरण समारोह में नकद पुरस्कारों एवं प्रमाण पत्रों से पुरस्कृत किया गया।

हिन्दी कार्यशालाएं

राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल में वर्ष 2016 के दौरान निम्नलिखित हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया–

1. दिनांक 20.9.2016 को एक दिवसीय हिन्दी प्रशासनिक कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें प्रशासनिक वर्ग के 43 स्टॉफ ने भाग लिया।
2. दिनांक 10.11.2016 को कंप्यूटर पर यूनिकोड एवं तकनीकी टूल्स के द्वारा हिंदी प्रयोग को बढ़ावा देने के संबंध में एक हिन्दी कार्यशाला आयोजित की गई, जिसमें 16 अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया।

प्रमुख उपलब्धियां

करनाल में राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान के निदेशक, जिला–स्तरीय नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष हैं। वर्ष 2016 में डा. ए.के. श्रीवास्तव, अध्यक्ष नराकास एवं निदेशक, भाकृअनुप–राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल की अध्यक्षता में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), करनाल की दो बैठकें, प्रथम बैठक दिनांक 24.6.2016 को एवं दूसरी बैठक दिनांक 29.11.2016 को संपन्न हुई है।

हिन्दी प्रकाशन

- वर्ष 2015–16 की दुग्ध–गंगा पत्रिका पूर्णतः हिन्दी में प्रकाशित हो चुकी है तथा इसका विमोचन माननीय केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्यमंत्री श्री सुदर्शन भगत जी द्वारा राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान करनाल में दिनांक 27.9.2016 को किया गया।
- तिमाही न्यूज लैटर ''डेरी समाचार'' पूर्णतः हिन्दी में प्रकाशित किया जा रहा है।

भा.कृ.अनु.प.–भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली

हिन्दी पखवाड़ा

संस्थान में 01 से 14 सितंबर 2016 के दौरान हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया। दिनांक 01 सितंबर 2016 को हिन्दी पखवाड़े का उद्घाटन संस्थान के निदेशक, डॉ. उमेश चन्दर सूद द्वारा किया गया। उद्घाटन समारोह के तत्पश्चात काव्य–पाठ का आयोजन किया गया। हिन्दी पखवाड़े के दौरान डॉ. दरोगा सिंह स्मृति व्याख्यान के साथ–साथ वैज्ञानिक कार्य करने के लिए प्रभागीय चल–शील्ड तथा काव्य–पाठ,

वाद–विवाद, प्रश्न–मंच, अंताक्षरी, हिंदीतर कर्मियों के लिए हिन्दी श्रुतलेख एवं शब्दार्थ लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई । प्रश्न–मंच एवं अंताक्षरी प्रतियोगिता के संचालकों द्वारा इन प्रतियोगिताओं को आडिओ–विजुयल रूप में प्रस्तुत किया गया जिससे ये प्रतियोगिताएँ अत्यंत ही रोचक रहीं । सभी प्रतियोगिताओं में छात्रों सहित संस्थान के विभिन्न वर्गों के कर्मियों ने बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया । संस्थान में प्रत्येक वर्ष हिन्दी दिवस के अवसर पर डॉ. दरोगा सिंह स्मृति व्याख्यान का आयोजन किया जाता है । इस वर्ष इस कड़ी का पच्चीसवाँ व्याख्यान हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के पूर्व अपर निदेशक (अनुसंधान), डॉ. एफ.एस. चौधरी जी द्वारा दिया गया और इस कार्यक्रम की अध्यक्षता आई.सी.एम.आर. के पूर्व अपर महानिदेशक एवं राष्ट्रीय सांख्यिकीय आयोग के सदस्य, डॉ. पदम सिंह जी द्वारा की गई। दिनांक 14 सितंबर 2016 को हिन्दी पखवाड़े के समापन के अवसर पर इस दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के सफल प्रतियोगियों को पुरस्कृत करने के साथ–साथ वर्ष 2015–16 के दौरान "सरकारी कामकाज मूल रूप से हिन्दी में करने के लिए प्रोत्साहन योजना" के अंतर्गत भी नकद पुरस्कार प्रदान किए गए। इसके अतिरिक्त, इस अवसर पर जुलाई 2015 से जून 2016 तक की अवधि के दौरान संस्थान में आयोजित हिन्दी कार्यशालाओं के वक्ताओं को भी सम्मानित करने के साथ–साथ संस्थान द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका "सांख्यिकी–विमर्श: 2015–16 के संपादक मण्डल के सदस्यों को भी प्रशस्ति–पत्र प्रदान किए गये।

हिन्दी कार्यशालाएं

भा.कृ.अनु.प.–भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान में वर्ष 2016 के दौरान चार हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। जिनमें से पहली कार्यशाला 26 से 31 मार्च 2016 के दौरान ''उन्नत सॉटवेयर पैकेजों का प्रयोग करते हुए कृषि में पूर्वानुमान तकनीकों का अनुप्रयोग'' विषय पर, दूसरी कार्यशाला 31 मई से 02 जून 2016 के दौरान ''जैवमति में सांख्यिकीय तकनीकें'' विषय पर, तीसरी कार्यशाला 21 सितम्बर, 2016 को ''हिन्दी तिमाही प्रगति रिपोर्ट का प्रपत्र भरने और प्रेषण तथा हिन्दी एवं अंग्रेजी के आवती रजिस्टरों का रखरखाव'' विषय पर तथा चौथी कार्यशाला 13 से 15 दिसम्बर, 2016 के दौरान ''एस.ए.एस. द्वारा मौलिक सांख्यिकीय तकनीकें'' विषय पर आयोजित की गयी। प्रतिवेदनाधीन अवधि में संस्थान में तकनीकी विषयों पर आयोजित तीन कार्यशालाओं में 39 तकनीकी विषयों पर 26 वैज्ञानिकों द्वारा हिन्दी में व्याख्यान दिये गये। इन वैज्ञानिक वक्ताओं में अनेक वक्ता हिन्दीतर थे जिन्होंने बड़ी निपुणता के साथ हिन्दी में व्याख्यान दिये । प्रतिभागियों को व्याख्यानों की सामग्री हिन्दी भाषा में उपलब्ध करायी गयी ।

प्रमुख उपलब्धियाँ

भा.कृ.अनु.प.–भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग में महत्वपूर्ण अभिवृद्धि हो रही है। संस्थान द्वारा समस्त प्रशासनिक कार्य शत–प्रतिशत हिन्दी में और यथाआवश्यक द्विभाषी हो रहा है । राजभाषा नीति को संस्थान में सुचारु रूप से कार्यान्वित किया जा रहा है। राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निहित लक्ष्यों को इस संस्थान में लगभग पूरा कर लिया गया है। वैज्ञानिक कार्यों में भी हिन्दी के प्रयोग को प्रोत्साहित किया जाता है।

संस्थान के दो वैज्ञानिकों नामतः डॉ. अर्पण भौमिक एवं डॉ. एल्दो वर्गीस को भारतीय कृषि अनुसंधान समिति, करनाल द्वारा भारतीय कृषि अनुसंधान पत्रिका में अपने मौलिक कृषि शोध–पत्र छपवाने तथा राजभाषा हिन्दी की सेवा करने के लिए ''कृषि विज्ञान गौरव'' मानद उपाधि से अलंकृत एवं सम्मानित किया गया है ।

भारत सरकार,राजभाषा विभाग की नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उत्तरी दिल्ली) की 30 नवम्बर 2016 को हुई सदस्य कार्यालयों की तीसरी बैठक में वर्ष 2015–16 में राजभाषा कार्यान्वयन कार्य में उत्कृष्ट निष्पादन हेतु बड़े कार्यालयों के वर्ग में भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान को तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया ।

उक्त समिति द्वारा ही संस्थान में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग से सम्बन्धित मार्च 2016 को समाप्त छःमाही रिपोर्ट के आधार पर संस्थान को ''उत्कृष्ट श्रेणी'' में वर्गीकृत किया गया है ।

प्रतिवेदनाधीन अवधि में संस्थान में तकनीकी विषयों पर आयोजित तीन कार्यशालाओं में 39 तकनीकी विषयों पर 26 वैज्ञानिकों द्वारा हिन्दी में व्याख्यान दिये गये । इन वैज्ञानिक वक्ताओं में अनेक वक्ता हिन्दीतर थे जिन्होंने बड़ी निपुणता के साथ हिन्दी में व्याख्यान दिये। प्रतिभागियों को व्याख्यानों की सामग्री हिन्दी भाषा में उपलब्ध करायी गयी ।

संस्थान द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका, 'सांख्यिकी–विमर्श' के

ग्यारहवें अंक का प्रकाशन किया गया । इस पत्रिका में संस्थान के कीर्तिस्तम्भ, राजभाषा से सम्बन्धित कार्यों आदि की जानकारी के साथ–साथ कृषि सांख्यिकी, संगणक अनुप्रयोग एवं कृषि जैव–सूचना से सम्बन्धित विभिन्न लेख एवं शोध –पत्र प्रकाशित किए गए हैं । पाठकों के हिन्दी ज्ञानवर्धन के लिए दैनिक स्मरणीय शब्द–शतक हिन्दी व अँग्रेजी में दिया गया है ।

संस्थान के वैज्ञानिक प्रभागों द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों की संदर्भ पुस्तिकाओं में आमुख, प्राक्कथन एवं कवर पेज द्विभाषी रूप में प्रस्तुत करने के साथ–साथ वैज्ञानिकों ने अपनी परियोजना रिपोर्टों के कवर पेज, आमुख, प्राक्कथन एवं सारांश द्विभाषी रूप में प्रस्तुत किये तथा कुछ वैज्ञानिकों द्वारा अपनी परियोजना रिपोर्टों में विषय–सूची एवं तालिकाएँ भी द्विभाषी रूप में प्रस्तुत की गयीं । इसके अतिरिक्त, संस्थान में एम.एससी. तथा पीएच.डी. के विद्यार्थियों द्वारा अपने शोध–प्रबन्धों में द्विभाषी रूप में सार प्रस्तुत किये गये। वैज्ञानिकों एवं तकनीकी कर्मियों द्वारा शोध–पत्र हिन्दी में प्रकाशित किये गये।

हिन्दी प्रकाशन

- वार्षिक रिपोर्ट
- सांख्यिकी विमर्श (गृह पत्रिका वार्षिक)
- भा.कृ.अ.प.–भा.कृ.सां.अ.सं. समाचार (त्रैमासिक)

भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, जोधपुर

हिन्दी सप्ताह

काजरी में 14 सितम्बर, 2016 से 22 सितम्बर, 2016 तक हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया गया। इस साप्ताहिक कार्यक्रम के दौरान विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये गये। 14 सितम्बर को हिन्दी टंकण गति प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। इस प्रतियोगिता में श्री नटवर पुरोहित, डॉ. संतोष कुमार मरवण व श्री मनीष चौधरी क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान पर रहे। इस साप्ताहिक कार्यक्रम का उद्घाटन निदेशक डॉ. ओ. पी. यादव द्वारा किया गया। उद्घाटन सत्र के दौरान कवि सम्मेलन भी आयोजित हुआ जिसमें डॉ. हरि दास व्यास, व्याख्यता हिन्दी व डॉ. श्रवण कुमाण मीणा, प्रोफेसर हिन्दी, जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। अतिथि डॉ. व्यास ने अपने उद्बोधन में बताया कि भाषा का विकास उसकी लचकता/सरलता पर निर्भर करता है। हमें हिन्दी भाषा के साथ–साथ जरूरत पड़ने पर यदि अन्य भाषा के सरल शब्दों का चयन करना पड़े तो करना चाहिए इससे भाषा का दायरा बढ़ता हैं। यदि हम हिन्दी के भाषा के क्लिष्ट शब्दों के बजाय अन्य भाषाओं के सरल शब्दों का प्रयोग करेगें तो भाषा की प्रगति भी नहीं रूकेगी। इस बात को उन्होनें कई उदाहरण से भी स्पष्ट किया। इसी कार्यक्रम के अन्त में गत एक माह से चल रहे 'हिन्दी टंकण एवं यूनीकोड प्रशिक्षण' का भी समापन हुआ तथा सभी सफल प्रशिक्षणार्थियों को निदेशक महोदय एवं अतिथियों द्वारा प्रमाण–पत्र प्रदान किये गये। दिनांक 16.9.2016 को निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन हुआ जिसका विषय था 'जल ही जीवन है' दिनांक 19.9.2016 को 'राजभाषा संगोष्ठी' का आयोजन हुआ। जिसका विषय 'महिला सशक्तिकरण' था।

दिनांक 20.9.2016 को संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा हिन्दी भाषा में शोध पत्रों का प्रदर्शन किया गया। इस प्रतियोगिता में डॉ. दिलीप जैन, प्रधान वैज्ञानिक व डॉ. सोमा श्रीवास्तव, वैज्ञानिक के शोध पत्र 'उष्मीय ऊर्जा के संग्रहण एवं प्रा.तिक संवहन आधारित सौर शुष्कक की कार्य क्षमता का अध्ययन' को प्रथम स्थान मिला। डॉ. प्रदीप कुमार, वैज्ञानिक; डॉ. अनुराग सक्सेना, प्रधान वैज्ञानिक; डॉ. पी. एस. खापटे, वैज्ञानिक के शोध पत्र को द्वितीय एवं डॉ. हरि मोहन मीना, वैज्ञानिक; डॉ. रंजय कुमार सिंह, वरिष्ठ वैज्ञानिक; डॉ. प्रियब्रत सांतरा, व. वैज्ञानिक; डॉ. उदय बर्मन, प्रधान वैज्ञानिक का शोधपत्र तृतीय स्थान पर रहा। कार्यक्रम के आयोजक एवं निर्णायक डॉ. आर. एस. त्रिपाठी, डॉ. जे. सी. तरफदार एवं डॉ. कुमार संयुक्त रूप से थे।

दिनांक 21.9.2016 को चतुर्थ श्रेणी कर्मचारीयों हेतु 'प्रार्थना पत्र लेखन' प्रतियोगिता आयोजित हुई। जिसमें श्री पेमाराम चौधरी, श्री राजेन्द्र चौधरी, श्री फतेह सिंह राठौड़ क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर रहे।

दिनांक 22.9.2016 को हिन्दी सप्ताह के समापन समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. गुप्ता, समन्वयक मक्का अनुसंधान परियोजना, कानपुर थे। समापन समारोह से पहले हिन्दी क्विज का आयोजन किया गया जिसका संचालन श्री इन्द्र भूषण, प्रशासकीय अधिकारी एवं प्रधान वैज्ञानिक, डॉ. आर. के.

गोयल ने संयुक्त रूप से किया एवं बहुत ज्ञानवर्धक प्रश्न पूछे गये। अन्त में निदेशक महोदय ने अपने उद्‌बोधन में हिन्दी सप्ताह के आयोजन की सार्थकता पर बल देते हुए कहा कि हम सभी अपने कार्य क्षेत्र पर हिन्दी भाषा का उपयोग करें। मुख्य अतिथि एवं निदेशक महोदय ने संयुक्त रूप से सभी प्रतियोगिताओं में विजेताओं को पुरस्कृत कर हौसला बढ़ाया।

कार्यक्रम के अन्त में श्रीमती मधुबाला चारण, सहायक निदेशक, राजभाषा ने सम्पूर्ण सप्ताह में हुई गतिविधियाँ एवं संस्थान में समय समय पर होने वाली हिन्दी सम्बन्धित गतिविधियों का विस्तृत ब्यौरा दिया। अन्त में डॉ. आर. के. कौल ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

हिन्दी कार्यशाला आयोजन 7.4.2016

केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान में दिनांक 7.4.2016 को हिन्दी कार्यशाला का आयोजन सहज हिन्दी प्रयोग एवं यूनिकोड प्रशिक्षण पर किया गया जिसमें 55 तकनीकी एवं प्रशासनिक अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया।

कार्यक्रम की मुख्य वक्ता डॉ. कैलाश कौशल ने हिन्दी भाषा की वैज्ञानिकता पर प्रकाश डाला तथा शब्दों की व्युत्पत्ति एवं सटीक प्रयोग तथा शुद्व उच्चारण के बारे में विस्तृत प्रकाश डाला।

काजरी में जल ही जीवन है विषयक व्याख्यान आयोजित 28 मई, 2016

काजरी जोधपुर एवं भारतीय भू–विज्ञान कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में 28 मई, 2016 को काजरी में 'जल ही जीवन है' विषयक राजभाषा व्याख्यान आयोजित किया गया। कार्यकारी अध्यक्ष डॉ. ओ.पी. वर्मा ने भूविज्ञान कांग्रेस के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने कहा जल की कमी नहीं है जरूरत है तो जल को बचाने की। बड़ी समस्या को छोटे–छोटे भागों में विभाजित कर हल खोजा जा सकता है, उन्होंने भूविज्ञान के बारे में जन चेतना जागृत करने पर बल दिया। डॉ. एम. एल. झंवर ने 'जल ही जीवन है' पर व्याख्यान देते हुए कहा कि कहीं पर नदियाँ उफान पर होने के कारण बाढ़ की स्थिति है तो कहीं पर सूखा पड़ता है। ऐसी परिस्थितियों में वर्षा जल के सुप्रबन्धन द्वारा ही जल समस्या का समाधान हो सकता है। उन्होंने कहा कि आने वाली पीढ़ी को स्वस्थ एवं खुशहाल रखना है तो जल के संरक्षण एवं जल स्त्रोतों के पुनर्भरण पर ध्यान देना होगा। काजरी के प्रभारी निदेशक डॉ. प्रवीण कुमार भटनागर ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि मरूप्रदेश में हरियाली आच्छादित करने के लिए संस्थान ने बरसात के पानी को संरक्षित करने, जल को स्वच्छ रखने, उसका कुशलता से उपयोग करने हेतु अनेक तकनीकियां विकसित की तथा उनको गांवों तक पहुंचाया, लोगों में जागरूकता फैलाई, जिसके अच्छे परिणाम मिले। बारिश कम होती है, फिर भी यहां का मानव अपने कुशल प्रबन्ध, अनुभव से जीवन बसर कर रहा है।

डॉ. वी.के.एस. दवे ने जल को दूषित नहीं होने देने एवं स्वच्छ रखने के बारे में जानकारी दी। समन्वयक डॉ. पी. सी. महाराना ने कहा कि काजरी ने प्राकृतिक संसाधनों के सर्वेक्षण कर अनेक मानचित्र तैयार किये, जिनसे क्षेत्र की वनस्पतियों, जल स्त्रोतों, जल प्रवाह मार्गो के बारे में जानकारी मिलती है। योजनाबद्ध तरीके, नवीन ज्ञान, पद्धतियों एवं जनभागीदारी से कार्य कर क्षेत्र में हरियाली एवं समृद्धि बढ़ायी जा सकती है। संचालन उपनिदेशक मधुबाला चारण ने किया। कार्यक्रम में अन्तरिक्ष विभाग, केन्द्रीय भूजल विभाग, ग्रेविस, भूविज्ञान विभाग के अधिकारियों ने भाग लिया। कार्यक्रम में सिद्धिका, धर्मेन्द्र बोहरा, नटवर पुरोहित ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत की। डॉ. महाराना ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

हिन्दी टंकण एवं यूनीकोड प्रशिक्षण का आयोजन

केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, जोधपुर में 10 अगस्त से 9 सितम्बर तक एक माह के हिन्दी टंकण एवं यूनिकोड प्रशिक्षण का आयोजन हुआ। प्रशिक्षण के दौरान डॉ. ओ. पी. यादव निदेशक काजरी ने सभी प्रशिक्षण प्राप्त कर्मचारियों से अपने–अपने कार्यस्थल पर अधिकाधिक हिन्दी में कार्य करने के लिए आह्वान् किया तथा कहा कि मुझे विश्वास है कि इस प्रशिक्षण से संस्थान में राजभाषा की प्रगति को और बढ़ावा मिलेगा। इस प्रशिक्षण के पश्चात् सभी प्रशिक्षणार्थियों की हिन्दी टंकण प्रतियोगिता आयोजित की गई।

हिन्दी प्रकाशन

- पश्चिमी राजस्थान में मिर्च की उन्नत खेती एवं परिरक्षण – मंजुनाथ बी.एल., प्रतिभा तिवारी, भगवान सिंह एवं अनुराग सक्सेना
- पश्चिमी राजस्थान में टमाटर की उन्नत खेती एवं परिरक्षण – मंजुनाथ बी.एल., प्रतिभा तिवारी, भगवान सिंह एवं अनुराग सक्सेना
- शुष्क क्षेत्र में सरसों (रायडे) की उन्नत खेती – भगवान सिंह, प्रशांत निकुंभे एवं सोमा श्रीवास्तव
- शुष्क क्षेत्र में मोंठ की उन्नत खेती – भगवान सिंह, बी.एल. मंजुनाथ एवं शिरन के.
- शुष्क क्षेत्र में तिल की उन्नत खेती – भगवान सिंह, सोमा श्रीवास्तव,प्रशांत निकुंभे एवं शिरन के.
- मरूभूमि में मृदा व वर्षा जल संरक्षण एवं प्रबन्धन – राजेश कुमार गोयल
- शुष्क क्षेत्र में जीरे की उन्नत खेती – भगवान सिंह, प्रशांत निकुंभे एवं नंद किशोर जाट
- प्याज बीज उत्पादन की उन्नत तकनीक – प्रदीप कुमार, अकथ सिंह, पी.एस. खापटे एवं पी.आर. मेघवाल
- ढैंचा की हरी खाद उगायें, भूमि की उर्वरा शक्ति बढायें – नन्द किशोर जाट, प्रशान्त निकुम्भे, भगवान सिंह, प्रतिभा तिवारी एवं बी.एल. मंजुनाथ
- शुष्क क्षेत्र में मूंग की उन्नत खेती – भगवान सिंह, नन्द किशोर जाट एवं बी.एल. मंजुनाथ
- गेहूँ उत्पादन हेतु उन्नत कृषि विधियाँ – रेवतराम मेघवाल, अशोक सिंह तोमर एवं अरूण कुमार मिश्रा
- पश्चिमी राजस्थान में मिर्च की उन्नत खेती एवं परिरक्षण – मंजुनाथ बी.एल., प्रतिभा तिवारी एवं अनुराग सक्सेना
- पश्चिमी राजस्थान में टमाटर की उन्नत खेती एवं परिरक्षण – मंजुनाथ बी.एल., प्रतिभा तिवारी, भगवान सिंह एवं अनुराग सक्सेना
- शुष्क क्षेत्र में बाजरा की उन्नत खेती – भगवान सिंह, बी.एल. मंजुनाथ एवं नन्द किशोर जाट
- शुष्क क्षेत्र के प्रमुख फलवृक्षों का प्रवर्धन एवं रखरखाव – अकथ सिंह ,पी. आर. मेघवाल एवं प्रदीप कुमार
- मौसम की जानकारी पाएं नुकसान बचाएं लाभ बढ़ाएं – धर्म वीर सिंह एवं सुरेन्द्र पुनियां
- शुष्क क्षेत्रीय गृहवाटिका में जल प्रबन्धन – राजेश कुमार गोयल एवं प्रतिभा तिवारी
- काजरी समाचार – 3 अंक
- वार्षिक प्रतिवेदन
- मरू कृषि चयनिका

भा.कृ.अनु.प.–पुष्प विज्ञान अनुसन्धान निदेशालय, पुणे

हिन्दी पखवाड़ा

14 सितम्बर 2016 को प्रतिवर्ष की भांति भा.कृ.अनु.प.–पुष्प विज्ञान अनुसन्धान निदेशालय, शिवाजीनगर पुणे, में "हिंदी दिवस" मनाया गया। इस उपलक्ष्य में दिनांक 5 सितम्बर 2016 से 20 सितम्बर 2016 तक "हिन्दी पखवाड़ा" का आयोजन किया गया, जिसमे विभिन्न प्रतियोगिताएं (निबंध प्रतियोगिता, सुलेख प्रतियोगिता, श्रुतलेख प्रतियोगिता, सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता, अंग्रेजी एवं हिंदी शब्द लेखन प्रतियोगिता) आयोजित की गई। निदेशालय के सभी वैज्ञानिक एवं प्रशासनिक कर्मचारियों ने इसमें पूरे उत्साह के साथ हिस्सा लिया। हिंदी पखवाड़ा की शुरुआत 5 सितम्बर 2016 को की गयी। हिंदी पखवाड़ा का समापन 20.09.2016 को निदेशक महोदय की अध्यक्षता में हुई। एम.पी.के.वी., कृषि महाविद्यालय, शिवाजीनगर, पुणे के सहयोगी अधिष्ठाता, श्रीमान डॉ. जे. वी. पाटिल समारोह के मुख्य अतिथि थे। श्री राधे श्याम भट्ट जो कि निदेशालय के सहायक विधि एवं लेखा अधिकारी है, ने सभी प्रतिभागियों एवं मुख्य अतिथि का स्वागत किया। तत्पश्चात सभी को हिंदी पखवाड़ा आयोजित करने के उद्देश्य की संक्षिप्त जानकारी दी गयी। निदेशक महोदय ने श्रीमान डॉ. जे. वी. पाटिल जी का पुष्प गुच्छ के साथ स्वागत किया और सभा को संबोधित किया । निदेशक महोदय ने उपस्थित सभी सदस्यों का स्वागत करते हुए राजभाषा हिंदी की महत्ता के बारे में अपने विचार व्यक्त किये। निदेशक महोदय ने श्रीमान डॉ. जे. वी. पाटिल जी को शाल एवं स्मृति चिन्ह दे कर सम्मानित किया। इसके साथ ही उन्होंने पुष्प विज्ञान अनुसन्धान निदेशालय का संक्षिप्त परिचय दिया और श्रीमान डॉ. जे. वी. पाटिल जी को "हिंदी पखवाड़ा" विषय पर उनके भाषण हेतु आमंत्रित किया। मुख्य अतिथि ने अपने भाषण में सभा को संबोधित करते हुए हिंदी भाषा के विषय में अपने विचार व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि किसी भी संस्थान द्वारा राजभाषा के प्रचार एवं प्रसार के लिए किये गए उपायों का उस संस्थान के सम्पूर्ण मूल्यांकन में महत्वपूर्ण योगदान होता है।

समारोह के अंत में मुख्य अतिथि ने सभी विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कार तथा प्रमाणपत्र प्रदान किये। इसके अतिरिक्त डॉ. प्रसन्न होलेजर एवं श्री गिरीश के. एस. जो कि अहिन्दी भाषा क्षेत्र से है, को प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए प्रोत्साहन पुरस्कार तथा प्रमाण पत्र प्रदान किया गया।

हिन्दी कार्यशालाएं

दिनांक 5.2.2016 को भा.कृ.अनु.प.–पुष्प विज्ञान अनुसन्धान निदेशालय में हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य था निदेशालय के दैनिक कार्यकलापों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना तथा इस क्षेत्र में निदेशालय के अधिकारियों एवं अन्य कर्मचारियों के कौशल में सुधार करना। इस अवसर पर श्री राजेन्द्र प्रसाद वर्मा मुख्य अतिथि थे जो कि गृह मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत, राजभाषा विभाग, हिंदी प्रशिक्षण योजना, के उप निदेशक हैं।

प्रमुख उपलब्धियां

- हिन्दी दीवार पत्रिका (वाल मैगज़ीन) का विमोचन 21 अक्टूबर 2016 को माननीय डॉ. त्रिलोचन महापात्र, महानिदेशक, भा.कृ.अनु.प., नई दिल्ली के कर कमलों द्वारा किया गया।
- वर्ष 2016 – 2017 की वार्षिक प्रतिवेदन हिन्दी में प्रकाशित की गई।
- मेरा गाँव मेरा गौरव (एम.जी.एम.जी.) कार्यक्रम के अंतर्गत हिन्दी संगोष्ठी (किसान एवं वैज्ञानिक विचार विमर्श) का आयोजन दिनांक 3 सितम्बर 2016 को आदरणीय निदेशक महोदय की उपस्थिति में कुसुर गाँव (तालुक – जुन्नर) में किया गया।
- माह के हर प्रथम सप्ताह में हिन्दी बैठक होती है जिसमे हिन्दी में कार्य करने को लेकर चर्चा होती है ।
- अधिकतर कार्यालय परिपत्रों को हिन्दी में करने का निर्णय लिया गया।

भा.कृ.अनु.प.–भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बैंगलूरू

हिन्दी सप्ताह

दिनांक 14–21 सितंबर 2016 के दौरान हिंदी सप्ताह आयोजित किया गया। हिंदी सप्ताह का शुभारंभ समारोह संस्थान के निदेशक डॉ. एम.आर. दिनेश की अध्यक्षता में आयोजित किया गया, जिसमें डॉ. श्याम किशोर पाण्डेय, सेवा निवृत्त सहायक महा प्रबंधक, सिंडिकेट बैंक, मणिपाल, कर्नाटक मुख्य अतिथि थे। उद्घाटन समारोह के दौरान 'खेल–खेल में हिंदी' कार्यक्रम भी आयोजित किया गया, जिसका संचालन डॉ. अनिल कुमार नायर ने किया। हिंदी सप्ताह के दौरान 'हिंदी शब्दावली एवं टिप्पण', 'हिंदी काव्य–पाठ', 'प्रस्तुतीकरण कुशलता', 'पूर्व लिखित हिंदी निबंध', 'हिंदी गीत', 'आशुभाषण', और 'हिंदी संवाद' प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। हिंदी सप्ताह का समापन समारोह 21 सितंबर 2016 को आयोजित किया गया, जिसमें श्रीमती सुलेखा मोहन, सेवानिवृत्त उप महाप्रबंधक, केनरा बैंक, बेंगलूरु मुख्य अतिथि थीं। इस अवसर पर मुख्य अतिथि एवं निदेशक ने विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं और हिंदी में मूल रूप से कार्य करने वाले प्रतिभागियों को पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र प्रदान किए।

हिंदी सप्ताह का उद्घाटन

उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि का उद्बोधन

उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. श्याम किशोर पाण्डेय ने कहा कि एक अनुसंधान संस्थान होने के नाते भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान में हिंदी में कार्य करने के कई अवसर उपलब्ध होते हैं। उन्होंने कहा कि संस्थान द्वारा विकसित उत्पादों को हिन्दी में नाम दिया जाए तो संस्थान की पहुँच ज्यादा–सा–ज्यादा लोगों तक होगी। इस देश के बड़े भूभाग सिर्फ हिंदी जानते हैं। हिंदी सबको लेकर चलती है और सभी भाषाओं के साथ सामंजस्य बिठाती है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए संस्थान के निदेशक डॉ.एम. आर. दिनेश ने कहा कि भाषा लोगों को जोड़ती है। जब किसी से उनकी भाषा में बात करेंगे तो आपसी भाईचारा बढता है। भारत में हिंदी एक संपर्क भाषा है। संप्रेषण में भाषा का अत्यंत महत्व है। कन्नड़ भाषियों को हिंदी समझने में कोई कठिनाई नहीं होगी, क्योंकि हिंदी और कन्नड़ में बहुत–से शब्द संस्कृत से आए हैं। फ्रांस, रूस जैसे अनेक देश अपनी–अपनी भाषा को बहुत महत्व देते हैं, अंग्रेज़ी को नहीं। अगर हम सब हिंदी में बात करेंगे और हिंदी में काम करेंगे तो हिंदी अवश्य राष्ट्रभाषा बनेगी।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि एवं निदेशक ने विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं और हिंदी में मूल रूप से कार्य करने वाले प्रतिभागियों को पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र प्रदान किए।

मुख्यालय, हेसरघट्टा, बैंगलूरू

हिन्दी कार्यशालाएँ

संस्थान में वर्ष 2016 के दौरान निम्नलिखित हिन्दी कार्यशालाएँ आयोजित की गईं:

- दिनांक 22 जनवरी 2016 को संस्थान के स्थापना अनुभाग एवं वित्त एवं लेखा अनुभाग के कर्मचारियों के लिए ''हिंदी में टिप्पण एवं आलेखन'' तथा ''कम्प्यूटर पर हिंदी में कार्य'' विषयों पर कार्यशाला आयोजित की गई।
- दिनांक 11 फरवरी 2016 को संस्थान के क्रय अनुभाग एवं नगद व बिल अनुभाग के कर्मचारियों के लिए ''हिंदी में टिप्पण एवं आलेखन'' तथा ''कम्प्यूटर पर हिंदी में कार्य'' विषयों पर कार्यशाला आयोजित की गई।

22 जनवरी 2016 को आयोजित कार्यशाला का दृश्य

- दिनांक 30 जून 2016 को ''कम्प्यूटर पर हिन्दी में कार्य'' विषय पर हिन्दी में टेबुल कार्यशाला आयोजित की गई।
- दिनांक 28 सितंबर 2016 को ''हिन्दी में टिप्पण एवं आलेखन'' विषय पर हिन्दी में टेबुल कार्यशाला आयोजित की गई।
- दिनांक 26 नवंबर 2016 को ''कम्प्यूटर पर हिन्दी में कार्य'' विषय पर हिन्दी में टेबुल कार्यशाला आयोजित की गई।

हिन्दी प्रकाशन

- तकनीकी बुलेटिन – 'भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान की किसानोपयोगी किस्में व प्रौद्योगिकियाँ'
- पॉकेट डायरियाँ –
  1. सब्जियों के टिकाऊ उत्पादन के लिए अर्का सूक्ष्माणवीय मिश्रण
  2. शिमला मिर्च की उत्पादन तकनीकी
  3. मिर्ची की उत्पादन तकनीकी
  4. फ्रेंचबीन की उत्पादन तकनीकी
  5. तरबूज एवं खरबूजा की उत्पादन तकनीकी

हिन्दी प्रोत्साहन योजना

- संस्थान में मूल रूप से हिन्दी में कार्य करने हेतु प्रोत्साहन योजना लागू की गई तथा इस वर्ष के दौरान इस योजना में भाग लिए गए कुल 10 प्रतिभागियों में से 02 कर्मचारियों को प्रथम पुरस्कार, 03 कर्मचारियों को द्वितीय पुरस्कार और 05 कर्मचारियों को तृतीय पुरस्कार प्रदान किए गए। इन कर्मचारियों को नगद पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र हिन्दी सप्ताह के समापन समारोह के दौरान प्रदान किए गए।

कार्यशाला में व्याख्यान

- श्री ए.के. जगदीशन, सहायक निदेशक (राजभाषा) ने दिनांक 22 जनवरी 2016 को संस्थान में आयोजित हिंदी कार्यशाला में''हिंदी में टिप्पण एवं आलेखन'' तथा ''कम्प्यूटर पर हिंदी में कार्य'' विषयों पर व्याख्यान दिया।
- श्री ए.के. जगदीशन, सहायक निदेशक (राजभाषा) ने दिनांक 11 फरवरी 2016 को संस्थान में आयोजित हिंदी कार्यशाला में''हिंदी में टिप्पण एवं आलेखन'' तथा ''कम्प्यूटर पर हिंदी में कार्य'' विषयों पर कार्यशाला आयोजित की गई।
- श्री ए.के. जगदीशन, सहायक निदेशक (राजभाषा) ने राष्ट्रीय पशुपोषण और शरीर क्रिया विज्ञान संस्थान,

11 फरवरी 2016 को आयोजित कार्यशाला का दृश्य

बेंगलूरु में 21–23 मार्च 2016 के दौरान आयोजित तीन दिवसीय राजभाषा हिन्दी कार्यशाला में अतिथि वक्ता रूप में 'राजभाषा नीति एवं कार्यान्वयन', 'हिंदी में तकनीकी लेखन', 'हिंदी में टिप्पण एवं आलेखन', 'हिंदी वर्तनी', 'हिंदी कम्प्यूटिंग', 'राजभाषा निरीक्षण' आदि विषयों पर व्याख्यान दिए।

- श्री ए.के. जगदीशन, सहायक निदेशक (राजभाषा) ने कालिकट विश्वविद्यालय, केरल में 04–05 अक्तूबर 2016 को हिंदी कम्प्यूटिंग पर आयोजित दो दिवसीय संगोष्ठी में ''हिंदी कम्प्यूटिंग'' विषय पर व्याख्यान दिया और प्रतिभागियों से व्यावहारिक अभ्यास कराया।

अन्य

- भा.कृ.अनु.प.–भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति और खेलकूद एवं कर्मचारी कल्याण समिति के तत्वावधान में संस्थान में 24 नवंबर 2016 को ''हिमालय की पारिस्थितिकी'' विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया, जिसमें गाँधीवादी पर्यावरणविद् एवं सामाजिक कार्यकर्ता श्री चण्डी प्रसाद भट्ट ने उक्त विषय पर व्याख्यान दिया। श्री चण्डी प्रसाद भट्ट चिपको आंदोलन के अग्रदूत हैं। वे कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से नवाज़े गए हैं, जिनमें प्रमुख हैं – रमन मैगसेसे पुरस्कार, पद्मभूषण, गाँधी शांति पुरस्कार आदि।

श्री चण्डी प्रसाद भट्ट जी व्याख्यान देते हुए

- कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक डॉ. एम.आर. दिनेश ने की। उन्होंने कहा कि इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री चण्डी प्रसाद भट्ट जी अपने आप में एक संस्था है। हमें उनसे बहुत कुछ सीखना चाहिए। निदेशक ने श्री चण्डी प्रसाद भट्ट के कार्यों की प्रशंसा की और कई प्रतिष्ठित पुरस्कार पाने के लिए उन्हें बधाई दी। निदेशक ने व्याख्यान देने के लिए श्री चण्डी प्रसाद भट्ट जी को धन्यवाद दिया और उन्हें सम्मानित भी किया।

भा.कृ.अनु.प.–संस्थान का क्षेत्रीय केन्द्र, केन्द्रीय बागवानी परीक्षण केन्द्र, चेट्टल्ली

हिन्दी सप्ताह

भा.कृ.अनु.प.–भा.बा.अनु.सं. – केन्द्रीय बागवानी परीक्षण केन्द्र, चेट्टल्ली, कोडगु में 15–21 सितंबर 2016 के दौरान हिंदी सप्ताह आयोजित किया गया। डॉ. आई.एन. दोरेयप्पा गौडा, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी अध्यक्ष ने 15 सितंबर को हिंदी सप्ताह का उद्घाटन किया। श्रीमती जरिता नच्चप्पा, हिंदी अध्यापक, केन्द्रीय विद्यालय, मडिक्केरी उद्घाटन समारोह की मुख्य अतिथि थी। प्रधान वैज्ञानिक एवं हिंदी सप्ताह आयोजन समिति के अध्यक्ष डॉ. वी. शंकर ने हिंदी सप्ताह के दौरान आयोजित होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों की जानकारी दी। हिंदी सप्ताह के दौरान 'श्रुतलेख', 'वस्तुओं को पहचानिए', 'हिंदी शब्दार्थ', 'सुलेख', 'हिंदी वर्णमाला', 'वस्तुओं का हिंदी में विवरण' आदि प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं।

पुरस्कार वितरण

हिंदी सप्ताह का समापन समारोह 21 सितंबर 2016 को आयोजित किया गया, जिसमें श्री हरि ओम, स्नातकोत्तर अध्यापक, जवाहर नवोदय विद्यालय, मडिक्केरी एवं श्री दीपक, हिंदी अध्यापक, जवाहर नवोदय विद्यालय, मडिक्केरी मुख्य अतिथि थे। श्रीमती रूपा, हिंदी अध्यापिका, सरकारी माध्यमिक विद्यालय, कडगधल प्रतियोगिताओं की निर्णायक थीं। समापन समारोह में मुख्य अतिथियों ने प्रतियोगिताओं

के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए। डॉ. वी. शंकर, डॉ. प्रीति सोनवाने एवं श्रीमती पी.बी. स्वाति ने पूरे कार्यक्रम का समन्वयन किया। समापन समारोह में श्री के.वी. वरदराज, तकनीकी अधिकारी ने आभार प्रदर्शन किया।

भा.कृ.अनु.प.–संस्थान का क्षेत्रीय केन्द्र, केन्द्रीय बागवानी परीक्षण केन्द्र, भुवनेश्वर, ओडिशा

हिन्दी सप्ताह

भा.कृ.अनु.प.–भा.बा.अनु.सं. – केन्द्रीय बागवानी परीक्षण केन्द्र, भुवनेश्वर में 14 से 23 सितंबर 2016 के दौरान हिंदी सप्ताह आयोजित किया गया। हिंदी सप्ताह के दौरान 'हिंदी श्रुतलेखन', 'हिंदी पढ़ना', 'हिंदी निबंध' एवं 'वाद–विवाद' आदि प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। दिनांक 20 सितंबर 2016 को ''ओडिशा में बागवानी के विकास की संभावनाएँ'' विषय पर एक दिवसीय समूह चर्चा भी आयोजित की गई।

हिंदी सप्ताह का समापन समारोह दिनांक 23 सितंबर 2016 को आयोजित किया गया। समापन समारोह के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए। हिन्दी सप्ताह के दौरान आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों के समन्वयन का कार्य डॉ. दीपा सामंत ने किया।

पुरस्कार वितरण

भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय खरपतवार विज्ञान अनुसंधान संस्थान, जबलपुर

हिन्दी पखवाड़ा

निदेशालय में राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा दिनांक 14.09.2016 से दिनांक 28.09.2016 तक हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया। जिसमें कार्यालय के समस्त अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया। 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस के अवसर पर कार्यक्रम का उद्घाटन कार्यक्रम के अध्यक्ष प्रभारी निदेशक डॉ. पी.के. सिंह, भा.कृ.अनु.परि.–ख.अनु. निदेशालय, जबलपुर तथा मुख्य अतिथि श्री लक्ष्मीकांत शर्मा, सहायक निदेशक एवं प्रभारी राजभाषा कार्यान्वयन समिति, टेलीकाम फैक्ट्री, जबलपुर, श्री जी.एन. अम्बलकर, कानूनी सलाहकार, टेलीकाम फैक्ट्री जबलपुर एवं प्रभारी, रा.का.समिति श्री आर. एस. उपाध्याय द्वारा सरस्वती पूजन एवं दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया तथा सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को अपना सम्पूर्ण कार्य हिन्दी में करने का संकल्प भी दिलाया गया।

तत्पश्चात् प्रभारी निदेशक महोदय ने सभागार में उपस्थित सभी को हिन्दी दिवस की शुभकामनायें दीं एवं सर्वप्रथम सभागार में उपस्थित सभी अधिकारियों कर्मचारियों को निदेशालय में पधारे मुख्य अतिथियों का परिचय दिया। तत्पश्चात् माननीय श्री राधा मोहन सिंह, कृषि एवं कृषक कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रेषित संदेश का वाचन किया साथ ही डॉ. त्रिलोचन महापात्रा, महानिदेशक एवं सचिव कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा द्वारा प्रेषित अपील का वाचन किया गया। तत्पश्चात् सभागार में उपस्थित सभी अधिकारियों कर्मचारियों को शपथ पत्र पढ़कर शपथ दिलाई।

तत्पश्चात् राजभाषा के कार्यान्वयन हेतु शासकीय कामकाज में अधिक से अधिक हिन्दी में कार्य करने हेतु आग्रह किया।

पखवाड़े के दौरान निदेशालय में शुद्ध लेखन प्रतियोगिता, पत्र लेखन प्रतियोगिता, आलेखन एवं टिप्पण प्रतियोगिता, क्विज कांटेस्ट प्रतियोगिता, वाद–विवाद प्रतियोगिता एवं नगद पुरस्कार प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

हिन्दी पखवाड़े का समापन/पुरस्कार वितरण समारोह दिनांक 28.09.2016 को आयोजित किया गया । समारोह की अध्यक्षता निदेशाालय के निदेशक महोदय डॉ. अजीत राम शर्मा ने की जिसमें मुख्य अतिथि पं. आचार्य कृष्णकांत चतुर्वेदी जी थे। मुख्य कार्यक्रम के अन्त में प्रतियोगिताओं में विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कार वितरित किये गये।

प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत वर्षभर 20,000 से अधिक हिन्दी शब्द लिखने वाले, 5 अधिकारियों/कर्मचारियों को नगद पुरस्कार प्रदान किये गये। इसके अतिरिक्त वर्षभर हिन्दी

राजभाषा कार्यान्वयन समिति को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग प्रदान करने वाले निदेशालय के अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किये गये। वर्षभर हिन्दी में सर्वाधिक काम करने वाले अनुभागों को चल शील्ड से सम्मानित किया गया।

हिन्दी कार्यशालाएं

दिनांक 30 मार्च 2016 को भा.कृ.अनु.परि.–खरपतवार अनुसंधान निदेशालय के सभागार में समस्त अधिकारियों/कर्मचारियों हेतु रा.का.समिति द्वारा हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें डॉ. संजय वैशंपायन द्वारा ''दलहनी फसलों में कीट नियंत्रण'' विषय पर वक्तव्य दिया गया। उन्होंने दलहनी फसलों के उत्पादन के महत्व पर प्रकाश डालते हुये पर्यावरण तथा उसमें उपयुक्त समन्वित कीट नियंत्रण के विषय में दलहनी एवं तिलहनी फसलों के मुख्य कीड़ों के विषय में जानकारी प्रदान की।

दिनांक 24 जून 2016 को भा.कृ.अनु.परि.–खरपतवार अनुसंधान निदेशालय के सभागार में समस्त अधिकारियों/कर्मचारियों हेतु रा.का. समिति द्वारा हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें डॉ. अजय गुप्ता द्वारा ''आयकर एवं निवेश'' विषय पर वक्तव्य दिया गया। डॉ. अजय कुमार गुप्ता ने सभा में उपस्थित सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को ''आयकर एवं निवेश'' विषय की जानकारी प्रदान की। जिसमें उन्होंने आयकर से संबंधित प्रावधानों नियमों तथा वर्तमान में निर्धारित आयकर स्लैब की जानकारी विभिन्न प्रावधानों के तहत् आयकर में रियायत आदि के विषय में विस्तार से जानकारी प्रदान करते हुये यह भी कहा कि उक्त प्रावधान एवं आयकर नियमों की जानकारी प्रत्येक करदाता को होनी चाहिये।

दिनांक 24 सितम्बर, 2016 को भा.कृ.अनु.परि.–खरपतवार अनुसंधान निदेशालय के सभागार में समस्त अधिकारियों/कर्मचारियों हेतु रा.का.समिति द्वारा हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें डॉ. शोभा सोंधिया, वरि. वैज्ञानिक द्वारा ''जैव क्षेत्र ऊर्जा, विचारधारा, व्यवहार और प्रभाव'' विषय पर वक्तव्य दिया गया। डॉ. शोभा सोंधिया, वरिष्ठ वैज्ञानिक द्वारा ''जैव क्षेत्र ऊर्जा, विचारधारा, व्यवहार और प्रभाव'' पर विस्तार से वक्तव्य दिया गया। उनके द्वारा बताया गया कि एक–दूसरे का आभा मण्डल एक–दूसरे को परस्पर आकर्षित करता है ऐसा ऋषि–मुनि भी जानते थे जिसे चिकित्सा क्षेत्र ने भी अपने साहित्य में जगह दी है।

दिनांक 24 दिसम्बर, 2016 को भा.कृ.अनु.परि.–खरपतवार अनुसंधान निदेशालय के सभागार में समस्त अधिकारियों/कर्मचारियों हेतु रा.का. समिति द्वारा हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें श्री संदीप धगट, सहा.मुख्य तकनीकी अधिकारी द्वारा ''एम.एस.एक्सेल का कृषि डेटा भरने में प्रयोग'' विषय पर वक्तव्य दिया गया। श्री संदीप धगट, सहा.मुख्य तक.अधि. द्वारा ''एम.एस.एक्सेल का कृषि डेटा भरने में प्रयोग'' पर विस्तार से वक्तव्य दिया गया। उन्होंने बताया कि एम.एस. ऑफिस के अंतर्गत आने वाले टूल एम. एस. एक्सेल का कार्यालयीन डेटा तथा अनुसंधानीय कृषि से संबंधित डेटा में भरपूर उपयोग किया जा सकता है जिससे अनुसंधानीय डेटा के परिणाम बहुत ही सरलतापूर्वक अर्जित किये जा सकते है।

प्रमुख उपलब्धियां

संस्थान में राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन, इसकी प्रगति एवं समय–समय पर इसके प्रयोग एवं प्रगति की समीक्षा करने हेतु राजभाषा कार्यान्वयन समिति का गठन किया गया है।

समिति के प्रयासों के परिणामस्वरूप संस्थान के विभागों/अनुभागों में हिन्दी में कार्य करने के लिये जो उत्साह पैदा हुआ है, वह निःसंदेश राष्ट्रीय गौरव एवं स्वाभिमान का विषय है।

हिन्दी प्रकाशन

क्रम	प्रकाशन	प्रतिरूप
1.	तृण संदेश अंक–11	पत्रिका
2.	वार्षिक प्रतिवेदन	वार्षिक प्रतिवेदन
3.	पार्थेनियम अवेयरनेस वीक	पोस्टर
4.	खरपतवार समाचार	फोल्डर
5.	खरपतवार प्रबंधन की उन्नत तकनीक	बड़े पोस्टर
6.	उन्नत कृषि एवं मृदा स्वास्थ्य संरक्षण हेतु फसल अवषेश प्रबंधन	विस्तार बुलेटिन

भा.कृ.अनु.प–भारतीय कदन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद

हिन्दी चेतना मास

भा.कृ.अनु.प – भारतीय कदन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद में 14 सितंबर से 13 अक्तूबर, 2016 के दौरान हिंदी चेतना मास समारोह का आयोजन किया गया। समारोह का शुभारंभ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् गान से हुआ। डॉ. विलास ए टोणपि, निदेशक, ने 14 सितंबर, 2016 को माँ सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण तथा दीप प्रज्जवलित करके समारोह के शुभारंभ की घोषणा की । उक्त चेतना मास के अंतर्गत हिंदी में 15 विभिन्न प्रतियोगिताओं (वर्णमाला, बारहखड़ी व संधि विच्छेद, छोटे शब्दों एवं पदों का हिंदी में अनुवाद, काव्य–वाचन, शब्द–लेखन सामर्थ्य, श्रुत–लेखन (शुद्ध लेखन), टिप्पण एवं आलेखन, निबंध–लेखन, शब्द–संकेत एवं संज्ञान, हिंदी में पोस्टर प्रस्तुतिकरण, अंत्याक्षरी, हिंदी पाठ वाचन, स्मरण शक्ति परीक्षण, आशु–भाषण, प्रश्न–मंच) का आयोजन किया गया, जिनमें वैज्ञानिक, तकनीकी, प्रशासनिक तथा अनुसंधान सहायक, शोध छात्रों आदि ने बड़े–ही उत्साह व उमंग के साथ भाग लिया। इसके अलावा उक्त चेतना मास के दौरान हिंदी में हस्ताक्षर अभियान भी चलाया गया।

संस्थान में 18 अक्तूबर, 2016 को हिंदी चेतना मास के समापन समारोह का आयोजन किया गया। डॉ. के बी आर एस विशारदा, प्रभारी अधिकारी, हिंदी कक्ष ने समारोह में उपस्थित लोगों का स्वागत किया। संस्थान के निदेशक, डॉ. टोणपि ने मुख्य अतिथि के रूप में पधारे प्रो. एम वेंकटेश्वर, पूर्व–प्रधानाचार्य, आर्टस कॉलेज, पूर्व–नियंत्रक, परीक्षा शाखा, उस्मानिया विश्वविद्यालय, पूर्व–प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी भाषा एवं भारत अध्ययन विभाग, अंग्रेजी एवं विदेशी भाषा विश्वविद्यालय, हैदराबाद का पुष्पगुच्छ से स्वागत किया। डॉ. विशारदा ने संस्थान में संचालित राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी प्रगति प्रतिवेदन तथा डॉ. महेश कुमार, तकनीकी अधिकारी (राजभाषा) ने हिंदी चेतना मास समारोह के दौरान आयोजित कार्यक्रमों पर प्रतिवेदन प्रस्तुत किया तथा उक्त समारोह को सफल बनाने के लिए संस्थान में कार्यरत सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के प्रति आभार व्यक्त किया ।

इस अवसर पर प्रो. वेंकटेश्वर ने संस्थान में हिंदी चेतना मास के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को नकद पुरस्कार तथा प्रमाण–पत्र एवं प्रतियोगिता के अन्य सहभागियों को कलम तथा प्रमाण–पत्र प्रदान किए। डॉ. टोणपि ने संस्थान में राजभाषा कार्यान्वयन को प्रोत्साहन प्रदान करने हेतु संचालित नकद पुरस्कार योजना के अंतर्गत विजेताओं को भी नकद पुरस्कार एवं प्रमाण–पत्र तथा प्रतियोगिताओं के निर्णायकों को स्मृति चिह्न प्रदान किए । इसके अलावा संस्थान में प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ व पारंगत में उत्तीर्ण अधिकारियों को भी प्रमाण–पत्र वितरित किए गए ।

प्रो. वेंकटेश्वर ने अपने संबोधन में विभिन्न विषयों को समाहित करते हुए कहा कि हमें राजभाषा कार्यान्वयन को बढ़ाने हेतु सर्वप्रथम शिक्षा के माध्यम एवं रोजगारोन्मुख भाषा की ओर ध्यान देना चाहिए । उन्होंने बताया कि अंग्रेजी का उपयोग करते–करते हम अपनी संस्कृति को भूलते जा रहे हैं । अतः हमें हमारी संस्कृति को जीवित रखने हेतु हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं को महत्व देना चाहिए । इसके अलावा उन्होंने बताया कि केंद्रीय कर्मचारी के लिए तो राजभाषा हिंदी में कार्य करना अनिवार्य है चूंकि यह उसका संवैधानिक दायित्व है। डॉ. टोणपि ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि हमारा संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन में सही गति पर है लेकिन हमें उससे संतुष्ट नहीं होना चाहिए तथा उसमें और ज्यादा प्रगति के रास्ते ढूंढने चाहिए । इसके अलावा उन्होंने अपील की कि हमने हिंदी चेतना मास के दौरान जो हिंदी में हस्ताक्षर अभियान की शुरुआत की है उसे यहीं पर न रोकते हुए पूरे वर्ष जारी रखना चाहिए । अंत में डॉ. महेश कुमार, के द्वारा धन्यवाद ज्ञापन तथा सामूहिक रूप से राष्ट्रगान के

पश्चात समारोह का समापन हुआ। संस्थान में संपन्न पूरे हिंदी चेतना मास के कार्यक्रमों का संचालन एवं समन्वय डॉ. विलास ए टोणपि के दिशा–निर्देश में डॉ. विशारदा तथा डॉ. महेश कुमार के द्वारा किया गया।

हिंदी कार्यशालाएं

भारतीय कदन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद में 2 जुलाई तथा 30 सितंबर, 2016 के दौरान दो हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। उक्त कार्यशालाओं में श्री जयशंकर प्रसाद तिवारी, सहायक निदेशक, केंद्रीय प्रशिक्षण उप संस्थान, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार तथा प्रो. अरुण तिवारी, कार्यपालक निदेशक, केयर फाउंडेशन विषय विशेषज्ञ व अतिथि वक्ता के रूप में उपस्थित थे। श्री जयशंकर प्रसाद तिवारी जी ने राजभाषा कार्यान्वयनः समस्याएं एवं समाधान विषय पर वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए बताया कि राजभाषा हिंदी में कार्य करना हमारा संवैधानिक दायित्व है और हमें उसमे कार्य करने हेतु हमेशा तत्पर रहना चाहिए ।

प्रो. अरुण तिवारी जी ने "सफलता के पथ" पर वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए प्रत्येक कार्य में तीन मूल तत्वों – कल्पना, पवित्रता तथा ईश्वर पर भरोसे की प्रधानता का उल्लेख करते हुए बताया कि इन तीन तत्वों के कारण ही हमें ईमानदारी, सच्चाई व हिम्मत प्राप्त होती है। अतः हमें अपने कार्यों के प्रति ईमानदार होना आवश्यक है, तभी आत्मतुष्टि मिल सकती है, आत्मतुष्टि शरीर को स्वस्थ रखती है और स्वस्थ शरीर सफलता का एक प्रमुख सोपान है। इसके अलावा उन्होंने बताया कि एक साथ एक ही समय पर कई कार्य करने से हम कार्यों पर पूरा ध्यान नहीं दे पाते हैं। अतः हमें एक समय पर एक ही कार्य करते हुए अपने कार्य पर पूरा ध्यान केंद्रित करना चाहिए ताकि उस कार्य में कोई गलती न हो। डॉ. विलास ए टोणपि, निदेशक, भाकअनुसं ने अपने अध्यक्षीय भाषण में बताया कि अगर हम प्रो. तिवारी जी के बताए मार्ग का दस प्रतिशत भी अनुकरण करते हैं तो हमारे कार्यों की सफलता में बीस प्रतिशत वृद्धि हो सकती है। इसके अलावा उन्होंने बताया की हमें हमारे कार्यों में पारदर्शिता बनाए रखने के लिए राजभाषा हिंदी को प्रमुखता देनी चाहिए।

पारंगत हिंदी प्रशिक्षण कार्यक्रम

भाकृअनुप – भारतीय कदन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद में केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण उप–संस्थान, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के सहयोग से 04 जनवरी – 03 फरवरी, 2016 एवं 01 – 29 नवंबर, 2016 के दौरान "पारंगत हिंदी प्रशिक्षण कार्यक्रम" का दो सत्रों में आयोजन किया गया । इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों एवं प्रशिक्षण के अंत में आयोजित परीक्षाओं में संस्थान के कुल 25 (13 + 12) पदाधिकारियों ने भाग लिया भाग लिया। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में श्री जयशंकर प्रसाद तिवारी, सहायक निदेशक, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण उप–संस्थान, हैदराबाद ने प्रशिक्षक के रूप में अपनी सेवाएं प्रदान की। कार्यक्रम के प्रारंभ में डॉ. के बी आर एस विशारदा, प्रधान वैज्ञानिक तथा प्रभारी अधिकारी, हिंदी कक्ष ने कार्यक्रम में उपस्थित पदाधिकारियों का स्वागत किया तथा प्रशिक्षक के रूप में पधारे श्री तिवारी जी का परिचय प्रस्तुत किया। डॉ. विलास ए टोणपि, निदेशक, भाकअनुसं के द्वारा औपचारिक रूप से उक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किया गया।

श्री तिवारी जी ने प्रशिक्षण कार्यक्रम की संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए कहा कि राजभाषा कार्यान्वयन हमारा दायित्व है और उसमें आने वाली समस्याओं का निराकरण इस पाठ्यक्रम के द्वारा किया जाता है। डॉ. टोणपि ने उक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम की उपयोगिता के संदर्भ में कहा कि संस्थान में राजभाषा कार्यान्वयन हेतु हम पूरी तरह प्रयासरत हैं और इस तरह के कार्यक्रमों के आयोजन से संस्थान के कार्मिकों के द्वारा हिंदी में कार्य करने हेतु उनके कौशल में वृद्धि होगी और हम राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों तक पहुंचने में सक्षम होंगे। कार्यक्रम के अंत में डॉ. महेश कुमार, तकनीकी अधिकारी (राजभाषा) के द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के पश्चात समारोह का समापन हुआ।

इन 20 दिवसीय प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षणार्थियों को राजभाषा नियम–विनियम से अवगत कराने के अलावा अभ्यास भी कराया गया। प्रशिक्षण के अंत में क्रमशः 03 फरवरी तथा 29 नवंबर, 2016 को आयोजित दो–दो परीक्षाओं अर्थात् प्रश्न पत्र –1 तथा प्रश्न पत्र – 2 के साथ उक्त प्रशिक्षण

कार्यक्रमों का समापन हुआ। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों का समन्वय एवं संचालन डॉ. टोणपि के दिशा–निर्देश में डॉ. वी आर भागवत, डॉ. विशारदा तथा डॉ. महेश कुमार के द्वारा किया गया।

हिंदी प्रकाशन

- कदन्न सौरभ गृह पत्रिका का अंक – 6
- वार्षिक प्रतिवेदन 2015–16का हिंदी में प्रकाशन
- आई.आई.एम.आर. हैपनिंग्स (मासिक) के हिंदी में सारानुवाद का प्रकाशन
- स्थानीय समाचार पत्र डेली हिंदी मिलाप में मधुमेह की रोकथाम हेतु कदन्नों के उपयोग पर निदेशक, भाकृअप के साथ संपन्न वार्ता प्रकाशित।

भाकृअनुप–राष्ट्रीय पशुरोग जानपदिक एवं सूचना विज्ञान संस्थान, बेंगलुरु

हिन्दी सप्ताह

हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य पर संस्थान में दिनांक 14 से 20 सिंतबर तक हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया गया। समारोह की शुरुवात 14 सितंबर को संस्थान के निदेशक कार्यवाहक, डा. बी. आर. सोम द्वारा दीप प्रज्वलन से हुई। इस अवसर पर संस्थान के सभी वैज्ञानिक, अधिकारी, कर्मचारी एवं विभिन्न परियोजनाओं में कार्यरत शोध छात्र उपस्थित थे। इस अवसर पर माननीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री, श्री राधामोहन सिंह द्वारा हिंदी में जारी अपील को पढा गया।

निदेशक महोदय ने हिन्दी के प्रोत्साहन के लिए सभी से हिन्दी का ज्यादा से ज्यादा प्रयोग करने की अपील की ।

इस अवसर पर संस्थान की हिन्दी कार्यान्वयन समिति के उपाध्यक्ष डा. डी. हेमाद्री ने सभी से विभिन्न प्रतियोगिताओं में ज्यादा से ज्यादा भाग लेने की अपील की। इस अवसर पर संस्थान की प्रधान वैज्ञानिक डॉ. (श्रीमती) राजेश्वरी शोम, डा. एस. एस. पाटील वरिष्ठ वैज्ञानिक, सहायक प्रशासनिक अधिकारी राजीवलोचन, सहायक वित्त और लेखा अधिकारी बाबू आर के, व अन्य वैज्ञानिक और शोध छात्रों ने हिन्दी से जुड़े अपने कुछ अनुभवों को साझा किया। हिन्दी सप्ताह के अंतर्गत सात विभिन्न प्रतियोगिताओं (आशुभाषण, निबंध लेखन, अनुवाद, आवेदन पत्र लेखन, प्रश्नोत्तरी, वाद विवाद और गायकी) का आयोजन किया गया। इसमें संस्थान के सभी लोगों ने बढ़–चढ़ कर सहभागिता की।

सप्ताह के अंतिम दिन समापन समारोह का आयोजन किया गया। बतौर अध्यक्ष निदेशक महोदय ने समारोह के कुशल आयोजन के लिए आयोजन समिति के सदस्यो को बधाई दी। हिन्दी प्रभारी, डॉ. अवधेश प्रजापति ने हिन्दी सप्ताह में किए गए आयोजनों पर रिपोर्ट प्रस्तुत की। तत्पश्चात विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजयी रहे प्रतिभागियों को पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। अंत में सहायक वित्त और लेखा अधिकारी बाबू आर के ने समारोह के कुशल समापन में सभी के कुशल सहयोग के लिए धन्यवाद ज्ञापन दिया।

पुरस्कार वितरण समारोह

प्रमुख उपलब्धियां

- संस्थान के दैनिक उपयोग में आने वाले प्रारूपों को द्विभाषीय बनाया गया।
- संस्थान की हिन्दी पत्रिका "पशु प्रहरी" का प्रकाशन किया गया।
- संस्थान के वार्षिक प्रतिवेदन 2015–16 का हिन्दी में प्रकाशन किया गया।
- कृषि मेला की प्रसार सामाग्री को हिन्दी में उपलब्ध कराया गया तथा केंद्रीय भेड़ और ऊन अनुसंधान संस्थान अविकानगर में आयोजित भेड सह किसान मेला में प्रदर्शित किया गया जिसमें संस्थान ने प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया।

भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय पशु आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, करनाल

हिन्दी पखवाड़ा

प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी संस्थान में दिनांक 14.09.2016 से 21.09.2016 तक हिंदी पखवाडे का आयोजन किया गया। इस अवधि में विभिन्न मौखिक प्रतियोगिताएं जिनमें निबन्ध, पत्र, शब्दार्थ/अनुवाद, टिप्पणी/मसौदा, पोस्टर प्रदर्शनी तथा मौखिक प्रतियोगिताओं में भाषण, आशु–भाषण, हिंदी शब्द खोज, वैज्ञानिकों हेतु हिंदी शोध पत्र प्रस्तुतीकरण इत्यादि का आयोजन किया गया। इसके साथ–साथ स्टाफ सदस्यों के द्वारा पिछले वर्ष के दौरान हिंदी भाषा में किये गए कार्यों का मूल्यांकन नकद पुरस्कारों हेतु किया गया।

पशुधन प्रकाश के षष्टम अंक के श्रेष्ठ लेखों को पुरस्कार वितरण

हिन्दी कार्यशालाएं

संस्थान में राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार और संस्थान कार्मिकों को राजकीय कार्यों में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग हेतु जागरूक करने के उद्देश्य से संस्थान में तिमाही हिंदी व्याख्यानों/कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है. इसी प्रक्रिया में दिनांक 15–04–2016 को 'महिला सशक्तिकरणः भारतीय समाज के सन्दर्भ में' विषय पर एक हिंदी व्याख्यान का आयोजन किया गया। दिनांक 18–07–2016 को आयकर विवरणिका भरते समय ध्यान देने योग्य बिंदु विषय पर हिंदी भाषा में व्याख्यान/कार्यशाला का आयोजन किया गया।

अन्य गतिविधियां

दिनांक 21–09–2016 को ब्यूरो के स्थापना दिवस के सुअवसर पर हिंदी पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया. इस अवसर पर पशुधन प्रकाश के छठे अंक (वर्ष–2015) में प्रकाशित तीन श्रेष्ठ लेखों के लेखकों को नकद पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

पशुधन प्रकाश के सप्तम अंक का विमोचन

ब्यूरो के स्थापना दिवस के सुअवसर पर पशुधन प्रकाश के सप्तम अंक का विमोचन किया गया।

पशुधन प्रकाश को गणेश शंकर विद्यार्थी पुरस्कार

विशिष्ट उपलब्धि के अंतर्गत इस अवधि के दौरान भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद् द्वारा पशुधन प्रकाश के पांचवे अंक (वर्ष–2014) को गणेश शंकर विद्यार्थी कृषि पत्रिका पुरस्कारों के अंतर्गत द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

भा.कृ.अनु.प.–खुम्ब अनुसंधान निदेशालय, सोलन

हिन्दी सप्ताह

भाकृअनप–खुम्ब अनुसंधान निदेशालय में हिन्दी सप्ताह का आयोजन दिनांक 05–14 सितम्बर, 2016 तक किया गया। इस दौरान श्रुत लेखन प्रतियोगिता जिसमें 16 प्रतिभागी, सुलेख (सुन्दर लिखाई) जिसमें 25 प्रतियोगी, अनुवाद (हिन्दी से अंग्रेजी) जिसमें 11 प्रतिभागी, निबंध प्रतियोगिता जिसका विषय 'खुम्ब एक स्वास्थ्यवर्धक आहार' जिसमें 12 प्रतिभागी, अनुवाद (अंग्रेजी से हिन्दी) जिसमें 14 प्रतिभागी, टिप्पणी प्रतियोगिता जिसमें 7 प्रतिभागी, तकनीकी ज्ञान व सामान्य ज्ञान जिसमें 5 प्रतिभागी, पत्र लेखन प्रतियोगिता जिसमें चार प्रतिभागी, वाद–विवाद प्रतियोगिता तथा क्विज़ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें निदेशालय के अहिन्दी भाषी अधिकारियों सहित सभी वर्ग के अधिकारियों व कर्मचारियों ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया।

हिन्दी कार्यशालाएं

इस अवसर डा. वी.पी. शर्मा, निदेशक, द्वारा बताया गया कि निदेशालय में हिन्दी में बहुत काम हो रहा है तथा उन्होंने ने प्रशासनिक वर्ग के कर्मचारियों का इसमें अहम योगदान है। उन्होंने बताया कि निदेशालय में खुम्ब पर प्रशिक्षण हिन्दी

माध्यम से ही दिया जाता है तथा अन्य बैठकों में भी वार्तालाप व कार्यवाही हिन्दी में ही होती है। निदेशालय में दिनांक 10 सितम्बर, 2015 को राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित खुम्ब मेला में खुम्ब उत्पादकों को हिन्दी माध्यम से खुम्ब की तकनीकियों के बारे में विस्तार से बताया गया, निदेशालय का वार्षिक प्रतिवेदन रिपोर्ट 2014–15 हिन्दी में भी प्रकाशित किया गया, निदेशालय की बेवसाइट द्विभाषी है, रबड़ की मोहरे द्विभाषी है, नेम प्लेट, साईन बोर्ड द्विभाषी है, निदेशालय के अधिकारियों व कर्मचारियों का हिन्दी संबंधी रोस्टर तैयार किया गया है। द्विभाषी में फॉर्म बने हुए हैं तथा हिन्दी में ही भरे जा रहे है। इसके अतिरिक्त निदेशालय में पत्र, परिपत्र, कार्यालय आदेश आदि द्विभाषी जारी किए जा रहे है। उन्होंने निदेशालय के सभी अधिकारियों व कर्मचारियों से हिन्दी में कार्यों को और अधिक बढ़ाने का आग्रह किया। उन्होंने निदेशालय के सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को यह भी आश्वासन दिया कि यदि हिन्दी के कार्य करने में उन्हें कोई कठिनाई आ रही है तो व वेझिझक उन्हें बताए ताकि हिन्दी के कार्यों को बढ़ाया जा सके।

उसके पश्चात् डा. बलदेव सिंह ठाकुर, प्राध्यापक, राजकीय महाविद्यालय, सोलन द्वारा अपना वक्तव्य दिया। उन्होंने सरल हिन्दी के प्रयोग पर जोर दिया तथा इस बात पर जोर दिया कि सभी अधिकारी व कर्मचारी स्वेच्छा से अपना अधिक से अधिक सरकारी कार्य सरल हिन्दी में करें व क्लिष्ट शब्दों के प्रयोग से बचें। उन्होंने हिन्दी के बारे में बहुत ही बढ़िया ढंग से जानकारी प्रदान की व निदेशालय के अधिकारियों व कर्मचारियों को हिन्दी में कार्य करने की प्रेरणा दी। उन्होंने बताया कि किस तरह से आज दक्षिण भारत खासकर तमिलनाडु राज्य में भी हिन्दी की लोकप्रियता बढी है व युवा वर्ग हिन्दी की ओर आकर्षित हुआ है। हिन्दी पूरे देश की ही नहीं बल्कि विश्व के अनेक देशों जैसे कि सूरीनाम, त्रिनिडाड, मोरीशस, गुयाना जहां भी भारतीय बस गए हैं वहां हिन्दी को बढ़ावा मिला है।

इसके अतिरिक्त डा. वी.पी. शर्मा, निदेशक एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सतत् निजी–सहयोग और मार्गदर्शन के तहत हिन्दी की तिमाही बैठकों व कार्याशालाओं का समय

पर आयोजन किया जाता रहा है। निदेशालय में कार्यरत सभी अधिकारियों व कर्मचारियों के संपूर्ण योगदान के साथ राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी गतिविधियां निरंतर प्रगति की ओर अग्रसर हो रही है।

प्रमुख उपलब्धियां

- हिन्दी सप्ताह 05 से 14 सितम्बर, 2016 तक आयोजित किया गया।
- डा. बी. एल. अत्री प्रधान वैज्ञानिक व श्री दीप कुमार ठाकुर, आशुलिपिक (ग्रेड–III), द्वारा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, सोलन में हिन्दी पखवाड़ा के दौरान हिन्दी प्रतियोगितयों में निदेशालय का प्रतिनिधित्व किया व दोनों ने प्रतियोगिताओं में प्रथम स्थान प्राप्त किए।
- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, सोलन की बैठकों में भाग लिया।
- वार्षिक प्रकाशन 'छत्रक' का प्रकाशन किया गया।
- एक पुस्तक प्रारम्भिक मशरूम (रिप्रिंट) की गई।

भा.कृ.अनु.प.––राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक

हिन्दी पखवाड़ा

संस्थान में 14 से 29 सितंबर 2016 के दौरान हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। इस पखवाड़े के दौरान संस्थान के अधिकारियों /कर्मचारियों के लिए पांच हिंदी प्रतियोगिताएं–14 सितंबर को शुद्ध एवं शीघ्र हिंदी लेखन, 15 सितंबर को हिंदी पाठ–पठन, 16 सितंबर को हिंदी अंत्याक्षरी, 20 सितंबर को हिंदी लिप्यंतरण एवं 20 सितंबर को हिंदी प्रश्नोत्तरी आयोजित की गईं। कुल 83 कर्मचारियों ने इन प्रतियोगिताओं में उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रतियोगिताओं के उत्तर पत्रों के मूल्यांकन के लिए संस्थान के निदेशक महोदय द्वारा नामित दस वैज्ञानिकों को लेकर एक हिंदी प्रतियोगिता निर्णायक मंडल गठित किया गया। पखवाड़े से संबंधित सभी कार्यकलापों का समन्वयन के लिए सात सहायक प्रशासनिक अधिकारियों को लेकर डॉ. ओ.एन. सिंह की अध्यक्षता में हिंदी पखवाड़ा आयोजन समिति गठित की गई। प्रत्येक प्रतियोगिता के विजेताओं को क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय और सांत्वना पुरस्कार दिए गए।

हिंदी पखवाड़े का समापन समारोह संस्थान के सम्मेलन कक्ष में दिनांक 29 सितंबर 2016 को संपन्न हुआ। डॉ.पी.के. रथ, उपमुख्य श्रम आयुक्त (केंद्रीय), भुवनेश्वर इस समापन समारोह के मुख्य अतिथि एवं श्री सुरेंद्रनाथ सामल, सहायक निदेशक (राजभाषा), आकाशवाणी, कटक इसके सम्मानीय अतिथि

थे। मुख्य अतिथि ने विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार और प्रमाणपत्र के साथ सम्मानित किया। मुख्य अतिथि ने इस अवसर पर संस्थान द्वारा प्रकाशित "धान की फसल में रोगों की पहचान एवं उनका निदान" तथा 'धान की फसल में नाशक कीटों एवं सूत्रकृमियों के नियंत्रण हेतु मार्गदर्शन' नामक दो पॉकेट बुलेटिनों का विमोचन किया। मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में कहा कि कृषि के क्षेत्र में हिंदी की आवश्यकता एवं प्रयोग अधिक है क्योंकि देश के अधिकांश किसान संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग करते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि हिंदी का जितना सहज सरल एवं बोलचाल की भाषा के रूप में करेंगे वह उतनी ही लोकप्रिय होगी तथा इसका प्रयोग मूलरूप से वैज्ञानिक लेखन और अनुसंधान उपलब्धियों को जनता तक पहुचानें में किया जा सकेगा।

निदेशक महोदय डॉ. हिमांशु पाठक ने हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को बधाई दी एवं हिंदी पखवाड़ा आयोजक समिति को पखवाड़े के सुचारु समन्वयन पर धन्यवाद दिया। डॉ. पाठक ने हिंदी पखवाड़े के सफल आयोजन पर प्रसन्नता जाहिर की तथा आयोजक समिति के सदस्यों की इस सफलता के लिए सराहना की। उन्होंने राजभाषा कार्यान्वयन से जुड़े नियमों के अनुपालन पर जोर दिया तथा कर्मचारियों से कार्यालय में अपने सरकारी कार्य को हिंदी में करने के लिए आग्रह किया। श्री आशुतोष कुमार तिवारी, सहायक निदेशक राजभाषा ने समापन समारोह में मंच संचालन किया। श्री बी.के.महांती, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी एवं श्री रंजन साहु, हिंदी टंकक ने पखवाड़े से संबंधित सभी कार्यकलापों का समन्वयन किया।

हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन

राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक में दिनांक 20.3.2016, 16.6.2016, 6.9.2016 तथा 5.12.2016 को 'यूनिकोड प्रणाली की सहायता से कंप्यूटर में हिंदी टंकण' विषय पर संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिकों, वैज्ञानिकों, तकनीकी एवं प्रशासनिक वर्ग के सहायक कर्मचारियों के लिए एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। डॉ. ए.के.नायक, निदेशक (कार्यकारी) ने संस्थान में दिनांक 20.3.2016, 16.6.2016 को आयोजित कार्यशाला की अध्यक्षता की तथा डॉ. हिंमाशु पाठक, निदेशक ने दिनांक 6.9.2016 एवं 5.12.2016 को आयोजित कार्यशाला की अध्यक्षता की। डॉ. बन बिहारी साहु, उप प्रबंधक (राजभाषा), भारतीय स्टेट बैंक, संबलपुर क्षेत्रीय प्रशासनिक कार्यालय, संबलपुर को इन कार्यशालाओं में उपरोक्त विषय पर व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया गया था। इन चारों कार्यशालाओं में संस्थान के अठाईस वैज्ञानिकों, नौ तकनीकी कर्मचारियों एवं पांच सहायक कर्मचारियों ने भाग लिया।

अन्य गतिविधियां

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नकारास), कटक द्वारा सदस्य कार्यालय, राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान को वर्ष

2015–16 के दौरान राजभाषा के कार्यान्वयन के क्षेत्र में सर्वाधिक कार्य करने लिए नगर स्तर पर राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ निष्पादन हेतु राजभाषा वैजयन्ती पुरस्कार से सम्मानित किया गया। श्री सुहास महांती, निदेशक, आकाशवाणी केंद्र, कटक एवं अध्यक्ष, नराकास, कटक ने राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. हिमांशु पाठक को राजभाषा वैजयन्ती पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र से पुरस्कृत किया।

हिन्दी प्रकाशन

- राजभाषा पत्रिका "धान" का तृतीयांक प्रकाशन
- तकनीकी बुलेटिन
- परिवर्तित जलवायु में वर्षा पर आश्रित ऊपरी भूमि तथा सूखाप्रवण क्षेत्रों में धान की खेती
- सफल संकर धान बीज उत्पादन
- उच्च–प्रोटीन चावल – सीआर धान 310
- धान की फसल में नाशक कीटों एवं सूत्रकृमियों के नियंत्रण हेतु मार्गदर्शन
- धान की फसल में रोंगों की पहचान एवं उनका निदान
- न्यूजलेटर
- एनआरआरआई न्यूजलेटरः जनवरी–मार्च 2016
- एनआरआरआई न्यूजलेटरः अप्रैल–जून 2016
- एनआरआरआई न्यूजलेटरः जुलाई–सितंबर 2016
- एनआरआरआई वार्षिक प्रतिवेदन 2015–2016 का हिंदी में प्रकाशन

भा.कृ.अनु.प.–विवेकानन्द पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, अल्मोड़ा

हिन्दी चेतनामास

भाकृअनुप–विवेकानन्द पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, अल्मोड़ा में 14 सितम्बर से 13 अक्टूबर, 2016 तक हिन्दी चेतना मास का आयोजन किया गया। चेतना मास के अवसर पर सर्वप्रथम संस्थान के निदेशक की ओर से हिन्दी में अधिक से अधिक कार्य करने की अपील तथा माननीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री, भारत सरकार द्वारा प्रेषित शुभकामना सन्देश समस्त कार्मिकों के मध्य परिचालित किया गया तथा शुभकामना सन्देश के पोस्टरों को विभिन्न अनुभागों एवं कक्षों में लगाया गया। हिन्दी चेतना मास के दौरान अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए जिनमें i) हिन्दी में निबन्ध लेखन प्रतियोगिता ii) नोटिंग ड्राफ्टिंग प्रतियोगिता iii) कम्प्यूटर में हिन्दी टंकण प्रतियोगिता प्रमुख थी। नोटिंग ड्राफ्टिंग प्रतियोगिता एवं हिन्दी टंकण प्रतियोगिता प्रशासनिक वर्ग के कर्मचारियों के लिए आयोजित की गयी, जबकि निबन्ध प्रतियोगिता सहायक वर्ग (अस्थाई स्तर) से वैज्ञानिकों तक सभी कार्मिकों के लिए आयोजित की गयी, ताकि संस्थान के प्रत्येक वर्ग के कार्मिक इसमें प्रतिभागिता कर सकें। चेतना मास का मुख्य कार्यक्रम 4 अक्टूबर, 2016 को राजभाषा संगोष्ठी एवं कार्यशाला के रूप में आयोजित किया गया। इस समारोह में कुमाऊँ विश्वविद्यालय अल्मोड़ा परिसर की सेवानिवृत्त प्रोफेसर एवं प्रसिद्ध कवियित्री डॉ. दिवा भट्ट, मुख्य अतिथि एवं आकाशवाणी अल्मोड़ा के पूर्व प्रभारी निदेशक, श्री मनोहर सिंह बृजवाल, विशिष्ट अतिथि थे। सर्वप्रथम संस्थान के निदेशक ने मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथि का स्वागत किया। संगोष्ठी में तात्क्षणिक भाषण प्रतियोगिता (Extempore) एवं स्वरचित कविता पाठ प्रतियोगिताओं का आयोजन किया। इन प्रतियोगिताओं की विशेष बात यह रही कि अहिन्दी भाषी क्षेत्रों के वैज्ञानिकों ने अत्यन्त रूचि लेकर इनमें सहभागिता की। तात्क्षणिक भाषण प्रतियोगिता के प्रतिभागियों ने अनेक ज्वलन्त विषयों पर अपने विचार प्रस्तुत किए जबकि स्वरचित कविता पाठ प्रतियोगिता में प्रतिभागियों ने सारगर्भित कविताओं का वाचन किया।

हिन्दी चेतना मास संगोष्ठी के अवसर पर तात्क्षणिक भाषण देते एक वैज्ञानिक

अपने सम्बोधन में आकाशवाणी के पूर्व निदेशक श्री मनोहर बृजवाल ने राजभाषा संगोष्ठी की सराहना करते हुए प्रतिभागियों विशेषकर अहिन्दी भाषी क्षेत्रों के वैज्ञानिकों द्वारा दी गयी प्रस्तुतियों की सराहना की तथा आशा व्यक्त की कि ऐसे समारोहों से हम राजभाषा हिन्दी को आगे बढ़ाने में अहम भूमिका निभा रहे हैं।

समारोह की मुख्य अतिथि प्रो. दिवा भट्ट ने हिन्दी चेतना मास पर बधाई देते हुए कहा कि भाषण प्रतियोगिता में वैज्ञानिकों ने कृषि के अलावा अन्य विषयों पर जो प्रस्तुतियां दी वह प्रशंसनीय है। उन्होंने कहा कि बोल–चाल की भाषा से हिन्दी आगे बढ़ रही है, जो वैज्ञानिक हिन्दी नहीं जानते थे वे अब हिन्दी का प्रयोग कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि राष्ट्र की पहचान ही उसकी भाषा होती है तथा भाषा के माध्यम से

ही समाज सम्पन्न होता है। उन्होंने बताया कि देश की अनेक भाषाएं क्षेत्रीय संस्कृति से निकली हैं तथा इन्हीं क्षेत्रीय भाषाओं से हिन्दी समृद्ध हुई है।

इस अवसर पर संस्थान द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका 'हरीतिमा' के छठे अंक का विमोचन किया गया तथा चेतना मास के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के पुरस्कार वितरित किए गये।

हिन्दी प्रकाशन

- वार्षिक प्रगति रिपोर्ट 2015–16
- संस्थान हिन्दी पत्रिका हरीतिमा अंक – 6
- संस्थान समाचार पत्रिका–पर्वतीय कृषि दर्पण 19 (2), 20(1)
- संस्थान द्वारा प्रकाशित प्रसार प्रपत्र
- पर्वतीय क्षेत्रों में मंडुवा (रागी) की वैज्ञानिक खेती
- पर्वतीय क्षेत्रों में मादिरा (झँगोरा/साँवा) की वैज्ञानिक खेती
- उत्तराखंड के पर्वतीय क्षेत्रों में रामदाना (चुआ/मारछा) की भरपूर उपज हेतु वैज्ञानिक खेती
- मंडुवे के पौष्टिक बिस्कुट
- उत्तराखंड के पर्वतीय क्षेत्रों में सिंचित धान की वैज्ञानिक खेती
- उत्तराखंड के पर्वतीय क्षेत्रों में जेठी धान की वैज्ञानिक खेती
- उत्तराखंड के पर्वतीय क्षेत्रों में चौती धान की वैज्ञानिक खेती
- कृषि प्रौद्योगिकी हसांतरण में सहायक किसान क्लब
- कृषि समृद्धि कार्यक्रम
- बेहतर स्वास्थ्य के लिए माल्टे का स्कवैश
- तीन फलों जैसा एक फल–नैक्ट्रिन
- पर्वतीय क्षेत्रों में चारे के लिए भी मल उगायें
- पर्वतीय क्षेत्रों में चारा विकास
- बेमौसमी सब्जियों में समेकित रोग प्रबन्धन
- बेमौसमी सब्जियों में कीट प्रबन्धन
- पर्वतीय क्षेत्रों में दलहनी मटर की उन्नत खेती
- पर्वतीय क्षेत्रों में मसूर की उन्नत खेती
- पर्वतीय क्षेत्रों में गहत की उन्नत खेती
- सोया दूध एवं सोया पनीर (टोफू)
- प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना प्रसार प्रपत्र

भा.कृ.अनु.प.–शीत मात्स्यिकी अनुसंधान निदेशालय, भीमताल

हिन्दी पखवाड़ा

दिनांक 5–19 सितम्बर, 2016 को निदेशालय में परिषद के दिशा–निर्देशों के अनुरूप हिन्दी पखवाड़ा समारोह का आयोजन किया गया। इस हेतु निदेशालय में हिन्दी भाषी तथा गैर हिन्दी भाषी क्षेत्र के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के मध्य विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताऐं यथा – हिन्दी निबंध, हिन्दी शब्दज्ञान, हिन्दी अनुवाद, हिन्दी स्किल (कौशल) राइटिंग तथा कम्प्यूटर पर हिन्दी टंकण प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

हिन्दी प्रतियोगिताओं का आयोजन

हिन्दी संगोष्ठी

इसके अतिरिक्त दिनांक 24 सितम्बर, 2016 को संस्थान के स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर एक दिवसीय हिन्दी संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें लब्ध प्रतिष्ठित विद्वानों ने हिन्दी में व्याख्यान प्रस्तुत किए। इस अवसर पर निदेशक महोदय ने अपने अध्यक्षीय भाषण में वैज्ञानिकों को अपने शोध अनुसंधानों को हिन्दी भाषा के द्वारा साधारण किसानों तक पहुंचाने का आहवाहन किया ताकि किसान वैज्ञानिकों के अनुसंधानों का लाभ उठा सकें। संगोष्ठी के समापन के अवसर पर हिन्दी पखवाड़ा के दौरान आयोजित हिन्दी प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को बाहर से आमंत्रित गणमान्यों के कर–कमलों द्वारा पुरस्कृत कराया गया।

इस दौरान निदेशालय ने अपने विस्तार कार्यक्रमों के अर्न्तगत किसानों के साथ सीधा सम्पर्क कर मत्स्य प्रक्षेत्रों में जाकर कृषकों को मत्स्य पालन की तकनीकी जानकारी हिन्दी भाषा में दी और उनको मत्स्य–बीज, मत्स्य उपकरण आदि वितरित किए।

हिन्दी प्रतियोगिताओं में विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कृत करते हुए निदेशक एवं गणमान्य

मत्स्य पालकों को जानकारी प्रदान करने के पश्चात मत्स्य–बीज, मत्स्य उपकरण आदि का वितरण

निदेशालय हिन्दी के उत्तरोत्तर विकास के लिए सदैव प्रयत्नशील है। इस हेतु संस्थान विभिन्न सेमिनारो, सम्मेलनों, मेलो इत्यादि में संस्थान की महत्वपूर्ण उपलब्धियों को विस्तार पटलों के माध्यम से उन्हें हिन्दी भाषा में जन मानस तक पहुंचाने के साथ–साथ अपने हिन्दी प्रकाशनों का एक स्टाल भी लगाता है जिसमें संस्थान द्वारा प्रकाशित हिन्दी प्रकाशनों को प्रदर्शित किया जाता है। इन अवसरों पर स्टाल में आने वाले सदस्यों को निदेशालय द्वारा मत्स्य पालन के क्षेत्र में प्राप्त उपलब्धियों को हिन्दी में विस्तार से बताया जाता है।

भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान संस्थान, झांसी

हिन्दी सप्ताह

संस्थान के निदेशक महोदय की अध्यक्षता में दिनांक 14–20 सितम्बर, 2016 के दौरान हिंदी सप्ताह का आयोजन किया गया। हिंदी सप्ताह के दौरान विभिन्न प्रतियोगितायें सम्पन्न हुई। विशेषकर निबन्ध,वाद–विवाद,इमला,पत्र लेखन,पोस्टर प्रतियोगिता आदि में वैज्ञानिक,अधिकारी एवं कर्मचारियों ने बढ–चढ कर हिस्सा लिया। निदेशक महोदय द्वारा प्रत्येक प्रतियोगिता के लिए अलग–अलग निर्णायक मण्डल का गठन किया गया। प्रतिभागियों को प्रोत्साहित करने के लिए प्रत्येक प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार प्रदान किये गये। इसके साथ सरकारी कामकाज में राजभाषा को बढ़ावा देने हेतु प्रशासनिक, तकनीकी एवं वैज्ञानिक वर्ग से जिन अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा पिछले एक साल के कार्यकाल में 20,000 या उससे अधिक शब्द हिन्दी में लिखा गया हो उनको प्रथम पुरस्कार, द्वितीय पुरस्कार तथा तृतीय पुरस्कार दिया गया।

हिन्दी कार्यशाला: दिनांक 09.03.2016

कार्यशाला के मुख्य वक्ता डॉ. आर.पी. द्विवेदी प्रधान वैज्ञानिक द्वारा 'राजभाषा नीति संबन्धी दिशा–निर्देश' विषय पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) संवैधानिक दिशा निर्देशों पर गहन चर्चा की।

हिन्दी कार्यशाला: दिनांक 10.06.2016

कार्यशाला के मुख्य अतिथि एवं वक्ता डॉ. के. एन. सचान वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी बी.एच.ई.एल., झांसी नें ''केन्द्रीय कार्यालयों में राजभाषा हिन्दी का व्यवहारिक प्रयोग'' विषय पर व्याख्यान पावर प्वाइंट स्लाईड द्वारा प्रस्तुत किया एवं विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने भारत सरकार के गृह मंत्रालय के अन्तर्गत् राजभाषा विभाग, राजभाषा संसंदीय समिति, राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने कार्यालय मे दैनिक प्रयोग होने वाले द्विभाषी शब्दों को सरलतम रूप में प्रयोग करने की कला को बहुत ही रोचक तरीके से समझाया।

हिन्दी कार्यशाला: दिनांक 14.09.2016

उद्घाटन सत्र के उपरान्त दूसरे सत्र में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन भी किया गया जिसका शीर्षक था''हिन्दी का सहज एवं सरल प्रयोग'' और मुख्य वक्ता शिक्षाविद और समाजसेवी डा. नीति शास्त्री थी। डा शास्त्री ने अपने उद्बोधन में हिन्दी भाषा नीति, विधा और प्रयोग के बारे में विस्तार से बताते हुए सरकारी काम–काज में राजभाषा का व्यवहारिक प्रयोग की विधि को विस्तार से समझाया। इस दौरान उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने हिन्दी की वर्तनी और वर्तनी प्रयोग संबन्धी अपनी जिज्ञासाओं का समाधान भी किया।

हिन्दी कार्यशाला: दिनांक 26.12.2016

संस्थान में दिनांक 26 दिसम्बर 2016 को एक दिवसीय तिमाही हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का उद्घाटन आई.सी.ए.आर. कुलगीत से किया गया। कार्यशाला के मुख्य वक्ता संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक

डॉ. रमेश सिंह थे, जिन्होनें 'कृषिवानिकी एवं जलागम क्रिया–कलापों द्वारा ग्रामीण अजीविका सुनिश्चित कराना 'विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। व्याख्यान में बताया गया कि बुन्देलखण्ड जैसे भू–क्षेत्र में पानी की किल्लत प्रायः देखी जाती है और लम्बे ड्राई स्पेल के कारण लाल मृदाओं में सामान्य वर्षा के वर्ष में भी खरीफ व सीजन फसलों के लिए पानी की कमी महसूस की जाती है। ऐसी स्थिति से निपटने के लिए जलागमविधि दारा जल संचयन एवं कृषिवानिकी पद्वति से ग्रामीणों की अजीविका में सुधार लाया जा सकता है। इसके साथ ही उन्होंने संस्थान द्वारा चलाये जा रहे जलागम विधि से जल संरक्षण अभियान को किसानों तक पहुंचाने के लिए क्षेत्रीय भाषा व हिन्दी भाषा को अधिक से अधिक महत्व देने के लिए वैज्ञानिकें एवं तकनीकी अधिकारियों से अपील की।

हिन्दी प्रकाशन

- कृषिवानिकी आलोक (दशम् अंक) वर्ष 2016
- कृषिवानिकी समाचार
- संस्थान की वार्षिक प्रतिवेदन, हिन्दी संस्करण 2015–16

भा.कृ.अनु.प.–भारतीय मसाला फसल अनुसंधान संस्थान, कोझिकोड

हिन्दी पखवाड़ा

संस्थान में 15 सितम्बर 2016 को हिन्दी दिवस तथा 19 सितम्बर से 3 अक्तूबर 2016 तक हिन्दी पखवाडा मनाया गया। दिनांक 19 सितम्बर 2016 को डा. बी. शशिकुमार, प्रभारी निदेशक की अध्यक्षता में हिन्दी पखवाडे का उद्घाटन समारोह संपन्न हुआ। डा. राशिद परवेज, प्रधान वैज्ञानिक एवं हिन्दी अधिकारी ने समारोह का संचालन एवं पखवाडे की रूपरेखा प्रस्तुत की। हिन्दी पखवाड़े के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं जैसे, हिन्दी प्रश्नोत्तरी, अक्षर से शब्द लेखन, अनुशीर्षक लेखन, हिन्दी कविता लेखन, हास्य घट्नाएं, वर्ग पहेली, स्मरण शक्ति, हिन्दी गीत, हिन्दी अन्ताक्षरी, टिप्पणी एवं मसौदा लेखन आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

हिन्दी पखवाडे का समापन समारोह मे राजभाषा पत्रिका 'मसालों की महक' का विमोचन

हिन्दी पखवाडे का समापन समारोह 03 अक्तूबर 2016 को आयोजित किया गया। डॉ. राशिद परवेज ने समारोह में स्वागत भाषण तथा हिन्दी पखवाडे की विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की। डॉ. के. निर्मल बाबू, निदेशक ने सभा को सम्बोधित करते हुए हिन्दी के महत्व पर प्रकाश डाला तथा मुख्य अतिथि श्री. वासु, उप महाप्रबन्धक, स्टेट बैंक ऑफ त्रावणकोर एवं अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कोषिक्कोड ने विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरण किया। इस अवसर पर उन्होंने हिन्दी भाषा की लोकप्रियता एवं आवश्यकता के बारे में बताया। इस अवसर पर संस्थान की राजभाषा पत्रिका मसालों की महक के पांचवें अंक का विमोचन किया गया। श्री रवि, सचिव, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कोषिक्कोड भी उपस्थित थे। अन्त में श्रीमती एन. प्रसन्नकुमारी, ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

हिन्दी कार्यशालाएं

राजभाषा को लोकप्रिय करने के लिए भाकृअनुप–भारतीय मसाला फसल अनुसंधान संस्थान में गत वर्ष चार हिन्दी कार्यशालायें आयोजित की गयी। पहली कार्यशाला "राजभाषा नियम एंव उनका अनुपालन" पर 10 मार्च 2016 को आयोजित की गयी, जिसमें श्री. के रवि, सचिव नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कोषिक्कोड ने व्याख्यान दिया। दूसरी कार्यशाला "हिन्दी टिप्पणी एवं मसौदा लेखन" पर 15 जून 2016 को आयोजित की गयी, जिसमें डा. वी. बालकृष्णन, उपनिदेशक (राजभाषा), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, मुंबई ने व्याख्यान दिया। तीसरी कार्यशाला" कार्यालय मे हिन्दी पत्राचार को बढावा देना" पर 21 सितम्बर 2016 को आयोजित की गयी जिसमें श्री सन्तोष कुमार राम, सहायक प्रबन्धक (राजभाषा), क्षेत्रीय कार्यालय, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, कोषिक्कोड ने व्याख्यान दिया तथा चौथी कार्यशाला "हिन्दी टिप्पणी एवं मसौदा लेखन" पर 01 दिसम्बर 2016 को आयोजित की गयी जिसमें डॉ. ओ. वासवन, सहायक निदेशक (राजभाषा), आकाशवाणी, कोषिक्कोड ने व्याख्यान दिया। ।

अन्य गतिविधियां

डा. राशिद परवेज, प्रधान वैज्ञानिक एवं हिन्दी अधिकारी तथा सुश्री एन. प्रसन्नकुमारी (हिन्दी अनुवादक) ने दिनांक 26 जुलाई 2016 को क्षेत्रीय विज्ञान केन्द्र, कोषिक्कोड में आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 57 वीं अर्ध वार्षिक बैठक तथा दिनांक 15 दिसम्बर 2016 को होटल मलबार पैलस में आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 58 वीं अर्ध वार्षिक बैठक एवं संयुक्त हिन्दी पक्ष के समापन समारोह में भाग लिया।

डा. टी. जोण जकरिया, प्रभागाध्यक्ष, फसल उत्पादन एवं फसलोत्तर प्रौद्योगिकी प्रभाग ने दिनांक 5 अक्तूबर 2016 को

नराकास द्वारा कार्यालयाध्यक्षों के लिए आयोजित कार्यशाला में भाग लिया।

डा. राशिद परवेज एवं श्री. पी. के. राहुल ने दिनांक 15 मार्च 2016 को भारतीय प्राणी सर्वेक्षण, कोषिक्कोड में नराकास० कोषिक्कोड द्वारा राजभाषा नियम, हिन्दी सॉफ्टवेयर एवं टिप्पणी एवं आलेखन पर आयोजित हिन्दी कार्यशाला में भाग लिया।

गणेश शंकर विद्यार्थी हिन्दी पत्रिका पुरस्कार

संस्थान की राजभाषा पत्रिका ''मसालों की महक'' को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा गणेश शंकर विद्यार्थी हिन्दी पत्रिका पुरस्कार 2014–15 से सम्मानित किया गया।

गणेश शंकर विद्यार्थी हिन्दी पत्रिका पुरस्कार ग्रहण करते

राजभाषा शील्ड पुरस्कार

भाकृअनुप – भारतीय मसाला फसल अनुसंधान संस्थान, कोषिक्कोड को वर्ष 2015–16 के लिये नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की ओर से राजभाषा शील्ड पुरस्कार से सम्मानित किया। यह पुरस्कार नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के संयुक्त हिन्दी पखवाडा के पुरस्कार वितरण समारोह में प्रदान किया।

उत्तम राजभाषा पत्रिका पुरस्कार

संस्थान की राजभाषा पत्रिका मसालों की महक के लिये नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की ओर से उत्तम राजभाषा पत्रिका पुरस्कार प्राप्त हुआ।

हिन्दी प्रकाशन

- वार्षिक प्रतिवेदन (2014–15)
- अनुसंधान के मुख्य अंश (2015–16)
- अखिल भारतीय समन्वित मसाला अनुसंधान परियोजना के वार्षिक प्रतिवेदन का कार्यकारी सारांश।
- मसाला समाचार (4 खण्ड)
- मसालों की महक (राजभाषा पत्रिका)
- हल्दी विस्तार पुस्तिका
- अदरक विस्तार पुस्तिका
- इलायची विस्तार पुस्तिका
- काली मिर्च विस्तार पुस्तिका

भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय अंतः स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर

हिन्दी सप्ताह

भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान बैरकपुर मुख्यालय में दिनांक 14–21 सितम्बर, 2016 के दौरान हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया गया। इस दौरान अहिन्दी भाषी एवं हिन्दी भाषी कर्मचारियों के लिए अलग अलग विभिन्न प्रतियोगिताए जैसे– हिंदी निबंध लेखन, टिप्पणी एवं पत्र लेखन, प्रशासनिक शब्दावली एवं श्रुत लेखन आदि का आयोजन किया गया। सप्ताह के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में सभी में काफी उत्साह दिखाई दिया। सप्ताह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता को समापन समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि श्री आथर्व त्रिपुरारी, विशेष महानिरीक्षक एवं उप महानिरीक्षक (ए. पी., बैरकपुर) तथा संस्थान के पूर्व प्रधान वैज्ञानिक डा. एन. पी. श्रीवास्तव द्वारा सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि ने अपने व्याख्यान का प्रारंभ संस्थान के निदेशक डा. बी. के. दास को हिन्दी सप्ताह के सफलतापूर्वक आयोजन पर बधाई देते हुए हर्ष प्रकट किया कि वे संस्थान में हो रहे हिन्दी के कार्यों से बहुत प्रसन्न हैं। उन्होंने कहा कि पिछले कुछ दशकों से अंग्रेजी भाषा के समाज में वर्चस्व के कारण हिन्दी पढ़ना एवं लिखना नई पीढ़ी के लिए थोड़ा कठिन होता जा रहा है। उन्होंने समाज में हिन्दी से ज्यादा अंग्रेजी भाषा को पसन्द करने के कारण भारतीय समाज से अनेकानेक विधाओं के

लुप्त हो जाने के बारे में अपने विचार रखे।

इस मौके पर संस्थान के निदेशक डा. बी. के. दास ने समस्त कर्मचारियों को हिन्दी सप्ताह के सफलतापूर्वक आयोजन पर बधाई दी और आशा जताई कि संस्थान में सरकारी कामकाज के अलावा वैज्ञानिक और तकनीकी विषयों में भी हिन्दी का बहुतायत प्रयोग होगा। उन्होंने आग्रह किया कि सभी कर्मचारी कम से कम हिन्दी में अपने हस्ताक्षर करके हिन्दी की वृद्धि में योगदान दें। उन्होंने अपने सम्बोधन में हिन्दी के प्रसार और सरलीकरण के लिए आधुनिक उपकरणों एंव इंटरनेट के प्रयोग पर भी जोर दिया। निदेशक महोदय ने कार्यालय में भारत सरकार के दिशा निर्देशों का सुचारू रूप से पालन करने के निर्देश भी सभासदों को दिये। केवल इस संस्थान के मुख्यालय में ही नहीं बल्कि इस संस्थान के अन्य केन्द्रों जैसे इलाहाबाद केन्द्र, बैंगलोर केन्द्र, गुवाहाटी केन्द्र तथा वडोदरा केन्द्र में हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आमंत्रित अतिथियों ने अधिकारियों एवं कर्मचारियों से हिंदी में अधिकाधिक काम करने का आग्रह किया। इस मौके पर आयोजित प्रतियोगिता के सफल कर्मचारियों को सम्मानित भी किया गया।

हिन्दी कार्यशालाएं

भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय अंतः स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर द्वारा टिप्पण तथा प्रारूप लेखन शैली विषय पर दिनांक 22 दिसम्बर, 2016 को एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में संस्थान के 15 अधिकारियों व कर्मचारियों ने भाग लिया। इस कार्यशाला में व्याख्यान देने के लिए हिंदी शिक्षण योजना, राजभाषा विभाग, कोलकाता के श्री अदालत प्रसाद, वरिष्ठ हिन्दी प्राध्यापक को आमंत्रित किया गया। मो. कासिम, प्रभारी, हिन्दी कक्ष ने अतिथि एवं प्रतिभागियों का हार्दिक अभिनन्दन एवं स्वागत करते हुए कार्यक्रम का संचालन किया। उन्होंने कहा कि इस कार्यशाला का आयोजन आदरणीय निदेशक महोदय की विशेष रूचि एवं मार्गदर्शन में किया जा रहा है। उन्होंने सभी प्रतिभागियों को हिन्दी में कामकाज करने के लिए प्रोत्साहित किया।

अतिथि वक्ता ने आदरणीय निदेशक महोदय का धन्यवाद करते हुए कार्यालय आदेश, परिपत्र, कार्यालय ज्ञापन, आदेश एवं टिप्पण लेखन से संबंधित महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर चर्चा की।

अतिथि महोदय ने विषय से संबंधित प्रतिभागियों को विभिन्न जिज्ञासाओं एवं प्रश्नों का उत्तर सरलता से समझाया। टिप्पण लेखन का व्यावहारिक स्तर पर अतिथि वक्ता ने प्रतिभागियों को सोदाहरण तरीके से अभ्यास करवाया।

हिन्दी प्रकाशन

- वार्षिक रिपोर्ट 2015–16
- नीलांजलि गृह पत्रिका अंक 7, 2016
- सिफरी न्यूज़लेटर

भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कटाई–उपरान्त अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, लुधियाना

हिन्दी पखवाड़ा

विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी संस्थान में हिन्दी पखवाड़े का आयोजन 14–28 सितम्बर, 2016 तक किया गया। हिन्दी पखवाडे का समापन समारोह दिनांक 28.09.2016 को इस संस्थान के सभाकक्ष में हुआ। इस समापन समारोह के मुख्य अतिथि डा. आर.टी. पाटिल, पूर्व निदेशक, भा.कृ.अनु.प. –सीफेट, लुधियाना रहे। इस वर्ष संस्थान में हिन्दी पखवाड़े के दौरान अलग–अलग 11 प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। हिन्दी पखवाड़े के दौरान करवाई गई प्रतियोगिताओं के विजेताओं को डा. आर.के. गुप्ता, निदेशक, भा.कृ.अनु.प. सीफेट, लुधियाना द्वारा नकद पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र वितरित किए जबकि डा. आर.के. सिंह, परियोजना समन्वयक (पी.ई.टी) एवं अध्यक्ष हिन्दी पखवाड़ा समिति ने हिन्दी पखवाड़े के अंर्तगत हुई प्रतियोगिताओं का विवरण दिया।

समापन समारोह में मुख्य अतिथि ने संस्थान के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा राजभाषा के प्रति अति उत्साह दिखाने के लिए प्रसन्नता व्यक्त की एवं सभी को हिन्दी भाषा को

बढ़ावा देने के लिए कहा। संस्थान के निदेशक ने कहा कि इस संस्थान के वैज्ञानिकों एवं तकनीकी अधिकारियों को भी हिन्दी में कार्य करना चाहिए ताकि वे भी नकद पुरस्कार प्राप्त कर सकें।

हिन्दी कार्यशालाएं

भ.कृ.अनु.प.–सीफेट, लुधियाना में 19 मार्च 2016 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में श्री अखिलेश चंद्र, प्रशासनिक अधिकारी एवं राजभाषा अधिकारी, भारतीय जीवन बीमा निगम, मंडल कार्यालय, लुधियाना ने 'कार्यालयों में व्यवहारिक हिन्दी' एवं 'राजभाषा हिन्दी की उपयोगिता' टिप्पणियां' विषयों पर अपनी प्रस्तुति देकर सभी को लाभान्वित किया।

भा.कृ.अनु.प.– सीफेट, लुधियाना में 25 जून 2016 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में डॉ. अनिल कुमार गुप्ता, सहायक प्रबंधक (राजभाषा), न्यू इंडिया इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड, मंडल कार्यालय–1, जालंधर, पंजाब ने 'सूचना प्रौद्योगिकी में हिंदी' और 'साधारण टिप्पणियां एवं वाक्यांश' विषयों पर अपनी प्रस्तुति देकर सभी को लाभान्वित किया।

भा.कृ.अनु.प.–सीफेट, लुधियाना में 27 सितंबर 2016 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में श्री संजीव चटानी, प्रशासनिक अधिकारी (राजभाषा), न्यू

इंडिया इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड, माल रोड, लुधियाना ने 'राजभाषा नीतिः नियम एवं अधिनियम' और 'सरकारी कार्यालयों में हिंदी में पत्राचार' विषयों पर अपनी प्रस्तुति देकर सभी को लाभान्वित किया।

भा.कृ.अनु.प.–सीफेट, लुधियाना में 5 नवम्बर 2016 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में श्री अनिल कुमार गुप्ता, सहायक प्रबंधक (राजभाषा), न्यू इंडिया इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड, मंडल कार्यालय–1, जालंधर, पंजाब ने 'कार्यालयों में हिंदी का प्रचार–प्रसार' और 'भाषा, परिभाषा एवं आचार–व्यवहार' विषयों पर अपनी प्रस्तुति देकर सभी को लाभान्वित किया।

भा.कृ.अनु.प.–केंद्रीय कपास प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान, मुम्बई

हिन्दी सप्ताह

भा.कृ.अनु.प.–कें.क.प्रौ.अनु.सं., मुंबई (मुख्यालय)

हर वर्ष की तरह वर्ष 2016 मे दिनांक 8 सितंबर से 14 सितंबर, 2016 तक हिंदी सप्ताह का आयोजन किया गया। निर्देशानुसार हिंदी सप्ताह के दौरान ऐसी प्रतियोगिताएं आयोजित की गई जिनका संबंध सरकारी कामकाज से है और साथ ही साथ, वे राजभाषा का प्रयोग बढाने में भी सहायक हैं। इस अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई जिसमें –

- शुद्ध लेखन
- हिंदी यूनिकोड टंकण
- तकनीकी वाक्यांश
- आलेखन टिप्पण

हिंदी सप्ताह की शुरूआत दिनांक 8 सितंबर, 2016 से की गई। इस दिन शुध्द लेखन की प्रतियोगिता रखी गई थी। दिनांक 8 से 12 तक विभिन्न प्रतियोगिताएं रखी गई थी, जिसमें 35 कर्मचारी सदस्यों ने भाग लिया ।

समापन समारोह दिनांक 14.09.2016 को आयोजित किया गया। श्रीमती टी.पी. मोकल, सहायक प्रशासनिक अधिकारी ने राजभाषा विभाग द्वारा जारी माननीय गृह मंत्री जी का सन्देश पढ़ा और डा. पी.के. मध्यान, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने संस्थान की वर्षभर की उपलब्धियों एवं सप्ताह का वृतांत के बारे में बताया। डा. पी.जी. पाटील, निदेशक ने संस्थान में राजभाषा हिंदी की हो रही प्रगति एवं विकास की सराहना की और दैनिक जीवन में हिंदी का उपयोग करने का सुझाव दिया और सभी कर्मचारी सदस्यों को उनका प्रतिदिन का सरकारी कामकाज राजभाषा हिंदी में करने की अपील की। हिंदी दिवस के अवसर पर गृह पत्रिका अंबर (अंक–2) का निदेशक महोदय ने विमोचन किया। हिंदी दिवस सप्ताह की प्रतियोगिता में विजेताओं को प्रमाणपत्र एवं पुरस्कार प्रदान किये गये, इसी अवसर पर हिंदी की प्रबोध, प्रवीण परीक्षा में उत्तीर्ण कर्मचारियों का सम्मान भी किया गया। कार्यक्रम का सूत्र संचालन भारत पवार स.प्र. तकनीकी अधिकारी ने किया।

हिंदी दिवस की प्रतियोगिताओं में विजेता को प्रमाण पत्र देते हुए डॉ. पी.जी. पाटील, निदेशक

ओटाई प्रशिक्षण केंद्र, नागपुर (क्षेत्रीय इकाई)

ओटाई प्रशिक्षण केंद्र में हिन्दी सप्ताह समारोह का अयोजन बृहत स्तर पर किया गया। यह समारोह दिनांक 14 सितंबर से 20 सितंबर, 2016 तक चला। इस समारोह में हिन्दी की निम्नलिखित प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

- गीत गायन एवं कविता पठन
- आलेखन टिप्पण
- निबंध
- उचित अनुमान
- शब्द पहेली
- तात्कालिक भाषण

उपर्युक्त विभिन्न प्रतियोगिताओं में केंद्र के कुल 14 कर्मचारियों ने सक्रिय रुप से भाग लिया। ओटाई प्रशिक्षण केंद्र, भा.कृ.अनु.प.–केंद्रीय कपास प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान, नागपुर में आयोजित हिन्दी सप्ताह का उद्घाटन कार्यक्रम दिनांक 14 सितंबर, 2016 को मुख्य अतिथि, डॉ. धर्मेश धावनकर, प्रोफेसर एवं प्रमुख, जनसंवाद विभाग, रा.सं.तु.म. विश्वविद्यालय, नागपुर एवं केंद्र के प्रभारी अधिकारी एवं वैज्ञानिक, वी. मागेश्वरन के कर कमलों से दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। डॉ. धावनकर ने उद्घाटन भाषण में कहा कि सभी देशवासियों को अपनी मातृभाषा को पहला स्थान देना चाहिए तथा दूसरा स्थान अपनी भाषा को देना चाहिए। देश की सभी भाषाएं महत्वपूर्ण है; हिन्दी सर्वसम्मत, सहज और सरल भाषा है क्योंकि अधिकांश लोग हिन्दी को आसानी से बोल, लिख एवं समझ लेते हैं। हिंदी अपने आप में एक समृद्व भाषा है जो पूरे राष्ट्र को एक धागे में पिरोये हुए है, दृढ निश्चय एवं थोडे से प्रयास से हिन्दी भाषा को आसानी से सीखा जा सकता है ।

मुख्य अतिथि डॉ. धर्मेश धावनकर, प्रो. एवं प्रमुख, जनसंवाद विभाग, रा.स.तु.म. विश्वविद्यालय, नागपुर का उद्घाटन समारोह में स्वागत करते हुए

दिनांक 20 सितंबर, 2016 को हिन्दी सप्ताह समापन दिवस पर मुख्य अतिथि के तौर पर डा. त्रिलोक हजारे, प्रधान वैज्ञानिक, रा.मृ.स. एवं भू.उ.नि. ब्यूरो, नागपुर उपस्थित थे। डॉ. त्रिलोक हजारे ने अपने भाषण में कहा कि हिंदी का उपयोग अपने रोजमर्रा के कार्यों में करना हमारा दायित्व है। डॉ. शुक्ला ने अपने समापन भाषण में केंद्र में आयोजित किये गये हिंदी सप्ताह का विस्तृत विवरण दिया और उन्होंने कहा कि केंद्र में राजभाषा से संबंधित समय–समय पर प्राप्त आदेशों का पालन एवं क्रियान्वयन किया जाता है। विजेता कर्मचारियों को नगद पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र मुख्य अतिथि के कर कमलों से प्रदान किये गये।

हिन्दी कार्यशालाएं

दिनांक	विषय और व्याख्याता	श्रेणी और संख्या
20.02.2016	हिन्दी में काम क्यों करें?/ डॉ. अनंत श्रीमाली और श्री नरेश कुमार	वैज्ञानिक –12
24.06.2016	राजभाषा कार्यान्वयन एवं पत्राचार/श्रीमती साधना त्रिपाठी एवं डॉ. विश्वनाथ झा	कुशल सहायक कर्मचारी–14
20.08.2016	व्यावहारिक हिन्दी/ श्री महेंद्र जैन एवं श्री संजीव निगम	तकनीकी अधिकारी–11
19.11.2016	राजभाषा नीति एवं हिन्दी की मानक वर्तनी और हिन्दी में पत्राचार के प्रकार/ नोटिंग– ड्राफ्टिंग/ श्री विरेन्द्र कुलकर्णी एवं बी.वी.एस. चौहान	प्रशासनिक कर्मचारी–9

हिन्दी कार्याशाला में डॉ. पी.जी. पाटील, निदेशक एवं व्याख्याता श्री. विरेन्द्र कुलकर्णी

प्रमुख उपलब्धियां

21 मार्च, 2016 को ओटाई प्रशिक्षण केन्द्र में एक प्रौद्योगिकी और मशीनरी प्रदर्शन मेला आयोजित किया गया था, जिसमें वर्धा जिले के 30 अपनाये गये गाँवों के 300 से ज्यादा किसान तथा उद्योग जगत के भागीदार उपस्थित थे। इसका उद्देश्य कपास के फसल उपरांत प्रसंस्करण तथा कपास डंठलों एवं अन्य फसल अवशेषों के मूल्य संवर्धन की तकनीकों का प्रदर्शन करना था। कई उद्यमियों और वैज्ञानिक विशेषज्ञों ने कपास डंठलों से ब्रिकेट, पेलेट्स, बिजली उत्पादन और कंपोस्ट बनाने पर हिन्दी और मराठी में तकनीकी प्रस्तुतीकरण दिये।

साथ ही 'मेरा गाँव मेरा गौरव' कार्यक्रम के अंतर्गत आने वाले किसानों को मिट्टी की उर्वरता की स्थिति बताने वाले मृदा स्वास्थ्य कार्ड भी वितरित किये गये। कार्यक्रम के दौरान कई किसान मित्र तकनीकों, मशीनों तथा कपास और उसके उपोत्पादों के मूल्यसंवर्धन से संबंधित उत्पादों का जीवंत प्रदर्शन किया गया था।

वैज्ञानिक वर्धा जिला, महाराष्ट्र के किसानों से बातचीत करते हुए

- डॉ. पी.के. मंध्यान, वरिष्ठ वैज्ञानिक को आशीर्वाद, सांस्कृतिक, साहित्यिक संस्था द्वारा वर्ष 2016 में हिंदी में अधिकाधिक कार्य करने के लिए राजभाषा सम्मान पुरस्कार प्राप्त हुआ ।

हिन्दी प्रकाशन

- प्रतिवर्ष संस्थान के वार्षिक प्रतिवेदन का प्रकाशन अंग्रेजी एवं हिन्दी में अलग–अलग किया जाता है।
- वर्ष 2015–16 में संस्थान की वार्षिक गृह पत्रिका **'अंबर'** (अंक–2) का प्रकाशन किया गया।
- भा.कृ.अनु.प–कें.क.प्रौ.अनु.सं., मुंबई में राजभाषा कार्यांवयन संबंधित उपलब्धियाँ
- आईसीएआर– सिरकॉट रुपरेखा
- ए ग्लिम्प्स ऑफ आईसीएआर–सिरकॉट (द्विभाषी)
- प्रशिक्षण कार्यक्रम हेतु
  - डबल रोलर ओटाई प्रौद्योगिकी एवं कॉटन ग्रेडिंग के मूल तत्वों

डॉ. पी.के. मंध्यान, वरिष्ठ वैज्ञानिक पुरस्कार प्राप्त करते हुए

- कपास बिनौले के मूल्य संवर्धन
- कताई उद्योग में रेशे व धागे का गुणवत्ता प्रबंधन विषयक
- अवशोषक कपास प्रौद्योगिकी
- उन्नत तकनीक प्रयोग द्वारा भारतीय कपास की गुणवत्ता मूल्यांकन एवं कताई क्षमता पर प्रशिक्षण
- परीक्षण शुल्क की अनुसूची

हिन्दी में प्रदर्शित डॉक्यूमेंट्री

- सिरकॉट – प्रौद्योगिकी
- नैनो सेल्यूलोज प्रौद्योगिकी

क्षेत्रीय भाषा (मराठी) डॉक्यूमेंट्री

- सिरकॉट तंत्रज्ञान

भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, मथुरा

हिन्दी पखवाड़ा

संस्थान में दिनांक 14.09.2016 (हिन्दी दिवस) के अन्तर्गत हिन्दी पखवाड़ा के कार्यक्रमों का आयोजन दिनांक 14.09.2016 से 28.09.2016 तक निम्नवत विवरण के अनुसार किया गया।

- दिनांक 14.09.2016 को एक विचार संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें संस्थान के विभिन्न वैज्ञानिकों, अधिकारियों, कर्मचारियों व आमंत्रित अतिथियों द्वारा 'राष्ट्र विकास में हिन्दी का महत्व एवं संस्थान में राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग व बढ़ते कदम एवं सुधार हेतु सुझाव'पर अपने विचार प्रकट किये गये तथा अन्त में संस्थान के निदेशक द्वारा अपने उद्‌बोधन में हिन्दी को अपने देश की एकता को जोड़ने वाली एक कड़ी तथा पहचान बताते हुए संस्थान के सभी कर्मियों को शत–प्रतिशत हिन्दी में कार्य करने हेतु आह्‌वान किया गया।
- दिनांक 15.09.2016 को हिन्दी श्रुतलेख प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें संस्थान के अधिकारियों, कर्मचारियों एवं छात्र/छात्राओं ने सहभागिता की तथा डा. अनिल कुमार गोयल, डा. नितिका शर्मा एवं डा. विजय किशोर गेट क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर रहे व पुरस्कृत किये गये।
- दिनांक 16–17 सितम्बर, 2016 को हिन्दी हस्ताक्षर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें संस्थान के वैज्ञानिकों, अधिकारियों, कर्मचारियों एवं छात्र/छात्राओं द्वारा हिन्दी में अपने हस्ताक्षर किये गये तथा मूल्यांकन के पश्चात् सर्वश्रेष्ठ तीन हस्ताक्षर करने वाले डा. विजय किशोर, डा. अनिल कुमार गोयल एवं श्री गंगादत्त क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान पर रहे व पुरस्कृत किये गये।
- दिनांक 19.09.2016 को हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता विषयः– 'स्वच्छ भारत–स्वस्थ भारत' का आयोजन किया गया, जिसमें संस्थान के वैज्ञानिकों, अधिकारियों, कर्मचारियों एवं बच्चों ने सहभागिता की। इसमें डा. साकेत भूषण, कु. नीतू सिंह एवं श्री सुगड़ सिंह क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर रहे व पुरस्कृत किये गये।
- दिनांक 20.09.2016 को राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें संस्थान के समस्त वैज्ञानिकों, तकनीकी अधिकारी व कर्मचारी, प्रशासनिक अधिकारी व कर्मचारियों ने सहभागिता की। इसमें डॉ. रघुवीरशरण तिवारी, प्राध्यापक एवं सहसचिव, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), छठवां तल, आयकर भवन, आगरा द्वारा 'राजभाषा अधिनियम' पर एक व्याख्यान दिया गया।
- दिनांक 21.09.2016 को 'आओ, बताओ, ईनाम पाओ' प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें 112 वैज्ञानिकों, अधिकारियों, कर्मचारियों, बच्चों एवं महिलाओं ने सहभागिता

हिन्दी पखवाड़े के अन्तर्गत आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में सफल प्रतिभागियों को पुरस्कार वितरण करते हुये संस्थान के निदेशक, डॉ. मनमोहन सिंह चौहान

की। इस प्रतियोगिता में सहभागियों से राजभाषा एवं सामान्य ज्ञान से सम्बन्धित 100 प्रश्न पूछे गये तथा सही उत्तर देने वाले 100 सफल प्रतियोगियों को पुरस्कृत किया गया।

- दिनांक 22.09.2016 को बच्चों की श्रुतलेख प्रतियोगिता का आयोजन बच्चों के 'प्रौढ़ वर्ग' एवं 'बाल वर्ग' के लिए अलग–अलग किया गया। प्रौढ़ वर्ग में कु. नीतू सिंह, श्री ज्ञानेन्द्र एवं मा. राबा महाराज क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर रहे एवं बाल वर्ग में मि. उत्कर्ष चन्द्रा, मि. अनुज कुमार एवं कु. सेव्या सिंह क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर रहे व पुरस्कृत किये गये।
- दिनांक 23.09.2016 को संस्थान के अधिकारियों, कर्मचारियों एवं छात्र/छात्राओं के लिए हिन्दी अनुवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें डा. अनिल कुमार गोयल, डा. रवीन्द्र कुमार एवं श्री जितेन्द्र सिंह गेट क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर रहे व पुरस्कृत किये गये।
- दिनांक 24.09.2016 को अपराह्न 2.00 बजे से संस्थान के वैज्ञानिकों के लिए एक हिन्दी शोध–पत्र प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। वैज्ञानिक वर्ग में डॉ. गोपाल दास, डॉ. के. गुरूराज, डा. विजय कुमार एवं डॉ. रवीन्द्र कुमार क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर रहे व पुरस्कृत किये गये।
- दिनांक 26.09.2016 को राजभाषा से सम्बन्धित वृत्तचित्र, सेतु व हिन्दी, गांधी और गुलामी का चलचित्र प्रदर्शन समस्त कर्मचारियों के लिए संस्थान में किया गया।
- दिनांक 27.09.2016 को हिन्दी अनुप्रयोग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें संस्थान के वैज्ञानिकों, अधिकारियों, कर्मचारियों एवं छात्र/छात्राओं ने भाग लिया। इसमें श्री राजकुमार सिंह, श्री जितेन्द्र सिंह गेट एवं डा. रवीन्द्र कुमार क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर रहे व पुरस्कृत किये गये।
- दिनांक 14.10.2016 को हिन्दी पखवाड़ा समापान समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें संस्थान के समस्त वैज्ञानिकों, तकनीकी अधिकारी व कर्मचारी, प्रशासनिक अधिकारी व कर्मचारियों ने सहभागिता निभायी एवं दिनांक 14 सितम्बर, 2016 से प्रारम्भ हुए इस हिन्दी पखवाड़े के दौरान समस्त सफल प्रतिभागियों को संस्थान निदेशक एवं अध्यक्ष राजभाषा कार्यान्वयन समिति डॉ. मनमोहन सिंह चौहान द्वारा धनराशि रू 1000.00, 800.00 एवं 600.00 नकद प्रदान करते हुये पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर निदेशक महोदय ने अपने उद्बोधन में कहा कि किसी भी देश की एकता एवं विकास के लिए उस देश की राष्ट्रभाषा का समृद्ध होना अति आवश्यक है। अतः हम सभी का कर्तव्य है कि हिन्दी को राष्ट्रभाषा के पद पर आसीन करने के लिए हर सम्भव प्रयास करें तथा संस्थान मे निर्धारित लक्ष्यों के अनुरूप हिन्दी में कार्य करते हुए हिन्दी के कार्यान्वयन को आगे बढ़ाना सुनिश्चित करें।

हिन्दी कार्यशालाएं

- दिनांक 10 मार्च, 2016 को प्रथम एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन संस्थान में किया गया। इस कार्यशाला में संस्थान के समस्त वैज्ञानिक, तकनीकी अधिकारी, प्रशासनिक अधिकारी व कर्मचारियों ने सहभागिता की। इस कार्यशाला में प्रभारी, राजभाषा द्वारा संस्थान में राजभाषा के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु एक व्याख्यान प्रस्तुत किया गया।
- दिनांक 29 जून, 2016 को दूसरी त्रैमासिक एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें संस्थान के समस्त वैज्ञानिकों, तकनीकी अधिकारी व कर्मचारी, प्रशासनिक अधिकारी व कर्मचारियों ने सहभागिता की जिसमें डा. शीलेन्द्र वशिष्ठ, पूर्व वरिष्ठ प्रबन्धक (राजभाषा),पंजाब नेशनल बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, आगरा द्वारा 'प्रशासनिक शब्दावली एवं अनुवाद' पर एक व्याख्यान दिया गया।
- दिनांक 20.09.2016 को तीसरी त्रैमासिक एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन संस्थान के केन्द्रीय सभागार में किया गया। इस कार्यशाला में डॉ. रघुवीर शरण तिवारी,

प्राध्यापक एवं सह–सचिव, नराकास, आगरा ने संघ की राजभाषा नीति, नियम एवं प्रावधान पर व्याख्यान दिया। इस कार्यशाला में संस्थान के समस्त वैज्ञानिक, तकनीकी अधिकारी, प्रशासनिक अधिकारी व कर्मचारियों ने सहभागिता की।

- दिनांक 16.12.2016 को चौथी त्रैमासिक एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन संस्थान में किया गया। इस कार्यशाला में संस्थान के समस्त वैज्ञानिक, तकनीकी अधिकारी, प्रशासनिक अधिकारी, व कर्मचारियों एवं हाईस्कूल उत्तीर्ण कुशल सहा. कर्मचारियों ने सहभागिता की। इस कार्यशाला में प्रभारी, राजभाषा द्वारा संस्थान में राजभाषा के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु एक व्याख्यान प्रस्तुत किया गया।

अन्य गतिविधियां

- संस्थान के डॉ. दिनेश कुमार शर्मा, प्रधान वैज्ञानिक द्वारा हिन्दी में लिखित पुस्तक बकरी–भेड़ रोगः चिकित्सा एवं प्रबन्धन–बकरी एवं भेड़ रोगों के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करती है। इस पुस्तक में कुल 13 अध्याय, 27 चित्र एवं 7 तालिकाओं के रूप में बकरी–भेड़ रोगों की गहन चर्चा की गई है। पुस्तक में हिन्दी भाषा का प्रयोग सरल, सुपाच्य और प्रभावी है जो विषय की निरन्तरता को बनाये रखता है। यह पुस्तक पशुपालन के क्षेत्र में किया गया एक सफल प्रयास है।
- इस पुस्तक के लेखक डॉ. दिनेश कुमार शर्मा, प्रधान वैज्ञानिक को दिनांक 14 सितम्बर, 2016 को माननीय राष्ट्रपति द्वारा तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

- केन्द्रीय गृह मंत्रालय भारत सरकार के अधीन कार्यरत नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), मथुरा द्वारा वर्ष 2015–16 के दौरान राजभाषा हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य हेतु मथुरा जनपद के अन्तर्गत कार्यरत केन्द्रीय कार्यालयों में संस्थान को प्रथम पुरस्कार व प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय पटसन एवं समवर्गीय रेशा अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर

हिन्दी पखवाड़ा

राजभाषा हिन्दी के प्रति जागरूकता पैदा करने तथा उसके प्रभावों में गति लाने के उद्देश्य से संस्थान में दिनांक 14 से 28 सितम्बर, 2016 के दौरान हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन संस्थान के माननीय निदेशक, डॉ. पी.जी. कर्मकार जी के द्वारा किया गया। मुख्य अतिथि/वक्ता के रूप में डॉ. एन. सिंह, पूर्व प्राचार्य, केन्द्रीय विद्यालय संगठन को आमंत्रित किया गया था। उन्होंने अपने व्याख्यान में कहा कि हिंदी संवैधानिक रूप से भारत की प्रथम राजभाषा है और भारत वर्ष में सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है। यूनेस्को के दस्तावेजों के अनुसार, मातृभाषियों की संख्या की दृष्टि से संसार की भाषाओं में चीनी के बाद हिंदी को दूसरा स्थान प्राप्त है। निदेशक महोदय ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में संस्थान के समस्त अधिकारियों/कर्मचारियों को कार्यालयीन कार्यों में हिन्दी के अधिकाधिक प्रयोग का आह्वान करते हुए प्रत्येक शासकीय कार्यों में बोधगम्य व सरल हिन्दी के प्रयोग पर बल दिया।

माननीय निदेशक, डॉ. पी.जी. कर्मकार संस्थान के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को संबोधित करते हुए

'हिन्दी पखवाड़ा' समापन समारोह दिनांक 28 सितम्बर, 2016 को माननीय निदेशक, डॉ. पी.जी. कर्मकार जी की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। इस अवसर पर श्रीमती रीता भट्टाचार्य, पूर्व मुख्य प्रबंधक, राजभाषा विभाग, यू.बी. आई. प्रधान कार्यालय, कोलकाता मुख्य अतिथि/वक्ता के रूप में सादर आमंत्रित थीं। उन्होंने अपने विस्तृत व्याख्यान में राजभाषा का कार्यान्वयन व कार्यालय में इसके प्रयोग पर सविस्तार जानकारी प्रदान की। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे संस्थान के निदेशक, डॉ. पी.जी. कर्मकार के अतिरिक्त डॉ. एस. सत्पथी, प्रभागाध्यक्ष, फसल संरक्षण, डॉ. दिलीप

कुमार कुण्डु, प्रभागाध्यक्ष, फसल उत्पादन एवं डॉ. शितांशु सरकार, प्रभारी, कृषि प्रसार मंचासीन थे। डॉ. सुरेन्द्र कुमार पाण्डेय, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रभारी, हिन्दी कक्ष ने अपने समापन भाषण में संस्थान में किये जा रहे हिन्दी कार्य की प्रगति के बारे में जानकारी दी। निदेशक महोदय, मुख्य वक्ता तथा मंचासीन प्रभागाध्यक्षों के द्वारा विभिन्न प्रतियोगिताओं में सफल प्रतिभागियों को क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार प्रदान किये गये।

संस्थान के चार उप केन्द्रों में हिन्दी दिवस/हिन्दी सप्ताह

रेमी अनुसंधान केन्द्र, सरभोग, असम में दिनांक 14–20 सितम्बर, 2016 तक हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन केन्द्र के प्रभारी वैज्ञानिक, डा. अमरप्रीत सिंह ने किया। उन्होंने हिंदी में व्याख्यान दिया तथा केन्द्र के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों से हिन्दी में कार्य करने का आह्वान किया।

सनई अनुसंधान केन्द्र, प्रतापगढ़, उत्तर प्रदेश में दिनांक 14 सितम्बर, 2016 को हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर केन्द्र के प्रभारी एवं प्रधान वैज्ञानिक, डा. मनोज कुमार त्रिपाठी ने केन्द्र के समस्त कर्मचारियों का हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग हेतु आह्वान किया।

केन्द्रीय पटसन एवं समवर्गीय रेशा बीज अनुसंधान केन्द्र, बुद बुद, बर्द्धवान, पश्चिम बंगाल में दिनांक 14.09.2016 को डॉ. सुब्रत बिश्वास, प्रभारी एवं प्रधान वैज्ञानिक की अध्यक्षता में हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया। उक्त कार्यक्रम में केन्द्र के समस्त कर्मचारियों ने भाग लिया।

सीसल अनुसंधान केन्द्र, बामरा, ओडिशा में दिनांक 14 सितम्बर, 2016 को हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। डा. अजीत कुमार झा, वैज्ञानिक प्रभारी एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। इस उपलक्ष्य पर अपने संबोधन में उन्होंने राजभाषा हिंदी और राष्ट्रीय एकता में इसकी भूमिका तथा महत्व पर विस्तृत व्याख्यान दिया। उक्त कार्यक्रम में 5 कर्मचारियों और 10 टी.एस.सी.एल. कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

हिन्दी कार्यशालाएं

केन्द्रीय पटसन एवं समवर्गीय रेशा अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर के हिंदी प्रकोष्ठ तथा मानव संसाधन विकास समिति के तत्वावधान में दिनांक 10–11 मार्च, 2016 के दौरान कुशल सपोर्ट स्टाफ हेतु दो दिवसीय हिंदी प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। उक्त प्रशिक्षण का उद्घाटन पूर्वाह्न 10.30 बजे प्रारंभ हुआ, जिसकी अध्यक्षता संस्थान के माननीय निदेशक, डा. पी.जी. कर्मकार जी ने की। निदेशक महोदय ने अपने अभिभाषण में कहा कि संस्थान के कुशल सपोर्ट स्टाफ हेतु इस तरह के हिन्दी प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन अब तक का प्रथम प्रयास है जिसके लिए हिन्दी प्रकोष्ठ एवं मानव संसाधन विकास समिति बधाई के पात्र हैं। उन्होंने कहा कि कुशल सपोर्ट स्टाफ हेतु इस तरह का आयोजन भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के कुछ ही संस्थानों में किया जाता है, जिसका सीधा लाभ संस्थान तथा इन कर्मचारियों को मिलना तय है।

वक्ता के रूप में क्रमशः (दिनांक 10.03.2016) डा. रमेश मोहन झा, प्राध्यापक, एवं (दिनांक 11.03.2016) श्री लखन कुमार सिंह, प्राध्यापक, हिंदी शिक्षण योजना, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रलाय, भारत सरकार, निजाम पैलेस, कोलकाता को आमंत्रित किया गया था।उन्होंने अक्षर ज्ञान, शब्द पर्याय, कार्यालयीन पत्र लेखन, राजभाषा के सरल एवं सहज अनुप्रयोग के साथ–साथ कार्यालय प्रयोजनार्थ संक्षिप्त तथा शुद्ध हिंदी लिखने के कौशल से संबंधित विषयों पर अभ्यास कराया। कुछ प्रशिक्षणार्थियों का सुझाव था कि इस तरह का प्रशिक्षण प्रत्येक तीन माह के अन्तराल में होना चाहिए। इस तरह के प्रशिक्षण से बहुत कुछ सीखने का मौका मिला।

प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन डा. सुनीति कुमार झा, प्रधान वैज्ञानिक, डा. सुरेन्द्र कुमार पाण्ड़ेय, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रभारी, हिन्दी कक्ष द्वारा श्री मनोज कुमार राय, सहायक के सहयोग से किया गया।

डा. मुकेश कुमार, वैज्ञानिक (दिनांक 10.03.2016) एवं डा. प्रतीक सत्या, वरिष्ठ वैज्ञानिक (दिनांक 11.03.2016) के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हिन्दी प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन हुआ।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में दिनांक 27 अगस्त, 2016 को संस्थान के अधिकारियों/कर्मचारियों की हिन्दी में कार्य करने की झिझक को दूर करने के उद्देश्य से एक हिन्दी कार्याशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक, डा. पी. जी. कर्मकार जी ने की।

इस कार्यशाला में व्याख्यान हेतु सुश्री अर्पिता राय, प्राध्यापिका, हिन्दी शिक्षण योजना, भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, निजाम पैलेस, कोलकाता को आमंत्रित किया गया था। उन्होंने राजभाषा नीति, नियम पर पावर प्वाईंट प्रस्तुतीकरण किया तथा हिन्दी में टिप्पण, पत्र लेखन एवं मसौदा लेखन आदि विषयों पर भी जानकारी प्रदान की। साथ ही, उन्होंने प्रतिभागियों द्वारा उठाए गए प्रश्नों का समाधान भी किया। कार्यशाला में संस्थान के लगभग 70 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया।

सुश्री अर्पिता राय, प्राध्यापिका संस्थान के अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रशिक्षण प्रदान करती हुईं।

डॉ. सुब्रत सतपथी, प्रभागाध्यक्ष, फसल सुरक्षा ने अपने संबोधन में कुशल सपोर्ट स्टाफ कर्मचारियों से अपील की कि इस प्रशिक्षण कार्यक्रम से अधिक से अधिक लाभ अर्जित करें तथा हिन्दी प्रयोग संबंधित जो भी झिझक हो वक्ता के माध्यम से उसका निवारण अवश्य करें। डा. दिलीप कुमार कुण्डु, प्रभागाध्यक्ष, फसल उत्पादन ने अपने संबोधन में कहा कि हिन्दी में कार्य करने में कोई कठिनाई महसूस हो तो उसे हिन्दी कक्ष के माध्यम से दूर किया जा सकता है। उन्होंने राजभाषा विभाग द्वारा विनिर्दिष्ट नीति का पालन करते हुए कार्यशालाओं के माध्यम से हिन्दी के प्रचार–प्रसार पर बल दिया। डा. सुब्रत सतपथी, प्रभागाध्यक्ष, फसल सुरक्षा ने अपने संबोधन में कहा कि हिंदी के प्रसार–प्रसार में अपना सहर्ष सहयोग प्रदान करना चाहिए। हमें रोज अपने दैनिक कार्यालयीन कार्य यथासंभव राजभाषा हिंदी में करना चाहिए, तभी हम लक्ष्य प्राप्ति की ओर बढ़ सकते हैं।

भा.कृ.अनु.प.–प्याज एवं लहसुन अनुसंधान निदेशालय, पुणे

हिन्दी सप्ताह

भाकृअनुप–प्याज एवं लहसुन अनुसंधान निदेशालय में दिनांक 8–14 सितम्बर, 2016 के दौरान हिन्दी सप्ताह मनाया गया। सचिव राजभाषा द्वारा गतवर्ष हिन्दी में किए गए कार्यों और भविष्य में हिन्दी भाषा के प्रयोग पर विस्तृत चर्चा की गई। हिन्दी सप्ताह के दौरान निदेशालय के कार्मिकों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिनमें सभी वर्गों ने बढ़–चढ़कर भाग लिया। हिन्दी सप्ताह के समापन समारोह में मुख्य अतिथि श्री मितेश घट्टे, पुलिस उपाधीक्षक खेड तालुक तथा विशिष्ट अतिथि श्री संजय भारद्वाज, अध्यक्ष एवं निदेशालय के निदेशक डॉ. जयगोपाल ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। इस अवसर पर निदेशक महोदय ने निदेशालय में हिन्दी में की गई प्रगति एवं हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए किए जा रहे प्रयासों पर प्रकाश डाला और निदेशालय की मुख्य उपलब्धियों का संक्षिप्त विवरण दिया। निदेशालय से प्रकाशित हिन्दी राजभाषा पत्रिका 'कन्दिका' के तृतीय अंक का विमोचन भी किया गया। इस समारोह में विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेनेवाले सफल प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किए गए। तत्पश्चात श्री संजय भारद्वाज ने हिन्दी भाषा के प्रयोग, विश्व में हिन्दी का स्तर एवं उपलब्धियों से लोगों को अवगत कराया। श्री मितेश घट्टे ने अपने संभाषण में भरतीय संस्कृति और भाषा को बढ़ाने पर जोर दिया। डॉ. अमरजीत गुप्ता द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया।

हिन्दी कार्यशालाएं

प्याज एवं लहसुन अनुसंधान निदेशालय में दिनांक 23.12.2016 को निदेशक डॉ. विजय महाजन, निदेशक (प्रभारी) की अध्यक्षता में कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें श्री डब्ल्यू. वी. कोठेकर, प्रधानाचार्य आई. टी. आई. राजगुरूनगर, मुख्य अतिथि थे। कार्यशाला में 34 अधिकारियों / कर्मचारियों ने भाग लिया।

प्रमुख उपलब्धियां

- कंदिक पत्रिका का संपादन किया गया।
- सारे पत्रों के जवाब हिन्दी में दिये जा रहे हैं।
- वार्षिक प्रतिवेदन, समाचार पत्र, किसानों को सलाह, हिन्दी एवं अंग्रेजी में दी जा रही है।

हिन्दी प्रकाशन

- कंदिका
- वार्षिक प्रतिवेदन 2016
- डी.ओ.जी.आर समाचारपत्र
- प्याज भण्डारण

भा.कृ.अनु.प. – भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ

हिन्दी पखवाड़ा

संस्थान में दिनांक 14–30 सितम्बर 2016 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। हिंदी पखवाड़े का शुभारंभ दिनांक 14 सितम्बर, 2016 को हुआ जिसमें डॉ. जितेंद्रनाथ पाण्डेय, भूतपूर्व, आचार्य, हिंदी विभाग,लखनऊ विश्वविद्यालय,लखनऊ मुख्य अतिथि थे। इस अवसर पर मुख्य अतिथि महोदय ने हिंदी विषय पर विस्तृत चर्चा की तथा रामचरित मानस के विभिन्न छंदो पर अपने विचार रखे। हिंदी पखवाड़ा के अंतर्गत विभिन्न आयोजन किए गए, जिसमें वर्ष भर में किए गए हिंदी कार्य की समीक्षा,यूनीकोड में हिंदी टंकण, संस्थान की गतिविधियों का 25 स्लाइडों द्वारा प्रस्तुतीकरण,परिपत्र लेखन, कार्यालय आदेश, समझौता ज्ञापन का लेखन, आशुभाषण, हिन्दी अनुवाद, हिंदी के सामान्य ज्ञान पर आधारित प्रश्नोत्तरी, अंत्याक्षरी एवं कवि सम्मेलन इत्यादि का आयोजन हुआ, जिनमें सभी वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया। कुल सभी प्रतियोगिताओं में लगभग 190 कार्मिकों ने भाग लिया। विभागीय स्तर पर वर्ष भर हिंदी में उत्कृष्ट कार्य के लिए पादप कार्यिकी एवं जैव रसायन विभाग को मिठास ट्राफी दिया गया। इस पखवाड़े के दौरान एक कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसमें प्रतिष्ठित कवियोंय डॉ. राधा पाण्डेय, श्री राम किशोर तिवारी, श्री जमुना प्रसाद उपाध्याय, डा. सूर्य कुमार पाण्डेय, श्री विकास बौखल, डॉ. आर. पी. सिंह एवं श्री मधुप श्रीवास्तव ने अपनी रचनाएँ प्रस्तुत की। इसमें नराकास (कार्यालय –3) के कार्यालयों के कार्मिक भी सम्मिलित हुए। पखवाड़े के समापन में प्रोफेसर आलोक धावन, निदेशक, भारतीय विषविज्ञान अनुसंधान संस्थान, लखनऊ मुख्य अतिथि थे। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डॉ. ए.डी. पाठक ने हिंदी में संस्थान की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला तथा हिंदी चेतना मास 2016 के संदेश को सभी के समक्ष रखा। राजभाषा प्रभारी डॉ. ए.के. साह ने पखवाड़े के दौरान आयोजित सभी कार्यक्रमों एवं प्रतियोगिताओं पर विस्तृत जानकारी अपने उदबोधन में दी। सभी विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किए गए।

हिन्दी कार्यशालाएं

- 29 मार्च, 2016 को आयोजित हिंदी कार्यशाला में 44 प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण दिया गया। इस कार्यशाला में डॉ एम. सी. दिवाकर,निदेशक, गन्ना विकास निदेशालय, लखनऊ,श्री श्रीराम मेहरोत्रा, सेवानिवृत्त, हिंदी अधिकारी (बैंक), लखनऊ एवं प्रोफेसर राणा प्रताप सिंह, बाबा साहब भीम राव अंबेडकर विश्वविद्यालय ने अपना व्याख्यान दिया।
- 28 जून, 2016 को आयोजित हिंदी कार्यशाला में 46 प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण दिया गया। इस कार्यशाला में डॉएस. पी. दीक्षित, पूर्व विभागाध्यक्ष, लखनऊ विश्व विद्यालय, लखनऊ एवं सुश्री प्रतिभा मलिक,उपनिदेशक (कार्यान्वयन), भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (उत्तरी क्षेत्र –2), गाजियाबाद ने अपना व्याख्यान दिया।

- 23 अगस्त, 2016 को आयोजित हिंदी कार्यशाला में 47 प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण दिया गया। इस कार्यशाला में डॉ उषा सिन्हा, पूर्व विभागाध्यक्ष, भाषा विज्ञान, लखनऊ विश्वविद्यालय एवं श्री मनोज कुमार, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली ने अपना व्याख्यान दिया।
- 20 दिसम्बर, 2016 को आयोजित हिंदी कार्यशाला में 21 प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण दिया गया। इस कार्यशाला में डॉ अशोक कुमार श्रीवास्तव,प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप – भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान ने अपना व्याख्यान दिया तथा हिंदी में पुस्तक लेखन पर अपने अनुभव को सभी के साथ साझा किया।

प्रमुख उपलब्धियाँ

- संस्थान में सभी चार त्रैमासिक कार्यशालाएँ समय से आयोजित की गईं।

- संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की सभी चार बैठकें यथासमय हुई।
- संस्थान से प्रकाशित छमाही समाचार पत्र 'इक्षुसमाचार' द्विभाषी रूप में प्रकाशित हुआ।
- संस्थान के कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा विभिन्न विषयों पर 78 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जो पूर्ण रुपेण हिंदी में था।
- संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र मोतीपुर में 05 मार्च 2016 को "गन्ना एवं गुड़ उत्पादन में उद्यमिता विकासः एक पहल कार्यक्रम" का आयोजन किया गया, जिसके मुख्य अतिथि श्री राधा मोहन सिंह, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री, भारत सरकार थे।
- संस्थान में 02 अप्रैल 2016 को प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसके मुख्य अतिथि श्री राजनाथ सिंह, गृह मंत्री, भारत सरकार थे।
- किसानों तथा गन्ना विकास अधिकारियों के लिए 15 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिसमें 350 प्रतिभागियों ने भाग लिया।
- संस्थान के पास लखनऊ नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय–3) लखनऊ की भी जिम्मेदारी दी गई है उसी के अंतर्गत वर्ष 2016 की प्रथम बैठक दिनांक 28.06.2016 को संस्थान में आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता डा. ए. डी. पाठक, कार्यकारी निदेशक एवं अध्यक्ष, नराकास ने की।इस बैठक में विशिष्ट अतिथि के रूप में सुश्री प्रतिभा मलिक, उप निदेशक (कार्यान्वयन), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, गाजियाबाद थी। बैठक में 61 सदस्य कार्यालयों में से 44 सदस्य कार्यालयों के प्रतिनिधि उपस्थित थे। नराकास (कार्यालय–3) की द्वितीय बैठक 16.12.2016 को डा. ए. डी. पाठक, निदेशक एवं अध्यक्ष, नराकास, की अध्यक्षता में आयोजित की गई। दोनों ही बैठकों में नराकास (कार्यालय–3) के सचिव

माननीय श्री राजनाथ सिंह, गृह मंत्री, भारत सरकार द्वारा फसल बीमा योजना जागरूकता कार्यक्रम का उद्घाटन

माननीय श्री राधा मोहन सिंह, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री, भारत सरकार द्वारा गुड़ उद्यमिता प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन

डा. ए. के. साह ने सभी सदस्य कार्यालयों से आये कार्यालय प्रमुखों एवं अन्य सदस्यों के साथ नराकास (कार्यालय–3) के अंतर्गत 61 कार्यालयों में किए जा रहे हिंदी के कार्यों की विस्तृत समीक्षा की। साथ ही हिंदी में उत्कृष्ट कार्य तथा उत्कृष्ट पत्रिका प्रकाशन करने वाले 10 सदस्य कार्यालयों को पुरस्कृत भी किया गया। बैठक का संचालन श्री अभिषेक कुमार सिंह, राजभाषा अधिकारी ने किया।

हिन्दी प्रकाशन

- इक्षु राजभाषा पत्रिका अंकः वर्षः 4 अंकः 2
- किसान ज्योति (वार्षिक)
- इक्षु राजभाषा पत्रिका अंकः वर्षः 5 अंकः 1
- गन्ना उत्पादन तकनीक (फोल्डर)
- उन्नत गन्ना किस्मे (फोल्डर)
- गन्ने के साथ सहफसली खेती (फोल्डर)
- गन्ने में नाशीकीटों एवं बीमारियों का समेकित प्रबंधन (फोल्डर)
- उत्तम गुड़ उत्पादन तकनीक
- बिहार राज्य के लिए गन्ना उत्पादन तकनीक

भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय अंगूर अनुसंधान केंद्र, पुणे

हिन्दी पखवाड़ा

भाकृअनुप – राष्ट्रीय अंगूर अनुसंधान केंद्र, पुणे, में दिनांक 1 से 15 सितंबर 2016 तक 'हिंदी पखवाड़ा' का आयोजन किया गया। दिनांक 1 सितंबर को हिंदी में अधिक से अधिक कार्य करने की शपथ के साथ 'हिंदी पखवाड़ा' का प्रारंभ किया गया। हिंदी पखवाड़ा के दौरान हिंदी कार्यशाला, अनुवाद लेखन, कार्यशाला पर आधारित प्रतियोगिता, कंप्यूटर पर टंकण, निबंध लेखन, सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता, एवं

हिंदी भाषा पर व्याख्यान आदि प्रतियोगिताएँ/कार्यक्रम आयोजित किए गये। इन कार्यक्रमों/प्रतियोगिताओं में केंद्र के कर्मचारियों ने बढ़–चढ़कर भाग लिया। कार्यशाला का आयोजन दिनांक 03 सितम्बर, 2016 को श्री आर. पी. वर्मा, सहायक निदेशक, राजभाषा विभाग, पुणे द्वारा किया। इस कार्यशाला में राजभाषा नीति तथा इससे जुडे मुद्दों के अलावा कंप्यूटर एवं मोबाइल पर हिंदी के सरल प्रयोग पर जानकारी दी गई। हिंदी भाषा पर व्याख्यान श्री देवधर (सेवानिवृत्त, आकाशवाणी अधिकारी) ने दिनांक 15 सितंबर को दिया।

'हिंदी पखवाड़े' का मुख्य कार्यक्रम दिनांक 14 सितंबर–हिंदी दिवस के अवसर पर आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि डॉ. महेश झगड़े आई. ए. एस – मुख्य कार्यकारी अधिकारी, पुणे मेट्रोपॉलिटन क्षेत्र विकास प्राधिकरण थे। डॉ. अजय कुमार शर्मा, हिंदी अधिकारी ने मुख्य अतिथि को इस केंद्र में हो रही राजभाषा की गतिविधियों से परिचित कराया तथा 'हिंदी पखवाड़े' के दौरान आयोजित की गई विभिन्न प्रतियोगिताओं की जानकारी दी। डॉ. संजय सावंत, निदेशक ने मुख्य अतिथि का स्वागत किया एवं उनका परिचय दिया। मुख्य अतिथि द्वारा इस केंद्र की हिंदी पत्रिका 'अंगूरी' के प्रथम अंक का विमोचन किया गया। इन अवसर पर केंद्र द्वारा तैयार किये गये कॅलेंडर को भी जारी किया गया। इसके पश्चात् मुख्य अतिथि द्वारा विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार दिये गये। मुख्य अतिथि ने अपने भाषण में केंद्र द्वारा राजभाषा के प्रचार प्रसार की सराहना की और उन्होंने आशा व्यक्त की कि, यह केंद्र डॉ. सावंत के नेतृत्व में उन्नति के पथ पर आगे बढता रहेगा और किसानों की निरंतर सेवा करता रहेगा।

समापन समारोह के अवसर पर केंद्र द्वारा तैयार कॅलेंडर जारी किया गया

अन्य गतिविधियां

भित्ति पत्रिका 'अंगूरी'

केंद्र ने वर्ष 2016 के दौरान भित्ति पत्रिका 'अंगूरी' के 3 अंक जारी किए। इन अंकों में विभिन्न विषयों पर लेख, कविता, कहानी, संस्मरण आदि को सम्मिलित किया गया।

राष्ट्रीय अंगूर अनुसंधान केंद्र की हिन्दी पत्रिका "अंगूरी"

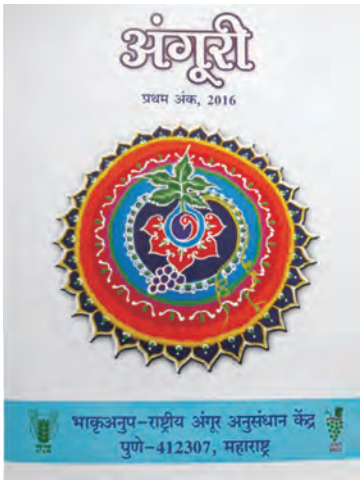

इस वर्ष से इस केंद्र ने अपनी हिन्दी पत्रिका "अंगूरी" का प्रकाशन प्रारम्भ किया है। यह पत्रिका वार्षिक है। इस केंद्र की हिंदी पत्रिका 'अंगूरी' के प्रथम अंक का विमोचन हिन्दी दिवस के अवसर पर दिनांक 14 सितंबर, 2016, को डॉ. महेश झगड़े, आई ए एस – मुख्य कार्यकारी अधिकारी, पुणे मेट्रोपॉलिटन क्षेत्र विकास प्राधिकरण के द्वारा किया गया।

भा.कृ.अनु.प.–औषधीय एवं सगंधीय पादप अनुसंधान निदेशालय, आणंद

हिन्दी पखवाड़ा

निदेशालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में 01–15 सितंबर, 2016 के दौरान हिंदी पखवाड़ा हर्षोल्लास से मनाया गया, जिसके अंतर्गत हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु अनेक रूचिकर कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इस दौरान हिंदी निबंध, हिंदी पत्र लेखन, सामान्य हिंदी ज्ञान, मौखिक सामान्य ज्ञान, व्याख्यान व काव्यपाठ प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई।

हिंदी पखवाड़ा का प्रारम्भ 01 सितंबर, 2016 को निदेशालय के निदेशक एवं राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष डॉ. जीतेन्द्र कुमार द्वारा किया गया।उन्होंने डॉ. राधा मोहन सिंह, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री, भारत सरकार एवं अध्यक्ष, भाकृअनुप, नई दिल्ली की अपील सभा के समक्ष प्रस्तुत की और हिंदी के प्रति अपने विचार रखते हुए वैज्ञानिकों को अपना शोध लेख हिंदी में लिखने के लिए प्रोत्साहित किया। तत्पश्चात डॉ. सत्यांशु कुमार, प्रधान वैज्ञानिक एवं हिंदी अधिकारी ने पखवाड़ा के दौरान आयोजित कार्यक्रम की जानकारी प्रदान की।

हिंदी पखवाड़ा के दौरान हिंदी दिवस समारोह (14 सितंबर, 2016) को हर्षोल्लास से मनाया गया। इस अवसर पर श्री मिथिलेश कुमार, उपमहाप्रबंधक (मानव संसाधन), पावरग्रिड कारपोरेशन ऑफ इण्डिया लिमिटेड (भारत सरकार का उद्यम) पश्चिम क्षेत्र पारेषण प्रणाली–II, बड़ोदरा को मुख्य अतिथि के

रूप में आमंत्रित किया गया। निदेशालय के प्रभारी निदेशक डॉ. पी. मणिवेल ने हिंदी दिवस समारोह की अध्यक्षता की। समारोह के दौरान व्याख्यान व काव्य पाठ प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में प्रभारी निदेशक डॉ. पी. मणिवेल ने मुख्य अतिथि को गुलदस्ता भेंट कर स्वागत किया। स्वागतीय भाषण के पश्चात व्याख्यान व काव्य–पाठ प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया तथा सभी प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय व तृतीय रहे प्रतिभागियों को पुरस्कार एवं प्रोत्साहन पुरस्कार मुख्य अतिथि महोदय के कर–कमलों द्वारा प्रदान किये गए। पुरस्कार वितरण समारोह के उपरांत मुख्य अतिथि महोदय ने विश्व स्तर पर हिंदी के बढ़ते प्रसार की जानकारी देते हुए विदेशों में जैसे– आस्ट्रेलिया, सिंगापुर, मॉरिशस और कई देशों का उदाहरण देकर हिंदी के विस्तार को दर्शाया और यह भी बताया कि हिदी भाषा किसी भी शब्द को अपने में आसानी से समाहित कर लेती है। तत्पश्चात धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का विधिवत् समापन किया गया।

हिन्दी कार्यशालाएं

हर वर्ष की भांति निदेशालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा वर्ष 2016 के दौरान तीन कार्यशालाएं आयोजित की गई। इस वर्ष की प्रथम कार्यशाला दिनांक 16 मार्च, 2016 को 'शोध कार्यों में हिंदी का प्रयोग' विषय पर आयोजित की गई। इस कार्यशाला का उद्घाटन डॉ. इंद्र मणि, अध्यक्ष, कृषि अभियांत्रिकी, भाकृअनुप–भारतीय कृषि अनुसन्धान संस्थान, नई दिल्ली द्वारा किया गया। इस अवसर पर डॉ. जीतेन्द्र कुमार, निदेशक, भाकृअनुप–औषधीय एवं सगंधीय पादप अनुसंधान निदेशालय, बोरीआवी, आणंद ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। अपने संबोधन में डॉ. इंद्र मणि ने सभा को संबोधित करते हुए बताया कि राजभाषा के प्रयोग का मुख्य उद्देश्य इसे अपनी कृषि एवं शोध में प्रयोग करना है। उन्होंने यह भी बताया की राजभाषा के ही माध्यम से कृषि के क्षेत्र में हो रहे निरंतर शोधों का सुगमता से कृषकों के बीच प्रचार–प्रसार किया जा सकता है। तत्पश्चात डॉ. जीतेन्द्र कुमार ने अपने संबोधन में बताया कि हिंदी का प्रयोग करके आधुनिक ज्ञान एवं विज्ञान को कृषकों तक पहुँचाया जा सकता है।

निदेशालय की द्वितीय कार्यशाला दिनांक 14 जून, 2016 को "कार्यालय में राजभाषा हिंदी अनुप्रयोग एवं महत्त्व" विषय पर आयोजित की गई। कार्यशाला में अंग्रेजी से हिंदी शब्द अनुवाद प्रायोगिक प्रतियोगिता आयोजित की गई तथा मुख्य वक्ता डॉ. जगन्नाथ पंडित ने हिंदी अनुवाद से सम्बंधित विस्तृत जानकारी प्रदान करते हुए बताया कि अनुवाद करने के लिए स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की सही जानकारी होनी चाहिए। डॉ. रघुराज सिंह ने "हिंदी शब्द ज्ञान" पर व्याख्यान दिया।

निदेशालय की तृतीय कार्यशाला दिनांक 15 सितंबर, 2016 को 'लोकप्रिय शोध पत्र लेखन विधि' विषय पर आयोजित की गई। कार्यशाला के मुख्य वक्ता डॉ. शिव प्रसाद शुक्ल ने उपरोक्त विषय पर विस्तृत जानकारी प्रदान करते हुए बताया कि विश्व में भाषा एवं व्यापार का पारस्परिक सम्बन्ध है। शोध के परिणामों को वांछित स्तर तक पहुँचाने में भाषा की महत्वपूर्ण भागीदारी होती है। अतः शोध पत्र एवं आलेखों में प्रयुक्त भाषा सुगम होनी चाहिए। श्री मंगल सिंह ने "अंग्रेजी वित्तीय शब्दों के हिंदी ज्ञान" पर व्याख्यान दिया। अंत में राष्ट्रगान के साथ कार्यशाला का समापन हुआ।

प्रमुख उपलब्धियाँ

- 16 मार्च, 2016 को डॉ. रघुराज सिंह, वैज्ञानिक ने नराकास, आणंद द्वारा आयोजित 'हिंदी सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता' में प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया।
- 17 मार्च, 2016 को निदेशालय द्वारा तकनीकी एवं कुशल सहयोगी कार्मिकों के लिए एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन हिंदी में किया गया।
- 15 सितम्बर, 2016 को नराकास के तत्वावधान में निदेशालय द्वारा "हिन्दी एवं सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता" का आयोजन किया गया।

- सात दिवसीय (28 नवम्बर से 04 दिसम्बर, 2016) किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम 'हाईटेक उद्यानिकी' (फल, फूल, मसाला और औषधीय एवं सब्जी फसल उत्पादन) का आयोजन किया गया।

हिन्दी प्रकाशन

- वार्षिक प्रतिवेदन 2015–16 का हिंदी प्रकाशन
- एलोकी बेहतर कृषि प्रक्रियाएं
- ईसबगोल की बेहतर कृषि प्रक्रियाएं
- सनाय की बेहतर कृषि प्रक्रियाएं

भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय जैविक कृषि अनुसंधान संस्थान, गंगटोक

हिन्दी चेतना मास

दिनांक 14 सितंबर 2016 से 30 सितंबर 2016 तक संस्थान में हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया एवं पूरे सितंबर माह को हिंदी चेतना माह के रूप में अनुपालित किया गया। दिनांक 14 सितंबर 2016 को हिंदी सप्ताह का विधिवत उद्घाटन किया गया, इस अवसर पर पत्र सूचना कार्यालय (पी.आई.बी.), भारत सरकार के उपनिदेशक श्री विनय राज तिवारी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे, अपने उद्घाटन भाषण में उन्होने पूर्वोत्तर क्षेत्र में राजभाषा से संबंधित अपने अनुभवों को बताते हुए इस संस्थान में राजभाषा की प्रगति पर संतोष व्यक्त किया। संस्थान के संयुक्त निदेशक डॉ. रविकांत अवस्थी ने अपने संबोधन मे संस्थान की समग्र गतिविधियों के बारे में प्रकाश डाला एवं संस्थान एवं कृषि विज्ञान केंद्र के सभी कर्मचारियों से हिंदी के कार्यान्वयन मैं और गति लाने हेतु सकारात्मक प्रयास करने के लिए आग्रह किया। डॉ. एच. कलिता, उपाध्यक्ष, संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने राजभाषा के बारे में अपने विचार व्यक्त करते हुए संस्थान के कर्मचारियों द्वारा केंद्र सरकार की हिंदी प्रशिक्षण योजना के अंतर्गत संचालित परीक्षाओं मैं अव्वल प्रदर्शन एवं इसके अनुपालन के प्रति लगाव की सराहना की तथा आशा व्यक्त की कि भविष्य में यह राष्ट्रीय संस्थान राजभाषा के कार्यान्वयन के क्षेत्र में और प्रगति करेगा। श्री सुरेन्द्र मोहन कंडवाल, सदस्य सचिव, संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने राजभाषा हिंदी के वार्षिक प्रतिवेदन को प्रस्तुत किया। इस अवसर पर संस्थान के अन्य वक्ताओं ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

दिनांक 30 सितंबर, 2016 को हिंदी पखवाड़े का समापन समारोह आयोजित किया गया, इस अवसर पर श्री जितेंद्र सिंह राजे, आई.ए.एस., निदेशक, उच्च शिक्षा, मानव संसाधन विकास विभाग, सिक्किम सरकार मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस अवसर पर अपने संबोधन में उन्होने इस संस्थान द्वारा संचालित गतिविधियों द्वारा सिक्किम के कृषकों के लिए आयोजित क्षमता विकास प्रशिक्षणों के बारे में तथा साथ ही साथ राजभाषा हिंदी के प्रसार के बारे प्रसन्नता व्यक्त की एवं जन संचार माध्यमों से कई जागरूकता मूलक सामग्री के प्रकाशनों द्वारा संस्थान के बारे में कृषक समुदाय द्वारा लाभ उठाने जैसे कई सकारात्मक पहलुओं पर संतोष व्यक्त किया। इस अवसर पर संस्थान के संयुक्त निदेशक, डॉ. रविकांत अवस्थी ने विस्तारपूर्वक संस्थान द्वारा हिंदी के कार्यान्वयन हेतु किए जा रहे प्रयासों की जानकारी देते हुए बताया की कि संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा हिंदी में लोकप्रिय लेखों के माध्यम से संस्थान की अनुसंधान उपलब्धियों को किसानों तक पहुंचाया जा रहा है तथा संबंधित सामग्री को स्थानीय नेपाली भाषा में तैयार करने का प्रयास भी किया जा रहा है।

श्री जितेन्द्र सिंह राजे, आईएएस, निदेशक, उच्चतर शिक्षा, सिक्किम सरकार समापन समारोह के दौरान भा.कृ.अ.प.–राष्ट्रीय जैविक कृषि अनुसंधान संस्थान के कार्मिकों को संबोधित करते हुए

श्री सुरेन्द्र मोहन कंडवाल, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी ने बताया कि पूरे सितंबर माह में संस्थान में आंशिक रूप से सभी कार्यों मे राजभाषा का समावेश किया है एवं पखवाड़ा के दौरान कई हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिनमें मुख्य रूप से टिप्पण, प्रारूप एवं पत्र लेखन, प्रशासनिक एवं वैज्ञानिक शब्दावली, निबंध लेखन, आशुभाषण, वाद–विवाद, प्रश्नमंच आदि का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि एवं सयुंक्त निदेशक के कर–कमलों से विजेताओं को पुरस्कार वितरण किया गया। इसके अलावा वर्षभर हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करने वाले कर्मचारियों को भी पुरस्कार प्रदान किए गए।

हिन्दी कार्यशालाएं

- दिनांक 7 जनवरी, 2016 को संस्थान एवं कृषि विज्ञान केंद्र के तकनीकी अधिकारियों एवं तकनीकी कर्मचारियों हेतु एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का विषय था "हिंदी में विज्ञान लेखन" इस विषय पर

संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. राघवेंद्र सिंह ने स्रोत वक्ता के रूप में व्याख्यान दिया।

- दिनांक 27 फरवरी, 2016 को संस्थान के वैज्ञानिकों/आर.ए./एस.आर.एफ/जे.आर.एफ. आदि के लिए एक कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें निम्नलिखित विषयों पर व्याख्यान एवं परिचर्चा की गयी।

अ) कृषि विज्ञान शब्दावली एवं इसका उपयोगः स्रोत वक्ता– डॉ. आशीष यादव, वरिष्ठ वैज्ञानिक।

ब) हिंदी में कृषि विस्तार सामग्री एवं कृषकों हेतु लोकप्रिय लेखों को फोल्डर/एक्सटेन्शन बुलेटिन के रूप में कैसे तैयार करें स्रोत वक्ता– डॉ. राघवेंद्र सिंह, वरिष्ठ वैज्ञानिक

- दिनांक 16 मार्च 2016 को संस्थान में एक समेकित राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें संस्थान एवं कृषि विज्ञान केंद्र के सभी वैज्ञानिकों/तकनीकी अधिकारियों/आर.ए./जे.आर.एफ./ प्रशासनिक कर्मचारियों द्वारा भाग लिया गया। इस कार्यशाला में निम्नलिखित विषयों पर व्याख्यान एवं परिचर्चा की गयी।

अ) राजभाषा हिंदी का संपर्क भाषा के रूप में उपयोग एवं व्यावहारिक कठिनाइयाँः स्रोत वक्ता – डॉ. राघवेंद्र सिंह, वरिष्ठ वैज्ञानिक।

ब) राजभाषा हिंदी का जनसंचार माध्यमों द्वारा समाज पर सकारात्मक प्रभाव एवं हिंदी में प्रभावशाली आलेख (Script) का लेखनः स्रोत वक्ता – डॉ. मातबर सिंह, वैज्ञानिक, वरिष्ठ वेतनमान।

4. दिनांक 17 अगस्त, 2016 को संस्थान एवं कृषि विज्ञान केंद्र के प्रशासनिक कर्मचारियों हेतु एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में निम्नलिखित विषयों पर व्याख्यान एवं परिचर्चा की गयी।

अ) कार्यालय में विविध प्रकार के पत्राचार में राजभाषा हिंदी का समावेश एवं दैनिक प्रयोगः स्रोत वक्ता – डॉ. मातबर सिंह, वैज्ञानिक, वरिष्ठ वेतनमान।

ब) राजभाषा का महत्व एवं संस्थान में इसका कार्यान्वयनः स्रोत वक्ता – श्री सुरेन्द्र मोहन कंडवाल, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी।

- दिनांक 26 नवंबर, 2016 को संविधान दिवस के सुअवसर पर केंद्र एवं कृषि विज्ञान केंद्र के सभी कर्मचारियों हेतु एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में निम्नलिखित विषयों पर व्याख्यान एवं परिचर्चा की गयी।

अ) राजभाषा हिंदी की संवैधानिक स्थितिः स्रोत वक्ता – श्री सुरेन्द्र मोहन कंडवाल, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी।

ब) हिंदी में वैज्ञानिक/तकनीकी एवं प्रशासकीय शब्दावली एवं उपयोगः स्रोत वक्ता– डॉ. आशीष यादव, वरिष्ठ वैज्ञानिक।

भा.कृ.अनु.प.–उत्तर पूर्वी पर्वतीय क्षेत्र अनुसंधान परिसर, उमियम, बड़ापानी

हिन्दी सप्ताह

संस्थान के तत्वावधान में दिनांक 06.09.16 से 14.09.16 तक हिन्दी सप्ताह का भव्य आयोजन किया गया। संस्थान के प्रभारी निदेशक डॉ. सतीश चंद्र, डॉ. ए. के. मिश्रा प्रभागाध्यक्ष एवं प्रभारी राष्ट्रीय पादप संसाधन ब्यूरो, उमियम डॉ. एन. बी सिंह (संकाय अध्यक्ष) केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद थे। प्रभारी उपनिदेशक (राभा) एवं मु. प्र. अधिकारी श्री के. सी. जोशी तथा हिन्दी सप्ताह समारोह कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ. सतीश चंद्र, प्रभागाध्यक्ष एवं मुख्य अतिथि द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर समारोह का शुभारम्भ किया गया।

मुख्य अतिथि डॉ. एन. बी सिंह (संकाय अध्यक्ष) केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, ने इस अवसर पर भाषण दिया उसके पश्चात श्री के. सी. जोशी, प्रभारी उपनिदेशक (रा.भा.) द्वारा राजभाषा प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। प्रभारी निदेशक, डॉ. सतीश चंद्र, ने भी हिन्दी सप्ताह पर अपने विचार प्रकट किये, अन्त में डॉ. ए. के मिश्रा प्रभागाध्यक्ष एवं प्रभारी राष्ट्रीय पादप संसाधन ब्यूरो, उमियम द्वारा हिन्दी भाषा पर अपने विचार प्रस्तुत किये। तत्पश्चात हिन्दी सप्ताह की रूपरेखा व कार्यक्रमों की घोषणा की गई तथा हिन्दी सप्ताह के दौरान अनेक हिन्दी प्रतियोगिताएं तथा कार्यक्रम आयोजित किए गए।

हिन्दी सप्ताह का समापन समारोह

अन्त में, धन्यवाद प्रस्ताव डॉ. अर्नब सेन, हिन्दी सप्ताह समारोह के सदस्य द्वारा प्रस्तुत किया गया।

दिनांक 14 सितम्बर, 2016 समापन समारोह के अवसर पर हमारे संस्थान के निदेशक महोदय डॉ. एस. वी. ङचान भी मौजूद थे। इस सभा के मुख्य अतिथि के रूप में श्री संजय त्यागी (निदेशक), विमान पत्तन शिलांग, डॉ सतीश चंद्र, डॉ. ए. के मिश्रा राष्ट्रीय पादप संसाधन ब्यूरो, उमियम के प्रभारी एवं श्री के. सी. जोशी, प्रभारी उपनिदेशक (रा.भा.) एवं मु. प्र, उपस्थित थे। सबसे पहले राष्ट्रीय गान के साथ कार्यक्रम की

शुरूवात की गई। डॉ. एस. वी. ङचान ने हिन्दी राजभाषा के महत्व पर प्रकाश डाला। अपने सम्बोधन में प्रतियोगिताओं में विजयी प्रतिभागियों को बधाई देते हुए कहा कि आप सभी लोगों ने प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से इन कार्यक्रमों में सम्मिलित हो कर हिन्दी राजभाषा के प्रति अपना प्रेम प्रदर्शित किया है। सभी प्रतियोगिताओं में विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कार वितरित किये गए। तदुपरान्त प्रभारी उप निदेशक (रा.भा.) द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव दिया गया।

अन्त में धन्यवाद प्रस्ताव के बाद हिन्दी सप्ताह समारोह का समापन किया गया।

भा.कृ.अनु.प.–भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थांन, झांसी

हिन्दी सप्ताह

भा.कृ.अनु.प.–भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान, झांसी में हिन्दी सप्ताह (14–20 सितम्बर, 2016) का शुभारम्भ डॉ. बाबूलाल तिवारी, प्राचार्य, बुन्देलखण्ड महाविद्यालय, झांसी के मुख्य अतिथि एवं डा. जगदीश खरे, पूर्व प्राचार्य जी.एस. पी.जी. कालेज सुल्तानपुर के विशिष्ट अतिथि तथा संस्थान के कार्यवाहक निदेशक, डा. आर.वी. कुमार की अध्यक्षता में 14 सितम्बर, 2016 को किया गया। कार्यक्रम का प्रारम्भ अतिथिगणों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन से किया गया। मुख्य अतिथि डा. बाबूलाल तिवारी, ने अपने उद्बोधन में हिन्दी भाषा को सरल, सहज, व्यावहारिक एवं विचारों का आदान प्रदान करने वाली भाषा बताया। विशिष्ट अतिथि डॉ. जगदीश खरे, ने अपने सम्बोधन में वैज्ञानिक ध्वनियों की प्रकटता के संबंध में बताते हुए कहा कि हिन्दी एक वैज्ञानिक भाषा है। अध्यक्षीय भाषण में डा. आर.वी. कुमार ने बताया कि कार्यालय में हिन्दी में कार्य किये बिना लक्ष्य प्राप्ति नहीं की जा सकती है। निदेशक ने सभी अधिकारियों–कर्मचारियों को हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने एवं शासकीय कार्य हिन्दी में ही करने की शपथ दिलायी। डा. सुनील कुमार ने माननीय गृह मंत्री जी के संदेश का वाचन किया। नीरज कुमार दुबे ने विभिन्न प्रतियोगिताओं के संबंध में विस्तार से जानकारी प्रदान की।

हिन्दी सप्ताह का समापन कार्यवाहक निदेशक डा. ए.के. राय की अध्यक्षता में दिनांक 20 सितम्बर, 2016 को किया गया। अध्यक्षीय उद्बोधन में डा. ए.के. राय ने हिन्दी के विकास के लिए दृढ इच्छा् शक्ति से दिशा–निर्देशों के अनुरूप शतप्रतिशत हिन्दी में कार्य करने की आवश्यकता बताई। डा. ए.के. राय ने हिन्दी सप्ताह के अंतर्गत मसौदा एवं टिप्पणी लेखन, शोध–पत्र पोस्टर प्रदर्शन, हिन्दी में निबंध लेखन की, हिन्दी में मौलिक लेखन, वाद–विवाद अहिन्दी भाषी, स्वरचित कविता पाठ, भाषण एवं कम्यूटर टंकण प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों एवं कार्मिकों को प्रमाण पत्र एवं स्मृति चिन्ह प्रदान किये। संस्थान में वर्ष पर्यन्त हिन्दी में सर्वाधिक कार्य करने हेतु कृषि तकनीकी सूचना केन्द्र को चल वैजन्ती से पुरस्कृत किया गया। हिन्दी सप्ताह के कार्यक्रमों का संचालन नीरज कुमार दुबे एवं डा. सुनील कुमार तथा आभार नीरज कुमार दुबे ने किया।

समापन समारोह में पुरस्कृत करते हुए

हिन्दी कार्यशालाएं

भा.कृ.अनु.प.–भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान, झांसी में 1 जनवरी से 31 दिसम्बर, 2016 के दौरान कुल 3 एक दिवसीय हिन्दी कार्यशालाएं आयोजित की गयी। प्रथम कार्यशाला दिनांक 28.5.2016 को डा. जगदीश खरे, पूर्व प्राचार्य, जी.एस.पी.जी. कालेज, सुल्तानपुर के मुख्य अतिथि, श्री भगवानदास मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय के विशिष्ट अतिथि एवं संस्थान निदेशक डा. पी.के. घोष की अध्यक्षता में सम्पन्न् की गई। डॉ. पी.के. घोष ने अध्यक्षीय उदबोधन में राजभाषा के विकास में कार्यशाला का महत्व वर्णित करते हुए संस्थान के अधिकतम कार्य हिन्दी भाषा में करने का आव्हान किया जिससे संस्थान का हिन्दी कार्य का निर्धारित लक्ष्य पूर्ण हो सके। श्री भगवानदास ने तिमाही प्रपत्र भरने के नियमों एवं उपनियमों, संवैधानिक व्यवस्था के संबंध में बताया। हिन्दी् कार्यशाला का संचालन डा. सुनील कुमार तथा आभार नीरज कुमार दुबे ने किया।

द्वितीय कार्यशाला का आयोजन दिनांक 20.8.2016 को श्री हरीदास, वरिष्ठ अनुवादक, मुख्य कारखाना प्रबंधक कार्यालय, झांसी एवं श्री भगवानदास, वरिष्ठ अनुवादक, मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, झांसी के अतिथि तथा कार्यवाहक निदेशक डॉ. आर.वी. कुमार की अध्यक्षता में किया गया। कार्यशाला में श्री हरीदास ने राजभाषा संबंधी प्रावधानों एवं कार्यालय के दैनिक कार्य से संबंधित उपयोगी जानकारी दी। श्री भगवानदास ने तिमाही प्रपत्र भरने के नियमों एवं उपनियमों, सवैधानिक व्यवस्था के संबंध में तथा तथा डा. सुनील सेठ ने संस्थान में राजभाषा के निर्धारित लक्ष्य प्राप्त करने के

कार्यशाला के अवसर पर संबोधित करते संस्थान निदेशक, डॉ. पी.के. घोष

संबंध में व्याख्यान दिया। हिन्दी कार्यशाला का संचालन डॉ. सुनील कुमार तथा आभार नीरज कुमार दुबे ने किया।

तृतीय कार्यशाला दिनांक 24.11.2016 का आयोजन डॉ. के. एन. सचान, पूर्व वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी, भारत हैवी इलेक्ट्रिकल लिमिटेड (भेल), के मुख्य अतिथि श्री भगवानदास, वरिष्ठ अनुवादक, राजभाषा अनुभाग मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, झांसी के विशिष्ट अतिथि तथा कार्यवाहक निदेशक डॉ. ए.के.राय की अध्यक्षता में किया गया। कार्यशाला में डॉ. सचान ने अपने व्याख्यान में शासकीय कामकाज़ में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग, व्यावहारिक कार्य के संबंध में बताया तथा श्री भगवानदास ने वार्षिक कार्यक्रम, लक्ष्यों, नियमों के अनुपालन के संबंध में बताया। हिन्दी कार्यशाला का संचालन नीरज कुमार दुबे एवं डॉ. के.के. सिंह ने किया।

कार्यशालाओं में संस्थान के विभिन्न विभागों के कार्मिकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

हिन्दी प्रकाशन

- बरसीम–चिकोरी बीज पृथक्करण मशीन – बुलेटिन
- घास के बीजों हेतु गोलीकरण मशीन – बुलेटिन
- चारा उत्पादन एवं उपयोग तकनीकियां – बुलेटिन
- वार्षिक प्रतिवेदन, हिन्दी, 2015–16 – रिपोर्ट
- चारा फसलों की उन्नद सस्य् क्रियाएं – लीफलेट
- वार्षिक चारा प्लानर – कलेन्डर
- टिकाऊ खेती हेतु समेकित पोषक तत्व प्रबंधन – फोल्डर

भा.कृ.अनु.प.–भारतीय कृषि प्रणाली अनुसंधान संस्थान, मेरठ

हिन्दी पखवाड़ा

भारतीय कृषि प्रणाली अनुसंधान संस्थान, मोदीपुरम, मेरठ में राजभाषा हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग को बढ़ावा देने एवं समस्त कार्यालय कर्मियों में राजभाषा हिंदी के प्रति अभिरूचि पैदा करने के उद्देश्य से 14–28 सितंबर, 2016 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। इस दौरान हिंदी से संबंधित विभिन्न कार्यक्रमों/प्रतियोगिताओं जैसे निबंध लेखन, टिप्पण एवं प्रारूप लेखन, यूनीकोड से हिंदी टंकण, हिंदी सामान्य ज्ञान, वाद–विवाद, अंत्याक्षरी, वैज्ञानिक कार्यशाला एवं स्वरचित काव्य पाठ आदि का आयोजन किया गया। सभी प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों को प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं प्रोत्साहन पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त वर्ष 2015–16 के दौरान हिंदी में अधिक से अधिक कार्य करने वाले कर्मियों को भी पुरस्कृत किया गया। उक्त प्रतियोगिताओं में सभी संवर्ग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया। संस्थान के निदेशक डॉ. आजाद सिंह पंवार ने विजयी प्रतिभागियों को बधाई देते हुए सभी वैज्ञानिकों एवं अधिकारियों से अपने अधिक से अधिक कार्यालयीन कार्यों को हिंदी में करने तथा शोध कार्यों को हिंदी के माध्यम से किसानों तक पहुँचाकर उनकी समस्याओं का समाधान करने की सलाह दी।

हिन्दी कार्यशालाएं

कार्यक्रम का नाम	समयावधि/दिनांक	प्रतिभागी
हिंदी कार्यशाला	एक दिवसीय/ 21.06.2016	कार्यालय कर्मी एवं आमंत्रित अतिथि
हिंदी कार्यशाला	एक दिवसीय/ 29.09.2016	कार्यालय कर्मी एवं आमंत्रित अतिथि
हिंदी कार्यशाला	एक दिवसीय/ 31.12.2016	कार्यालय कर्मी एवं आमंत्रित अतिथि

प्रमुख उपलब्धियां

- दिनांक 08.03.2016 को 'ग्रामीण रोजगार एवं आजीविका हेतु डेयरी व्यवसाय' पर एक दिवसीय कृषि गोष्ठी एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजनः

- दिनांक 29–30 मार्च, 2016 को' कृषि प्रणाली में तिलहनी फसलें' विषय पर दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन
- किसान मेला व कृषक प्रक्षेत्र पाठशाला का आयोजनः दिनांक 07.05.2016 ग्राम–नावला, जनपद–मुजफ्फरनगर
- किसान मेला व कृषक प्रक्षेत्र पाठशाला का आयोजनः दिनांक 25.05.2016 ग्राम–मीरापुर–दलपत, जनपद–मुजफ्फरनगर
- अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजनःदिनांक 21.06.2016
- दिनांक 19–24 सितंबर, 2016 तक 'प्रक्षेत्र प्रबंधन पर पुनश्चर्या पाठ्यक्रम' विषय पर 6 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम
- स्वच्छता पखवाड़ा का आयोजनः दिनांक 16–31 अक्टूबर, 2016
- "कृषि कुम्भ–2016" एवं किसान गोष्ठी का आयोजनः दिनांक 28–30 नवंबर, 2016, राजकीय इण्टर कॉलेज परिसर, मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश
- विश्व मृदा दिवस का आयोजनः दिनांक 05 दिसम्बर, 2016
- दिनांक 30 दिसंबर, 2016 को स्वच्छ वायु– स्वच्छ शहर विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला

हिन्दी प्रकाशन

- प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना – एक नजर में
- गन्नें में समेकित पोषक तत्व एवं नाशीजीव प्रबंधन
- राष्ट्रीय कृषि बाजार–एक परिचय
- आम के बागों का प्रबंधन
- भारत सरकार की मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना
- महिला अनुकूल कृषि यंत्र
- महिला अनुकूल बागवानी यंत्र
- प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना–एक दृष्टि
- पपीते की सफल खेती
- बटन मशरुम की मौसमी खेती
- उड़द एवं मूँग की उन्नत खेती
- सरसों की उन्नत खेती
- आंवले के मूल्य सवंर्धित उत्पादों द्वारा ग्रामीण महिला उन्नतीकरण
- बाग स्थापना की वैज्ञानिक विधि
- पशुओं के लिए वर्ष भर हरे चारे का प्रबन्धन
- छोटी जोत के किसानों के लिए कृषि मशीनरी
- कृषि प्रणाली में समन्वित मछली पालन
- स्मार्ट कृषि
- सब्जियों की उन्नत पौध उत्पादन
- गेंहूँ की उन्नत खेती
- कृषि संबंधी लेख "छोटे किसानों के लिए सहायक व्यवसाय के रूप में सिंघाड़े की खेती"

भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोच्चि

हिन्दी चेतना मास

भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थाान, कोचीन में सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अधिकाधिक कार्य हिन्दी में करने हेतु प्रोत्साहित करने के उद्देश्यों से 1 से 29 सितंबर, 2016 तक विभिन्न कार्यक्रमों के साथ हिन्दी चेतना मास आयोजित किया गया।

इस दौरान संस्थान के कर्मचारियों के लिए हिन्दी टिप्पण, आलेखन एवं शब्दावली, वर्ग पहेली, प्रश्नोत्तरी, समाचार वाचन आदि प्रतियोगिताएं आयोजित की गयीं।

हिन्दी चेतना मास का समापन कार्यक्रम दिनांक 30 सितंबर, 2016 को डॉ. आर. नारायणकुमार, अध्यक्ष, एस ई ई टी टी प्रभाग की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। डॉ. नारायण कुमार ने अध्यक्षीय भाषण में सरल एवं सहज हिन्दी के प्रयोग की आवश्यकता बतायी। श्रीमती वर्षा गोडबोले, क्षेत्रीय प्रबंधक,

श्रीमती वर्षा गोडबोले, क्षेत्रीय प्रबंधक, नेशनल इन्श्योरेंस कंपनी लिमिटेड अध्यक्षीय भाषण देते हुए

नेशनल इन्श्योरेंस कंपनी लिमिटड कार्यक्रम में मुख्य अतिथि रही। उन्होंने कार्यालयों में संघ की राजभाषा नीति का यथापेक्षित अनुपालन सुनिश्चित करने पर बल दिया तथा आह्वान किया कि केवल कार्यक्रमों/समारोहों तक सीमित न होकर राजभाषा का प्रयोग वर्ष भर किया जाना चाहिए।

श्री सी. मुरलीधरन, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी ने स्वागत संबोधन किया। श्री नवीन कुमार यादव, सहायक निदेशक (रा.भा.) ने श्री राधा मोहन सिंह, माननीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री, भारत सरकार के संदेश तथा श्री राजनाथ सिंह, माननीय गृह मंत्री, भारत सरकार के संदेश का वाचन किया।

इस अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं तथा हिन्दी में मूल काम करने की प्रोत्साहन योजनाओं के विजेताओं को नकद पुरस्कार तथा प्रमाण–पत्र प्रदान किए गए। समुद्री जैवविविधता प्रभाग को राजभाषा रॉलिंग ट्रोफी प्रदान की गयी।

श्री नवीन कुमार यादव, सहायक निदेशक (रा.भा.) ने धन्यवाद ज्ञापित किया। राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

संस्थान के सभी क्षेत्रीय एवं अनुसंधान केन्द्रों में सितंबर, 2016 महीने के दौरान विभिन्न कार्यक्रमों और प्रतियोगिताओं के साथ हिन्दी सप्ताह पखवाड़ा मनाया गया।

हिन्दी कार्यशालाएं

संस्थान के कार्मिकों को हिन्दी में वार्तालाप करने की हिचक दूर करने और हिन्दी में काम करने की प्रेरणा देने के उद्देश्य से वर्ष के दौरान संस्थान में बोलचाल की हिन्दी विषय पर चार कार्यशालाएं – 09 मार्च 2016, 14 जून 2016, 04 जुलाई 2016 और 08 दिसंबर 2016 को आयोजित की गयीं।

इसी तरह संस्थान के विभिन्न क्षेत्रीय तथा अनुसंधान केन्द्रों में भी हिन्दीं कार्यशालाएं आयोजित की गयीं।

वैज्ञानिक हिन्दी संगोष्ठी का आयोजन

अनुसंधान के क्षेत्र में हिन्दी के प्रयोग के प्रचार और अनुसंधान गतिविधियों का हिन्दी में विकीर्णन करने के उद्देश्य से भा.कृ.अनु.प–केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के मुख्यालय, कोच्चि में 09 मार्च, 2016 को ''समुद्री संवर्धन'' विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक हिन्दी संगोष्ठी आयोजित की गयी। संगोष्ठी की उद्घाटन सभा में श्री अभय कुमार सिंह, आयकर आयुक्त (अपील), एरणाकुलम मुख्य अतिथि रहे। श्रीमती बिन्दु पी.वी., उपनिदेशक (कार्यान्वयन), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, नई दिल्ली ने बधाई भाषण दिया. डॉ. इमेल्डाक जोसफ, प्रधान वैज्ञानिक

पुरस्कार वितरण का दृश्य

तथा समुद्री संवर्धन प्रभाग के प्रभारी वैज्ञानिक एवं संगोष्ठी के आयोजक ने स्वाागत भाषण दिया और श्रीमती ई.के. उमा, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (हिन्दी) ने कृतज्ञता प्रकट की।

संस्थान मुख्यालय और विभिन्न क्षेत्रीय एवं अनुसंधान केन्द्रों के वैज्ञानिकों ने संगोष्ठी में भाग लिया। संगोष्ठी में कुल 25 अनुसंधान लेख प्रस्तुत और पोस्टर के रूप में प्रदर्शित किए गए। उत्कृष्ट लेख प्रस्तुतीकरण और पोस्टरों के लिए पुरस्कार प्रदान किए गए।

इस अवसर पर ''समुद्री संवर्धन'' विषयक विशेष हिन्दी प्रकाशन का लोकार्पण किया गया।

''समुद्री संवर्धन'' विषयक विशेष हिन्दी प्रकाशन के लोकार्पण का दृश्य

प्रमुख उपलब्धियॉं

- केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोचीन को वर्ष 2014–2015 के दौरान 'ग' क्षेत्र में स्थित भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के संस्थानों में राजभाषा गतिविधियों के उत्कृष्ट निष्पादन के लिए राजर्षि टंडन पुरस्कार प्राप्त हुआ। विज्ञान भवन, नई दिल्ली में 16 जुलाई, 2016 को आयोजित भा.कृ.अनु.प. स्थापना दिवस समारोह में डॉ. गोपालकृष्णन, निदेशक, सी.एम.एफ.आर.आई. ने श्री परषोत्तमम रूपाला, माननीय केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री से पुरस्कार प्राप्त किया। श्री सुदर्शन भगत, माननीय केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य

डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक, सी.एम एफ.आर.आई. राजर्षि टंडन पुरस्कार प्राप्त करते हुए

मंत्री, डॉ. त्रिलोचन महापात्र, सचिव, डेयर एवं महानिदेशक, भा.कृ.अनु.प., नई दिल्ली भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

- हिन्दी शिक्षण योजना, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार का नया प्रशिक्षण पाठ्यक्रम 'पारंगत' का नया सत्र भा.कृ.अनु.प.–सी.एम.एफ.आर.आई. में 4 जुलाई, 2016 से 19 नवंबर, 2016 तक आयोजित किया गया। संस्थान के विभिन्न प्रभागों और अनुभागों से कुल 27 अधिकारियों/कर्मचारियों को 5 महीने की अवधि के इस प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के लिए नामित किया गया।
- भा.कृ.अनु.प. – केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान केन्द्र को कोच्चि नगर के केन्द्र सरकार के कार्यालयों में वर्ष 2014–15 के दौरान राजभाषा हिन्दी के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए राजभाषा रॉलिंग ट्रॉफी (द्वितीय स्थान) प्राप्त हुई। आयकर कार्यालय, कोच्चि में दिनांक 12.05.2016 को आयोजित बैठक में श्री पी. आर. रविकुमार, आई आर एस, प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त से श्री वी. मोहनन, प्रशासनिक अधिकारी, सी.एम.एफ.आर.आई. ने रॉलिंग ट्रॉफी स्वीकार की।
- सी.एम.एफ.आर.आई. समाचार – कडलमीन के लिए उत्कृष्ट गृह पत्रिका की रॉलिंग ट्रोफी (चौथा स्थान) भी प्राप्त हुआ।

श्री वी. मोहनन, प्रशासनिक अधिकारी, सी.एम.एफ.आर.आई रॉलिंग ट्रॉफी प्राप्त करते हुए

हिन्दी प्रकाशन

- कडलमीन–सी.एम.एफ.आर.आई. समाचार
- समुद्री संवर्धन
- सी.एम.एफ.आर.आई. नागरिक चार्टर

भा.कृ.अनु.प.–भारतीय बीज विज्ञान संस्थान, मऊ

हिन्दी पखवाड़ा

भारतीय बीज विज्ञान संस्थान, मऊ में राष्ट्रीय एकता, भाषा सद्भाव एवं कृषि तकनीकी के प्रसार में हिन्दी के योगदान पर जोर देते हुए दिनांक 14.01.2016 से 28.09.2016 तक विभिन्न कार्यक्रमों और प्रतियोगिताओं के साथ हिन्दी पखवाड़ा आयोजित किया गया। हिन्दी पखवाड़े का उदघाटन दिनांक 14.09.2016 को डॉ. दिनेश कुमार अग्रवाल (कार्यवाहक निदेशक) द्वारा किया गया। इस अवसर पर "कृषि अनुसंधान की सफलता का आधार–हिन्दी भाषा" विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। डॉ. दिनेश कुमार अग्रवाल (कार्यवाहक निदेशक) ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की।

इस दौरान संस्थान के कर्मचारियों और वैज्ञानिकों के लिए हिन्दी में विभिन्न प्रतियोगिताएं कंप्यूटर पर यूनिकोड में टंकण प्रतियोगिताएं क्रमशः टिप्पण/प्रारूपण प्रतियोगिता, हिन्दी अनुवाद प्रतियोगिता, वाद–विवाद प्रतियोगिता, तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता, निबंध लेखन (हिन्दी भाषी) प्रतियोगिता एवं निबंध लेखन (गैर–हिन्दी भाषी) प्रतियोगिता एवं प्रश्न मंच प्रतियोगिता आयोजित की गयी।

हिन्दी पखवाड़े का समापन समारोह दिनांक 28.09.2016 को आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. दिनेश कुमार अग्रवाल (कार्यवाहक निदेशक) ने की। अपने भाषण में उन्होंने बोलचाल की हिन्दी की महत्ता सुझाई। डॉ. तपेन्द्र कुमार श्रीवास्तव (प्रधान वैज्ञानिक), भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ कार्यक्रम में मुख्य अतिथि थे।

हिन्दी कार्यशालाएं

वर्ष के दौरान संस्थान में दो हिन्दी कार्यशालाएं आयोजित की गयीं, जिनका विवरण नीचे दिया गया है –

कार्यशाला की तारीख	विषय	प्रतिभागियों की संख्या
16.02.16	कृषक संपर्क की भाषा के रूप में हिन्दी	31
02.04.16	कृषि तकनीकी के प्रसार में हिन्दी का योगदान	26
14.09.16	कृषि अनुसंधान की सफलता का आधार–हिन्दी भाषा	28
27.10.16	जन संपर्क का आधार–हिन्दी भाषा	21

अन्य गतिविधियां

भारतीय बीज विज्ञान संस्थान, मऊ द्वारा एक छमाही राजभाषा पत्रिका–"बीज" का प्रकाशन किया जाता है। उपरोक्त पत्रिका में राजभाषा उन्नयन, सम्बंधित संस्थान की गतिविधियाँ, समसामयिक वैज्ञानिक लेख, कविता, कहानियां व चुटकुले प्रकाशित किये जाते हैं। पत्रिका पूर्णतः हिन्दी भाषा व देवनागरी लिपि में प्रकाशित की जाती है। उपरोक्त पत्रिका के प्रकाशन हेतु एक सम्पादक मंडल का गठन किया गया है।

भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय पशु पोषण एवं शरीर क्रिया विज्ञान संस्थान, बेंगलुरू

हिन्दी पखवाड़ा

दिनांक 14 सितंबर 2016 को हिन्दी पखवाड़े का उद्घाटन किया गया तथा हिन्दी गान प्रतियोगिता के साथ हिन्दी पखवाड़े का शुभारंभ हुआ। इस आयोजन को सफल एवं रोचक बनाने के लिए संस्थान में कुल 10 प्रतियोगिताओं के साथ एक हिन्दी कार्यशाला का भी आयोजन किया गया।

दिनांक 30.09.2016 को सम्पन्न हुए हिन्दी पखवाड़े के समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह में डॉ. सुनील कुमार पनवार, आई.एफ.एस., सचिव, कर्नाटक सूचना आयोग का कार्यालय, बेंगलूर–560 001 को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत आईएसीएआर गान से शुरू हुई। डॉ. के.एस. रॉय, प्रधान वैज्ञानिक ने कार्यक्रम का संचालन किया। डॉ. आशीष मिश्रा, प्रधान वैज्ञानिक ने अध्यक्ष तथा मुख्य अतिथि के साथ सभा में उपस्थित व्यक्तियों का स्वागत किया। डॉ. स्वराज सेनानी, प्रधान वैज्ञानिक ने प्रतियोगिताओं के बारे में संक्षिप्त विवरण दिया। अध्यक्ष महोदय ने अपने सम्बोधन में हिन्दी भाषा के बारे में तथा हिन्दी कार्यान्वयन के बारे में समझाया तथा हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित की गई प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले सभी अधिकारी/कर्मचारियों को हार्दिक बधाई दी। तदुपरांत प्रतियोगिता के विजेताओं को मुख्य अतिथि के कर कमलों द्वारा पुरस्कार वितरण किया गया। डॉ. पी.के. मालिक के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हिन्दी पखवाड़े का समापन हुआ।

हिन्दी कार्यशालाएं

- दिनांक 10.03.2016 को हिन्दी टिप्पण और आलेखन विषय पर अतिथि वक्ता श्रीमती बी.बिन्दु, सहायक निदेशक, हिन्दी शिक्षण योजना को इस कार्यशाला के संचालन के लिए आमंत्रित किया गया था। इस कार्यशाला में कुल 21 वैज्ञानिकों/अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया।
- दिनांक 20.06.2016 को हिन्दी का प्रयोग क्यों और कैसे विषय पर अतिथि वक्ता श्री अशोक कुमार बिल्लूरे, आईएसआरओ को इस कार्यशाला के संचालन के लिए आमंत्रित किया गया था। इस कार्यशाला में कुल 25 वैज्ञानिकों/अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया।

- दिनांक 07.09.2016 को राजभाषा कार्यान्वयन में इन्टरनेट का उपयोग विषय पर श्री मानसिंह, सहायक निदेशक, हिन्दी शिक्षण योजना को इस कार्यशाला के संचालन के लिए आमंत्रित किया गया था। इस कार्यशाला में कुल 27 वैज्ञानिकों/अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया।
- दिनांक 28.12.2016 को 'हिन्दी में व्याकरणिक समस्याएँ एवं समाधान' विषय पर श्री अजय कुमार श्रीवास्तव, सहायक निदेशक, हिन्दी शिक्षण योजना को इस कार्यशाला में उपरोक्त विषय पर व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया गया था। इस कार्यशाला में कुल 12 वैज्ञानिकों/अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया।
- दिनांक 21–23 मार्च 2016 को एक दो दिवसीय हिन्दी प्रशिक्षण/हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला में कुल 26 वैज्ञानिकों/अधिकारियों/ कर्मचारियों ने भाग लिया।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में संयुक्त हिन्दी दिवस के अवसर पर इस संस्थान में दिनांक 28 अक्तूबर 2016 को हिन्दी 'एकल गीत प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में केंद्र सरकार के विविध कार्यालयों के कुल 31 अधिकारी/कर्मचारियों ने भाग लिया।

एनआईएएनपी में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में संयुक्त हिन्दी दिवस का आयोजन

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में आयोजित संयुक्त हिन्दी दिवस के अवसर पर इस संस्थान के डॉ. यश और डॉ. गिरिधर ने मौखिक प्रश्नोत्तरी में तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया और तकनीकी लेख प्रतियोगिता में डॉ. ज्योतिर्मय घोष ने प्रथम और डॉ. के.एस. रॉय ने सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया तथा यह तकनीकी लेख न.रा.का.स द्वारा प्रकाशित होनेवाली गृह पत्रिका में प्रकाशित किया जाएगा।

प्रमुख उपलब्धियां

- हिन्दी प्रशिक्षण – इस संस्थान में राजभाषा विभाग के हिन्दी शिक्षण योजना द्वारा चलाए गए प्राज्ञ और पारंगत पाठ्यक्रम पूरा हुआ है।

हिन्दी प्रकाशन

- डेयरी भैंसों में एकीकृत प्रजनन तथा पशु–पोषण की उपलब्ध प्रौद्योगिकी को प्रकाशित किया। इन पुस्तकों का विमोचन संस्थान के स्थापना दिवस के अवसर पर 24 नवंबर 2016 को किया गया।
- जनवरी–जून संस्थान का न्यूज लेटर प्रकाशन के लिए अनुवादित किया गया।

भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय जैविक स्ट्रैस प्रबंधन संस्थान, रायपुर

हिन्दी पखवाड़ा

विगत वर्षों की तरह इस वर्ष भी संस्थान में दिनांक 14–28 सितम्बर, 2016 के दौरान हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। पखवाड़ा का शुभारंभ 14 सितम्बर 2016 को संस्थान निदेशक डॉ. जगदीश कुमार की अध्यक्षता में हुआ। निदेशक ने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने एवं शासकीय कार्य हिन्दी में करने पर जोर दिया। डॉ. पंकज कौशल, संयुक्त निदेशक (अनुसंधान) ने सभी वैज्ञानिकों से कृषि तकनीकी और अपनी शोध उपलब्धियों को आम जनता/किसानों तक हिन्दी में पहुंचाने का अनुरोध किया।

हिन्दी पखवाड़ा के दौरान डॉ. वी.एन. दुबे द्वारा व्याख्यान दिया गया। इस अवसर पर डॉ. वी.एन. दुबे ने राजभाषा हिन्दी पर प्रकाश डाला तथा इस संस्थान से स्थानीय व देश के लोगों की अपेक्षाओं की व्याख्या करते हुए सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से कार्यालय के दैनिक काम काज में राजभाषा के प्रयोग पर बल देने का आग्रह किया। अपने सम्बोधन में इस कार्यक्रम में आमंत्रण पर खुशी व्यक्त करते हुये निदेशक व सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के प्रति आभार प्रकट किया। हिन्दी पखवाड़ा के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे निबन्ध, सुलेख व श्रुतिलेख आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। हिन्दी पखवाड़ा का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह 28 सितम्बर, 2016 को निदेशक महोदय और मुख्य अतिथि श्री दीपक मिश्रा, उप प्राचार्य शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, सारागांव की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। मुख्य अतिथि, निदेशक, संयुक्त निदेशक

(अनुसंधान) द्वारा प्रतियोगिताओं में विजेता कर्मचारियों को नकद पुरस्कार व प्रशस्ति पत्र देकर पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर निदेशक महोदय ने पन्द्रह दिन चले विभिन्न कार्यक्रमों में उत्साहपूर्वक भाग लेने के लिए अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई दी। हिन्दी पखवाड़ा के सफल आयोजन के लिए राजभाषा समिति के सभी सदस्यों की सराहना करते हुये राजभाषा के और अधिक प्रयोग के लिए सतत् प्रयास पर बल देने को कहा। श्री दीपक मिश्रा ने कार्यक्रम में शामिल होकर खुशी प्रकट करते हुये सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से हिन्दी में अधिकाधिक कार्य करने पर जोर दिया। अन्त में धन्यवाद प्रस्ताव के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

हिन्दी प्रकाशन

- अनिल दीक्षित एवं विजय कुमार चौधरी, 2016– सब्जियों में खरपतवार प्रबंधन।
- के.सी.शर्मा एवं आर.के.मुरली बास्करन, 2016– फेरोमोन प्रपंच एक प्रभावी हथियार द्वारा धान में पीला तना छेदक कीट का कम लागत पर प्रबंधन।
- संजय कुमार जैन, विजय कुमार चौधरी, पंकज कौशल एवं जगदीश कुमार, 2016 – छत्तीसगढ़ में धान की फसल के प्रमुख रोग एवं उनका प्रबंधन।
- अनिल दीक्षित एवं विजय कुमार चौधरी, 2016 – कांस का समन्वित नियंत्रण।
- अनिल दीक्षित, विजय कुमार चौधरी एवं मल्लिकार्जुना जे., 2016 – धान के नाशीकीटों का समन्वित प्रबंधन।
- विजय कुमार चौधरी एवं अनिल दीक्षित, 2016 – धान की फसल में समेकित खरपतवार प्रबंधन।
- ममता चौधरी, एस.बी. बारबुद्धे एवं लता जैन, 2016 – दुधारू पशुओं के प्रमुख संक्रामक रोग एवं उनके निराकरण।
- विनोद कुमार चौधरी, ममता चौधरी, एस.बी. बारबुद्धे एवं विजय कुमार चौधरी, 2016 – समेकित मत्स्य पालन में मछलियों के प्रमुख रोग, लक्षण एवं प्रबंधन।

भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर

हिन्दी पखवाड़ा

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली से प्राप्त पत्रांक 10(1)/2015–हिन्दी दिनांक 4 अगस्त, 2016 में निहित दिशा–निर्देशों की अनुपालन में भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर में दिनांक 01–15 सितम्बदर, 16 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया जिसमें निम्नलिखित राजभाषा संबंधी विभिन्न गतिविधियां व कार्यक्रम आयोजित किए गए –

हिन्दी पखवाड़ाः उद्घाटन कार्यक्रम – केन्द्र में दिनांक 01 सितम्बर, 2016 को हिन्दी पखवाड़े का विधिवत् शुभारम्भ हुआ। इस अवसर पर हिन्दी दिवस मनाने की परंपरा पर प्रकाश डालते हुए राजभाषा के अधिकाधिक प्रयोग हेतु सभी कार्मिकों को प्रोत्साहित किया गया एवं श्रीमान राधा मोहन सिंह, माननीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री, भारत सरकार द्वारा हिन्दी दिवस, 2016 पर जारी संदेश का वाचन किया गया। इस अवधि के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं जैसे हिन्दी सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, हिन्दी में टिप्पणी एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता, हिन्दी में शुद्ध लेखन प्रतियोगिता तथा हिन्दी में निबन्ध लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई।

दिनांक 14 सितम्बर, 2016 को हिन्दी पखवाड़े का मुख्य समारोह मनाया गया जिसमें मुख्य अतिथि, डॉ. मदन केवलिया, वरिष्ठ साहित्यकार, बीकानेर ने कहा कि आज अति आधुनिक युग में भी हिन्दी ने सूचना प्रौद्योगिकी, संचार, बाजारवाद आदि सभी क्षेत्रों में चुनौतियों को स्वीकार करते हुए अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाया है। अतः हमें हिन्दी के शुद्धिकरण, सरलता एवं व्यावहारिक अनुवाद की ओर भी ध्यान देना होगा। इस अवसर पर श्रीमान राजनाथ सिंह, माननीय गृहमंत्री, भारत की ओर से हिन्दी दिवस–2016 के उपलक्ष्य

पर जारी संदेश का वाचन किया गया। केन्द्र निदेशक एवं कार्यक्रम अध्यक्ष डॉ. एन.वी. पाटिल ने हिन्दी भाषा को धरोहर के रूप में बताते हुए कहा कि अब हर जगह–हर क्षेत्र में हिन्दी को अपनाना होगा क्योंकि अब हिन्दी समझने व समझाने में किसी प्रकार की बाधा नहीं है। हास्य कवि श्री विजय कुमार धमीजा ने कविता पाठ किया। वहीं प्रभारी राजभाषा डॉ. सुमन्त व्यास ने राजभाषा गतिविधियों के बारे में जानकारी दी। अतिथियों द्वारा हिन्दी पखवाड़े के अंतर्गत आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए।

हिन्दी कार्यशालाएं

राजभाषा कार्यशाला एवं हिन्दी पखवाड़ा समापन कार्यक्रम – दिनांक 15.09.16 को हिन्दी पखवाड़े के समापन कार्यक्रम से पूर्व कम्प्यूटर के माध्यम से हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु 'कम्प्यूटर पर हिन्दी प्रयोग' विषयक आयोजित राजभाषा कार्यशाला में अतिथि वक्ता श्री अनिल कुमार शर्मा, सचिव, नराकास एवं राजभाषा अधिकारी, उ.प. रेलवे, बीकानेर ने प्रतिभागियों को गूगल वॉईस टाईपिंग सुविधा का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया तथा बताया कि अब हिन्दी में कम्प्यूटर पर टाईप करना समस्या नहीं है केवल आपके बोलने भर की देरी है। हिन्दी पखवाड़े के समापन कार्यक्रम में प्रभारी राजभाषा डॉ. सुमन्त व्यास ने केन्द्र में दिनांक 01–15 सितम्बर के दौरान हिन्दी पखवाड़े की समस्त गतिविधियों का संक्षिप्त ब्यौरा प्रस्तुत किया। इस अवसर पर केन्द्र निदेशक डॉ. पाटिल ने हिन्दी पखवाड़े की गतिविधियों की सार्थकता एवं सभी प्रतिभागियों की सक्रिय भागीदारी हेतु उन्हें बधाई देते हुए कहा कि इन प्रतियोगिताओं के माध्यम से न केवल राजभाषा प्रयोग को बढ़ावा मिला है अपितु इनसे कार्मिकों की कार्यक्षमता में भी अभिवृद्धि हुई है।

दिनांक 22 मार्च, 2016 को कार्यशाला में अतिथि वक्ता डॉ. गौरव बिस्सा, सह आचार्य, राजकीय अभियान्त्रिकी महाविद्यालय, बीकानेर ने 'अभिप्रेरणा द्वारा प्रबंधकीय उत्कृष्टता' विषयक व्याख्यान में कहा कि कार्मिकों में अपने संस्थान के प्रति अपनत्व, कार्यक्षेत्र पर गर्व होने का बोध सच्ची अभिप्रेरणा जागृत करने का एक मुख्य स्रोत है। अतिथि वक्ता ने समस्या पर बोलने के साथ–साथ उसे सुलझाने, नकारात्मकता से बचने, समय–सीमा में काम करने, कार्यक्षेत्र के प्रति कर्तव्य, बोध को सही मायने में जीवन समझने, गुणवत्ता पर ध्यान केन्द्रित करने, दायित्व का हस्तांतरण नहीं करने, स्वस्थ वातावरण में कार्य करने, लक्ष्य के प्रति अगाध समर्पण करने, स्वःप्रेरणा/इच्छाशक्ति से कार्य करने एवं निष्काम कर्म करने आदि विभिन्न उपयोगी बातों से प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन किया।

दिनांक 23 मई, 2016 के कार्यशाला में अतिथि वक्ता के रूप में प्रसिद्ध समालोचक, लेखक एवं चिंतक डॉ. नंद किशोर आचार्य द्वारा 'गांधी, विज्ञान व तकनीकी एवं विकास' विषयक व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। कार्यशाला के विचार–सत्र में अतिथि वक्ता के समक्ष प्रतिभागियों ने विषय से संबद्ध अनेक जिज्ञासाएं रखीं जिसका उचित निराकरण प्रस्तुत किया गया। डॉ. पाटिल ने कहा कि पूरा समाज तकनीकी/उपलब्धियों से लाभान्वित हो तभी यह समझा जाएगा कि हमारा राष्ट्र सुविकसित हो रहा है। प्रभारी राजभाषा डॉ. सुमन्त व्यास ने कार्यशाला का संचालन किया।

दिनांक 24 अक्टूबर, 2016 को केन्द्र में ''स्वच्छ भारत अभियान'' के तहत 'जल संरक्षण' पर आयोजित राजभाषा कार्यशाला में अतिथि वक्ता के रूप में श्री हेम शर्मा, डिप्टी न्यूज एडिटर, राजस्थान पत्रिका, बीकानेर को आमंत्रित किया गया। श्री हेम शर्मा ने बताया कि जल को कर्म चेतना का अंश माना गया है। यह सजीव जगत में ठीक वैसे ही है जैसे पेड़ आदि को हम मानते हैं। परंतु जल जीवन का अंश होने के बावजूद इसके प्रति आम जन में चेतना का अभाव है ।

प्रमुख उपलब्धियां

भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बीकानेर की ओर से वर्ष 2015–16 के दौरान नगर में राजभाषा का 'विशिष्ट कार्यों' में उत्कृष्ट प्रयोग करने के लिए सम्मानित किया गया। यह सम्मान दिनांक 03.06.2016 को मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय में संपन्न नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बीकानेर की

प्रथम छमाही बैठक में श्री राजीव सक्सेना, अध्यक्ष, नराकास एवं मंडल रेल प्रबंधक, बीकानेर द्वारा केन्द्र निदेशक डॉ. एन. वी. पाटिल को प्रशस्ति पत्र भेंट किया गया।

हिन्दी प्रकाशन

- राजभाषा पत्रिका करभ अंक–13
- टोरडियों में ठीकरिया (स्किन कैंडीडियोसिस)–विस्तार पत्रक
- ऊँटों से मनुष्यों में फैलने वाली बीमारियां और उनकी रोकथाम–विस्तार पत्रक

भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केंद्र, अजमेर

हिन्दी पखवाड़ा

राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केंद्र, अजमेर (राजस्थान), पर विगत वर्षो की तरह इस वर्ष भी राजभाषा हिन्दी पखवाड़ा 1–15 सितम्बर, 2016 के दौरान मनाया गया। पखवाड़ा का शुभारम्भ 1 सितम्बर 2016 को राजभाषा क्रियान्वयन समिति की बैठक के साथ हुई जिसमें डा. एस. एन. सक्सेना, प्रधान वैज्ञानिक, रा.बी.म.अनु.केंद्र ने अध्यक्षता की। केंद्र पर राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग हेतु अनेक सुझावों पर चर्चा की गयी। 3 सितम्बर, 2016 को संस्थान में कार्यरत वैज्ञानिक, अधिकारी एवं कर्मचारी के बच्चों की हिन्दी में अभिरुचि हेतु बाल प्रतियोगिता का आयोजन हुआ जिसमें हिन्दी काव्य पाठ तथा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता हुई। सफल बाल प्रतिभागियों को पुरस्कार वितरण किया गया।

हिन्दी पखवाड़े के दौरान अनेक प्रतियोगिताओं का जैसे वाद–विवाद, तत्काल/आशु भाषण, टिप्पणी–लेखन, कर्मचारी–वर्ग हेतु हिन्दी लेखन प्रतियोगिता, निबन्ध लेखन का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में संस्थान में कार्यरत वैज्ञानिक, अधिकारी, कर्मचारी, एवं अनुसंधान अध्येता वर्ग के लोगो ने अधिक संख्या में हिस्सा लिया। डॉ. गोपाल लाल, निदेशक रा.बी.म.अनु. केंद्र ने संस्थान के सभी लोगों को हिन्दी में कार्य करने के लिए विशेष तौर पर प्रेरित किया तथा मानक वर्तनी के प्रयोग को वैज्ञानिक लेखो में बढ़ावा देने पर बल दिया । राजभाषा हिन्दी के प्रभारी डॉ. बृजेश कुमार मिश्र ने विभिन्न कार्यक्रमों के सफल आयोजन हेतु केन्द्र के निदेशक डा. गोपाल लाल के मार्गदर्शन को रेखांकित करते हुए निर्णायक मण्डल के सदस्यों एस. एन. सक्सेना, डॉ. आर. के. कांकाणी तथा डॉ. युगल किशोर शर्मा का विशेष आभार व्यक्त किया। सफल प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किये गये और समस्त वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों को इस हिन्दी पखवाड़ा कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए धन्यवाद ज्ञापन किया गया। इस राजभाषा हिन्दी पखवाड़ा में कार्यालय में हिन्दी के और अधिक प्रयोग पर सभी लोगों को ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता पर जोर दिया गया।

हिन्दी प्रकाशन

- बीजीय मसाला फसलों के उत्पादन की उन्नत प्रौद्योगिकियाँ – कृषक प्रशिक्षण मैन्युअल –2017/1
- राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केन्द्र –वार्षिक कैलेन्डर (द्विभाषीय) – 2016
- वार्षिक प्रतिवेदन 2015–16 राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केन्द्र, अजमेर
- राष्ट्रीय बीज वितरण किसान मेला एवं किसान गोष्ठी – 2016 का ब्रोशर
- प्रसार पत्रक –राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केन्द्र, अजमेर
  - मुख्य बीजीय मसाला फसलों की आधुनिक प्रौद्योगिकी। रा.बी.म.अनु. केन्द्र – प्रसार पत्रक–1/2016।
  - बीजीय मसाला फसलों की उन्नत प्रजातियाँ। रा.बी.म.अनु. केन्द्र – प्रसार पत्रक –2/2016।
  - गौण बीजीय मसाला फसलों की आधुनिक प्रौद्योगिकी। रा.बी.म.अनु. केन्द्र – प्रसार पत्रक–3/2016।
  - बीजीय मसाला फसलों के रोग एवं उनका प्रबन्धन। रा.बी.म.अनु. केन्द्र – प्रसार पत्रक 4/2016।

- बीजीय मसाला फसलों के मुख्य कीट एवं उनका समेकित प्रबन्धन। रा.बी.म.अनु. केन्द्र – प्रसार पत्रक 5/2016।
- बीजीय मसाला फसलों की जैविक खेती। रा.बी.म. अनु. केन्द्र – प्रसार पत्रक –6/2016।
- बीजीय मसाला फसलों में मूल्य संवर्धन की संभावनायें। रा.बी.म.अनु. केन्द्र – प्रसार पत्रक –7/2016।
- गुणवत्ता युक्त बीजीय मसाले उत्पादन हेतु आवश्यक मानदंड। रा.बी.म.अनु. केन्द्र – प्रसारपत्रक 8/2016।
- बीजीय मसाला फसलों में समुचित पोषक तत्व प्रबन्धन। रा.बी.म.अनु. केन्द्र – प्रसार पत्रक – 9/2016।
- बूंद–बूंद सिंचाई व उर्वरक तकनीकी/ शुष्क व अर्ध शुष्कीय क्षेत्रों के बीजीय मसाला खेतिहरों के लिए वरदान। रा.बी.म.अनु. केन्द्र – प्रसार पत्रक –10/2016।
- बीजीय मसाला फसलों में परागण प्रबन्धन। रा.बी.म.अनु. केन्द्र – प्रसार पत्रक – 11/2016।

भा.कृ.अनु.प.–भारतीय प्राकृतिक राल एवं गोंद संस्थान, राँची

हिन्दी दिवस

भारतीय प्राकृतिक राल एवं गोंद संस्थान, रांची में राजभाषा अधिनियम के अनुपालन एवं कार्यालय कार्य में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग में उत्तरोत्तर वृद्धि के लिए संस्थान में दिनांक 01.09.2016 से 30.09.2016 तक हिन्दी चेतना मास का पालन किया गया तथा दिनांक 01.10.2016 को अपराह्न 02.30 बजे चेतना मास के समापन समारोह के रूप में हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया गया।

हिन्दी दिवस समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित न्यायमूर्ति श्री विक्रमादित्य प्रसाद, अवकाश प्राप्त न्यायाधीश, रांची उच्च न्यायालय ने न्यायालयों में हिन्दी के प्रयोग की स्थिति विषय पर बोलते हुए कहा कि न्यायपालिका में हिन्दी के बजाय अंग्रेजी का अधिक प्रयोग हो रहा है। इसका एक कारण यह भी है कि उच्च न्यायालय एवं सर्वोच्च न्यायालय में न्यायाधीश भारत के विभिन्न भागों से आते हैं तथा उनके लिए हिन्दी में काम करना सहज नहीं होता। न्यायिक साहित्य की दृष्टि से भी हिन्दी में पुस्तकों की उपलब्धता कम है। श्री प्रसाद ने कहा कि साहित्य ऐसा होना चाहिए जो पढ़ने वाले की सोच को प्रभावित कर सके। हिन्दी के विकास के लिए प्रत्येक क्षेत्र के लोगों को अंग्रेजी का मोह छोड़कर इसे अपनाने के लिए पहल करनी होगी। उन्होंने वैज्ञानिकों को हिन्दी में लिखने एवं रोजमर्रा के कामों में हिन्दी की सरलता और सहजता को अपनाने की अपील की।

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रुप में उपस्थित डॉ संजय सिंह, साहित्यकार एवं वैज्ञानिक ई व विभागाध्यक्ष, वन उत्पादकता संस्थान, नगड़ी, रांची ने वैज्ञानिक साहित्य में हिन्दी के प्रयोग की स्थिति पर बोलते हुए कहा कि पहले से स्थितियां अब थोड़ी बदली हैं। ढेर सारे वैज्ञानिक आलेख अब हिन्दी में लिखे जा रहे हैं तथा विज्ञान से जुड़े कई जर्नल अब हिन्दी में निकल रहे हैं। आवश्यकता है हिन्दी में मौलिक लेखन के प्रोत्साहन की। उन्होंने हिन्दी के प्रयोग को प्रोत्साहित करने के लिए सरल हिन्दी के प्रयोग पर जोर दिया।

पुरस्कार प्रदान करते अतिथिगण

संस्थान के निदेशक, डॉ केवल कृष्ण शर्मा ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि हिन्दी चेतना मास के समापन समारोह के रूप में हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया गया है। संस्थान में लम्बे समय से राजभाषा हिन्दी का प्रयोग होता रहा है। हमारे यहां कार्यालय कार्य के साथ–साथ वैज्ञानिक साहित्य में भी हिन्दी का अच्छा प्रयोग हो रहा है। संस्थान द्वारा नियमित अंतराल पर हिन्दी/द्विभाषी पुस्तिकाएं, पत्रक इत्यादि प्रकाशित होते रहते हैं। डॉ. शर्मा ने कहा कि न सिर्फ हिन्दी में बल्कि संस्थान द्वारा राज्य की स्थानीय भाषा एवं बांगला व उड़िया में भी कृषि संबंधी प्रसार साहित्य संस्थान द्वारा प्रकाशित किये गये हैं। संस्थान में केवल हिन्दी चेतना मास में ही नहीं, सामान्य एवं दैनिक कार्यो में भी नियमित रूप से राजभाषा का प्रयोग किया जाता है। उन्होंने कहा कि हमारा पुस्तकालय वैज्ञानिक साहित्य की दृष्टि से बहुत समृद्ध है, साथ ही यहां पर्याप्त संख्या में हिन्दी की पुस्तक/पुस्तिकाएं उपलब्ध हैं। इस अवसर पर संस्थान की वार्षिक राजभाषा पत्रिका लाक्षा–2016 का लोकार्पण भी किया गया।

हिन्दी चेतना मास की अवधि में दिनांक 08–09 सितम्बर 2016 को हिन्दी टिप्पण, प्रारूप लेखन, निबंध, अंताक्षरी, पर्याय, व्याख्यान, पर्यायवाची शब्द एवं विपरीतार्थक शब्द प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। डॉ. एम जेड सिद्दीकी,

लाक्षा 2016 का लोकार्पण

श्री प्रहलाद सिंह, श्री बिनोद कुमार, श्री अनिल कुमार सिन्हा, श्री कृष्ण मुरारी कुमार, डॉ अनिस के, श्री शरत चन्द्र लाल, श्री अश्विनी कुमार, श्री अनिल कुमार शर्मा, श्री मान्देश्वर सिंह, श्री बैजनाथ महतो, श्री जलेश्वर महतो, श्री चैतु कच्छप इत्यादि को पुरस्कार प्रदान किया गया। इसके साथ ही समारोह में लाक्षा–2015 में उत्कृष्ठ आलेख का पुरस्कार डॉ. निरंजन प्रसाद, विभागाध्यक्ष, डॉ. छाया, आर.ए., श्री अमित कुमार कर, आर.ए. को प्रदान किया गया।

कार्यक्रम का संचालन डॉ अंजेश कुमार, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी एवं धन्यवाद ज्ञापन श्री नन्द किशोर ठोंबरे, वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष हिन्दी दिवस समारोह आयोजन समिति ने किया।

इस अवसर पर अन्य संस्थानों के अतिथियों के अतिरिक्त संस्थान के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया।

हिन्दी प्रकाशन

- प्राकृतिक राल एवं गोंद, भा.कृ.अनु.प.–भा.प्रा.रा.गों.सं. समाचार पत्रिका (तिमाही)
- लाक्षा–2016, राजभाषा पत्रिका,
- ईयर प्लानर सह प्रचार पत्रक–2017

भा.कृ.अनु.प–राष्ट्रीय अनार अनुसंधान केन्द्र सोलापुर

हिन्दी पखवाड़ा

राष्ट्रीय अनार अनुसंधान केन्द्र, सोलापुर मे दिनांक 14 से 28 सितंबर 2016 तक हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया तथा इस अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिताओं और हिन्दी कार्यशाला का आयोजन भी किया गया था। हिन्दी पखवाड़ा के दौरान अनेक प्रतियोगिताएं आयोजित की गई।

हिन्दी पखवाड़ा का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह दिनांक 29 सितंबर, 2016 को 3.30 बजे राष्ट्रीय अनार अनुसंधान केंद्र, सोलापुर के सभागार मे आयोगित किया गया। जिसके मुख्य अतिथि डॉ. नवनीत तोशनिवाल तथा अध्यक्ष डॉ. आर. के. पाल, निदेशक राष्ट्रीय अनार अनुसंधान केंद्र, सोलापुर थे। समारोह मे विभिन्न अधिकारियों द्वारा उनके विचार व्यक्त किए गए। मुख्य अतिथि ने अपने भाषण मे हिन्दी भाषा के असीम महत्त्व को उजागर किया तथा हिन्दी को सीधी, आसान एव दिलों को जोड़ने वाली भाषा बताया। उसके उपरान्त मुख्य अतिथि द्वारा प्रतियोगिताओ के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए। इस समारोह का सुत्र संचालन डॉ. डी. टी. मेश्राम, हिन्दी अधिकारी ने किया एवं डॉ. एन. व्ही. सिंह, वैज्ञानिक ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

भा.कृ.अनु.प.–केंद्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पोर्ट ब्लेयर

हिन्दी पखवाडा

हिंदी पखवाडा के सिलसिले में भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पोर्ट ब्लेयर द्वारा 05.09.2016 से 20.09.2016 तक निम्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

सर्वोत्तम प्रतिभागिता पुरस्कार

हिंदी पखवाडा के पूरे कार्यक्रमों के दौरान आयोजित सभी प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले 07 प्रतिभागियों को सर्वोत्तम प्रतिभागिता के लिए स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया।

सर्वोत्तम प्रभाग/अनुभाग/ईकाई

संस्थान द्वारा राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने में जिन प्रभाग/

अनुभाग/ईकाई ने अपने सरकारी कार्यों में (2015–2016) अधिकतम हिंदी का प्रयोग किया है, उन्हें पुरस्कृत करने के उद्देश्य से पुरस्कार निम्न श्रेणियों में विभाजित किया गया:

- प्रभाग
- अनुभाग
- ईकाई/कक्ष

पुरस्कार के रूप में विजेता प्रभाग/अनुभाग/ईकाइ/कक्ष को स्मृति–चिन्ह प्रदान किए गए। यह प्रयास बहुत ही कारगर साबित हुआ तथा पूरे कार्यक्रमों के आकर्षण का केंद्र बना।

राजभाषा संगोष्ठी

भा.कृ.अनु.प.–केंद्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पोर्ट ब्लेयर द्वारा 'हिन्दी पखवाडा' के उद्घाटन समारोह के अवसर पर दिनांक 05.09.2016 को "राष्ट्रीय एकता का प्रतीक – हिन्दी" शीर्षक पर एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संस्थान के वैज्ञानिकों, अधिकारियों व कर्मचारियों ने इस विषय पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

संस्थान के निदेशक डॉ. एस. दाम रॉय ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि यह हमारा दायित्व है कि अपने संस्थान में हमें राजभाषा सम्बन्धी नियमों का समुचित रूप से पालन करेंद्य उन्होंने राजभाषा कक्ष द्वारा तैयार की गई वैज्ञानिकों का प्रसार प्रपत्र एवं बुलेटिन का उल्लेख करते हुए कहा कि संस्थान में किया जा रहा सभी अनुसन्धान कार्य हिंदी में ही किसानों तक पहुँचाया जा रहा है, इसके लिए उन्होंने सभी वैज्ञानिकों, अधिकारियों व कर्मचारियों को बधाई देते हुए कृषि तकनीकों और अपनी शोध उपलब्धियों को आम जनता तक हिंदी या उनकी मातृभाषाओँ में पहुंचाने का अनुरोध किया। उन्होंने संस्थान में हिंदी के क्षेत्र में प्राप्त उपलब्धियों के लिए बधाई देते हुए शुभकामनाएं दी।

राजभाषा कक्ष द्वारा उदघाटन समारोह के अवसर पर पूरे वर्ष के दौरान प्रकाशित सभी प्रसार प्रपत्र, बुलेटिन एवं पत्रिकाओं का प्रदर्शन किया गया और सहायक निदेशक (रा.भा.) द्वारा राजभाषा के कार्यों को स्लाइड प्रस्तुति द्वारा सबके समक्ष रखा गया।

हिन्दी कार्यशालाएं

संस्थान द्वारा हिन्दी में कामकाज करने में आने वाली कठिनाईयों के समाधान हेतु दिनांक 02 नवम्बर, 2016 को प्रातः 10.30 बजे को हिन्दीतर वैज्ञानिक एवं तकनीकी अधिकारियों के लिए सम्मेलन कक्ष में 15 दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का उदघाटन समारोह किया गया। डॉ. एस.दाम रॉय, निदेशक ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। डॉ. एम.एस. कुंडू, प्रधान वैज्ञानिक ने उपस्थित सभा का स्वागत करते हुए राजभाषा के महत्व पर प्रकाश डाला। सहायक निदेशक (रा.भा.) ने कार्यशाला का आयोजन एवं संचालन किया।

डॉ. एस. दाम रॉय, निदेशक के मार्गदर्शन में इस कार्यशाला का आयोजन किया गया। अपने संबोधन में उन्होंने संस्थान के सभी स्टाफ से हिंदी की जानकारी एवं अनिवार्य रूप से हिंदी में कार्य करने की अपील की। उन्होंने अपने संस्थान में की जा रही हिंदी के क्रियाकलापों का भी जिक्र करते हुए हर्ष प्रकट किया। हिन्दीतर वैज्ञानिक एवं तकनीकी अधिकारियों से कार्यशाला में भाग लेकर इसका लाभ उठाने का आह्वान किया। हिंदी प्रशिक्षण हेतु 17 वैज्ञानिकों/तकनीकी अधिकारियों ने अपना नामांकन पत्र दिया और सभी से प्रशिक्षण प्राप्त करने का अनुरोध किया। डॉ. एस. दाम रॉय, निदेशक की अध्यक्षता में इस कार्यशाला का 16 जनवरी, 2017 को समापन किया गया। डॉ. एस. दाम रॉय ने सभी प्रतिभागियों को बधाई देते हुए प्रमाण पत्र का वितरण किया।

अन्य गतिविधियां

- 21 जनवरी, 2016 को गृह मंत्रालय, भारत सरकार, राजभाषा विभाग, नई दिल्ली द्वारा रांची में आयोजित क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्व क्षेत्र) के क्षेत्राधिकार के अन्तर्गत "क" क्षेत्र में हिंदी में उत्कृष्ट कार्य के लिए वर्ष 2014–15, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, पोर्ट ब्लेयर को तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया ।
- संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. ए. वेलमुरुगन एवं अन्य

लेखकों द्वारा हिन्दी में लिखी गई तकनीकी पुस्तक "तटीय एवं द्वीपीय क्षेत्रों में स्थायी कृषि हेतु भूमि एवं जल प्रबंधन" को सर्वोतम तकनीकी पुस्तक के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा 16 जुलाई, 2016 को स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर डॉ. राजेन्द्र प्रसाद पुरस्कार प्रदान किया गया जिसमें सभी लेखकों को प्रमाण–पत्र व सामूहिक रूप से रुपए 50,000/– की धनराशि प्रदान की गयी।

- इस संस्थान को वर्ष 2014–15 के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली द्वारा 16 जुलाई, 2016 को राजर्षि टंडन राजभाषा पुरस्कार योजना के अंतर्गत हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पोर्ट ब्लेयर में राजभाषा उपलब्धियों पर पावर पॉइंट प्रस्तुति/ Power Point Presentation के लिए 59 स्लाइड तैयार की गई तथा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति पोर्ट ब्लेयर के क्रिया कलापों की 30 स्लाइड तैयार की गई। बैठकों, समारोह में इनका प्रदर्शन किया जाता है।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, पोर्ट ब्लेयर द्वारा प्रकाशित पत्रिका "द्वीप तरंग' के द्वितीय अंक का विमोचन 16 जुलाई, 2016 को परिषद के स्थापना दिवस के अवसर पर आयोजित समारोह के दौरान विज्ञान भवन, नई दिल्ली में कृषि मंत्री द्वारा किया गया।

- 12 जनवरी, 2016 को सहायक निदेशक (रा.भा.) श्रीमती सुलोचना को अंतर्राष्ट्रीय साहित्य कला मंच, मुरादाबाद द्वारा पोर्ट ब्लेयर में आयोजित एक दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी के अवसर पर डॉ. कुंदनलाल जैन स्मृति साहित्य सम्मान से सम्मानित किया गया।
- 21 जनवरी, 2016 को गृह मंत्रालय, भारत सरकार, राजभाषा विभाग, नई दिल्ली द्वारा रांची में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, पोर्ट ब्लेयर के सदस्य सचिव के रूप में विशेष योगदान एवं उत्कृष्ट कार्य के लिए श्रीमती सुलोचना, सहायक निदेशक (रा.भा.)/सचिव, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, पोर्ट ब्लेयर को प्रशस्ति–पत्र से सम्मानित किया गया।
- संस्थान के 23 जून, 2016 को स्थापना दिवस/ Foundation Day के अवसर पर भा.कृ.अनु.प.–केंद्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पोर्ट ब्लेयर द्वारा वर्ष 2015–16 के दौरान हिंदी के प्रसार प्रचार के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य हेतु डॉ. के. अबिरामी, वरिष्ठ वैज्ञानिक, बागवानी एवं वानिकी प्रभाग श्री के. सरवनन, वैज्ञानिक, मात्सियकी प्रभाग को सम्मानित किया गया।
- संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. ए. वेलमुरुगन एवं अन्य लेखकों द्वारा हिन्दी में लिखी गई तकनीकी पुस्तक "तटीय एवं द्वीपीय क्षेत्रों मेंस्थायी कृषि हेतु भूमि एवं जल प्रबंधन" को सर्वोतम तकनीकी पुस्तक के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा 16 जुलाई, 2016 को स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर डॉ. राजेन्द्र प्रसाद पुरस्कार प्रदान किया गया जिसमें सभी लेखकों को प्रमाण–पत्र व सामूहिक रूप से रुपए 50,000/– की धनराशि प्रदान की गयी।

वैज्ञानिकों द्वारा शोध–पत्र प्रस्तुति

भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, हेसरघट्टा द्वारा आयोजित राष्ट्रीय हिंदी संगोष्ठी में इस संस्थान का निम्नलिखित शोध पत्र/आलेख शामिल किया गया:

- "खाद्य एवं पोषण सुरक्षा में कृषि विज्ञान एवं प्रोद्योगिकी की भूमिका"

- "एकीकृत कृषि प्रणाली से निकोबार द्वीप समूह भारत, के आदिवासी किसानों की खाद्य सुरक्षा"
- "पौष्टिक सुरक्षा में सुधार और खाड़ी द्वीप समूह में कम निवेश कृषि प्रणाली से भिन्डी की जैविक खेती द्वारा पोषण संबंधी सुरक्षा को बढ़ावा"
- "खाड़ी द्वीपों में कोस्टल स्पीसिज़ का पादप रासायनिक रूपरेखा तथा फफूंदी रोधी क्रिया"

हिन्दी प्रकाशन

क्र.सं.	पत्रिका/बुलेटिन/फोल्डर
1.	"द्वीप तरंग" प्रथम – नराकास/TOLIC वार्षिक पत्रिका
2.	❖ द्वीपों में फूलों का उत्पादन के लिए पारिस्थितिकीय तंत्र पर एक संदर्शिका
3.	❖ खाड़ी द्वीपों में एन्थुरियमका गमलों में उत्पादन
4.	❖ द्वीपों के पारिस्थितिकीय तंत्र के अंतर्गत केले का उत्पादन
5.	❖ काली मिर्च
6.	❖ अदरक
7.	❖ हल्दी
8.	❖ मीठे पानी की मछलियों के रोग व उनका प्रबंधन
9.	❖ मीठे पानी में मछली पालन के बेहतर प्रबंधन तरीके
10.	अंडमान एवं निकोबार द्वीपों में उच्च गुणवत्ता प्रोटीन वाली मक्का की खेती
11.	❖ अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह में पपीते की वाणिज्यक खेती
12.	❖ मत्स्य आहार सूत्रीकरण
13.	❖ अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह के जलीय जीव रोग के लिए राष्ट्रीय निगरानी कार्यक्रम [NSPAAD]
14.	❖ मत्स्य स्वास्थ्य कार्ड
15.	❖ शकरकंद की खेती
16.	❖ जिमीकंद की खेती
17.	"द्वीप तरंग" द्वितीय–नराकास/TOLIC वार्षिक पत्रिका
18.	जैविक खेती में पंचगव्य का उपयोग
19.	निकोबार द्वीपसमूह में पोषक तत्त्वों की सुरक्षा के लिए केंचुएं की खाद का महत्त्व
20.	कृषि तकनीक द्वारा निचले क्षेत्रों में गेंदा फूल की खेती
21.	अंडमान निकोबार द्वीपसमूह में कद्दू कुल की सब्जियों की खेती के लिए प्रमुख सुझाव ❖ संपादनः श्रीमती सुलोचना

भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय अजैविक स्ट्रैस प्रबंधन संस्थान, बारामती

हिन्दी चेतना मास

संस्थान में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु "हिन्दी चेतना मास (01 से 30 सितम्बर 2016)" का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन दिनांक 01 सितम्बर 2016 को मुख्य अतिथि श्री अनिल कुमार वलीव, उप–परिवहन अधिकारी, उप–प्रादेशिक परिवहन कार्यालय, बारामती की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। इस दौरान कार्यालय में हिन्दी लेखन, हिन्दी टाइपिंग व हिन्दी में बातचीत को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे – हिन्दी टिप्पण लेखन, हिन्दी निबंध लेखन, अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद, हिन्दी गायन प्रतियोगिता, कम्प्युटर पर यूनिकोड में हिन्दी टंकण प्रतियोगिता, हिन्दी सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता, हिन्दी कविता पाठ एवं वाद–विवाद इत्यादि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। स्थानीय स्कूल एवं कालेज के विद्यार्थियों के बीच राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए भी वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें बारामती के आस–पास के स्कूल एवं कालेज से बड़ी संख्या में विद्यार्थियों ने भाग लिया। दिनांक 14 सितम्बर 2016 को "हिन्दी दिवस" के रूप में मनाया गया जिसमें श्री सुरजीत कुमार साह, मुख्य प्रबन्धक, भारतीय स्टेट बैंक, बारामती मुख्य अतिथि के तौर पर शामिल हुए। संस्थान के निदेशक एवं राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष, डॉ नरेंद्र प्रताप सिंह ने अपने अध्यक्षीय भाषण में संस्थान के दैनिक कार्यो में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के साथ–साथ एक हिन्दी पत्रिका के शीघ्र प्रकाशन पर भी बल दिया। कार्यक्रम का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह 03 अक्टूबर 2016 को डॉ नरेंद्र प्रताप सिंह, निदेशक, राष्ट्रीय अजैविक स्ट्रैस प्रबंधन संस्थान की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर निदेशक महोदय ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजयी कर्मचारियों को नकद पुरस्कार एवं प्रमाण–पत्र प्रदान किया। हिन्दी प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत गतवर्ष के दौरान राजभाषा हिन्दी के प्रयोग में उल्लेखनीय योगदान देने वाले कर्मचारियों को भी नकद पुरस्कार एवं प्रमाण–पत्र देकर सम्मानित किया गया। निदेशक महोदय ने अपने सम्बोधन में संस्थान के राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्यों एवं सभी कर्मचारियों को हिन्दी चेतना मास व हिन्दी दिवस के सफल आयोजन

निदेशक एवं अध्यक्ष, राजभाषा हिन्दी समिति द्वारा हिन्दी दिवस समारोह का सम्बोधन

एवं उनके सक्रिय भागीदारी के लिए बधाई देते हुए भविष्य में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग में और आधिक योगदान देने का आग्रह किया। इसके साथ ही सभी वैज्ञानिकों एवं तकनीकी अधिकारियों से सभी राजभाषाओं का सम्मान करते हुए स्थानीय भाषा में अपने लेख लिखने के लिए प्रेरित किया। हिन्दी चेतना मास कार्यक्रम का समापन डा. डी. पी. पटेल, प्रधान वैज्ञानिक (पादप कार्यिकी) एवं प्रभारी हिन्दी अधिकारी के धन्यवाद ज्ञापन के साथ सम्पन्न हुआ।

हिन्दी प्रकाशन

- संस्थान का वार्षिक प्रतिवेदन

भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर

हिन्दी पखवाड़ा

केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर में हिंदी दिवस का आयोजन 14 सितंबर 2016 को संस्थान के निदेशक डॉ. केशव राज क्रांति की प्रमुख उपस्थिति में तथा संस्थान के विभिन्न विभागों के अध्यक्ष, वैज्ञानिक, अधिकारी एवं कर्मचारियों के बीच संपन्न हुआ। हिंदी पखवाड़ा–2016 के अंतर्गत हिंदी में सामाजिक जनजागृति निर्माण एवं हिंदी में प्रगति करने के उद्देश्य से विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। जिन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, वे इस प्रकार हैं– हिंदी हास्य कविता पाठ, स्वरचित कविता, संस्थान के रोचक अनुभव, शब्द रचना प्रतियोगिता, पथ–नाट्य (विषय–सही ज्ञान कपास का उत्थान, स्वच्छ भारत, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ तथा कपास की दुर्दशा)। इन प्रतियोगिताओं में संस्थान के सभी वर्ग के कर्मचारियों ने बड़ी संख्या में बढ़–चढ़ कर भाग लिया। हिंदी पखवाड़ा 2016 का समापन समारोह का आयोजन 1 अक्टूबर 2016 को किया गया। श्री आर.के. दास, सचिव, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति–2 मुख्य अतिथि के रूप में तथा संस्थान के निदेशक डा. केशव राज क्रांति प्रमुख अतिथि की उपस्थिति में समारोह का समापन हुआ। हिंदी पखवाड़ा 2016 की प्रतियोगिता में आयोजित कार्यक्रमों के प्रथम द्वितीय तथा तृतीय पारितोषिक विजेताओं ने मंच प्रस्तुति दी। इस अवसर पर विजेता प्रतिभागियों को स्मृति चिन्ह एवं धनराशि पुरस्कार के रूप में मुख्य अतिथि तथा प्रमुख अतिथि द्वारा प्रदान की गई।

हिन्दी पुरस्कार वितरण समारोह के दौरान का दृश्य

हिन्दी कार्यशालाएं

केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर, में कार्यशाला का आयोजन 21.11.2017 को किया गया। इस कार्यशाला में प्रशिक्षण की अवधि 7 घंटे की थी। इसमें कुल 33 अधिकारी/कर्मचारियों ने प्रशिक्षण लिया। इसमें प्रशिक्षित अधिकारियों की संख्या 14 और प्रशिक्षित कर्मचारियों की संख्या 19 थी।

हिन्दी कार्यशाला का आयोजन

मई–2016 के प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ तथा पारंगत परीक्षा के लिए संस्थान में ही हिन्दी प्रशिक्षण योजना के अंतर्गत पाठ्यक्रम की कार्यशाला आयोजित की गई। इसके अंतर्गत प्रवीण में 1, प्रबोध में 1, प्राज्ञ में 6 तथा पारंगत में 34 कर्मचारियों ने सफलता प्राप्त की।

हिन्दी प्रकाशन

- कपास की बेहतर फसल प्रबंधन कार्यनीतियां–2016
- किसानों के लिए ई–साप्ताहिक परामर्शी
- श्वेत स्वर्णिमा
- वार्षिक प्रतिवेदन 2015–16 अंग्रेजी का हिन्दी में अनुकरण

अन्य गतिविधियां

केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, नागपुर कार्यालय–2 के अंतर्गत प्रथम पुरस्कार तथा संस्थान द्वारा प्रकाशित गृह पत्रिका 'श्वेत स्वर्णिमा' को विशेष प्रोत्साहन पुरस्कार दिया गया।

भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय शुष्क बागवानी संस्थान, बीकानेर

हिन्दी चेतना सप्ताह

संस्थान में दिनांक 14 से 21 सितम्बर 2016 के मध्य मनाया गया। उद्घाटन के अवसर पर प्रख्यात वैज्ञानिक और इंजीनियर और बीकानेर तकनीकी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. एच. पी. व्यास मुख्य अतिथि थे। उन्होंने कहा कि हिन्दी को किसी एक विशेष दिवस पर याद करने के बजाय प्रतिदिन आदत बनाएं। हिन्दी में विज्ञान की शिक्षा सरलता से दी जा सकती है अतः सभी को इस प्रकार के प्रयास करने चाहिए। संस्थान के प्रभारी निदेशक डॉ. धुरेन्द्र सिंह ने कहा कि हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के लिए भारत सरकार के प्रेरणा और प्रोत्साहन कार्यक्रम पर बल दिया जाना चाहिए।

समापन अवसर पर डूंगर महाविद्यालय, बीकानेर के हिंदी विभाग की अध्यक्ष डॉ. शालिनी मूलचंदानी मुख्य अतिथि थीं। उन्होंने कहा कि हिन्दी अपने आप में एक सुदृढ़ भाषा है, इसे अनुवाद की भाषा बनाकर प्रयोग नहीं करना चाहिए। संस्थान के कार्यकारी निदेशक डॉ. ब्रजेश दत्त शर्मा ने कहा कि हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के लिए भारत सरकार के प्रेरणा और प्रोत्साहन कार्यक्रम पर बल दिया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि हिन्दी सजग और सरल भाषा है। अपनी भाषा में कार्य करने में हिचक नहीं करनी चाहिए। हमें हिंदी में कार्य करने का माहौल तैयार करने की आवश्यकता है।

हिन्दी चेतना सप्ताह में सम्बोधित करते हुए अतिथि और समापन समारोह में पुरस्कार प्राप्त करते हुए अधिकारी

चेतना सप्ताह के दौरान आयोजित की गयी विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किए गए।

हिन्दी कार्यशालाएं

इस अवधि के दौरान प्रथम तिमाही की कार्यशाला का आयोजन दिनांक 27 सितम्बर, 2016 को किया गया। इसमें ''हिन्दी वाईस सॉफ्टवेयर'' की जानकारी देते हुए उस पर कार्य करने करने के तरीके बताये गये। वर्ष 2016 की अंतिम तिमाही की कार्यशाला का आयोजन दिनांक 27 दिसम्बर, 2016 को किया गया। इसमें साइबर क्राइम एक्सपर्ट श्री उम्मेद मील ने साइबर क्राईम पर व्याख्यान दिया।

हिन्दी कार्यशाला में सम्बोधित करते हुए संस्थान के निदेशक प्रोफेसर पी.एल. सरोज

हिन्दी प्रकाशन

- वार्षिक प्रतिवेदन 2015–16 (संस्थान)
- वार्षिक प्रतिवेदन 2015–16 (अखिल भारतीय शुष्क क्षेत्र फल समन्वित अनुसंधान परियोजना 'एक्रिप')
- केशुबासं समाचार (छःमाही)
- हिन्दी बुलेटिन (मतीरा, शुष्क क्षेत्र में कद्दूवर्गीय सब्जियों के प्रमुख कीट एवं उनका प्रबंधन एवं काचरी)

भा.कृ.अनु.प.–कुक्कुट अनुसंधान निदेशालय, हैदराबाद

हिन्दी पखवाड़ा

निदेशालय में दिनांक 14–29 सितंबर 2016 तक हिंदी पखवाड़ा आयोजित किया गया। 14 सितंबर 2016 को संस्थान में हिंदी दिवस मनाया गया। हिंदी पखवाड़ा के दौरान कर्मचारियों के लिए आशुभाषण, आलेखन टिप्पणी, गायन, कार्यालयीन शब्दावली, पुस्तक पठन, प्रश्नमंच, हिंदी टंकण, स्मरण शक्ति प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं तथा 20 सितंबर 2016 को हिंदी कार्यशाला का भी आयोजन किया गया।

29 सितंबर 2016 को हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर डॉ. आर.पी. शर्मा, पूर्व निदेशक, पीडीपी, हैदराबाद को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। दीप प्रज्ज्वलन के साथ कार्यक्रम का आरंभ हुआ। डॉ. एस.पी. यादव, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रभारी, हिन्दी अनुभाग ने इस अवसर पर मुख्य अतिथि एवं उपस्थित समस्त कर्मचारियों का स्वागत किया एवं संस्थान में हिंदी कार्यान्वयन की स्थिति पर प्रकाश डाला।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित डॉ. आर. पी. शर्मा, पूर्व निदेशक, भाकृअनुप–डीपीआर, हैदराबाद ने संस्थांन के कर्मचारियों को संबोधित करते हुए कहा कि, प्रत्येक व्यक्ति यदि अपनी निजी इच्छा से हिंदी को अपनाएगा तो आवश्यक ही हिंदी का प्रचार–प्रसार बढ़ेगा और वह उतनी ही समृद्ध भी होगी। हिंदी को अधिक से अधिक प्रेमपूर्वक अपनाया जाए और हमारा प्रयत्न होना चाहिए कि हम सरल हिंदी का प्रयोग करें जिसमें अन्या भाषाओं में प्रचलित शब्दों का प्रयोग भी स्वीकार्य हों। हमारा प्रयत्न यह भी होना चाहिए कि हम तकनीकी एवं वैज्ञानिक भाषा को सरल बनाएं।

हिंदी पखवाड़ा के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं में कर्मचारियों ने अत्यंत उत्साह से भाग लिया और विजेताओं को इस अवसर पर नगद पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के अंत में श्री जे. श्रीनिवास राव, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

हिन्दी कार्यशालाएं

निदेशालय के कर्मचारियों को अपने दैनंदिन कार्यों में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग की दिशा में सहायता हेतु चार हिंदी कार्यशालाएं (22.3.2016, 30.6.2016, 17.09.2016 एवं 16.12.2016) भी आयोजित की गयी, जो कर्मचारियों के लिए अत्यंत लाभदायक रही। इस अवसर पर संस्थोन के निदेशक डॉ. आर.एन. चटर्जी ने अपने संबोधन में कहा कि, निदेशालय के कर्मचारी अपने दैनंदिन कार्यों में हिंदी का प्रयोग अच्छी तरह से करते हैं। संस्थान में तिमाही बैठकें व तिमाही हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन भी नियमित रूप से किया जाता है। सभी कर्मचारी अपने दैनिंक कार्यों में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करें।

अन्य गतिविधियां

हस अवसर पर संस्थान के अधिकारियों द्वारा तैयार की गयी कुक्कुट विज्ञान शब्दावली (अंग्रेजी–हिंदी शब्द कोश) एवं श्रीनिधि कुक्कुट नस्ल पर तैयार किया गया ब्रोशर (हिंदी) का विमोचन भी किया गया।

पुरस्कारः संस्थान में वर्ष 2015 के दौरान उच्चतम राजभाषा कार्य निष्पादन हेतु नराकास राजभाषा का तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। 15 नवंबर, 2016 को राष्ट्रीय ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज संस्थान में आयोजित नराकास की बैठक में डॉ. डब्लू. उ. आर. रेड्डी, महानिदेशक द्वारा निदेशालय के निदेशक एवं हिंदी अधिकारी ने ये पुरस्कार प्राप्त किए।

भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय अश्व अनुसंधान केन्द्र, हिसार

हिन्दी पखवाड़ा

भारत सरकार की राजभाषा की विकासनीति के अंतर्गत गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में राजभाषा के प्रचार–प्रसार एवं सरकारी काम–काज में हिन्दी के प्रयोग को अधिकाधिक प्रोत्साहित करने के लिए राष्ट्रीय अश्व अनुसंधान केन्द्र में हिन्दी पखवाड़े का आयोजन डा. भूपेन्द्र नाथ त्रिपाठी, निदेशक की अध्यक्षता में 14 से 28 सितम्बर, 2016 तक किया गया। इस दौरान विभिन्न ज्ञानवर्धक एवं रूचिपूर्ण हिन्दी प्रतियोगिताओं क्रमशः निबंध प्रतियोगिता (विषयः हिन्दी का वैज्ञानिक दृष्टिकोण), हिन्दी परिच्छेद अनुवाद, हिन्दी श्रुत लेख, हिन्दी आशुभाषण,

हिन्दी प्रश्नोत्तरी, हिन्दी कविता पाठ एवं सुलेख, हिन्दी टंकण आदि का आयोजन किया गया।

उद्घाटन सत्र के प्रारंभ में हिन्दी दिवस के अवसर पर एक हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें स्थानीय ठाकुरदास भार्गव सीनियर सैकेण्डरी स्कूल के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डॉ. शमशेर सिंह मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित थे। इस अवसर पर केन्द्र के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. यशपाल ने मुख्य अतिथि के रूप में कार्यक्रम की अध्यक्षता भी की। हिसार के जाने–माने साहित्यकार एवं गज़लकार श्री महेन्द्र जैन विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। अपने वक्तव्य में केन्द्र के सभी वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों को संबोधित करते हुए मुख्य वक्ता डॉ. शमशेर सिंह ने हिन्दी को एक वृहद भाषा के रूप में परिभाषित करते हुए इसे एक सहज, सरल व आमजन की भाषा बताया जिसमें सभी भाषाओं के शब्दों के समावेश की अनुपम क्षमता है। उन्होंने हिन्दी भाषा में प्रयुक्त होने वाले विभिन्न शब्दों व उनके सूचित अर्थों के बारे में भी विस्तृत जानकारी प्रदान की। विशिष्ट अतिथि श्री महेन्द्र जैन ने अपनी मधुर आवाज में गज़ल प्रस्तुत कर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। मंच संचालन केन्द्र की वैज्ञानिक एवं हिन्दी अधिकारी डॉ. अनुराधा भारद्वाज द्वारा किया गया। डॉ. अनुराधा ने हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित किए जाने वाले विभिन्न कार्यक्रमों की जानकारी दी।

हिन्दी पखवाड़ा का समापन समारोह डॉ. भूपेन्द्र नाथ त्रिपाठी, निदेशक एवं अध्यक्ष (राजभाषा कार्यन्वयन समिति) राष्ट्रीय अश्व अनुसंधान केन्द्र के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया। इस अवसर पर मेज़र जनरल (डॉ.) रंजीत सिंह, अति विशिष्ट सेवा मैडल, विशिष्ट सेवा मैडल (रिटायर्ड), कुलपति चौधरी रणबीर सिंह विश्वविद्यालय, जीन्द, हरियाणा, पूर्व कुलपति हरियाणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय ने मुख्य अतिथि के रूप में कार्यक्रम को शोभायमान किया। साथ ही, श्री महेन्द्र पाल कुलश्रेष्ठा, निदेशक, राष्ट्रीय सूचना केन्द्र, हिसार एवं श्री पी के पाण्डेय, निदेशक, उत्तरी क्षेत्र कृषि मशीनरी प्रशिक्षण एवं परीक्षण संस्थान, ट्रैक्टर नगर, सिरसा रोड़, हिसार विशिष्ट अतिथियों के रूप में मौजूद थे। समापन समारोह के दौरान सरकारी कर्मचारियों के लिए कविता पाठ एवं हिन्दी शब्दानुवाद प्रतियोगिता का आयोजन एवं पुरस्कार वितरण किया गया।

हिन्दी कार्यशालाएं

राष्ट्रीय अश्व अनुसंधान केन्द्र की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के द्वारा वर्ष 2016–17 के दौरान चार हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया जिसमें केन्द्र के वैज्ञानिकों, विषय वैज्ञानिकों, तकनीकी अधिकारियों, तकनीकी सहायक वर्ग एवं प्रशासनिक वर्ग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने सक्रिय रूप से भाग लेकर उन्हें सफल बनाया।

हिन्दी दिवस (14 सितम्बर, 2016) के अवसर पर एक हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें स्थानीय ठाकुरदास भार्गव सीनियर सैकेण्डरी स्कूल के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डॉ. शमशेर सिंह मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित थे। इस अवसर पर केन्द्र के प्रधान वैज्ञानिक डा. यशपाल ने मुख्य अतिथि के रूप में कार्यक्रम की अध्यक्षता भी की तथा हिसार के जाने–माने साहित्यकार एवं गज़लकार श्री महेन्द्र जैन विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। अपने वक्तव्य में केन्द्र के सभी वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों को संबोधित करते हुए मुख्य वक्ता डॉ. शमशेर सिंह ने हिन्दी को एक वृहद भाषा के रूप में परिभाषित करते हुए इसे एक सहज, सरल व आमजन की भाषा बताया जिसमें सभी भाषाओं के शब्दों के समावेश की अनुपम क्षमता है। उन्होंने हिन्दी भाषा में प्रयुक्त होने वाले विभिन्न शब्दों व उनके सूचित अर्थों के बारे में भी विस्तृत जानकारी प्रदान की।

हिन्दी की तीन कार्यशालाएं 3 मार्च 2016, 22 मई 2016 और 17 दिसम्बर 2016 को करवाई गई जिसमें प्रशासनिक विभाग एवं अनुबंधित कर्मचारियों के लिए हिन्दी टंकण का प्रशिक्षण दिया गया। हिन्दी अधिकारी डॉ. अनुराधा भारद्वाज के निरीक्षण में प्रशासनिक अधिकारी द्वारा 22 कर्मचारियों को हिन्दी टंकण का अभ्यास करवाया गया। इस कार्यशाला से प्रतिभागियों को हिन्दी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया गया तथा हिन्दी के प्रयोग में आने वाली कठिनाईयों को दूर करने के प्रयास किए गए।

हिन्दी प्रकाशन

- वार्षिक प्रतिवेदन (2015–16)
- पशुधन प्रकाश पत्रिका

भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल

हिन्दी पखवाड़ा

विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी संस्थान में 14 से 29 सितम्बर 2016 तक हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया। पखवाड़े का शुभारम्भ मुख्य अतिथि डा. ए.के. श्रीवास्तव,

हिन्दी पखवाड़े के शुभारम्भ के अवसर पर सभा को संबोधित करते संस्थान के निदेशक डा. प्रबोध चन्द्र शर्मा

निदेशक राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान, करनाल ने दीप प्रज्जवलित करके किया। हिन्दी पखवाड़ा समिति की अध्यक्ष डॉ. अनिता मान ने हिन्दी के महत्व को बताते हुए राजभाषा के नियमों व अधिनियमों की विस्तृत जानकारी दी तथा हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित किए जाने वाले कार्यक्रमों व प्रतियोगिताओं का विस्तृत विवरण दिया। मुख्य अतिथि डॉ. ए.के. श्रीवास्तव ने इस संस्थान में हिन्दी में हो रहे कार्यों की सराहना की और कहा कि हिन्दी भाषा एक सरल, सशक्त एवं वैज्ञानिक भाषा है इसको सुदृढ करने के लिए हमें अधिक से अधिक हिन्दी में काम करना होगा। हिन्दी राष्ट्रीय एकता व राष्ट्रीय स्वाभिमान की भाषा है। इसके प्रयोग से हमें गौरवान्वित महसूस करना चाहिये। संस्थान के निदेशक डॉ. प्रबोध चन्द्र शर्मा ने मुख्य अतिथि का पुष्पगुच्छ देकर स्वागत किया और बताया कि यह दिवस हमें अपने संवैधानिक उत्तरदायित्व के प्रति सचेत करता है। उन्होंने कहा कि राजभाषा के प्रति प्रेम और समर्पण से ही स्वदेश के प्रति प्रेम की भावना जागृत होती है जिसके लिये केन्द्र सरकार का राजभाषा विभाग व सभी संस्थाएं हर संभव कोशिश कर रहे हैं ताकि कार्यालयों में हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग हो। उन्होंने कहा कि हिन्दी एक वैज्ञानिक भाषा है। संस्थान में किसानों को संस्थान की तकनीकों की विस्तृत रूप से जानकारी देने के लिए किसान मेले एवं किसान गोष्ठियों का आयोजन किया जाता है ताकि देश का किसान विकसित तकनीकों से लाभान्वित हो सके।

हिन्दी पखवाड़े का समापन समारोह दिनांक 29 सितम्बर 2016 को आयोजित किया गया। समापन समारोह के मुख्य अतिथि श्री राजबीर देसवाल, अतिरिक्त महानिदेशक, पुलिस मुख्यालय, पंचकुला रहे। सर्वप्रथम, संस्थान के निदेशक डॉ. प्रबोध चन्द्र शर्मा जी ने पुष्प गुच्छ देकर मुख्य अतिथि का स्वागत किया और संस्थान की गतिविधियों के बारे में विस्तार से बताया। तत्पश्चात्, हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह के मुख्य अतिथिश्री राजबीर देसवाल ने कहा कि हिन्दी बोलने वालों को गौरव होना चाहिए क्योंकि हिन्दी बोलने वालों का आज के युग में सम्मान बढ़ता जा रहा है। उन्होंने यह भी कहा कि हिन्दी हमारे देश के विकास में बहुत मददगार सिद्ध हुई है। उन्होंने सभी से अपील की कि वे अपना सरकारी कामकाज हिन्दी में ही करने का प्रयास करें। समापन समारोह के अवसर पर तत्काल भाषण प्रतियोगिता भी आयोजित की गई। इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री राजबीर देसवाल तथा डॉ. प्रबोध चन्द्र शर्मा ने हिन्दी योजना के अंतर्गत वर्ष भर हिन्दी में अधिकाधिक व उत्कृष्ट कार्य करने वाले अधिकारियों एवं कर्मचारियों, हिन्दी पखवाड़े के दौरान हुई प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार व प्रमाण पत्र वितरित किये। निदेशक महोदय ने पखवाड़े के दौरान आयोजित की गई 8 प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों की सराहना की तथा विजेताओं को हार्दिक बधाई दी। पखवाड़े के अंतर्गत निम्नलिखित 8 प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। इन सभी प्रतियोगिताओं में संस्थान के अधिकारियों व कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

प्रमुख उपलब्धियां

- संस्थान में 11 प्रशासनिक बैठकें हिन्दी में आयोजित की गईं।
- किसानों के लिए संस्थान में उपलब्ध टोल फ्री नम्बर पर 779 किसानों को परामर्श सेवा प्रदान की गई।
- इस अवधि के अन्तर्गत विभिन्न हिन्दी समाचार पत्रों में संस्थान में सम्पन्न गतिविधियों सम्बन्धी 48 प्रैस विज्ञप्तियाँ प्रकाशित हुई।
- इस अवधि में संस्थान में आए 374 किसानों, 176 प्रसार कार्यकर्ताओं, 28 वैज्ञानिकों तथा 2789 विद्यार्थियों को प्रयोगात्मक प्रक्षेत्रों का भ्रमण कराया गया तथा उन्हें हिन्दी में संस्थान द्वारा विकसित विभिन्न तकनीकों से अवगत कराया गया।
- इस अवधि में संस्थान में 32 हिन्दी बैनर, 351 हिन्दी प्रायोगिक बोर्ड, 4 हिन्दी नाम पट्टिकाएं, 7 द्विभाषी नाम पट्टिकाएं व 20 फोटो लेबल हिन्दी में बनाए गए।
- इस अवधि के दौरान संस्थान के बाहर 10 किसान गोष्ठी आयोजित की गई व किसानों को संस्थान द्वारा विकसित सभी तकनीकों की जानकारी हिंदी में दी गई।

हिन्दी प्रकाशन

- इस अवधि में संस्थान की हिन्दी पत्रिका 'कृषि किरण' का वार्षिकांक 7 प्रकाशित किया गया।
- इस अवधि में संस्थान की वार्षिक रिपोर्ट 2014–15 हिन्दी में प्रकाशित की गई।
- इस अवधि में खेती पत्रिका में जलवायु स्मार्ट कृषि विषय पर एक आलेख प्रकाशित हुआ।

- इस अवधि में उपसतहीय जलनिकास टेक्नोलॉजी द्वारा जल भराव एवं लवणग्रस्त मृदाओं का सुधार विषय पर एक तकनीकी फोल्डर हिन्दी में प्रकाशित किया गया।
- इस अवधि में लवणीय एवं क्षारीय भूमियों के लिये विकसित उन्नत प्रजातियां विषय पर एक तकनीकी फोल्डर हिन्दी में प्रकाशित किया गया।
- इस अवधि में जिप्सम तकनीक द्वारा क्षारीय मृदा का सुधार विषय पर एक तकनीकी फोल्डर हिन्दी में प्रकाशित किया गया।
- इस अवधि में दुग्ध गंगा पत्रिका में मृदा की घटती उर्वरता में टिकाऊ खेती के लिये उपाय विषय पर एक आलेख हिन्दी में प्रकाशित हुआ।

भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय पटसन एवं समवर्गी रेशा प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान, कोलकाता

हिन्दी कार्यशाला

राष्ट्रीय पटसन एवं समवर्गी रेशा प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, कोलकाता में दिनांक 20.2.2016 को पूर्वाह्न 10.00 बजे से 01.00 बजे तक संस्थान के हिन्दी अनुभाग के प्रभारी अधिकारी श्री आर.डी. शर्मा, सहायक निदेशक (राजभाषा) की अध्यक्षता में ''हिन्दी में टिप्पणी एवं मसौदा लेखन'' विषय पर एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में तकनीकी एवं प्रशासनिक वर्ग के कुल मिलाकर 21 प्रतिभागियों (1 अधिकारी और 20 कर्मचारी) ने भाग लिया।

सर्वप्रथम, सत्राध्यक्ष श्री आर.डी. शर्मा, सहायक निदेशक (राजभाषा) ने सभी प्रतिभागियों तथा हिन्दी विशेषज्ञ श्री लक्खन कुमार सिंह, हिन्दी प्राध्याापक, भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग का स्वागत करते हुए सभी प्रतिभागियों को बताया कि हिन्दी कार्यशाला का उद्देश्य होता है अपने आप को मांजना अर्थात् हिन्दी में काम करते वक्त आने वाली समस्या का समाधान करना तथा उन्होंने अनुरोध किया कि सभी प्रतिभागी इस कार्यशाला में हिन्दी में काम करते समय आने वाली दिक्कत को दूर करें तथा अधिक से अधिक काम हिन्दी में करें। इसके बाद श्री सिंह से सत्र आरम्भ करने का अनुरोध किया।

परिचयात्मक सत्र में श्री लक्खन कुमार सिंह ने सर्वप्रथम सहायक निदेशक (राजभाषा) श्री आर.डी. शर्मा का विशेष आभार व्यक्त करते हुए आयोजन समिति के अधिकारियों/कर्मचारियों और सभी प्रतिभागियों को धन्यवाद देते हुए उनका परिचय लिया। उन्होंने विषय संबंधी सत्र शुरू करने के पहले सभी प्रतिभागियों का टिप्पणी एवं मसौदा लेखने पर ज्ञान की जानकारी ली। तत्पश्चात् कार्यालयीन टिप्पणी के प्रकारों को सविस्तार सोदाहरण समझाया तथा साथ ही साथ मसौदा लेखन के संबंध में प्रकाश डाला। प्रतिभागियों की भाषा संबंधी अड़चनों से अवगत होते हुए उनकी व्याकरणीय कमियों को दूर करने के गुर सिखाए। इसके साथ ही साथ विशेषज्ञ श्री लक्खन कुमार सिंह ने दैनिक व्यवहार में आने वाली छोटी–छोटी अंग्रेजी टिप्पणी को हिन्दी में लिखवाया ताकि प्रतिभागी टिप्पणी लिखने के दौरान उसका उपयोग कर सकें। सभी प्रतिभागियों ने पूरे सत्र में शांतिपूर्ण ढंग से उत्साहपूर्वक एवं तल्लीन होकर ज्ञानार्जन किया। प्रतिभागियों ने विशेषज्ञ से राजभाषा नीति विषयक एवं व्याकरण में आने वाली दिक्कतों पर सवाल उठाएं, विशेषज्ञ ने उनके उत्तर देकर समाधान किया। कार्यशाला में उपस्थित सभी प्रतिभागियों एवं बाहर से पधारे हिन्दी विशेषज्ञ के प्रति श्री आर.डी. शर्मा, सहायक निदेशक (राजभाषा) द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यशाला समाप्त हुई।

भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय समकित नाशीजीव अनुसंधान केंद्र, पूसा, नई दिल्ली

हिन्दी चेतना पखवाड़ा

केंद्र के कार्यकारी निदेशक, डा. डी.बी. आहूजा की अध्यक्षता में दिनांक 14 सितम्बर 2016 को हिन्दी पखवाड़े का उद्घाटन समारोह मनाया गया। इस कार्यक्रम में उद्घाटन समारोह के अवसर पर श्रीमती सीमा चोपड़ा, निदेशक (राजभाषा), भा.कृ.अनु.प., कृषि भवन, नई दिल्ली मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहीं और समारोह में उपस्थित सभी लोगों का हिन्दी के प्रति उत्साह बढ़ाया। हिंदी अनुभाग के कार्यकारी प्रभारी डा. अनूप कुमार, वैज्ञानिक द्वारा हिन्दी चेतना पखवाड़ा का संचालन किया गया। निदेशक महोदय द्वारा केंद्र के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को संबोधित करते हुए हिंदी के महत्व पर प्रकाश डाला। इस चेतना पखवाड़ा के अंतर्गत केंद्र के सभी स्तर के वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों

हेतु विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं ताकि सभी की इस कार्यक्रम में सहभागिता हो सके। ग्रुप ए के अधिकारियों को छोड़कर अन्य सभी को ध्यान में रखते हुए दिनांक 14.9.2016 को ही सुलेख प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया। तकनीकी ज्ञान के प्रचार–प्रसार में राजभाषा का महत्व विषय पर दिनांक 19.9.2016 को निबंध प्रतियोगिता का आयोजन केंद्र के सभी स्तर के वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों हेतु किया गया। दिनांक 21.9.2016 को ग्रुप ए के अधिकारियों को छोड़कर सभी के लिए श्रुतलेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

दिनांक 23.9.2016 को राजभाषा नीति एवं वर्तमान मामलों से सम्बंधित सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें केंद्र के सभी स्तर के वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। दिनांक 26.9.2016 को वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसका विषय था क्या डिजिटीकरण से भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाया जा सकता है? जिसमें केंद्र के सभी स्तर के वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया। दिनांक 26.9.2016 हिंदी चेतना पखवाड़ा का समापन समारोह मनाया गया एवं विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। समापन समारोह के अवसर पर ही केंद्र द्वारा प्रकाशित अंक–2 वार्षिक गृह पत्रिका "नई दिशाएं" दलहन विशेषांक का विमोचन निदेशक (कार्यवाहक) एवं राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष डॉ. डी.बी. आहूजा एवं विशिष्ट अतिथि डॉ. बी.बी. सिंह, सहायक महानिदेशक (तिलहन एवं दलहन), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा किया गया।

केंद्र में हिंदी को विभागीय कार्यों में प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से नकद पुरस्कार योजना हेतु सभी वर्गों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों से आवेदन आमंत्रित किये गए व उत्कृष्ट कार्य करने वाले कर्मचारियों को पुरस्कृत किया गया।

हिन्दी कार्यशालाएं

दिनांक 20.9.2016 को कम्प्यूटर पर हिन्दी का प्रयोग विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में श्री केवल कृष्ण, तकनीकी निदेशक, राजभाषा, गृह मंत्रालय, नई दिल्ली को अनुदेशक हेतु आमंत्रित किया गया था जिसमें केंद्र के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया एवं सम्बंधित विषय पर जानकारी प्राप्त की।

दिनांक 25 जून 2016 को केन्द्र के प्रशिक्षण कक्ष में "मोबाईल एवं कम्प्यूटर में वॉयस टाइपिंग" विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला के अनुदेशक हेतु श्री केवल कृष्ण, वरिष्ठ तकनीकी निदेशक, राजभाषा, गृह मंत्रालय, नई दिल्ली को आमंत्रित किया गया। सर्वप्रथम प्रभारी (हिन्दी) ने मुख्य अतिथि, निदेशक (कार्यकारी) एवं प्रशिक्षण कक्ष में उपस्थित सभी सदस्यों का स्वागत किया। तत्पश्चात् निदेशक महोदय जी ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि कार्यालय में कार्य करने हेतु आधुनिक तकनीकी का अविष्कार होने के कारण अब हिन्दी कार्य करने में आसानी होगी।

इस कार्यशाला के दौरान अनुदेशक ने मोबाइल एवं कम्प्यूटर में वॉयस टाइपिंग के संबंध में प्रशिक्षण दिया। उन्होंने मोबाइल एवं कम्प्यूटर दोनों में वॉयस टाइपिंग से संबंधित जीवंत प्रदर्शन किया। हिन्दी एवं अंग्रेजी किसी भी भाषा में बोल करके टंकण एवं अनुवाद करना सिखाया। प्रतिभागियों ने अपनी संदेह दूर करने हेतु वॉयस टाइपिंग के संबंध में प्रश्न किया और श्री केवल कृष्ण जी ने बहुत ही सहज ढंग से सभी प्रश्नों का जवाब देकर समझाया। यह आधुनिक तकनीक हमारे लिए बहुत ही फायदेमंद साबित होगी।

दिनांक 21 नवम्बर 2016 को 2.00 बजे केन्द्र के प्रशिक्षण कक्ष में हिन्दी में 'मसौदा एवं टिप्पण लेखन' विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला के अनुदेशक हेतु श्री भूपिन्दर सिंह, उप निदेशक, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, पर्यावरण भवन, सी.जी.ओ. कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली को आमंत्रित किया गया। सर्वप्रथम प्रभारी (हिन्दी) ने मुख्य अतिथि, निदेशक (कार्यकारी) एवं प्रशिक्षण कक्ष में उपस्थित सभी सदस्यों का स्वागत किया। तत्पश्चात् निदेशक महोदय ने सभा को संबोधित किया।

इस कार्यशाला के दौरान अनुदेशक ने मसौदा एवं टिप्पण लेखन के संबंध में हमें प्रशिक्षण दिया। उन्होंने कहा कि टिप्पण लेखन में द्विअर्थी एवं असंसदीय शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए। प्रतिभागियों ने टिप्पण लेखन के बारे में चर्चा करके अपनी संदेह दूर की। श्री भूपिंदर सिंह जी ने बहुत ही सहज ढंग से मसौदा एवं टिप्पण लेखन के संबंध में समझाया। कार्यशाला में उपस्थित सभी लोगों ने दिलचस्पी लेकर सीखने की कोशिश की तथा इस प्रशिक्षण को सराहा। अंत में प्रभारी (हिन्दी) द्वारा सभा में उपस्थित सभी का धन्यवाद देते हुए कार्यशाला का समापन किया गया।

केन्द्र के निदेशक एवं राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष डा. डी.बी. आहुजा की अध्यक्षता एवं मार्गदर्शन में दिनांक 06.03.2017 को 11.00 बजे केन्द्र के प्रशिक्षण कक्ष में हिन्दी में "हिन्दी में टिप्पण एवं मसौदा लेखन अभ्यास सत्र" विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला के अनुदेशक हेतु श्रीमती स्नेह लता, सहायक निदेशक, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, सी.जी.ओ. काम्प्लेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली को आमंत्रित किया गया था। कार्यशाला में केन्द्र के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। सर्वप्रथम प्रभारी (हिन्दी) ने मुख्य अतिथि, निदेशक (कार्यकारी) एवं प्रशिक्षण कक्ष में उपस्थित सभी सदस्यों का स्वागत किया। तत्पश्चात्, निदेशक महोदय ने सभा को संबोधित किया और केन्द्र द्वारा किए गए सराहनीय कार्यों का विश्लेषण किया।

इस कार्यशाला के दौरान अनुदेशक ने सभी को मसौदा एवं टिप्पण लेखन का लिखित अभ्यास द्वारा प्रशिक्षण दिया। उन्होंने अधिकारी स्तर एवं कर्मचारी स्तर पर टिप्पण लेखन संबंधी नियमों के बारे में समझाया और कहा कि यदि वैज्ञानिक या तकनीकी शब्द हों तो गूगल ट्रांसलिट्रेशन के द्वारा टंकण किया जा सकता है। प्रतिभागियों ने टिप्पण एवं मसौदा लेखन के बारे में चर्चा की तथा टिप्पण लेखन अभ्यास द्वारा अपने संदेह दूर किए। श्रीमती स्नेह लता जी ने बहुत ही सहज ढंग से मसौदा एवं टिप्पण लेखन के संबंध में समझाया।

कार्यशाला में उपस्थित सभी लोगों ने दिलचस्पी लेकर सीखने की कोशिश की तथा इस प्रशिक्षण को सराहा। अंत में प्रभारी (हिन्दी) द्वारा सभा में उपस्थित सभी का धन्यवाद देते हुए कार्यशाला का समापन किया गया।

- हिंदी में पत्रिका एवं हिंदी पोस्टर के माध्यम से कृषि सम्बन्धी जानकारी कृषकों तक पहुंचाई जाती है।
- केंद्र में राजभाषा में किये गए उत्कृष्ट कार्यों के लिए माननीय केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री राधा मोहन सिंह द्वारा "राजर्षि टंडन " पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
- केंद्र को हिंदी में श्रेष्ठ वार्षिक प्रतिवेदन हेतु पुरस्कृत किया गया।

माननीय मंत्रियों से राजर्षि टंडन पुरस्कार प्राप्त् करते हुए संस्थान के निदेशक एवं अन्य कर्मचारी

हिन्दी पुस्तकें

- अरहर में लगने वाले नाशीजीवों की सचित्र पत्रिका
- अरहर में बाँझपन मोजाईक रोग एवं इसका प्रबंधन
- अरहर की चित्तीदार पत्ती छेदक का प्रबंधन
- चने में लगने वाले नाशीजीवों की सचित्र पत्रिका
- मूंग एवं उड़द में लगने वाले नाशीजीवों की सचित्र पत्रिका
- फली बेधक कीट एवं इसका प्रबंधन
- फूलगोभी एवं पत्तागोभी में समेकित नाशीजीव प्रबंधन
- अलफांसों एवं केसर आम में समेकित नाशीजीव प्रबंधन
- टमाटर में समेकित नाशीजीव प्रबंधन
- बासमती धान में समेकित नाशीजीव प्रबंधन
- लाईट ट्रैप लाभदायक कीटों के लिए सुरक्षित
- ग्रीन हॉउस खीरे में समेकित नाशीजीव प्रबंधन
- चने में स्क्लेरोटिनिया रोग एवं उसका प्रबंधन
- सरसों में समेकित नाशीजीव प्रबंधन
- मूँगफली में समेकित नाशीजीव प्रबंधन
- वार्षिक प्रतिवेदन
- नई दिशाएं

अन्य गतिविधियां

- बासमती धान में सफलता की कहानी
- किन्नों में समेकित नाशीजीव प्रबंधन
- लाईट ट्रैप – लाभदायक कीटों के प्रति सुरक्षित
- सरसों में समेकित नाशीजीव प्रबंधन
- फूलगोभी एवं पत्ता गोभी में समेकित नाशीजीव प्रबंधन
- आई. सी. टी. आधारित कीट निगरानी एवं सलाहकार प्रणाली– केंद्र की नई पहल

- चने में समेकित नाशीजीव
- नाशीजीव विनाशक सूक्ष्मजीवी का बड़े पैमाने पर उत्पादन
- ट्राईकोडर्मा का बड़े पैमाने पर उत्पादन
- अरहर के कीटों एवं रोगों के लिए समेकित नाशीजीव प्रबंधन
- ग्रीनहाऊस खीरे में समेकित नाशीजीव प्रबंधन
- बैंगन के लिए समेकित नाशीजीव प्रबंधन
- प्याज के लिए समेकित नाशीजीव प्रबंधन
- गन्ने के लिए समेकित नाशीजीव प्रबंधन
- कपास के लिए समेकित नाशीजीव प्रबंधन

भा.कृ.अनु.प.–भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल

राजभाषा उत्सव एवं हिन्दी पखवाड़ा

संस्थान में राजभाषा उत्सव एवं हिन्दी पखवाड़ा (01–15 सितंबर, 2016) का आयोजन किया गया। इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें संस्थान के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया। विजेताओं को ''हिन्दी दिवस''के अवसर पर दिनांक 14.9.2016 को मुख्य अतिथि के रुप में आए डॉ. आर्जव शर्मा, निदेशक, राष्ट्रीय पशु आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, करनाल द्वारा सम्मानित किया गया। इस अवसर पर विशेष अतिथि के रूप में श्री पवन पबाना ने वीर रस की कविता पाठ द्वारा सभी को मुग्ध किया। दिनांक 09.09.2016 को नराकास स्तर पर ''निंबध लेखन'' प्रतियोगिता को आयोजन किया गया जिसमें सभी केन्द्र सरकार के कार्यालय, राष्ट्रीयकृत बैंक, उपक्रम, निगम, विश्वविद्यालय एवं संस्थान के अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया।

हिन्दी कार्यशालाएं

- ''गेहूँ का अवशेष प्रबंधन'' विषय पर दिनांक 25.04.2016 को कार्यशाला का आयोजन किया गया।
- ''भूजल संरक्षण दिवस'' के अवसर पर ''बदलते पर्यावरण समय में मानव व्यवहार'' विषय पर दिनांक 10 जून, 2016 को हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें संस्थान के कर्मचारियों के अतिरिक्त स्कूल के बच्चों ने भी भाग लिया।
- भा.कृ.अनु.प.–भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल द्वारा दिनांक 30.09.2016 को 11:00 बजे आगंतुक कक्ष में ''हिन्दी पुस्तकों की प्रदर्शनी व हिन्दी साहित्य के प्रति जागरुकता'' विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।
- "कृषि शिक्षा" पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन 3.12.2016 को संस्थान के सभागार में किया गया जिसमें स्कूल के बच्चों में कृषि शिक्षा के प्रति रूझान बढ़ाने व भविष्य में इसे व्यवसाय के रूप में अपनाने के लिए प्रेरित किया गया।

अन्य गतिविधियां

- नराकास, करनाल की समीक्षा बैठकें 17.06.2016 तथा 29.11.2016 को राष्ट्रीय डेरी अुनसंधान संस्थान, करनाल में आयोजित हुई जिसमें संस्थान का प्रतिनिधित्व डॉ. आर.के. गुप्ता, डॉ. जी. पी. सिंह, डॉ. अनुज कुमार एवं श्री जे. के. पाण्डेय ने किया।
- "गणेश शंकर विद्यार्थी हिन्दी कृषि पत्रिका पुरस्कार": गेहूँ एवं जौ स्वर्णिमा को "गणेश शंकर विद्यार्थी हिन्दी कृषि पत्रिका पुरस्कार" परिषद के अधीनस्थ संस्थानों द्वारा प्रकाशित गृह पत्रिकाओं में वर्ष 2015–16 के दौरान प्रकाशित पत्रिकाओं में गेहूँ एवं जौ स्वर्णिमा को तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। इस पुरस्कार के संस्थान के निदेशक डॉ. आर. के. गुप्ता एवं प्रधान वैज्ञानिक व राजभाषा अधिकारी, डॉ. अनुज कुमार ने 16 जुलाई, 2016 को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

संस्थान के निदेशक डॉ. आर. के. गुप्ता एवं प्रधान वैज्ञानिक व राजभाषा अधिकारी, डॉ. अनुज कुमार ने 16 जुलाई, 2016 को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की 88 वीं स्थापना दिवस पर आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में ग्रहण करते हुए

की 88 वीं स्थापना दिवस पर आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में ग्रहण किया।

प्रमुख उपलब्धियां

- गेहूँ एवं जौ स्वर्णिमा के सातवें अंक में प्रकाशित "गेहूँ में उद्यमता विकास" (अनुज कुमार, स्नेह नरवाल,बी एस त्यागी, आर के गुप्ता एवं जे के पाण्डेय) तथा "आधुनिक युग में जैव उर्वरक व कार्बनिक खेती की व आवश्यकता उपयोगिता"(विकास जून, आर एस छोकर, एस सी गिल, आर के सिंह, सचिन मलिक, ममता काजला, अंकुर चौधरी एवं आर के शर्मा)को उत्कृष्ट लेख पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस प्रतियोगिता में चयनित दो लेखों के लिए 3000 रूपये प्रति लेख की नगद पुरस्कार राशि दी गई।
- किसानों के लिए एक छःमाही पत्रिका गेहूँ एवं जौ संदेश का समयबद्ध प्रकाशन किया जा रहा है। साथ ही संस्थान द्वारा हिन्दी में विस्तार बुलेटिन, विस्तार कार्ड व अन्य प्रकाशन समय–समय पर प्रकाशित किए जा रहे हैं।
- गेहूँ:–गेहूँ की नई किस्मों, राज 4238, एच. एस. 562 एवं एच. डी. 4728 (डी) को विमोचित एवं अधिसूचित किया गया है जिसे पोषण के आधार पर डब्ल्यू बी 2 भारत की पहली गेहूँ की प्रजाति की पहचान की गई एवं जिसमें जिंक, और लोहा की मात्रा अधिक है।
- जौः–जौ की दो नई प्रजातियों; आर. डी. 2849 एवं आर. डी. 2794 को विमोचित व अधिसूचित किया गया।
- डी. डब्ल्यू. आर. बी. 123 जो कि द्वि पंक्ति माल्ट जौ है, इसे उत्तर पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के लिए समय से बुआई एवं सिंचित अवस्था के लिए पहचान की गई।
- जेनेटिक स्टॉक्सः – इस दौरान डी. डब्ल्यू. आर. 128 तथा डी. डब्ल्यू. आर. बी. 143 जौ के जेनेटिक स्टॉक्स का पंजीकरण किया गया।
- लीफ रस्ट एवं करनाल बंट के पौधों के जीनोम की डिकोडींग की गई जो कि एक आणविक जीव विज्ञान के क्षेत्र में उत्कृष्टता का उदाहरण है।
- दाना भराई की अवधि एवं दानों की संख्या, करनाल बंट प्रतिरोधकता और स्पॉट ब्लॉच के क्यू. टी. एल की मैपिंग की गई।
- इस वर्ष के दौरान संस्थान ने गेहूँ का 1962.86 कुंतल एवं जौ का 135 कुंतल बीज पैदा किया गया।
- इस फसल सत्र के दौरान गेहूँ के 578 हैक्टर भूमि पर 568 अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों का आयोजन किया गया जिससे देश के 1373 किसानों को सीधा लाभ मिला। जौ के 125 अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों का आयोजन 130 हैक्टर भूमि पर किया गया जिससे 265 किसान लाभान्वित हुए।
- वर्ष 2016 के दौरान, संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा लिखित 35 से अधिक शोध पत्र उच्च इम्पैक्ट फैक्टर वाले शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित किए गए।
- पौध किस्म सुरक्षा एवं किसान अधिकार अधिनियम के तहत अलग–अलग श्रेणियों के लिए गेहूँ की 25 एवं जौ की 13 प्रजातियों के पंजीकरण के लिए आवेदन किया गया।
- भा.कृ.अनु.प.–भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल के प्रयासों से बड़ी संख्या में गेहूँ एवं जौ के वर्तमान (एक्सटैन्ट) किस्मों के पंजीकरण के लिए आवेदन किया गया। जिसके लिए पौध किस्म सुरक्षा एवं किसान अधिकार ने इस संस्थान को प्रंशसा–पत्र प्रदान किया।
- दो वाह्य वित्त पोषित परियोजनाओं की शुरूआत हुई।

(1) भारत–इंग्लैंड में गेहूँ में नत्रजन उपयोग दक्षता में सुधार।

(2) भारत में जलवायु स्मार्ट खेती के लिए मौसम परिवर्तनशीलता के परिपेक्ष्य में गेहूँ उपज संवेदनशीलता वाले क्षेत्रों का पता लगाना।

मानव संसाधन विकास

कठिया गेहूँ उत्पादन, विपणनएवं उसके उपभोग; फिनोटाइपिंग एड्स एवं गेहूँ एवं जौ के प्रयोगात्मक प्रक्षेत्र में डाटा रिकार्डिंग गुणवत्ता बीज के लिए प्रशिक्षण गेहूँ में सुखा के लिए फिनोटाइपिंग समन्वित परीक्षण आयोजित किया गया। ब्लास्ट के तैयारी के लिए अनेकों विचार–मंथन सत्रों तथा बैठकों का आयोजन किया गया।

किसान

- किसानों के लिए 55 व्यावसायिक प्रशिक्षणों का आयोजन किया गया।
- किसान–वैज्ञानिक संवादात्मक कार्यशाला एवं बीज दिवस का आयोजन 17.10.2016 को किया गया।
- इस संस्थान में "मेरा गाँव मेरा गौरव" के अंतर्गत 14 दल ने 69 गाँवों को अपनाया व कार्य किया।

सम्मान

- इस संस्थान की वार्षिक पत्रिका "गेहूँ एवं जौ स्वर्णिमा" को गणेश शंकर विद्यार्थी पुरस्कार से नवाजा गया।
- इस संस्थान में कार्यरत कई लोगों का "उन्नत भारत सेवा श्री" पुरस्कार, 2016 मिला।
- इस संस्थान ने कृषि विज्ञान केन्द्र, पाली (राजस्थान) के साथ मिलकर खर्चिया गाँव के नाम को "पौध जीनोम रक्षक समुदाय" करवाया गया तथा इस समुदाय को भारत सरकार के माननीय कृषि मंत्री श्री राधामोहन सिंह

जी ने नास कॉम्पलैक्स के एक कार्यक्रम में 24 अगस्त, 2016 को पुरस्कार दिया।

- डॉ. एस. सी. भारद्वाज, प्रमुख वैज्ञानिक को भारतीय फाईटो पैथोलोजीकल सोसाईटी से एस. एन. दासगुप्ता पुरस्कार, 2016 से सम्मानित किया गया।
- डॉ. ममृथा को भारतीय प्लांट फिजिऑलोजी सभा ने आर. डी. असना गोल्ड मेडल 2016 का पुरस्कार दिया गया।
- डॉ. डी. पी. सिंह को आई. एफ.टी.ए. कृषि बागवानी एवं पौध विज्ञान के 3 अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन 2016 में उत्कृष्ट वैज्ञानिक पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड

हिन्दी चेतना मास

संस्थान में 05 सितंबर 2016 को हिंदी समारोह का शुभारंभ किया गया। समारोह की अवधि पर विभिन्न प्रतियोगिताओं के साथ हिंदी चेतना मास समारोह मनाया गया। भारत माता की वंदना करते हुए हिंदी चेतना मास समारोह का शुभारंभ हुआ। श्री सुरेश कुमार, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी ने सभा में उपस्थित सभी स्टॉफ सदस्यों का स्वागत किया और हिंदी समारोह के सफल आयोजन की शुभकामनाओं की कामना की। डॉ. पी. चौड़प्पा, निदेशक, कें.रो.फ.अ.सं, कासरगोड ने अपने अध्यक्षीय भाषण में हिंदी समारोह की सफलता की कामना की और सभी कर्मचारियों एवं अधिकारियों से इसकी सफलता हेतु पूर्ण सहयोग देकर हिंदी को बढ़ावा देने का आह्वान किया।

श्री सुरेश कुमार, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी ने माननीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री की अपील पढ़ी और सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से अपील को साकार करने और अपना अधिकाधिक सरकारी कार्य हिंदी में करने की आशा प्रकट की। समारोह की मुख्य अतिथि डॉ. सीमा चन्द्रकन, सहायक प्रोफेसर (हिंदी) केरल केन्द्रीय विश्व विद्यालय, कासरगोड़, केरल, ने हिंदी भाषा के महत्व पर तथा हिंदी को राजभाषा के रूप में अपनाने की सरल विधियों पर प्रेरणादायक भाषण दिया।

हिंदी चेतना मास समारोह की अवधि के दौरान संस्थान के अधिकारियों/कर्मचारियों के बीच हिंदी के प्रति रूचि बढ़ाने हेतु विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताएं जैसे हिंदी अनुवाद एवं टिप्पमण लेखन प्रतियोगिता, हिंदी टंकण प्रतियोगिता, हिंदी सुलेख प्रतियोगिता, स्मरण परीक्षा प्रतियोगिता आयोजित की गईं। दिनांक 20 अक्तूबर, 2016 को डॉ. पी. चौड़प्पा, निदेशक

महोदय की अध्यक्षता में समापन दिवस मनाया गया। निदेशक महोदय ने अपने अध्यक्षीय भाषण में हिंदी समारोह की सफलता पर खुशी प्रकट की कि अधिकांश स्टॉफ सदस्यों ने एक साथ जुड़कर हिंदी समारोह के विभिन्न कार्यक्रमों के आयोजन में सहयोग दिया है, प्रतियोगिताओं में भाग लिया है अपनी–अपनी रूचि प्रकट की है। उन्होंने अपील की कि इसी प्रकार राजभाषा के कार्यान्वयन में, प्रयोग में सहयोग देकर हिंदी के प्रयोग में उत्तरोत्तर बढ़ावा दें और इस संस्थान का मान बढ़ाएं।

श्री सुरेश कुमार, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी ने मंच पर आसीन विशिष्ट व्यक्तियों का परिचय कराया और सबका हार्दिक स्वागत किया श्रीमती के. श्री लता, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी (राजभाषा) ने पिछले एक वर्ष की राजभाषा कार्यान्यन की गतिविधियों पर रिपोर्ट प्रस्तुत की और हिंदी चेतना मास समारोह की गतिविधियों पर संक्षिप्त् विवरण दिया। डॉ. प्रवीण राजाराम बनसोडे, प्रबंधक (राजभाषा) कार्पोरेशन बैंक, मंगलूर, मुख्य अतिथि रहे उन्होंने राजभाषा के विकास पर यांत्रिक सुविधाओं की भूमिका विशेष रूप से यूनिकोड के उपयोग पर प्रस्तुतीकरण दिया।

इस अवधि के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं का पुरस्कार वितरण मुख्य अतिथि द्वारा किया गया और निदेशक महोदय ने सरकारी काम काज में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करने वाले 10 अधिकारियों एवं कर्मचारियों को इस अवसर पर नकद पुरस्कार वितरण कर प्रोत्साहित किया और अभिनंदन किया। श्रीमती के श्री लता, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी (राजभाषा) एवं सदस्य सचिव,

राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने सबके प्रति धन्यवाद प्रकट किया।

हिन्दी प्रकाशन

- नारियल का उत्पादन एवं प्रसंस्करण पर भा.कृ.अनु.प–केंरोफअसं प्रौद्योगिकियां–डोक्युमेंटरी फिल्म (के.श्री लता, अल्का गुप्ता)
- लाल ताड़ घुन के बृहत–क्षेत्र प्रबंधन में सामुदायिक भागीदारी, नारियल किसानों के लिए सचित्र पुस्तिका (के.श्री लता, अल्का गुप्ता)

भा.कृ.अनु.प. – राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण एवं भूमि उपयोग नियोजन ब्यूरो, क्षेत्रीय केन्द्र, दिल्ली

हिन्दी सप्ताह

भारत सरकार की राजभाषा विकास नीति के अन्तर्गत विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वाधान में राजभाषा के प्रचार–प्रसार एवं सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रयोग को अधिकाधिक बढ़ावा देने के लिए क्षेत्रीय केन्द्र दिल्ली में 14–20 सितम्बर, 2016 तक हिन्दी सप्ताह सफलतापूर्वक मनाया गया। जिसमें विविध ज्ञानवर्धक, रूचीपूर्ण हिन्दी कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

उद्घाटन सत्र के प्रारम्भ में सरस्वती वंदना एवं दीप प्रज्वल्लित करके हिन्दी सप्ताह का उद्घाटन किया गया। इसके उपरांत समारोह के सह अध्यक्ष श्री अरविन्द कुमार, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी द्वारा माननीय श्री राधा मोहन सिंह जी, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री, भारत सरकार का संदेश पढ़ा व साथ ही राजभाषा के विकास एवं उन्नति पर प्रकाश डाला, इसके उपरांत हिन्दी सप्ताह समारोह की अध्यक्ष कु. रितु नागदेव, वैज्ञानिक ने हिन्दी पर एवं हिन्दी सप्ताह समारोह में आयोजित किये जाने वाले विविध रूचीपूर्ण एवं ज्ञानवर्धक कार्यक्रमों के बारे में बताया। अपने अध्यक्षीय भाषण में डॉ. शंकर कुमार महापात्रा, प्रधान वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष द्वारा कार्यालय में हिन्दी में की गई प्रगति के बारे में बताया एवं राजभाषा विभाग के वार्षिक कार्यक्रम 2016–17 पर प्रकाश डाला व पिछले वर्ष से अब तक कार्यालय में हिन्दी की प्रगति के बारे में बताया। इसके उपरांत अध्यक्ष महोदय ने हिन्दी सप्ताह समारोह, 2016 के शुरूआत की अनुमति प्रदान की।

हिंदी सप्ताह समारोह – 14 से 20 सितम्बर 2016

14 सितंबर, 2016 से 20.9.2016 तक की अवधि के दौरान हिन्दी गीत कविता का कार्यक्रम, भाषण प्रतियोगिता, वाद–विवाद प्रतियोगिता, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, रूचीपूर्ण कार्यक्रम अंताक्षरी, हिन्दी में शुद्ध लेखन हेतु शुद्ध लेखन प्रतिभागिता तथा सुंदर लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था, जिसमें केन्द्र के अधिकांश प्रतिभागियों ने भाग लिया। अपराह्न में हिन्दी सप्ताह समारोह 2016 के समापन समारोह में कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ. शंकर कुमार महापात्रा, प्रधान वैज्ञानिक द्वारा हिन्दी सप्ताह समारोह में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को आकर्षक पुरस्कारों के साथ–साथ प्रमाण पत्र द्वारा सम्मानित किया गया व साथ में हिन्दी सप्ताह समारोह – 2016 की अध्यक्ष कु. रितु नागदेव, वैज्ञानिक द्वारा डॉ. महापात्रा को एक स्मृति चिन्ह प्रदान किया गया। इसके अलावा भी केन्द्र में 20,000 शब्दों से अधिक लिखने/टाइपिंग करने वाले दो कर्मचारियों को भी नगद पुरस्कार दिया गया।

दिनांक 11 फरवरी 2016 को क्षेत्रीय केन्द्र दिल्ली के वैज्ञानिकों एवं तकनीकी अधिकारियों हेतु प्रथम कार्यशाला का दृश्य

इसके उपरांत अपने अध्यक्षीय भाषण में डॉ. शंकर कुमार महापात्रा, प्रधान वैज्ञानिक ने कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का धन्यवाद दिया जिन्होंने इस हिन्दी सप्ताह समारोह को सफल बनाया व सभी विजेताओं को बधाई दी। आपने बताया कि हिन्दी बहुत ही सहज व सरल है व देश के अधिकांश भागों में समझी जाती है व हमारे देश को एक कड़ी के रूप में जोड़े हुए है। हमें अपनी राजभाषा का सम्मान करते हुए इसका अधिकाधिक प्रयोग करना चाहिए। इसके उपरांत हिन्दी सप्ताह समारोह की अध्यक्षा कु. रितु नागदेव, वैज्ञानिक ने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को सभी कार्यक्रमों में बढ़–चढ़कर भाग लेने के लिए बधाई

दी व सभी निर्णायक मंडल के सदस्यों का धन्यवाद दिया। हिन्दी सप्ताह समारोह–2016 के सभी कार्यक्रमों का मंच संचालन एवं कार्यक्रमों का आयोजन श्री अरविन्द कुमार, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी व सह–अध्यक्ष हिन्दी सप्ताह समारोह द्वारा किया गया व आभार प्रदर्शन श्री कृष्ण कुमार भारद्वाज, तकनीकी अधिकारी ने माना।

हिन्दी कार्यशालाएं

क्षेत्रीय केन्द्र दिल्ली में दिनांक 01.01.2016 से 31.12.2016 के दौरान चार हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। जिसमें केन्द्र के वैज्ञानिकों, तकनीकी अधिकारियों, तकनीकी सहायक वर्ग एवं प्रशासनिक वर्ग ने सक्रिय रूप से भाग लेकर उन्हें सफल बनाया। इन चार कार्यशालाओं का संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है।

क्षेत्रीय केन्द्र दिल्ली में दिनांक 11 फरवरी, 2016 को केन्द्र के वैज्ञानिकों एवं तकनीकी अधिकारियों हेतु प्रथम कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में व्याख्याान देने हेतु श्रीमती सीमा चोपड़ा, निदेशक (रा.भा.), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, कृषि भवन, नई दिल्ली सादर आमंत्रित थीं। आपने पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से हिन्दी में वैज्ञानिक एवं तकनीकी लेखन के लाभ विषय पर अपना व्याख्यांन दिया। आपने बताया कि हम लोग कृषि अनुसंधान के माध्यम से सीधे किसानों से जुड़े हैं व किसानों के अनुसंधान का तभी फायदा पहुंचता है जब हम उन्हीं की मातृ भाषा में उस अनुसंधान के बारे में जानकारी दें। इस कार्यशाला की अध्यक्षता डॉ सुरेंद्र कुमार सिंह, निदेशक, नागपुर द्वारा की गई व आभार प्रदर्शन श्री अरविन्द कुमार, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी द्वारा किया गया। इस कार्यशाला में 14 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

केन्द्र की दूसरी कार्यशाला का आयोजन 06 मई, 2016को केन्द्र के प्रशासनिक वर्ग एवं तकनीकी सहायक वर्ग हेतु किया गया। इस कार्यशाला में व्याख्यान देने हेतु श्रीमती अर्चना राघव, सहायक निदेशक (रा.भा.) रा.प.आ.अ.ब्यूरो, भा.कृ.अनु.स. परिसर, नई दिल्ली सादर आमंत्रित थीं। आपने ''सरकारी कामकाज में सरल और सहज हिन्दी के प्रयोग के नीति निर्देश'' विषय पर अपना व्याख्यान दिया। आपने इस बारे में विस्तार से बताया। इस कार्यशाला में 13 प्रतिभागियों ने भाग लिया, इस कार्यशाला की अध्यक्षता डॉ. आर.पी. यादव, प्रधान वैज्ञानिक एवं क्षेत्रीय केन्द्र प्रमुख ने की व आभार श्री अरविन्द कुमार वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी ने माना।

केन्द्र की तीसरी कार्यशाला का आयोजन दिनांक 30 जुलाई, 2016 को केन्द्र के वैज्ञानिक एवं तकनीकी अधिकारी वर्ग हेतु किया गया। इस कार्यशाला में व्याख्यान देने हेतु श्री मातवर सिंह, कठैत, पूर्व संयुक्त निदेशक, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली आमंत्रित थे। आपने राजभाषा नीति की समग्र जानकारी विषय व्याख्यान हेतु चुना। आपने भाषा के विकास, भेद, पहचान आदि के बारे में विस्तार से बताया। आपने राजभाषा के विभिन्न बिन्दुओं पर प्रकाश डाला। इस कार्यशाला में 12 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यशाला की अध्यक्षता डॉ. आर.पी. यादव, प्रधान वैज्ञानिक व केन्द्र प्रमुख ने की व आभार श्री अरविन्द कुमार वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी ने माना।

केन्द्र की चौथी एवं वर्ष 2016 की अंतिम कार्यशाला का आयोजन दिनांक 20 दिसम्बर, 2016 को केन्द्र के प्रशासनिक एवं तकनीकी सहायक वर्ग हेतु किया गया। इस कार्यशाला में व्याख्या्न देने हेतु श्री मनोज कुमार, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (रा.भा.) भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, कृषि भवन, नई दिल्ली आमंत्रित थे। आपने राजभाषा नियम – अधिनियम एवं सरकारी कार्यालय में पत्राचार के विविध रूप विषय पर अपना व्याख्यान दिया। आपने राजभाषा से संबंधित विविध अनुच्छेदों के बारे में विस्तार से पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से बताया। आपने सरकारी पत्राचार को हिन्दी में किस प्रकार से करना चाहिए विषय पर विस्तार से बताया। इस कार्यालय में केन्द्र के 14 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यशाला की अध्यक्षता डॉ. आर.पी. यादव, प्रधान वैज्ञानिक एवं क्षेत्रीय केन्द्र प्रमुख ने की व आभार श्री अरविन्द् कुमार, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी ने माना।

इस प्रकार क्षेत्रीय केन्द्र दिल्ली में दिनांक 01.01.2016 से 31.12.2016 तक चार कार्यशालाओं का आयोजन किया गया।

प्रमुख उपलब्धियां

- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उत्तरी दिल्ली) नराकास की तृतीय बैठक जिसका आयोजन दिनांक 30 नवम्बर को नास कॉम्प्लेक्स में हुआ था। उक्त बैठक में हमारे

नराकास, उत्तरी दिल्ली के अध्याक्ष सम्मानीय डॉ. गुरबचन सिंह, अध्यक्ष, भारतीय कृषि चयन मंडल द्वारा द्वितीय पुरस्कार प्राप्त करते केंद्र प्रमुख डॉ. राम प्रसाद यादव जी, प्रधान वैज्ञानिक एवं श्री अरविन्द कुमार, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी

कार्यालय भा.कृ.अनु.प. – राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण एवं भूमि उपयोग नियोजन ब्यूरो, क्षेत्रीय केन्द्र दिल्ली को वर्ष 2015–16 में राजभाषा कार्यान्वयन कार्य में उत्कृष्ट निष्पादन हेतु छोटे कार्यालय वर्ग (50 से कम कार्मिक) में नराकास, उत्तरी दिल्ली के अध्यक्ष सम्मानीय डॉ. गुरबचन सिंह, अध्यक्ष, भारतीय कृषि चयन मंडल द्वारा द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया। पुरस्कार में एक ट्रॉफी एवं एक प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया। पुरस्कार को केन्द्र के प्रमुख डॉ. राम प्रसाद यादव जी, प्रधान वैज्ञानिक एवं श्री अरविन्द कुमार, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी एवं प्रभारी हिन्दी द्वारा ग्रहण किया गया।

- भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, मुख्यालय, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित गृह पत्रिका 'राजभाषा आलेख–2016' हमारे क्षेत्रीय केन्द्र दिल्ली में वर्ष 2015 (01.01.2015 से 31.12.2015) तक राजभाषा से संबंधित विभिन्न गतिविधियों का लेखा जोखा हिन्दी सप्ताह समारोह, हिन्दी कार्यशालाएं, हिन्दी बैठकों, राजभाषा से संबंधित अन्य जानकारियों को राजभाषा आलेख–2016 में प्रकाशित होने भेजा गया एवं हमारी राजभाषा से संबंधित जानकारियों को उक्त पत्रिका में उचित स्थान दिया गया।

भा.कृ.अनु.प.–भारतीय मृदा एवं जल संरक्षण संस्थान, अनुसंधान केंद्र, वासद

हिन्दी पखवाड़ा

केंद्र सरकार की राजभाषा नीति का अनुपालन करते हुए, भा.कृ.अनु.प.– भारतीय मृदा एवं जल संरक्षण संस्थान, अनुसंधान केंद्र, वासद पर दिनांक 14 से 28 सितम्बर, 2016 के दौरान हिन्दी पखवाड़ा के दौरान हिन्दी निबंध, कंप्यूटर टाइपिंग, पत्र लेखन एवं अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद, कार्यालय से संबंधित शब्दावली, अंग्रेजी से हिन्दी रूपांतरण लेखन प्रतियोगिता, हिन्दी व्याकरण आदि विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया।

हिन्दी कार्यशाला

केन्द्र में एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें केन्द्र 42 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया जिनमें वैज्ञानिक, तकनीकी वर्ग, प्रशासनिक कर्मचारी, दक्ष सहायक कर्मचारियों एवं अभियांत्रिकी के प्रशिक्षु छात्रों ने भी भाग लिया। कार्यशाला का समापन के दौरान केन्द्राध्यक्ष ने अपने भाषण के दौरान सभी कार्मिकों से आग्रह किया कि वे राजभाषा नियमों का अनुपालन करें तथा हिंदी में अधिक से अधिक कार्यालय में कार्य करें।

हम जो कुछ भी हैं वो हमने आज तक क्या सोचा इस बात का परिणाम है। यदि कोई व्यक्ति बुरी सोच के साथ बोलता या काम करता है, तो उसे कष्ट ही मिलता है। यदि कोई व्यक्ति शुद्ध विचारों के साथ बोलता या काम करता है, तो उसकी परछाई की तरह खुशी उसका साथ कभी नहीं छोड़ती।

– भगवान गौतम बुद्ध

विविधा

बेटी अनमोल

राजेश सहाय[1]

सुबह– सवेरे समाचार–पत्र में संघ लोक सेवा आयोग की सिविल–सेवा परीक्षा की अंतिम सूची में अपना नाम देखकर अंजलि की खुशी का ठिकाना नहीं था। वर्षों की तपस्या आज सफलीभूत हुई थी। इस सफलता के पीछे संघर्ष की एक लम्बी कहानी थी। आज ना चाहकर भी अंजलि अतीत की गहराई में खो गयी। बेटी को आज भी समाज में अपना मुकाम बनाने में समाज और अपने ही लोगों से किस प्रकार संघर्ष करना पड़ता है यह केवल वो ही जानती थी। यो तो इकीसवीं सदी का समाज पढ़ा–लिखा और प्रगतिशील कहलाता है, किन्तु इसी प्रगतिशील समाज में आज भी बेटियों को किस प्रकार संघर्ष करना पड़ता है यह अंजलि ने अपने जीवन में गहराई से झेला और महसूस किया था। उसका अब तक का जीवन असमान अवसरों और सुयोगों का रहा था और इस असमानता का जहर उसे समाज से नहीं वरन अपने ही लोगों ने पीने को मजबूर किया था।

अंजलि के पिता श्रीनाथ बाबू स्थानीय कचहरी में पेशकार के पद पर कार्यरत थे। मामूली क्लर्क थे और वेतन अधिक नहीं था, किन्तु वेतन की कमी ऊपरी कमाई पूरी कर देती थी। लोग–बाग दिनभर उनकी चापलूसी में लगे रहते। श्रीनाथबाबू भी इस मैदान के मंझे हुए खिलाड़ी थे और अपने साहब के भरोसेमंद। वाकपटु तो वे थे ही। जजमान देखकर उसकी औकात पहचान जान लेनेवालों में थे श्रीनाथ बाबू। किसकी गाँठ में लक्ष्मी की कितनी कृपा है, वे एक बार बात कर ही समझ जाते और उसी के अनुसार अपना जाल बिछाते। साहब भी उनके इस गुण के कायल हो जाते। अतः कितने ही साहब आये और गए पर श्रीनाथ बाबू पर सबकी कृपा बनी रही।

इन्हीं श्रीनाथ बाबू के घर अंजलिने पहली संतान के रूप में जन्म लिया। अंजलि स्वयं को पिता की लाड़ली मानती थी। श्रीनाथबाबू भी कचहरी से आते हुए अक्सर अपनी बेटी के लिए कुछ न कुछ ले आते, जिसे पा अंजलि खुश हो जाती। उसे विश्वास था वो अपने पापा से जिस किसी चीज की भी मांग करेगी उसे अवश्य मिल जाएगी। श्रीनाथ बाबू उसकी किसी भी फरमाईश को पूरी करने को सदा तत्पर रहते थे। श्रीनाथ बाबू की पत्नी का मानना था उन्होने अपनी पुत्री को सिर चढ़ा रखा है। बावजूद इसके अंजलि मे कभी जिद नहीं समाया। वह दो वर्ष की ही थी जब अनमोल का जन्म हुआ। भाई के आने पर अंजलि को बड़ी खुशी हुई थी। जब अंजलि पांच वर्ष की हुई तो श्रीनाथ बाबू ने उसका दाखिला पहली कक्षा में पास के ही केंद्रीय विद्यालय में करवा दिया। अंजलि पढ़ने–लिखने में कुशाग्र थी, खासकर उसकी स्मरणशक्ति विलक्षण थी।

अनमोल के जन्म के बाद से ही श्रीनाथ बाबू के व्यवहार और अंजलि के प्रति उनके दृष्टिकोण में परिवर्तन स्पष्ट परिलक्षित होने लगे थे। इसमे उनकी पत्नी रमादेवी का भी हाथ था जिनका मानना था कि बेटी तो पराया–धन होती है, जिसे शादी के बाद विदा कर देना है। अतः इस धन को केवल सहेजकर रखना ही माता–पिता की जिम्मेवारी होती है। इस पर खर्च करना अपव्यय है। वहीं पुत्र तो अपनी संपत्ति है जिस पर निवेश करना अपना भविष्य सुधारने के बराबर है। अपनी पत्नी की इन पुरातन विचारों का विरोध करने की जगह श्रीनाथ बाबू न केवल चुप रहे, वरन परोक्ष रूप से उन्होने इसका समर्थन भी किया। वहीं श्रीनाथ बाबू, जो कभी अंजलि की फरमाइशों को पूरी करने को तत्पर रहते थे, ने अब अपने हाथ पीछे खींच लिए थे। मानो बच्ची की छोटी–छोटी फरमाईश भी पूरी कर सकने की हैसियत उनकी ना रह गयी हो। उनका ध्यान अब अंजलि से हटकर अनमोल पर अधिक से अधिक केंद्रित रहने लगा। यो तो दोनों बच्चों के लालन–पालन और खान–पान में कोई अंतर श्रीनाथबाबू ने नहीं किया पर वे अपने पुत्र के भविष्य के प्रति ज्यादा सजग हो गए थे और इस सजगता का परोक्ष खामियाजा अंजलि भुगतने को मजबूर थी। छोटी सी अंजलि में तो इतनी भी समझदारी नहीं थी कि वह इन बातों की गूढ़ता को समझ पाती। क्यों उसके पिता अब कचहरी से आते हुए उसकी प्रिय मिठाई नहीं लाते?– यह उस छोटी सी बच्ची के समझ के परे था। अब श्रीनाथ बाबू बात–बात पर अंजलि पर झुंझलाने भी लग गए थे।

[1]वरिष्ठ वित्त एवं लेखा अधिकारी, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

अनमोल जब पांच वर्ष का हुआ तो उसके एडमिशन की चिंता श्रीनाथ बाबू को हुई। अपनी समस्त जान–पहचान का लाभ उठाते हुए श्रीनाथ बाबू अनमोल का एडमिशन शहर के सबसे महंगे और प्रतिष्ठित कान्वेंट स्कूल में करवाने में सफल रहे। अंजलि यह समझ भी नहीं पायी कि क्यों अनमोल उसके साथ केंद्रीय विद्यालय नहीं जा सकता? अपनी समझ से वो श्रीनाथ बाबू को आश्वस्त करने की कोशिश की कि स्कूल में वो अपने भाई का पूरा ध्यान रखेगी पर श्रीनाथ बाबू उसकी मासूमियत पर मुस्कुरा कर रह गए। एक सात वर्ष की बच्ची को यह समझाना कि क्यों उन्होने बेटी को केंद्रीय विद्यालय में और बेटे को महंगे कान्वेंट स्कूल में पढ़ाने का फैसला किया, श्रीनाथ बाबू को सही नहीं लगा। यह बता पाना मुश्किल था कि बेटी को यह स्पष्ट न कर वे अंजलि को दुनिया के प्रपंच से बचाने की कोशिश कर रहे थे अथवा अपनी ही बेटी की नजरों में गिरने से बचने का प्रयास कर रहे थे? श्रीनाथ बाबू की आत्मा अगर होती तो उन्हें अवश्य धिक्कारती। पर श्रीनाथ बाबू दुनियादारी के मंझे हुए खिलाडी थे और अपनी आत्मा का संहार तो वे कब का कर चुके थे! जैसे कचहरी में दावं चलाने में वे माहिर थे, संभवतः वैसे ही दांव श्रीनाथ बाबू अब घर में भी चलाने लग गए थे।

जहां अंजलि रोज पैदल ही पास के केंद्रीय विद्यालय में आना–जाना करती थी, वही अनमोल के लिए स्कूल बस की भी व्यवस्था की गयी। आखिर यह अनमोल के स्वाभिमान की बात थी। जहां स्कूल के अन्य बच्चे अपनी गाड़ी से अथवा स्कूल के वातानुकूलित बस से स्कूल आते थे वहाँ अनमोल श्रीनाथ बाबू के स्कूटर से स्कूल जाए, यह उसके स्वाभिमान के खिलाफ था – जबकि यह श्रीनाथ बाबू के लिये सुविधाजनक था क्योंकि अनमोल का स्कूल भी शहर से बाहर कचहरी के पास ही था जहां श्रीनाथ बाबू का ऑफिस था। अंजलि के स्कूल में जितना शुल्क पूरे वर्ष के लिए लगता था वो अनमोल के स्कूल के एक माह के फीस के लिए भी कम पड़ता। इसके अलावे हर दूसरे सप्ताह कुछ न कुछ एक्टिविटी होती रहती जिसके लिए अलग से पैसे लिए जाते थे। कान्वेंट स्कूल के चोंचलों के अनुसार अनमोल को एक खेल में खुद को नामांकित करवाना पड़ा जिसके लिए फीस अलग से ली गयी। स्कूल से सालाना किसी पिकनिक स्पॉट पर ले जाया जाता जिसका खर्च भी अलग से देना पड़ता। संक्षेप में कान्वेंट स्कूल ने श्रीनाथ बाबू का मानो सारा तेल निकाल कर रख दिया। पर श्रीनाथ बाबू हर मुश्किलों का सामना बहादुरी से कर रहे थे और इसका सीधा असर ऑफिस के कार्यों में उनकी उगाही पर हो रहा था। धीरे–धीरे श्रीनाथ बाबू का नाम सबसे रिश्वतखोर पेश कार में होने लगा– इतना कि वही हाकिम जो श्रीनाथ बाबू पर कभी आँख मूँदकर विश्वास करते थे अब उनसे कतराने लगे थे और श्रीनाथ बाबू का तबादला इस अनुभाग से उस अनुभाग में होता रहता। पर श्रीनाथ बाबू को तब अपार संतोष होता जब अनमोल उनसे अंग्रेजी में बातें करता। उन्हें लगता कान्वेंट स्कूल में अनमोल को पढ़ाने का उन का मकसद पूरा हो गया था। चूँकि स्कूल में अनमोल के स्वाभिमान की बात थी अतः उन्होनें अनमोल को बता रखा था कि वे अनुमंडल कार्यालय में उच्च अधिकारी हैं हालाँकि यह पोल कुछ ही दिन में खुल गयी जब स्कूल के अन्य छात्र, जिनके पिता अनुमंडल कार्यालय में अधिकारी पद पर थे, को अनमोल के पिता की वास्तविकता का अपने अभिभावकों से पता चला।

अंजलि अपने क्लास की सबसे मेधावी छात्रा थी। स्कूल की प्रधानाध्यापिका श्रीमती अनीता पूरी की तो वह प्रिय छात्रा थी। उन्हें उम्मीद थी अंजलि दसवीं और बारहवीं की बोर्ड परीक्षाओं में स्कूल का नाम अवश्य रौशन करेगी। वो हमेशा अंजलि को विभिन्न प्रतियोगिताएं में भाग लेने को प्रेरित करती और प्रायः अंजलि उनकी उम्मीदों पर खरी भी उतरती । फिर चाहे अंतर–स्कूलवाद–विवाद प्रतियोगिता हो, अथवा अंतर–स्कूल सामान्य–ज्ञान प्रतियोगिताया फिर अंतर–स्कूल खेल कूद प्रतियोगिता– अंजलि ने सदा कामयाबी हासिल कर अपने स्कूल का नाम रौशन किया।

अंजलि की यो तो हर विषय में अच्छी पकड़ थी और वो सभी विषयों में अच्छे अंक लाती रही थी, किन्तु जब वो नवे वर्ग में गयी तो उसे विज्ञान और गणित में मुश्किल होने लगी। यो भी दसवीं की परीक्षा की तैयारी के लिए हर विद्यार्थी या तो कोचिंग ज्वाइन कर रहा था अथवा गाइड–बुक की मदद ले रहा था। ऐसे में मात्र कोर्स की एनसीईआरटी की पुस्तकों से दसवीं की तैयारी संभव नहीं था। उसने यह बात अपने पिता को बताई तो श्रीनाथ बाबू ने इस पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया। श्रीनाथ बाबू ट्यूशन का अतिरिक्त खर्च उठाने के पक्ष में नहीं थे पर प्रत्यक्ष उन्होने जताया कि वे लड़की को ट्यूशन दिलाने से सम्बंधित खतरे से सशंकित थे। लड़की है, शाम को ट्यूशन पढ़ने जाएगी तो ध्यान उस पर ही लगा रहेगा। आजकल का जमाना ऐसा नहीं है कि बेटी को अकेले शाम में घर से बाहर भेजा जाए। श्रीनाथ ने बहाना बनाया। चाहते तो स्कूटर से बेटी को ट्यूशन सर के पास छोड़ और ला सकते थे, पर ट्यूशन पर होनेवाला अतिरिक्त खर्च उन्हें नागवार लगा और इसलिए उन्होंने इसे बेटी की सुरक्षा से जोड़कर टाल दिया। नवीं की अर्धवार्षिक परीक्षा में अंजलि के अंक विज्ञान और गणित दोनों में ही कम आये और उसका रैंक भी क्लास में अव्वल से खिसक कर तीसरे नंबर पर आ गया। पर इसके बावजूद श्रीनाथ बाबू को न चेतना था और न ही वे चेते। किन्तु अंजलि के परिणाम ने अनिता मैडम को चौका दिया। उन्होनें फौरन ही अंजलि को बुला भेजा। जब उन्हें अंजलि की परेशानियों के बारे में पता

चला तो उन्होने स्कूल की गणित और विज्ञान की अध्यापिकाओं से अंजलि को अतिरिक्त समय में स्कूल में ही पढ़ाने का अनुरोध किया, जिसे मैडम सिंह और मैडम पाठक ने मान लिया। इस प्रकार दसवीं की बोर्ड परीक्षा में मैडम सिंह और मैडम पाठक की मदद से अंजलि ने न केवल गणित और विज्ञान में अच्छा किया, वरन राज्य में लड़कियों में प्रथम स्थान प्राप्त किया। अंजलि ने केंद्रीय विद्यालय में ही ग्यारहवीं में नामांकन लिया। यो भी उसके पास और कोई विकल्प भी नहीं था। अपनी प्रतिभा बल पर अब वो स्कूल के समस्त शिक्षकों और शिक्षिकाओं की चहेती बन गयी थी, और हर अध्यापक का ध्यान उसके परफॉरमेंस पर रहने लगा था। तथापि इंजीनियरिंग की प्रवेश परीक्षा के लिये कोचिंग निहायत जरूरी थी और इसकी तैयारी उसके स्कूल के शिक्षकों के बूतेका नहीं था। आज कल हर शहर में आईआईटी उत्तीर्ण छात्रों द्वारा प्रवेश–परीक्षा के तैयारी करवाई जाती है। ऐसे में केवल स्कूल की पढाई की बदौलत इस परीक्षा में उत्तीर्ण होना असंभव नहीं तो कठिन अवश्य था। लगभग इसी समय अनमोल ने आठवी की परीक्षा पास कर ली। आठवीं की परीक्षा में अनमोल के अंक अच्छे नहीं थे और यह श्रीनाथ बाबू के लिए चिंता का सबब बन गया था। इस बात को ध्यान में रखते हुए उन्होने अनमोल के प्राइवेट ट्यूशन की व्यवस्था करवाई। प्रतिदिन शाम को वे उसे लेकर न केवल ट्यूशन सर के पास जाते वरन दो घंटे बाद उसे सर के पास से लाने भी जाते। वो भी तब जब मोहल्ले के अन्य बच्चे उसी सर के पास ट्यूशन पढने रोज उसी रास्ते पैदल आया–जाया करते थे। चूँकि अनमोल के ट्यूशन में काफी खर्च हो रहा था, अतः श्रीनाथ बाबू पैसे की तंगी का बहाना बना अंजलि की इंजीनियरिंग की कोचिंग के विषय को टाल गए। जब स्कूल की प्रधानाध्यापिका महोदय ने श्रीनाथ बाबू को स्कूल में बुलाकर उन्हें समझाने की कोशिश की तो श्रीनाथ बाबू का जवाब था कि अंजलि जैसे छात्र चमकता हीरा के समान है जिसे जौहरी द्वारा चमकाने की आवश्यकता नहीं होती। मेरी बेटी लाखों में एक है और वह करियर में अपना मुकाम खुद बनाने के काबिल है। – श्रीनाथ बाबू एक ही वाक्य में अनीता मैडम की बोलती बंदकर घर चले आये। अंजलि को बहुत बुरा लगा और घर आकर वह अपने पिता से इस बात पर लड़ भी पड़ी। पर श्रीनाथ बाबू के कान पर जूं तक न रेंगी। तुम तो खुद ही पढ़ने–लिखने में इतनी होशियार हो। तुम जैसे बच्चे भी यदि कोचिंग पर निर्भर रहने लगे तो फिर अन्य बच्चों का क्या?"– श्रीनाथ बाबू ने मानो अपना फैसला सुना दिया। श्रीनाथ बाबू के इस व्यवहार ने अंजलि को भीतर तक आहत किया था। हालाँकि यह और बात थी कि उड़ती चिड़िया का पर गिन लेने में अपने को माहिर समझने वाले श्रीनाथ बाबू अपनी ही बेटी की मनोदशा पढ़ने में असफल रहे थे। श्रीनाथ बाबू, जो कचहरी में रहकर लोगों का चेहरा पढ़ लेने में अपने को सिद्ध हस्त समझते थे, अंजलि का चेहरा पढ़ने में असफल रहे थे। उस दिन के बाद से अंजलि के व्यवहार में एक विशेष परिवर्तन आया। हर समय हंसती–मुस्कराती रहने वाली अंजलि ने मानो हंसना–मुस्कराना ही छोड़ दिया। अब वो अपने में ही गुमशुम रहने लगी। अंजलि को यह यह बात समझ में आ गयी थी कि दुनिया के समक्ष अपने बेटी की तारीफ करनेवाले श्रीनाथ बाबू यानि उसके पिता वास्तव में उसपर या उसके करियर पर कोई खर्च नहीं करना चाहते थे – महज इसलिए क्योंकि वो एक लड़की थी। उसकी जगह उसके पिता का सारा ध्यान अपने बेटे के करियर पर ही केंद्रित था। अंजलि की हौसला अफजाई महज एक ढोंग था ताकि लोगों की नजरों में वो एक प्रगतिशील विचारधारा के अभिभावक दिखें। अंजलि अपने पिता के रवैये को बखूबी समझ चुकी थी पर वो लाचार थी। अंततः अंजलि ने अपने करियर का फैसला खुद लेने का निर्णय लिया। विज्ञान की एक साल की पढ़ाई को बीच में छोड़ उसने पुनः ग्यारहवीं में इंग्लिश साहित्य और राजनीति शास्त्र विषय लेकर एडमिशन लेकर खुद अपने भरोसे बारहवीं की परीक्षा की तैयारी करने लगी। बारहवीं की परीक्षा में उसके अच्छे अंक आये। स्थानीय महिला महाविद्यालय में उसने राजनीतिशास्त्र और अंग्रेजी में स्नातक में दाखिला ले खुद ही स्नातक की तैयारी में लग गयी। इधर अनमोल ने दसवीं की परीक्षा उत्तीर्ण कर उसी कान्वेंट स्कूल में दाखिला ले लिया था और साथ ही साथ वो इंजीनियरिंग की विभिन्न प्रवेश परीक्षाओं कीभी तैयारी में लग गया था। अब उसकी पढ़ाई के खर्चे और भी बढ़ गए थे। न केवल वो सबसे महंगे कान्वेंट स्कूल का छात्र था, वरन कोचिंग के लिए भी वो सबसे महंगे कोचिंग इंस्टिट्यूट जा रहा था। इसके अलावे उसके जेब खर्च भी बढ़ते जा रहे थे। रोज कुछ न कुछ महंगी चीज की फरमाईश तैयार ही रहती। कभी महंगा मोबाइल तो कभी वीडियो गेमय कभी लैपटॉप तो कभी मित्रों के साथ पिकनिक और नहीं तो कभी स्कूल की ओर से पिकनिक।

श्रीनाथ बाबू उसकी पढाई का खर्च और जेब खर्च पूरी करते–करते समय से पहले ही बूढ़े दिखने लगे थे। पर श्रीनाथ बाबू को इस बात का सब्र था कि एक बार अनमोल इंजीनियरिंग की प्रवेश परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाए और उसका दाखिला किसी अच्छे इंजीनियरिंग कॉलेज में हो जाए तो फिर ये सारे प्रयास और व्यय सार्थक सिद्ध हो जायेंगें। किन्तु इंजीनियरिंग की किसी भी प्रवेश–परीक्षा में अनमोल को सफलता नहीं मिली। अब प्राइवेट कॉलेजों का ही सहारा रह गया था और प्राइवेट कॉलेज में दाखिले का मतलब था एक बार पुनः चार वर्षों तक असीमित खर्चे का हिसाब। पर श्रीनाथ बाबू बेटे के मामले में पीछे हटने वालों में नहीं थे। मोटी राशि कैपिटेशन फी के बतौर जमाकर उन्होनें अनमोल

का दाखिला कर्नाटक के एक इंजीनियरिंग कॉलेज में करवा कर ही दम लिया।

स्नातक करने के बाद अंजलि ने उसी कॉलेज से राजनीति शास्त्र में परा–स्नातक करने का निर्णय लिया। जब वो परा–स्नातक के फाइनल ईयर में थी, तभी उसने संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित सिविल सेवा परीक्षा के लिए भी आवेदन कर दिया। इस बात को उसने श्रीनाथ बाबू से भी छिपाकर रखा। वह इसलिये क्योंकि श्रीनाथ बाबू अब उसकी शादी हेतु लड़का देखने में लग गए थे और अगर यह बात उन्हें पता चलती तो वे अंजलि को हतोत्साहित ही करते। इधर एक ओर जहां अनमोल इंजीनियरिंग कॉलेज से सिविल इंजीनियर बनकर निकला वहीं इसी माह अंजलि की सिविल सेवा परीक्षा के परिणाम आ गए जिसमे वो पहले ही प्रयास में भारतीय प्रशासनिक सेवा में चुन ली गयी थी। जब श्रीनाथ बाबू ने यह सुना तो उन्हें सहसा विश्वास ही नहीं हुआ। बिना किसी कोचिंग और सहयोग के सिविल सेवा की परीक्षा पहले ही प्रयास में निकाल लेना, यह किसी अजूबा से कम नहीं था। श्रीनाथ बाबू की सारी जिंदगी एस.डी.एम. और डी.एम. के तलवे सहलाते ही बीता था। अब उनकी ही बेटी एस.डी.एम. बन गयी। यह सोचकर वे पुलकित हुए जा रहे थे।

श्रीनाथ बाबू जैसे इंसान, जो बालू से भी तेल निकालने में सक्षम थे, के लिए बेटी का आई.ए.एस. बन जाना किसी लाटरी से कम नहीं था। ये बात और थी कि घाट–घाट के पानी पिये श्रीनाथ बाबू अपनी बेटी की संवेदनाओं और जज्बातों से अनजान थे। अंजलि अपने ही ख्यालों में खोयी थी जब उसका ध्यान बगल के कमरे से बातचीत की आती आवाज से टुटा। उसके पिता किसी से फोन पर बातें कर रहे थे। हां हां आपने सही सुना है। अखबार में जिस अंजलि का जिक्र है वो हमारी ही बेटी है। पापा किसी से कह रहे थे। हाँ, हाँ आप हमारे घर इंटरव्यू के लिये आ सकते हैं। मैं अंजलि से कह दूंगा। आप केवल यह बता दे कि आप कब आ रहे हैं?"– फोन पर बात कर रहे पत्रकार से समय लेकर श्रीनाथ बाबू ने फोन डिस्कनेक्ट कर दिया।

तभी अंजलि ने कमरे में प्रवेश किया। आओ आओ अंजलि, मेरी बेटी, तुमने आज मेरा सिर गर्व से ऊंचा कर दिया है। आज पत्रकार और टीवी वाले आ रहे हैं, तुम्हारा इंटरव्यू लेने। तुम उन्हें अवश्य बताना कि किस प्रकार तुम्हारी इस प्रतिभा को तुम्हारे पापा बचपन से ही पहचान गए थे और तुम्हारे परिवार का तुम्हारी इस सफलता में कितना हाथ है मैंने कोचिंग इंस्टिट्यूटवालों से भी बात कर रखी है। तुम्हें सिर्फ यह कहना है कि तुम्हारी इस सफलता का सारा श्रेय उस कोचिंग इंस्टिट्यूट की कोचिंग को जाता है और इसके लिए वे हमें मोटी रकम देने को तैयार हैं।

अंजलि शांति से श्रीनाथ बाबू के प्रलापों को सुनती रही। उसे अपने पिता की सोच पर घृणा हो आई। कोई इंसान कैसे इस हद तक धन कांक्षी हो सकता है कि अपनी ही संतान की सफलता का मोल–भाव करने पर उतर आये। संयत होकर अंजलि प्रत्यक्षतः इतना ही बोल पायीरू पापा, मैं कोई इंटरव्यू नहीं देर ही हूँ क्योंकि मैं कोई झूठ नहीं बोल सकती। मेरी सफलता में आपका कितना योगदान है यह आप भी भली–भांति जानते है। यदि अनीता मैडम, पाठक और सिंह मैडम का सहयोग नहीं मिलता तो यह आपको भी पता है मैं जीवन में कुछ भी नहीं कर पाती। मेरी इस सफलता में केवल और केवल मेरी शिक्षिकाओं का ही योगदान है जिन्होंने समय पर न केवल पढाई में मेरी मदद की, वरन मेरा मनोबल तब बढ़ाया जब मैं अवसाद ग्रस्त होने के कगार पर थी। यदि इनका सम्बल मुझे समय पर नहीं मिलता तो मैं आज आपके सामने इस सफलता के साथ खड़ी न होती और बहुत संभव था किसी पागलखाने में मेरा ईलाज चल रहा होता। अब अच्छा होगा यदि हम इस विषय को यहीं समाप्त कर दे। मेरी ट्रेनिंग अगले ही सप्ताह से शुरू होनेवाली है और आज ही मुझे इस बाबत सरकार से पत्र भी मिल चुका है। मैं कल ही ट्रेनिंग के लिए दिल्ली से होते हुए मसूरी जा रही हूँ। आज मैंने स्कूल की शिक्षक और शिक्षिकाओं से मिलने का वादा कर रखा है। मैं उनसे मिलकर उन्हें धन्यवाद देना चाहती हूँ, जिनकी बदौलत मैंने यह सफलता हासिल की है।

अंजलि की बात सुन श्रीनाथ बाबू हतप्रभ उसे देखते ही रह गए। अंजलि, जिसे उन्होंने गूंगी मान रखा था, उन्हें इस प्रकार जवाब देगी, और उन्हें उनका आईना दिखा देगी, श्रीनाथ बाबू ने सपने भी नहीं सोचा था। परन्तु श्रीनाथ बाबू के चेहरे पर की प्रतिक्रिया पढने के लिए अंजलि वहां रुकी नहीं। श्रीनाथ बाबू को सन्नाटे में छोड़ अंजलि वहां से चली आई।

2017 अप्रकाशित

ठहरी स्वांसें

के. के. शर्मा (हिमाचल वाले)[1]

कदम यूं ही यांत्रिक बढ़ते जाते थे मनीष के आई. सी.यू. की तरफ, कलेजा धड़कता जाता, प्रतीत ये ही होता प्राण पखेरू अभी बहार निकल जाएंगे। अकारण कैसी ये चुनौती आन पड़ी मनीष की जिंदगी में, भयंकर झंझावत छूट पड़ी हो, चारों तरफ से, वाणी ठहर गई हो जैसे, सन्नीपात हो गया, कोई उपाय सूझता नहीं। आंखे भी बंद होती जाती, ऐसे गहरे कुएं में सब कुछ एकदम रूग्ण और असहाय हुआ, जान पड़ता। शायद मां का कोमल, नाजुक, मोहक, असीम, मृदुल, गहरतम् प्रेम खोने के आखिरी क्षण का दृश्य बन रहा मनीष की बेबुझ आंखों में। हाथ पांव ठंडे जान पड़े, लगता था कहीं गिर न पड़े वो।

अधखुली आंखों से आई.सी.यू. में प्रविष्ट होते ही मन ठिठुर गया। मां जी बेहोश, निश्चल, एक दम शांत पलंग पर लेटी थी। मुंह पर ऑक्सीजन मास्क लगा था, छाती पर धड़कने जांचने की तारें, दोनों हाथों पर यंत्रों का जमावड़ा, बस ट्विक–ट्विक करती कम्प्युटर से निकलती आवज सीधी धड़कनों को चीरती हुई दिल में कौंध गईं। कुछ और नजर न आता था। प्राणों को थामने का डॉक्टरों ने सभी उपाय कर डाले थे। ऑक्टा परीक्षण जारी था रात बीते। पर मनीष पूर्ण कंपित होता जाता, एकदम बुर्जआ हुआ, देह स्थूल हुई, हर सांस ठहरी–ठहरी, बेजान, प्रतिपल जीवन प्रवाह अपने केंद्र से टूटता नज़र आता और शायद जीवन की गाड़ी का चक्का जाम प्रतीत होता उसे।

माता जी! माता जी! डॉक्टर साहब ने मां जी के बदन को हल्का–हल्का हिलाना शुरू किया।

मनीष को ध्यान आया डॉक्टर टीम सुबह की चैकिंग पर आ गई हैं, मां जी से मिलने का समय अब खत्म होने को है।

क्या ये आपकी माता जी हैं?

जी, ये मेरी, मां जी! मनीष ठहरी आवाज में बोल उठा।

सी इज़ वेरी सिरियस। रात भर से मैं इनको देख रहा हूं। बी.पी. लगातार गिर रहा है, ब्रिथिंग नॉर्मल नहीं है, ऑक्सीजन पर हैं, ब्लड टेस्ट सभी ठीक आए हैं, हैड सीटी स्कैन करवाना है। लेकिन...लेकिन खतरे को टाला नहीं जा सकता।

मनीष अपनी गंभीरता, दर्द को छुपाकर बोल उठा– डॉक्टर साहब, सी विल रिकवर !!

डॉक्टर आंखों में आंख डालते हुए कुछ झेंपते हुए बोला ''आई फील हर माइंड इज़ डेड। मुझे महसूस हो रहा है शायद दिमाग डेड हो गया है, ऑक्सीजन प्रॉपर नहीं जा रही है। इंतज़ार करें...!!!

अभी ज्यादा कुछ कहा नहीं जा सकता है, शाम तक शायद... सब ठीक हो सके। आप भगवान पर भरोसा रखें, सब अच्छा ही होगा।

मां, मां, मां, जी... गहरतम् दिल की पुकारें निकल गई मनीष से।

मां! मां जी!

कुछ जबाव न लौटा। मनीष मां के चेहरे पर नज़र अटकाए खड़े ही रह गया, एक गहरी शून्यता लिए। चेहरे पर मां के नूरों–नूर आलम देखकर मंत्रमुग्ध मातृत्व भाव में खोता ही चला गया। जबाव फिर भी न आया, वो मां की पुकार न आई, बस धीरे–धीरे भारी कदमों से आई सी.यू. से बाहर लौट पड़ा। बाहर पड़े बेंच पर सर झुकाए बैठ गया, हाथों से चेहरे को संभाले आंख मूंदे। न जाने क्यूं...ये सब...अचानक...! एक गहरी सांस लिए, सोच में डूबने लगा ''कैसा वृतुल है ये, ममता के आंसू रोकते न रुके, शरीर एक मरूस्थल भांति हुआ, एक बंजर। मनीष के साथ ऐसा कभी न हुआ, ये मातृत्व भावकृ

ये प्रतिपादित, ये तृष्णा, दीप बुझन, अचेतन का अनजिया भाव, ऐसी दुविधा, एक सत्त द्वंद स्वयं से स्वयं का, अपरिचित कुण्ठा और जैसे जीवन के सभी बुनियादी नियम खोने को थे। कैसा संवेग, स्मरण न हो रहा कुछ भी। कैसे कहें मनीष अपनी मिमांसा। कैसे कहे गहरे आघात की अनुभूति। काटो तो खून नहीं। माए, क्यूं कर...यूं अकेला छोड़े जाती तू...मां जी, अपने असीम प्रेम का एक मौका और दे दो, प्रेम की पुकार थी गहरतम्। मुरीदी, आत्मिक। ''सुनो जी'' इतना उदास...इतना घबराओ न तुम कंधे पर प्रेम भरे हाथों को सीमा ने डालकर कहना शुरू किया था तो मनीष का भाव टूटा। एक प्राचीन सी संवेदनशीलता टूटी, मातप्रेम का उदरेरक सेतू टूटा हो जैसे।

[1]निरीक्षण स्कन्द यूनिट, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

''ये वक्त संभलने, संभालने का है, सारा परिवार अस्पताल प्रांगण में खड़ा है। सब चिंतित हैं मां जी के स्वास्थ्य के लिए, बेहद दुःखी भी हैं, उनको भी संभालो...और तुम हो कि... खुद–ब–खुद ही...

अर्धांग्नी की कोमल, गंभीर, मृदुल आवाज ने मनीष को गहरी प्रार्थना में डूबे नम नयनों को पूर्णतः झकझोर दिया।

हूं...

ओह...ठीक!

लेकिन सीमा, सच कहूं तुमसे...

मां के कष्ट को कैसे उद्‌बोधित करूं तुम्हें, मेरी उन्मुखता बहुत गहरी हो रही है, मेरे भाषा कोश में शब्द नही बचे हैं। वो अचेत हैं कल शाम ढले होश आता नहीं, डॉक्टर बताए हैं–दिमाग में ऑक्सीजन नहीं जा रही, माइंड इज़ डेड। ये रेयरेस्ट टू रेयरेस्ट केस है। अब उनका शरीर निश्चलता में ही रहेगा, न जाने कब तक...कैसे बताउं अपने सभी परिवार जन कोकृकोई बौधिक उपाय जान न पड़ता है। मनीष की अश्रुधारा बह उठी...कैसे कहें मां के जमाल से रोशन है ये कायनातकृये जिंदगी...

सीमा! तुम्हें सच बताउं...

बेबस हूं, गहरा ठेस और पीड़ा लिया बैठा हूं...

एक अहसास और भी है...मां जी अभी और जीना चाहती हैं, अपने लिए नहीं...बल्कि...''ये मैं ही जानता हूं, कल शाम बात करती थीं कि उसकी दिन–रात पूजा–अर्चना में डूबी रही अरहन्द, जिंदगी ही उनकी प्रार्थना बन गई थी, और फिर शरीर में इतना कष्ट आन पड़ा दमें की शिकायत से कि परिवार तो दूर, अपने प्रभु से भी मुकम्मल रूबरू न हो पा रही थी। ये दमा का दौरा जान लेवा हो गया उनका।

मनीष सकारात्मक अनुभव से कहने लगा, अभी महिना गए, सुरेश शर्मा के पिताश्री की मृत्यु को करीब से देखा गया। उनकी दिशा निराली थी, उनके पिता की मृत्यु से पहले हर शिकायत गिर गई थी, संसार का कोई सार न रहा, जीने की इच्छा भी छूट गई, सब प्रभु इच्छा पर छोड़ दिया उन्होंने। दवाई तक लेना छोड़ दिया, कितना जीना है और! मौत को भी विकार प्रेम से, सांसे अपने आप थम गईं। आनंद हुआ जीवन, कृतज्ञता आ गई, एक आभा बनी ईश्वरीय शक्ति की, सार शब्द पहचाना उन्होंने।

और सब कहूं, सीमाकृ!

मां जी का भी वो ही अहसास है, उनका शरीर अब वास्तविक नहीं, मां जी की गहराई भिन्न है। उनके जीवन का परिचय पूर्ण अध्यात्मिक है, वो सांस...सांस संकल्प में हैं, उनकी तीव्र पुकार है...कुछ तो सत्य घटित हो रहा है...है ही... जो कि इस तन्द्र निद्रा में भी आई.सी.यू. के बेड में पड़े हुए भी दरवाजे पर बीच–बीच नजर टिकाए हुए है...कुछ तो है ही...

हां! तुम उठो, परिवार जन को मां जी का हाल तुम बताओ... सीमा ने ढांढस बंधाया और हाथ पकड़ बेजान बैठे मनीष को उठाया। क्या बड़े भाई–भाभी भी अस्पताल आए हैं? मनीष ने कुछ झुझलाहट से पूछ डाला।

नहीं! बस वो ही नहीं मां जी को देखने आए, बाकी सब जन हैं।

उफ! इस घड़ी में भी...

हां वो नहीं आएगा।

वो भयभीत है अपनी गलतियों से। सच तो है उसका गम ही मां को इतना गमीन बना बैठा है। उसका अक्रांत जीवन है, धोखेबाज है वो, मां के नाम की जमीन–जायदात, पैसा गठ्‌ठा यहां तक मां की पेंशन के पैसे भी हड़पकर डाला है उसने। मां के बैंक अकाउंट में मात्र 500 रुपये छोड़ा है उसने। यहां तक मां के पास अपनी बेटियों को देने के लिए कुछ न छोड़ा।

सांझ गए, मां जब बड़ी बहन के गले से सोने का हार उतरवा कर, उसी को बंद आंखों से लुटाई तो भी शर्मशार न हुआ। 50 रुपया भी मां के हाथ में न रख सका। मां के उदार, नाजुक, कोमल भावनाओं को भी न जान सका। उस दानी आत्मा का रूप न जान सका, अज्ञानी प्रेम का ढाई अक्षर न समझ सका।''

कैसी विडंबना है जो मां का अभिन्न हिस्सा है वो ही क्रूर है, शिकायतें हैं, मां की अंतिम सांसों के समय में भी।

बड़ी दीदी माफ न करेगी, उसे जीवन भर, एक कड़वा सच जो कि मां के सीने में तीर की भांति लगा हुआ है। उसके बाद ही ये दमा का दौरा पड़ा और वो बेहोश हो गई हैं, एकदम विश्रांत।

सच तो ये भी है कि मां के पास जीवन का कोई भी नियम अपरिचित न रहा है। वो पी.एच.डी. स्कॉलर रहीं हैं, जीवन को जिया है, कृषि वैज्ञानिक होने के कारण जमीन से जुड़ी हैं, हमेशा दुःख दरिद्र लोगों की मददगार रही हैं। जीवन के आनंद से परिपुरित, सबको क्षमा किया उन्होने वक्त रहते। मृत्यु को भी नियंत्रण, आमंत्रण देने वाली औरत है वो। वो हमेशा कहती रहीं हैं, ''दूसरों को देख जीते, भरते न रहना, अपना ज्ञान शक्ति ही विजय यात्रा है।'' मृत्यु के भय के कारण ही दोस्त, परिवार, समाज और देश बने हैं। इसलिए हमेशा अपने बाबत में सोचना है।

कल ही समझायी थीं जीवन में ''सफेद रंग'' उभारने के लिए गहरे अर्थों में काला रंग भी आन पड़े तो बेहतर हैं बस गुरू

अगुआई में रहना है, उनके अनुसार जीवन जीना, मृत्यु भी भीतर परमात्मा की तस्वीर बन जाती है। प्रेम उमड़े तो प्रार्थना बनती है, प्रेम भाव ही उद्रेरक है। प्रेमी रहना, प्रेम परमात्मा तक का सेतु बनेगा। अपने पात्र को ठीक तरह जीना है। बस नासापुटों में कस्तूरी की गंध लौट आए। सार शब्द को तन–मन बसाना पुत्तर, अनुग्रहीत हो कर जीवन के हर प्रणाम को स्वीकार करना। बस याद रखना अगर स्त्री गौरवान्वित नहीं तो इस देश का पूरूष भी गैर जरूरी है, वो भी कायर है और कायर दिन में हजार बार मरता है।

जीवन ज्योत जले, न कि बुखक, झकमग विकत रूप हो कहीं। अनाहत की अनुगूंज हो, एक अहातक प्रार्थना हो जो आव्यवस्थ भी रहे तो भी मनस्यतत्व से उपर रहेगी।''

अंत यही बोली शायद आखिरी क्षण आन पड़ा है, प्रभु से ये ही प्रार्थना है कि उन्हें अब वो हमकिनार कर ले या दरकिनार कर लें ताकि ये ठहरीं सांसे सतत् आनंद के अनुभव में डूब जायें।

एक सच और भी है एक ऐसी ही थमी आंखें देखी है अपने परिषद ऑफिस के रावेंद्र रावत की। वो पिछले दो वर्ष से बिस्तर पर झूल रहा है ग्यूलियन ब्रॉउन की बीमारी से। बॉडी पर वायरल का ऐसा अटैक हुआ शरीर, दिमाग सब निष्चल हो गया। वो भी रेयरेस्ट केस है बीमारी का। लाखों रुपया खर्च हुआ है जिसमें हर एंप्लाई ने सहयोग किया है और सबने दिल से दुआ मांगी है उसके स्वास्थ्य की। इस पैरालेटिक बीमारी के बाद भी, आंखों से ही इशारा कर अस्पताल में बैठने को कहा रावत ने वो मार्मिक पल भूलता नहीं आज तक। करुणा के आंसू आ ही गए थे। अहोभाव हुआ था, अपने रोने में भी मुस्कुराया था। मनीष बस मौत जिया था। हड्डी मांस मज्जा का शरीर और आत्मा, परमात्मा सब एक पल साथ दिखता था विरह में। दुआओं ने रावत को जियाए रखा है आज भी। इस जज्बे को सलाम।

अभी कदम बढ़े ही थे अस्पताल प्रांगण के लिए मनीष के लेकिन सामने लिखा था ''प्रार्थना कक्ष''। अस्पताल में प्रार्थना कक्ष देख मन प्रफुल्लित हुआ, याद आया जहां दवा नही तो दुआ काम आती है। वो भी याद आया जब कुली फिल्म की शूटिंग के दौरान अमिताभ बच्चन घायल हुये, तो पूरा देश दुआ में डूबा था और आज हमारा सुपरस्टार ए.बी. दुनिया की खूबसूरत हस्तियों में भारत का नाम रोशन कर रहा है, फिल्म जगत में ही नहीं, जिंदगी के हर पड़ावों में।

सीमा प्रेम से बोल उठी ''आओ, पहले प्रार्थना कक्ष में चलते है, प्रार्थना में उतरते हैं, न सिर्फ मां के लिए, रावत के लिए भी। प्रभु ख्याल रखता है सभी का, अल्ला ताला मालिक है सबका। ख्याल आया इस कुमलाए, उपेक्षित जीवन से उपर उठकर है सब। गहरी नींद को भी टूटना है अब। प्रीतिकर, धर्मानुसार प्रार्थन पूर्ण होती है। प्राणों में जब प्रार्थना हो, प्रकाश हो, प्रेम हो तो प्रति क्षण प्रगति हो ही आती है। कदम चुपचाप प्रार्थना कक्ष की तरफ बढ़ गए और नजरें सामने दीवार पर टंगे बोर्ड पर ही टिक गईः–

"If you have develop a habit of praying to God for others,
you will never need to pray your own self"

मनीष चुपचाप आंख मूंदे बैठ गया, दीवार सहारा लिए। धन्यवादी था, आंखें नम हुईं, मन पूर्ण स्त्रैण हुआ, मौजूदगी थी परम पिता की, हवा के अणु अहसास दिलाते थे शायद। भीतर गीत गूंजा था, अद्भुत, राजी था वो, वशीभूत हुआ चेतन से हर घटना के लिए, प्रिय अप्रिय, शुष्मता से आगे, प्रेमपूर्ण प्रार्थना में स्मरण था उसका, आबजू को मिला महले बेकरां, एक नई मनुष्यता में प्रवेश, इच्छा वलिन चेतन्यता भयभीत जीवन से अपरिचित और बस प्रफुल्लित था सब और अंतस से प्रभु प्रार्थना की फूल स्वीकार करें इन ठहरी स्वासों का।

न जाने कब तक स्वासें ठहरी रहीं मनीष की, अचेत हुआ सब, एक जड़ पत्थर। आंखें का स्वप्न टूटा अचानक, जब नर्स ने धीरे से झकझोर दिया ''आपकी माताजी को होश आया है 'मन्नू, मन्नू' नाम से आपको पुकारती है। डॉक्टर आपको बुलाते हैं, चलिएगा। मनीष अंखियन के आंशू धारा लिए, भाव विभोर, आई.सी.यू. की तरफ दौड़ पड़ा। तभी ख्याल आया सीमा तो अभी प्रार्थना कक्ष में ही छूट गई, सप्रेम प्रार्थना, अरदास दुआएं जारी हैं उसकी, बहुत गहरी है वो। और भी ख्याल आया क्यूं कर गहरी व होगी, रावेन्द्र रावत को भी तो लौटना है वापस ऑफिस में। पूरा परिषद् प्रार्थना में है रावत के प्रति। प्रभु कृपा से सास्वत जीवन में लौटेंगी वो ठहरी स्वासें!!

प्रार्थना उठी
''तेरे फूलों से भी प्यार
तेरे कांटों से भी प्यार,
किसी भी दशा में ले चल
दुनिया के पालनहार
चाहे खुशी भरा दे संसार
चाहे दे आंसुओं की धार''
तू रुलाए रो लेंगे हम,
तू हंसाए, हंस लेंगे हम
जो भी देना चाहे दे दे सरकार
दुनिया के पालनहार''

हिन्दी का महत्व

दीप कुमार ठाकुर[1]

हमारे देश की माथे की बिन्दी है हिन्दी
देश की आन–बान व शान है हिन्दी
भारतीय संस्कृति की पहचान है हिन्दी
बिन हिन्दी के भारत का मूल्यांकन है बस बिन्दी
सर्वोत्तम लिपि है विश्व की वह भाषा है हिन्दी
विश्वपटल पर छा जायेगी जल्दी ही हिन्दी
भाषाओं के सिंहासन पर बैठेगी यह हिन्दी
भारत में सम्मानित रहेगी जब तलक हिन्दी
भारतीय संस्कृति भी रहेगी तब तलक जिन्दी
मातृभाषा, जनसम्पर्क भाषा, राष्ट्रभाषा, राजभाषा तथा लोक व्यवहार की भाषा है हिन्दी
व्यापार की भाषा, विज्ञापन की भाषा, फिल्म–मीडिया की भाषा है हिन्दी
विश्व की तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है हिन्दी
60 करोड़ लोगों द्वारा विश्व में बोली जाने वाली भाषा है हिन्दी
कश्मीर से कन्याकुमारी, उत्तर से दक्षिण को जोड़ने वाली भाषा है हिन्दी
देश की पहचान है हिन्दी।

[1]दीप कुमार ठाकुर, भा.कृअनु.प–खुम्ब अनुसंधान निदेशालय, चम्बाघाट, सोलन (हि.प्र.) – 173213

क्रोधाग्नि

डॉ. बृजलाल अत्री[1]

क्रोधाग्नि है मानव जीवन का सबसे बड़ा दुश्मन,
यह है वह राक्षस जिसने तबाह किए हैं कई जन ।
इसने न जाने कितनों को जिन्दा है जलाया,
इसमें फँसकर कोई भी बाहर न निकल पाया ।
छोटी–छोटी नोंक–झोंक से है यह बीमारी शुरू होती,
अन्जाम के साथ मुकाम पर पहुँचा कर ही खत्म होती ।
किसी को है यह दूसरे के पास अधिक दौलत के कारण,
दुखी हो रहा है कोई दूसरे बच्चों की तरक्की के कारण।
विश्व के सभी देशों में भी है इसने अपनी छाप छोड़ी,
एक दूसरे से आगे बढ़ने की है जंग व होड़ छिड़ी ।
पति– पत्नी भी नहीं हैं इस आग से अछूते,
जीवन के हसीन पल हैं इस झमेले में बीते ।
क्रोधाग्नि ही मानव जीवन का है वह जहरीला हथियार,
जिन्दा शरीर को झुलसने का है सुलभ व सस्ता औजार ।
इस अग्नि के कारण ही कई युवा जीवन लीला खत्म करते,
सगे–संबंधी जीवन भर अपनों के आने की राह हैं ताकते ।
क्रोधाग्नि को अपने अन्दर ही बचाकर है रखना,
ऊर्जा का सदुपयोग करके जीवन में आगे बढ़ना ।
चाहे हम कितने भी दुखी, निराश व हों लाचार,
क्रोध पर काबू रखकर जीवन में हमेशा लाएँ बहार ।
अग्नि तो मृत शरीर को जलाकर राख है करती,
क्रोधाग्नि जिन्दा शरीर को मृत बनाकर है छोड़ती ।
चाहे हम किसी भी हालात में हों इससे बचकर है रहना,
सबके जजवातों को समझकर महामारी से निजात पाना ।
आईए क्रोधाग्नि रूपी राक्षसी को अपने जीवन से दूर भगाएँ,
हँसी खुशी रहकर सबके जीवन में हमेशा ही उजाला फैलाएँ ।

[1]डॉ. बृजलाल अत्री, भा.कृअनु.प–खुम्ब अनुसंधान निदेशालय,
चम्बाघाट, सोलन (हि.प्र.) – 173213

परिषद मुख्यालय में वार्षिक हिन्दी पुरस्कार वितरण समारोह एवं हास्य कवि सम्मेलन के दौरान माननीय सांसद श्री प्रसन्न कुमार पाटसानी, महानिदेशक, भा.कृ.अनु.प., श्री त्रिलोचन महापात्र, पूर्व–महानिदेशक आकाशवाणी एवं विख्यात कवि श्री लीलाधर मंडलोई तथा निदेशक (राजभाषा) श्रीमती सीमा चोपड़ा।

कृषि विकास वृक्ष
काले धन पर कड़ा प्रहार
राष्ट्रीय कृषि बाजार
किसानों के लिए मोबाइल एप
नीम लेपित यूरिया
मधुमक्खी पालन
कुक्कुट पालन
नीली क्रांति
परंपरागत कृषि विकास योजना
कृषि शिक्षा
कृषि वानिकी
सॉयल हैल्थ कार्ड स्कीम
कृषि अनुसंधान
श्वेत क्रांति
दीनदयाल अन्त्योदय मिशन
प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना
डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी रुरबन मिशन
कृषि विस्तार
आपदा राहत के मानकों में परिवर्तन
किसान टी.वी. चैनल
प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना
दीनदयाल ग्राम ज्योति योजना
कृषि सहकारिता
प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना
अटल पेंशन योजना
बागवानी